COACH UP IAS

YOUR SELECTION Is OUR BUSINESS

WHITE BOOK

नीतिशास्त्र

सिविल सेवा परीक्षा के लिए

IAS COACH ASHUTOSH SRIVASTAVA

IAS COACH MANISH SHUKLA

8009803231 / 9236569979

Saarthi

THE COACH

1 : 1 MENTORSHIP BEYOND THE CLASSES

- **Diagnosis** of candidates based on background, level of preparation and task completed.
- **Customized solution** based on Diagnosis.
- One to One **Mentorship.**
- Personalized schedule **planning.**
- Regular **Progress tracking.**
- **One to One classes** for Needed subjects along with online access of all the subjects.
- Topic wise **Notes Making sessions**.
- One Pager **(1 Topic 1 page)** Notes session.
- **PYQ** (Previous year questions) Drafting session.
- **Thematic charts** Making session.
- **Answer-writing** Guidance Program.
- **MOCK Test** with comprehensive & swift assessment & feedback.

Ashutosh Srivastava
(B.E. , MBA, Gold Medalist)
Mentored 250+ Successful Aspirants over a period of 12+ years for Civil Services & Judicial Services Exams at both the Centre and state levels.

Manish Shukla
Mentored 100+ Successful Aspirants over a period of 9+ years for Civil Services Exams at both the Centre and state levels.

1 नीतिशास्त्र और मानवीय सहसंबंध

"इस दुनिया में नैतिकता से रहित व्यक्ति एक जंगली जानवर के समान है।" *-अल्बर्ट कैमस*
"समाज के लगभग हर क्षेत्र में नैतिकता से अधिक महत्त्वपूर्ण कुछ भी नहीं है।" *-हेनरी पॉलसन*

परिचय

- नीतिशास्त्र अध्ययन का एक क्षेत्र है, जो नैतिक प्रश्नों और सिद्धांतों का अन्वेषण करता है। यह हमें अच्छे और बुरे व्यवहार के बीच अंतर करने में मदद करता है। सरल शब्दों में नीतिशास्त्र का अर्थ है कि क्या अच्छा है और उसे पाने का तरीका क्या है, और क्या बुरा है और उससे कैसे बचा जाए।
- दर्शनशास्त्र में नीतिशास्त्र लोगों के स्वयं के प्रति और एक-दूसरे के प्रति दायित्वों की प्रकृति को रेखांकित करता है, साथ ही यह भी बताता है कि व्यक्ति और समाज के लिए क्या अच्छा है। यह व्यक्तियों के चरित्र को समझने का प्रयास करता है, जो उनके आदतन आचरण (Habitual conduct) के माध्यम से प्रकट होता है।
- नीतिशास्त्र, ऐसे सिद्धांतों की व्याख्या एवं उनका मूल्याङ्कन करने का प्रयास है, जिनके द्वारा नैतिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।
- नीतिशास्त्र को चरित्र और आचरण का विज्ञान (A science of character and conduct) भी कहा जा सकता है।

नैतिकता का महत्त्व

- **व्यक्तिगत और सामाजिक भलाई सुनिश्चित करना (Ensures Individual as well as Social Good)** : नैतिकता मानव आचरण का मार्गदर्शन करती है और नैतिक सिद्धांतों को लागू करके मनुष्य को एक अच्छा जीवन जीने में मदद करती है। इसका उद्देश्य व्यक्तिगत भलाई के साथ-साथ सामाजिक भलाई भी है।
  - **उदाहरण के लिए**, जल-तनावग्रस्त क्षेत्र में किसान जल-बचत वाली सिंचाई तकनीक अपनाते हैं, जिससे बहुमूल्य जल संसाधनों का संरक्षण होता है (सामूहिक लाभ) और उनके अपने खेतों की दीर्घकालिक लाभप्रदता सुनिश्चित होती है (व्यक्तिगत लाभ)।
- **परम शुभ की प्राप्ति (Attainment of Highest Good)**: नैतिकता **"परम शुभ" (Summum Bonum)**" (परम हित - निश्चित शुभ) प्राप्त करने में मदद करती है।
- **नैतिक रूपरेखा प्रदान करना (Provides Moral Map)**: नैतिकता हमें एक नैतिक मानचित्र, एक रूपरेखा प्रदान करती है जिसका उपयोग हम कठिन मामलों में अपना रास्ता खोजने के लिए कर सकते हैं।
- **पूर्वाग्रह और पक्षपात से मुक्ति (Frees from Bias and Prejudices)** : हमारे जीवन में नैतिक सिद्धांतों और नैतिक मूल्यों का अनुप्रयोग गलत धारणाओं, अभिवृत्तियों को तोड़ने में मदद करता है तथा पूर्वाग्रह और पक्षपात से बचने में मदद करता है।
- **प्रभावी निर्णयन (Effective Decision Making)**: नैतिकता हमें व्यक्तिगत और सामाजिक हित को ध्यान में रखते हुए सही, न्यायसंगत और समावेशी निर्णय लेने के लिए मार्गदर्शन करती है।

नैतिकता के अभाव के निहितार्थ

- नैतिकता का अभाव व्यक्तियों के साथ-साथ समाज में विभिन्न आचारिक और नैतिक चिंताओं का कारण बनता है**:**
- **व्यक्तिगत स्तर**: पक्षपात, उदासीनता, अहंकारी व्यवहार, घरेलू हिंसा, स्वार्थ, धोखेबाज व्यवहार, असमानुभूति, मूकदर्शक उदासीनता आदि।
- **नौकरशाही स्तर**: सामाजिक उदासीनता, कमजोर वर्गों के प्रति असंवेदनशीलता, हितों का टकराव, सत्ता का दुरुपयोग, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, विश्वास की कमी, दंडात्मक पदस्थापना, लालफीताशाही, खराब निर्णय, व्यक्तिगत लाभ, पक्षपात, लोक कल्याण की उपेक्षा आदि।
- **राजनीतिक स्तर:** धन और बाहुबल का प्रयोग, राजनीति का अपराधीकरण और अपराधियों का राजनीतीकरण, दलबदल, सरकार की अस्थिरता, हिंसा, सांप्रदायिकता, संविधान का दुरुपयोग, सत्ता का दुरुपयोग, सत्ता का संकेंद्रण आदि।
- **सामाजिक स्तर:** भ्रष्टाचार एक सामान्य प्रवृत्ति, लैंगिक अंतराल, महिलाओं का वस्तुकरण, भौतिकवाद में वृद्धि, साध्य को साधनों से अधिक महत्त्व देना, नशाखोरी, हिंसा, सांप्रदायिकता, लैंगिक अपराध, गरीबों, बुजुर्गों और विकलांगों के प्रति अनादर आदि।
- **पर्यावरण स्तर:** प्रदूषण, अवैध खनन, वनों की कटाई, प्राकृतिक जल निकायों का अतिक्रमण, पशुओं के प्रति अत्याचार, अवैध खनन और प्राकृतिक संसाधनों की कमी, वन्यजीवों के प्रति अपराध आदि।
- **अंतरराष्ट्रीय स्तर**: व्यापार एकाधिकार, सीमा पार आतंकवाद, मादक पदार्थों की तस्करी, मानव तस्करी, युद्ध विराम उल्लंघन, सीमा क्षेत्रों पर अतिक्रमण, संगठित अपराध, सुरक्षित कर मुक्त क्षेत्र, संरक्षणवाद, वैक्सीन राष्ट्रवाद, परमाणु हथियार, संघर्ष-युद्ध, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की वैधता को नष्ट करना आदि।

नैतिकता का मूल्यांकन

नैतिक आचरण के मूल्यांकन का मतलब है प्रतिभागियों के अधिकारों का सम्मान करना और संभावित नुकसान को कम से कम करना। यह निम्न आधार पर किया जा सकता है:

- **स्वतंत्र इच्छा (Free Will):** किसी विकल्प का नैतिक या अनैतिक के रूप में मूल्यांकन तब किया जाता है, जब उसे उपलब्ध विकल्पों में से स्वतंत्र रूप से चुना जाता है। **उदाहरण के लिए**, भारत में मुस्लिम लड़कियों के स्कूलों में हिजाब पहनने के अधिकार के बारे में हाल ही में हुए विवादों पर विचार

कीजिए, इसमें एक छात्र की अपनी धार्मिक पहचान व्यक्त करने की स्वतंत्र इच्छा और एक समान ड्रेस कोड लागू करने के स्कूल के अधिकार के बीच संघर्ष शामिल हैं।

- **मूल्य प्रणाली (Value System):** बुशिडो सम्मान संहिता (Bushido honor code) का पालन करते हुए, एक पकड़ा गया समुराई (Samurai) यातना के बजाय अनुष्ठानिक आत्महत्या का विकल्प चुन सकता है। यह उसके सम्मान और गरिमा के मूल मूल्यों के अनुरूप है।
- **ज्ञान (Knowledge)**: नैतिक विकल्प चुनने के लिए परिणामों को समझना ज़रूरी है। उदाहरण के लिए, एक बच्चे के कार्यों में नैतिक आयाम की कमी होती है क्योंकि वे परिणामों को नहीं समझते हैं।
- **मानसिक विकलांगता (Mental Impairment):** सिज़ोफ्रेनिया से पीड़ित एक पति अपनी पत्नी के साथ बुरा व्यवहार करता है, उसे नैतिक रूप से जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। उसकी मानसिक बीमारी उसकी समझ और स्वतंत्र इच्छा को ख़राब कर सकती है।
- **आत्मरक्षा (Self-Defense):** अपने जीवन के भय से प्रेरित होकर आत्मरक्षा में किसी की हत्या करना कानूनी रूप से उचित है, लेकिन विशिष्ट स्थिति के आधार पर नैतिक निहितार्थ अधिक सूक्ष्म हो सकते हैं।
- **सांस्कृतिक परवरिश (Cultural Upbringing):** जापान में बचपन से ही बहुत ज़्यादा माफी माँगने की आदत होती है। यह आदत ऐसी परिस्थितियों में भी माफ़ी माँगने की ओर ले जाती है, जिनमें यह जरूरी नहीं है व्यक्ति दोषी हो।

नैतिकता का दायरा

- नैतिकता का दायरा एक **स्वतंत्र मानवीय कार्य (स्वैच्छिक कार्य) है** जो नैतिकता का एक प्रमुख विषय है।
- हम मानवीय कार्यों (Human actions) और मनुष्यों के कार्यों (Actions of humans) के बीच अंतर कर सकते हैं।
  - **मानवीय कार्य:** वे कार्य हैं जो मनुष्य द्वारा सचेत रूप से, जानबूझकर और किसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर किए जाते हैं (जैसे - किसी व्यक्ति को थप्पड़ मारना)।
  - **मनुष्य के कार्य:** यह जरूरी नहीं है कि वे स्वेच्छा से, सचेत रूप से और जानबूझकर किए जाएं, लेकिन फिर भी वे मनुष्य द्वारा ही किए जाते हैं (जैसे - सोना, चलना, आदि)।
  - **नैतिकता में हम केवल मानवीय कार्यों को ही संदर्भित करते हैं।**
- नैतिकता परमार्थ (परम शुभ) के प्रयास में राजनीतिक, समाजशास्त्रीय, सांस्कृतिक, मानसिक, आर्थिक, पर्यावरणीय, धार्मिक समस्याओं से संबंधित है। इसलिए, ये समस्याएँ भी नैतिकता के दायरे में आती हैं।
- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस), सोशल मीडिया और OTT सामग्री का विनियमन, जीन एडिटिंग आदि** जैसी नई तकनीकों के उद्भव के साथ नैतिकता का दायरा व्यापक हो रहा है, जिसने नए-नए नैतिक मुद्दे सामने आ रहे हैं।

नैतिकता की प्रकृति

- **नैतिक सिद्धांतों की सार्वभौमिकता (Universality of Ethical Principles):** समाज में प्रत्येक व्यक्ति के पास नैतिक दिशा-निर्देशों का एक सेट होता है, जो न केवल व्यवसाय या राजनीति में, बल्कि जीवन के सभी पहलुओं में सही और गलत को रेखांकित करता है।
- **सामाजिक विकास और नैतिकता (Social Evolution and Ethics):** हमारी सामाजिक संपर्क और स्मृति की क्षमता के कारण मनुष्यों के विकास के साथ-साथ नैतिकता का विकास हुआ। हम एक-दूसरे को पहचानते हैं और नैतिक व्यवहार का निर्धारण करते समय पिछले कार्यों पर विचार करते हैं।
- **नैतिक मानकों में सांस्कृतिक भिन्नताएँ (Cultural Variations in Ethical Standards):** विभिन्न संस्कृतियों में नैतिकता भिन्न-भिन्न हो सकती है। **उदाहरण** के लिए, कुछ विकसित देशों में स्वीकृत सरोगेसी को अन्यत्र शोषण या व्यावसायीकरण की चिंताओं के कारण अनैतिक माना जा सकता है।
- **मूल्य-आधारित प्रणाली के रूप में नैतिकता (Ethics as a Value-Based System):** विज्ञान "क्या है" पर केंद्रित है, इसके विपरीत, नैतिकता "क्या होना चाहिए" से संबंधित है। यह मानवीय कार्यों को सही या गलत के रूप में आंकने के लिए मानकों और मानदंडों का मूल्यांकन करती है।
- **नीतिशास्त्र: आचारिक मूल्यों का विज्ञान (Ethics: The Science of Moral Value):** नीतिशास्त्र नैतिक आयाम वाले व्यवहारों की पहचान करके मूल्यों के विज्ञान के रूप में कार्य करता है, तथा विश्लेषण करता है कि नैतिक व्यवहार क्या है।

नैतिकता के आयाम

नैतिकता की 4 शाखाएँ हैं और वे निम्नलिखित प्रकार के प्रश्नों के समाधान देने का प्रयास करती हैं:

शाखाएं	विवरण
वर्णनात्मक नैतिकता (Descriptive Ethics)	**लोग क्या सोचते हैं?** • वर्णनात्मक नैतिकता **विभिन्न समाजों और संस्कृतियों की नैतिक मान्यताओं** का अध्ययन है। यह विश्लेषण करती है कि ये मान्यताएँ नैतिक प्रथाओं, रीति-रिवाजों और कानूनों में कैसे परिवर्तित होती हैं। • नैतिकता की यह शाखा समाज में नैतिक मान्यताओं के आधार की जाँच करने के लिए **अनुभवजन्य तरीकों का उपयोग करती है। यह विचार करती है कि कानूनी संहिताओं, रीति-रिवाजों और ऐतिहासिक रुझानों ने इन मान्यताओं को कैसे आकार दिया है।** ○ कोहलबर्ग का नैतिक चेतना का **सिद्धांत वर्णनात्मक नैतिकता का एक उदाहरण है।** • वर्णनात्मक नैतिकता एक अभिलेख संरक्षक के रूप में कार्य करती है, जो संस्कृतियों में नैतिक सोच के इतिहास और विकास का अभिलेखीकरण करती है। यह सामाजिक वर्जनाओं (Societal taboos), रीति-रिवाजों और नैतिक संहिताओं में बदलावों पर नजर रखती है। • **उदाहरण के लिए, सार्वजनिक निगरानी के लिए 'चेहरे की पहचान वाली तकनीक' (Facial recognition technology, FRT)) का उपयोग करने** के नैतिक निहितार्थों पर विचार कीजिए, कुछ लोग इसे सुरक्षा में सुधार के लिए एक उपकरण के रूप में देखते हैं, **जबकि वर्णनात्मक नैतिकता** में यह परीक्षण करना शामिल होगा कि यह व्यक्ति की निजता और प्रौद्योगिकी में संभावित पूर्वाग्रहों को कैसे प्रभावित करती है।

मेटा-एथिक्स (Meta-Ethics)	**'सही/नैतिक' का अर्थ क्या है ?** ● अधिनीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र का उप-विषय है जो मुख्य रूप से नैतिक सिद्धांतों और नैतिक निर्णयों की प्रकृति एवं भाषा से संबंधित है। ❍ मेटा का मतलब है चीज़ों के बारे में। इसलिए मेटा नैतिकता, नैतिकता के बारे में नैतिकता है, अर्थात् यह **नैतिकता का मूल्यांकन है:** ❍ गलत कार्य से क्या अभिप्राय है? ❍ चोरी करना अनैतिक क्यों है? ❍ दान करना नैतिक क्यों है? ● यह **नैतिक अवधारणाओं की उत्पत्ति और अर्थ की जाँच करती है।** यह अध्ययन करती है कि हमारे नैतिक सिद्धांतों का निर्माण कैसे होता है और उनका क्या अर्थ है। यह नैतिक मूल्यों के अंतर्निहित सिद्धांतों का विश्लेषण करने का प्रयास करती है। ● **उदाहरण के लिए, जैनों द्वारा अपनाई जाने वाली संथारा प्रथा** के मामले में, मेटा एथिक्स ऐसी मान्यताओं के कारणों का अध्ययन करती है।
मानक (निर्देशात्मक) नैतिकता [Normative (Prescriptive) Ethics]	**लोगों को कैसे कार्य करना चाहिए?** ● मानक नैतिकता **उन मानकों या मानदंडों से संबंधित है** जो नैतिक व्यवहार के सिद्धांतों को परिभाषित करते हैं। ● यह **नैतिक सिद्धांतों का अध्ययन है** जो यह बताता है कि लोगों को समाज में किस प्रकार कार्य करना चाहिए और कैसे व्यवहार करना चाहिए। ● यह **कार्यों के सही और गलत होने के मानकों की जाँच करती है** और यह किसी विशिष्ट मुद्दे की नैतिकता के बजाय 'कौन होना चाहिए' से अधिक सरोकार रखती है। ● **उदाहरण** - उपयोगितावाद, कर्तव्यवाद और परिणामवाद मानक नैतिक सिद्धांत हैं।
अनुप्रयुक्त नैतिकता (Applied Ethics)	**हम नैतिक ज्ञान को कैसे लें और उसे व्यवहार में कैसे लाएँ?** ● **नैतिकता के व्यावहारिक आयाम को** 'अनुप्रयुक्त नैतिकता' के रूप में जाना जाता है। इसका तात्पर्य नैतिक विचारों के व्यावहारिक अनुप्रयोग से है। ● इसका संबंध नैतिक निर्णयों सहित निजी और सार्वजनिक जीवन में विशिष्ट नैतिक दुविधाओं के दार्शनिक विश्लेषण से है। ● **उदाहरण** – **जैव-नैतिकता (Bioethics)** जो इच्छामृत्यु, गर्भपात या मानव भ्रूण पर शोध से संबंधित है। **व्यावसायिक नैतिकता (Business ethics)** जिसमें अच्छा कॉर्पोरेट गवर्नेंस, व्हिसलब्लोअर की सुरक्षा आदि शामिल हैं।

अनुप्रयुक्त नैतिकता के उदाहरण

जैव-नैतिकता (Bioethics):

- जैव-नैतिकता, **जीव विज्ञान और चिकित्सा में प्रगति से उभरने वाले नैतिक मुद्दों का अध्ययन है।**
- जैव-नैतिकता के क्षेत्र ने कई व्यापक मुद्दों को संबोधित किया है जैसे -
  - जीवन की सीमाओं के बारे में बहस (जैसे- गर्भपात, इच्छामृत्यु, सरोगेसी)
  - अपर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल संसाधनों का आवंटन (उदाहरण- अंग दान, स्वास्थ्य सेवा की राशनिंग)
  - धार्मिक या सांस्कृतिक कारणों से चिकित्सा देखभाल से इनकार करने का अधिकार।
- जैव-नैतिकता का दायरा जैव-प्रौद्योगिकी में नए विकास के साथ बढ़ रहा है, जिसमें क्लोनिंग, जीन थेरेपी, जीवन विस्तार, मानव आनुवंशिक इंजीनियरिंग, खगोल-नैतिकता और अंतरिक्ष में जीवन शामिल हैं।

व्यावसायिक नैतिकता (Business Ethics) :

- व्यावसायिक नैतिकता का तात्पर्य विवादास्पद विषयों के संबंध में **उचित व्यावसायिक नीतियों और प्रथाओं को लागू करना है।**
- इसमें कॉर्पोरेट प्रशासन, इनसाइडर ट्रेडिंग, रिश्वतखोरी, भेदभाव, सामाजिक जिम्मेदारी और वैश्वासिक जिम्मेदारियों (Fiduciary responsibilities) जैसे विभिन्न मुद्दे शामिल हैं।
- **उदाहरण के लिए,** भारत में भारी मात्रा में ई-कचरा उत्पन्न होता है, और नैतिक ई-कॉमर्स कंपनियाँ जैसे- **नमो ई-वेस्ट (Namo e-waste), कर्मा रिसाइक्लिंग (Karma recycling)** आदि पुराने इलेक्ट्रॉनिक्स सामान को लैंडफिल में फेंकने के बजाय पर्यावरण की दृष्टि से जिम्मेदार तरीके से निपटान सुनिश्चित करती हैं।

पर्यावरणीय नैतिकता (Environmental Ethics):

- पर्यावरणीय नैतिकता पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण से जुड़ी नैतिक समस्याओं से संबंधित है।
- इसका उद्देश्य वैश्विक पर्यावरण संरक्षण के लिए नैतिक औचित्य और नैतिक प्रेरणा प्रदान करना है।
- **उदाहरण के लिए,** पर्यावरण पर अधिक प्रभाव डालने वाले फास्ट फैशन के स्थान पर पुनर्नवीनीकृत सामग्री या जैविक कपास का उपयोग करने वाले ब्रांडों से वस्त्र खरीदना चुनकर **सतत वस्त्र प्रथाओं का पालन करना।**

अंतरराष्ट्रीय नैतिकता (International Ethics):

- इसका तात्पर्य अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नैतिक मूल्यों को बनाए रखने और नैतिक सिद्धांतों के अनुप्रयोग से है। यह कुछ प्रमुख अंतरराष्ट्रीय समस्याओं, मुद्दों को हल करने में मदद करती है, और अंतरराष्ट्रीय संघर्षों में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। **उदाहरण के लिए -**

- **शरणार्थी संकट:** युद्ध के कारण भाग रहे शरणार्थियों को वापस भेजना अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार सिद्धांतों का उल्लंघन है।
- **साइबर युद्ध:** किसी अन्य देश के सतत बुनियादी ढाँचे के खिलाफ साइबर हमला करना नैतिक चिंताएँ उत्पन्न करता है।
- **असमान व्यापार समझौते:** विकसित राष्ट्रों द्वारा विकासशील देशों पर अनुचित व्यापार समझौते थोपने से आर्थिक न्याय में बाधा उत्पन्न होती है।
- **जलवायु परिवर्तन को लेकर निष्क्रियता:** कुछ देशों द्वारा जलवायु परिवर्तन का समाधान करने से इनकार करने से कमजोर देशों को अत्यधिक नुकसान पहुँचता है।
- **विकासशील देशों के लिए ऋण जाल:** विकासशील देशों पर अत्यधिक ऋण का बोझ डालने वाली लूटमार वाली ऋण प्रथाएँ अनैतिक हैं।

मीडिया नैतिकता (Media Ethics):

- मीडिया नैतिकता इस प्रश्न से संबंधित है कि मीडिया द्वारा सूचना और समाचार एकत्रित करने और प्रस्तुत करने के साधनों और तरीकों के बारे में क्या सही या गलत, अच्छा या बुरा, स्वीकार्य या अस्वीकार्य है।
- नैतिक मीडिया कई सकारात्मक भूमिकाएँ निभाता है:
  - यह सूचना प्रसार पर किसी भी एकाधिकार को रोकने का प्रयास करता है।
  - किसी मुद्दे के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत करके वस्तुनिष्ठता बनाए रखता है, जो दर्शकों को अपना स्वयं का निर्णय लेने में सशक्त बनाता है।
  - रिपोर्टिंग में सत्यता का स्तर बढ़ता है।
- **मीडिया नैतिकता के मुद्दे:**
  - **युद्ध अभियानों का गैर-जिम्मेदाराना सीधा प्रसारण:** उदाहरण के लिए, उच्चतम न्यायालय ने यह टिप्पणी की कि 26/11 के आतंकवादी हमलों के लाइव टीवी कवरेज ने राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में डाला था।
  - **भ्रामक खबरें द्वारा चुनावों को प्रभावित करना:** सोशल मीडिया पर साझा की गई मनगढ़ंत खबरें मतदाताओं को गुमराह करती हैं और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को कमजोर करती हैं।
  - **पपराजी (स्वतंत्र फोटोग्राफर) द्वारा मशहूर हस्तियों को परेशान करना:** तस्वीरों के लिए पपराज़ी (मशहूर हस्तियों की फोटो लेने वाले फोटोग्राफर) की आक्रामक रणनीति मशहूर हस्तियों की निजता का उल्लंघन करती है और नैतिक चिंताएँ पैदा करती है।
  - **रिपोर्टिंग में हितों का टकराव:** जिन पत्रकारों के कवरेज वाली कंपनियों के साथ उनके वित्तीय संबंध हैं, तो पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग के बारे में सवाल उठते हैं।
  - **अनैतिक "गोचा" पत्रकारिता (Unethical "Gotcha" Journalism):** सार्वजनिक हस्तियों को जोड़-तोड़ वाले प्रश्नों में फंसाना अनुचित और निरर्थक हो सकता है।

डिजिटल मीडिया संबंधी नैतिकता:

डिजिटल मीडिया संबंधी नैतिकता डिजिटल समाचार मीडिया की नैतिक समस्याओं और नैतिक मुद्दों से संबंधित है। **डिजिटल मीडिया से नए नैतिक मुद्दे उभर रहे हैं** जैसे साहित्यिक चोरी, अनाम स्रोतों का उपयोग करके छवियों या वीडियो को डिजिटल रूप से बदलना, सर्वदिशात्मक इमेजिंग (Omnidirectional imaging), डिजिटल घुसपैठ और निजता का उल्लंघन, फर्जी खबरें और अफवाहें, डीप फेक आदि।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता संबंधी नैतिकता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial intelligence, AI) हमारी दुनिया को तेज़ी से बदल रही है, लेकिन इसके विकास से कई नैतिक चिंताएँ पैदा होती हैं। AI की नैतिकता AI के डिज़ाइन, विकास, कार्यान्वयन और उपयोग से उत्पन्न **नैतिक मुद्दों पर केंद्रित है।**

AI में नैतिक मुद्दे

- **पूर्वाग्रह (Bias):** AI उस डेटा से पूर्वाग्रहों को ग्रहण कर सकता है और बढ़ा सकता है जिस पर इसे प्रशिक्षित किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप भेदभावपूर्ण परिणाम सामने आते हैं। (उदाहरण के लिए, पक्षपातपूर्ण भर्ती एल्गोरिदम)
- **जवाबदेही (Accountability):** चूँकि AI अधिक जिम्मेदारी ग्रहण करता है, इसलिए इसके कार्यों और त्रुटियों के लिए कौन जवाबदेह है? (उदाहरण के लिए, स्वचालित कार दुर्घटनाएं)
- **निजता (Privacy):** AI प्रणालियाँ विशाल मात्रा में व्यक्तिगत डेटा पर निर्भर करती हैं, इसलिए वे डेटा संग्रहण, भंडारण और संभावित दुरुपयोग के बारे में चिंताएँ उत्पन्न करती हैं। (उदाहरण के लिए, सार्वजनिक स्थानों पर चेहरे की पहचान प्रणाली)
- **नौकरी विस्थापन (Job displacement):** AI के माध्यम से स्वचालन से व्यापक बेरोजगारी हो सकती है, जिसके लिए सामाजिक अनुकूलन की आवश्यकता होगी। (उदाहरण के लिए, उच्च-कौशल वाली नौकरियों की तुलना में निम्न-कौशल वाली नौकरियों में वृद्धि)
- **निगरानी (Surveillance):** AI का उपयोग व्यापक निगरानी के लिए किया जा सकता है, जिससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आजादी के बारे में चिंताएँ पैदा हो सकती हैं। (उदाहरण के लिए, निरंतर सामाजिक क्रेडिट ट्रैकिंग)

इन मुद्दों को कैसे सुलझाया जा सकता है?

- **नैतिक दिशा-निर्देशों का विकास:** AI के विकास और उपयोग के लिए स्पष्ट नैतिक सिद्धांतों का निर्माण करना।
- **पारदर्शिता में वृद्धि:** व्याख्या योग्य AI मॉडल को प्रोत्साहित करना और जनता के विश्वास को बढ़ावा देना।
- **जवाबदेही तय करना:** AI प्रणालियों और उनके कार्यों के लिए जिम्मेदारी की स्पष्ट रेखाएँ स्थापित करना।
- **गोपनीयता की सुरक्षा:** डेटा गोपनीयता का मजबूत विनियमन और व्यक्तिगत जानकारी पर उपयोगकर्ता नियंत्रण सुनिश्चित करना।
- **कार्यबल का कौशल उन्नयन:** शिक्षा और पुनःप्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को AI-संचालित भविष्य के लिए तैयार करना।
- **वैश्विक सहयोग:** AI के जिम्मेदारीपूर्ण विकास और प्रशासन के लिए अंतरराष्ट्रीय फ्रेमवर्क का विकास करना।

मानक नैतिकता के सिद्धांत

उपयोगितावाद (Utilitarianism):

- उपयोगितावाद एक नैतिक सिद्धांत है जो परिणामों पर ध्यान केंद्रित करके सही और गलत का निर्धारण करता है। यह परिणामवाद (Consequentialism) का एक रूप है। यह मानता है कि सबसे सही नैतिक विकल्प वह है जो **सबसे अधिक लोगों का सबसे अधिक कल्याण करेगा।**

- **उदाहरण के लिए, उपयोगितावादी** कुछ समुदायों को विस्थापित करने के बावजूद एक बड़ी बांध परियोजना के निर्माण की वकालत कर सकते हैं। इसे उचित माना जा सकता है यदि यह बड़ी आबादी के लिए सिंचाई और विद्युत जैसे दीर्घकालिक लाभ प्रदान करती है।

सीमाएँ (Limitations) :

- **खुशी या खुशहाली को मापना, उसकी तुलना करना या उसका परिमाणन करना असंभव है।** इसमें भावनाओं और संवेदनाओं, संस्कृति या न्याय जैसी चीजों को शामिल नहीं किया जाता है।
- उपयोगितावाद **अल्पसंख्यकों के कल्याण की उपेक्षा करता है** ।
  - **उदाहरण के लिए,** उपयोगितावादी तर्क राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा या प्रशासन में हिंदी के उपयोग को प्राथमिकता दे सकते हैं। हालाँकि, यह भाषाई अल्पसंख्यकों के अपनी भाषा में शिक्षा प्राप्त करने और समाज में भाग लेने के अधिकारों की अनदेखी करता है।
- उपयोगितावादी नैतिकता में कोई भी **अस्पष्टता नहीं होती है** - या तो कोई काम गलत होता है, या फिर सही होता है।
- यह इस बात की **निश्चितता के साथ भविष्यवाणी नहीं कर सकता** कि हमारे कार्यों के परिणाम अच्छे होंगे या बुरे - क्योंकि हमारे कार्यों के परिणाम भविष्य में सामने आते हैं।
- **न्याय और व्यक्तिगत अधिकारों जैसे मूल्यों को ध्यान में रखना** भी मुश्किल है। **उदाहरण के लिए**, मान लीजिए कि एक अस्पताल में चार लोग हैं, जिनका जीवन अंग प्रत्यारोपण प्राप्त करने पर निर्भर करता है: एक हृदय, फेफड़े, एक गुर्दा और एक यकृत। यदि कोई स्वस्थ व्यक्ति अस्पताल में आता है, तो उसके अंगों को एक जीवन की कीमत पर चार लोगों की जान बचाने के लिए निकाला जा सकता है। यह यकीनन सबसे बड़ी संख्या के लिए सबसे बड़ा लाभ होगा। लेकिन यह न ही एक स्वीकार्य कार्यवाही है और न ही नैतिक कार्यवाही।

कर्तव्यशास्त्र (DEONTOLOGY):

- कर्तव्यशास्त्र नैतिकता की एक **कर्तव्य-आधारित प्रणाली है**, जो यह मानती है कि कुछ कार्य आंतरिक रूप से सही या गलत होते हैं, चाहे उनके परिणाम कुछ भी हों, और नैतिक अभिकर्ताओं का कर्तव्य, नैतिक आदेशों या नियमों का पालन करना है, चाहे उनके परिणाम कुछ भी हों।
- परिणामवाद कार्यों को उनके परिणामों के आधार पर आंकता है, इसके विपरीत **कर्तव्य-सिद्धांत में किसी स्थिति के लाभ और लागत का आकलन करने की आवश्यकता नहीं होती है।**
  - **उदाहरण** – कर्तव्यवादी दृष्टिकोण के अनुसार एक सिविल सेवक को परिणामों के बारे में सोचे बिना दिए गए नियम और विनियमों का पालन करना चाहिए।
- कर्तव्यवाद एक नैतिक सिद्धांत है जो **सही और गलत में अंतर करने के लिए नियमों का उपयोग करता है।** कर्तव्यवाद या कर्तव्यशास्त्र को अक्सर दार्शनिक **इमैनुअल कांट से जोड़ा जाता है।** कांट का मानना था कि नैतिक कार्य सार्वभौमिक नैतिक नियमों का पालन करते हैं, जैसे "**झूठ मत बोलो। चोरी मत करो। धोखा मत दो।**"

सीमाएँ (Limitations) :

- इस सिद्धांत के अनुसार, **मनुष्य के झुकाव, भावनाओं और परिणामों के लिए कोई स्थान नहीं है।** हालाँकि, कुछ स्थितियों में, सद्भाव लाने या जन कल्याण के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता (समानुभूति) की आवश्यकता होती है।
- इसके ऐसे परिणाम हो सकते हैं **जो अधिकांश लोगों को अस्वीकार्य होंगे।**
  - **उदाहरण के लिए** - रोगी की गोपनीयता (नैतिक सिद्धांत) से बंधा हुआ एक डॉक्टर, गोपनीयता की चिंताओं के कारण संक्रामक बीमारी की रिपोर्ट करने से इनकार कर सकता है। हालाँकि, इससे सार्वजनिक स्वास्थ्य को खतरा हो सकता है।
- इस समस्या को हल करने का एक संभावित तरीका **सीमांत कर्तव्यवाद (Threshold Deontology)** नामक एक विचार के माध्यम से हो सकता है। इस विचार के अनुसार, हमें हमेशा नियमों का पालन करना चाहिए जब तक कि आपातकालीन स्थिति न हो, और उस स्थिति में हमें परिणामवादी दृष्टिकोण अपना लेना चाहिए।
  - **उदाहरण के लिए,** अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक अधिकार है (कर्तव्यवाद), लेकिन घृणा फैलाने वाले भाषण हिंसा भड़काते हैं। सीमांत कर्तव्यवाद नुकसान को रोकने के लिए घृणा फैलाने वाले भाषण को प्रतिबंधित करने की अनुमति देता है।

- **नैतिक सापेक्षवाद (Ethical Relativism)** का मानना है कि नैतिक मानक निरपेक्ष नहीं होते बल्कि संस्कृतियों और समाजों में अलग-अलग होते हैं, जो उनके रीति-रिवाजों, परंपराओं और प्रथाओं से प्रभावित होते हैं। उदाहरण के लिए बहुविवाह, बाल श्रम और शराब के सेवन के बारे में अलग-अलग विचार देखने को मिलते हैं।
- **नैतिक सार्वभौमवाद (Ethical Universalism)** का मानना है कि सांस्कृतिक भिन्नताओं के बावजूद, विभिन्न समाजों में सार्वभौमिक नैतिक मूल्य मौजूद हैं, जैसे चोरी, धोखाधड़ी और निजता के उल्लंघन पर प्रतिबंध।

सदाचार नैतिकता (VIRTUE ETHICS)

- नैतिक कार्यों को **कुछ आदर्श गुणों** के अनुरूप होना चाहिए जो हमारी मानवता के पूर्ण विकास में सहायक होते हैं। **उदाहरण के लिए,** न्याय, समानता, करुणा, परोपकारिता, समानुभूति, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, कानून के प्रति सम्मान, बुद्धि, साहस आदि जैसे कुछ गुण मानव समाज के मूल सिद्धांत हैं।
- यह नैतिकता के प्रति **चरित्र-आधारित दृष्टिकोण है जिसे अरस्तू** और अन्य प्राचीन यूनानियों ने विकसित किया । यह **नैतिक चरित्र को समझने और जीने की तलाश है।**
- सदाचार नैतिकता न केवल व्यक्तिगत कार्यों के सही या गलत होने से संबंधित है, बल्कि उन **विशेषताओं और व्यवहारों से भी संबंधित** है जिनके लिए एक अच्छे व्यक्ति को प्रयास करना चाहिए।
  - **उदाहरण के लिए,** भारत में कई डॉक्टरों ने कोविड-19 महामारी के दौरान असाधारण साहस (एक प्रमुख गुण) दिखाया, अपने स्वयं के स्वास्थ्य के लिए जोखिम के बावजूद मरीजों का इलाज किया। उनके कार्यों में मरीज की भलाई को सबसे पहले रखने का गुण समाहित था।
- **अरस्तू** के अनुसार, लोग सदाचारी आदतों को विकसित करके नैतिक चुनौतियों का सामना करते समय सही विकल्प चुन सकेंगे।

सद्गुण और दुर्गुण (Virtue and Vice)

- सद्गुण जीवन के किसी क्षेत्र में **अच्छा** सोचने, महसूस करने और अच्छा कार्य करने की नैतिक रूप से अच्छी प्रवृत्ति है। इसी तरह, **दुर्गुण** नैतिक रूप से बुरा स्वभाव है जिसमें बुरा सोचना, महसूस करना और बुरा कार्य करना शामिल है।

- **उदाहरण के लिए** - 'मानसिक स्वास्थ्य' के बारे में सामान्य चर्चा के प्रयास समानुभूति **(सद्गुण) दर्शाते हैं**, जबकि इसके बारे में सामाजिक कलंक एक **दुर्गुण बना हुआ है।**
- **सद्गुणों के** कुछ उदाहरण साहस, संयम, न्याय, विवेक और उदारता हैं। **दुर्गुणों के कुछ उदाहरण** कायरता, असंयम, अन्याय, अविवेक और स्वार्थ हैं।
- सद्गुण और दुर्गुण हमेशा स्पष्ट नहीं होते। कई बार ऐसा भी हो सकता है कि यह तय करना मुश्किल हो जाए कि कोई विशेष कार्य अच्छा है या बुरा। **उदाहरण के लिए**, क्या किसी बदमाश के सामने खड़ा होना साहस है या लापरवाही? इसका जवाब विशेष परिस्थिति पर निर्भर करता है।

सीमाएँ (Limitations) :

- **विशिष्ट मार्गदर्शन का अभाव:** सदाचार नैतिकता आपको एक अच्छा इंसान बनने के लिए कहती है, लेकिन यह विशिष्ट परिस्थितियों में क्या करना है, इसके लिए स्पष्ट नियम नहीं देती है। आप को इस बात पर आश्चर्य हो सकता है कि "क्या झूठ बोलना भी कभी सद्गुण होता है?"
- **सद्गुणों पर असहमति:** सदगुणों की कोई सर्वमान्य सूची नहीं है। क्या सदगुण माना जाता है यह संस्कृतियों और यहाँ तक कि समाजों में भी भिन्न हो सकता है।
- **परिणामों पर नहीं, बल्कि चरित्र पर ध्यान देना:** सदाचार नैतिकता एक अच्छे चरित्र को विकसित करने पर जोर देती है, लेकिन यह सीधे आपके कार्यों के परिणामों को संबोधित नहीं करती है। यह उन स्थितियों में मुश्किल हो सकता है जहाँ परिणाम महत्त्वपूर्ण हैं।

सापेक्ष नैतिकता (RELATIVE ETHICS)

सापेक्ष नैतिकता इस अवधारणा का विश्लेषण करती है कि नैतिक मानक सार्वभौमिक नहीं होते हैं, बल्कि संस्कृतियों, समाजों और ऐतिहासिक संदर्भों में भिन्न-भिन्न होते हैं।

- **सापेक्ष नैतिकता के मूल सिद्धांत:** सापेक्ष नैतिकता यह मानती है कि नैतिक निर्णय स्वाभाविक रूप से उन सांस्कृतिक, लौकिक और ऐतिहासिक संदर्भों से जुड़े होते हैं जिनमें वे लिए जाते हैं। इससे पता चलता है कि नैतिक मानक विकसित होते हैं और अनुकूलित होते हैं, इस प्रकार नैतिकता का स्वरूप सामाजिक मानदंडों या "लोकाचार (Folkways)" द्वारा निर्धारित होता है।
- **नैतिक विकासक्रम के उदाहरण**
  - सती प्रथा और दास व्यापार कभी भारत में एक पूजनीय परंपरा थी, जो अब प्रतिबंधित है और इनकी व्यापक रूप से निंदा की जाती है।
  - महिला जननांग विच्छेदन, बाल श्रम, अलग-अलग लैंगिक प्रथाएं: विभिन्न संस्कृतियों में इनकी स्वीकृति में काफी भिन्नता है।
- **नैतिक सापेक्षवाद के उदाहरण:**
  - **मृत्युदंड** : संयुक्त राज्य अमेरिका में मृत्युदंड की वैधता विभिन्न राज्यों में अलग-अलग है।
  - **समलैंगिक विवाह:** बदलते सामाजिक मानदंडों को दर्शाते हुए, अमेरिकी संघीय न्यायालय द्वारा 14 राज्यों में इसे वैध बनाया गया।
  - **सांस्कृतिक विविधता की स्वीकृति** : वैश्वीकरण के दौर में नैतिक मूल्य भी पश्चिम से ही निर्धारित हो रहे हैं। सापेक्षवाद सांस्कृतिक विविधता और उसके अंतर्निहित नैतिक मूल्यों को उचित ठहराने में मदद करता है।
- **नैतिक सापेक्षवाद के लिए चुनौतियाँ:** आलोचकों का तर्क है कि दासता या शिशुहत्या जैसी कुछ प्रथाओं को सापेक्षवाद की आड़ में उचित नहीं ठहराया जा सकता। उनका तर्क है कि कुछ नैतिक मानकों को सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सीमाओं से परे होना चाहिए।

संक्षेप में, सापेक्ष नैतिकता इस धारणा को रेखांकित करती है कि नैतिक मानक स्थिर नहीं हैं, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक परिवर्तनों की प्रतिक्रिया में विकसित होते हैं। यह विविध नैतिक दृष्टिकोणों को समझने और उनका सम्मान करने के महत्त्व पर जोर देता है, नैतिक निर्णयों के प्रति अधिक सहिष्णु और खुले विचारों वाले दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है।

सार्वभौमिक नैतिकता

- **सार्वभौमिक नैतिकता के बुनियादी सिद्धांत:** सार्वभौमिक नैतिकता के अनुसार कुछ नैतिक सिद्धांत सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक मतभेदों से परे, सार्वभौमिक रूप से लागू होते हैं। नैतिक सापेक्षवाद के विपरीत, सार्वभौमिक नैतिकता उन नैतिक मूल्यों के अस्तित्व के लिए तर्क देती है जो मानव गरिमा और अधिकारों में निहित हैं।
- **सार्वभौमिक नैतिकता के उदाहरण** :
  - **मानव गरिमा का अधिकार (Right to Human Dignity):** प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे उसकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो, गरिमा के साथ जीने का अंतर्निहित अधिकार है।
  - **पीड़ा की समानता (Equality of Suffering):** शारीरिक पीड़ा को मनुष्यों और जानवरों दोनों के लिए सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त है, जो सभी प्रजातियों में करुणा पर जोर देती है।
  - **निजता संबंधी कानून (Privacy Laws)**: निजता के हनन की सार्वभौमिक रूप से निंदा की जाती है, जो व्यक्तिगत अधिकारों पर वैश्विक सहमति को दर्शाता है।
- **कार्रवाई में सार्वभौमिक नैतिकता (Universal Ethics in Action):** सार्वभौमिक नैतिकता का उदाहरण सार्वभौमिक मानव अधिकारों की अवधारणा है, जो अंतर्निहित मानवीय गरिमाओं की वकालत करती है जिनका दुनिया भर में सम्मान और संरक्षण किया जाना चाहिए। इस दृष्टिकोण ने विश्व स्तर पर इन मूल्यों को बनाए रखने के लिए मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा जैसे अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों और कानून को प्रेरित किया है।

सार्वभौमवाद और सांस्कृतिक सापेक्षवाद

- सार्वभौमवाद का तर्क है कि सांस्कृतिक भिन्नताओं के बावजूद, ऐसे मौलिक नैतिक सिद्धांत मौजूद हैं जो सभी मनुष्यों पर लागू होते हैं। यह इन सिद्धांतों की व्याख्या और प्रयोग में 'सांस्कृतिक विविधता' को स्वीकार करता है लेकिन 'जीवन की पवित्रता' तथा 'स्वतंत्रता और सुरक्षा के अधिकारों' जैसे मूल मूल्यों की सार्वभौमिकता को बनाए रखता है। उदाहरण के लिए,
  - सांस्कृतिक प्रथाओं की परवाह किए बिना, दुनिया भर में मानव शिशुओं की रक्षा करना।
  - चोरी और हत्या आदि का प्रतिषेध।
- इन मानदंडों और प्रथाओं को सामाजिक अस्तित्व के लिए आवश्यक सार्वभौमिक मानदंडों के रूप में देखा जाता है।
- सार्वभौमवाद उन मौलिक नैतिक मूल्यों का समर्थन करता है जो मानव समाज का आधार बनते हैं, जबकि यह स्वीकार करते हुए कि इन मूल्यों की अभिव्यक्ति और समझ विभिन्न संस्कृतियों में काफी भिन्न हो सकती है।
- यह परिप्रेक्ष्य एक संतुलित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है जो सार्वभौमिक नैतिक मानकों को बनाए रखते हुए सांस्कृतिक विशिष्टता का सम्मान करता है, जिसका लक्ष्य अधिक समावेशी और न्यायसंगत वैश्विक समुदाय को बढ़ावा देना है।

नैतिकता के निर्धारक (DETERMINANTS OF ETHICS)

नैतिकता के निर्धारक वे स्रोत हैं जिनसे नैतिक मानक निर्धारित होते हैं। निम्नलिखित कारक/निर्धारक यह निर्धारित करते हैं कि मनुष्य का कार्य अच्छा है या बुरा, नैतिक है या अनैतिक, न्यायसंगत है या अन्यायपूर्ण, स्वीकार्य है या अस्वीकार्य –

- **धर्म और संस्कृति (Religion and Culture):** प्राचीन धार्मिक ग्रंथों के साथ-साथ संस्कृति भी व्यक्ति के नैतिक सिद्धांतों को प्रभावित करती है। संस्कृति उचित और नैतिक व्यवहार के निर्धारक के रूप में कार्य करती है। **उदाहरण के लिए, "अतिथि देवो भवः"** की भारतीय परंपरा पर विचार कीजिए, जिसका अर्थ है "अतिथि भगवान के समान है" और मेहमानों का सम्मान करने की भारतीय संस्कृति पर जोर दिया गया है।
- **अंतःकरण (Conscience)**: अंतःकरण व्यक्ति का सही और गलत के बारे में नैतिक बोध है, जिसे व्यक्ति के व्यवहार के लिए मार्गदर्शक के रूप में देखा जाता है। **उदाहरण**- चौरी चौरा की घटना में हुई हिंसा के बाद गांधीजी ने असहयोग आंदोलन वापस ले लिया था।
- **कानून (Law)**: कानून में अक्सर नैतिक मानकों को शामिल किया जाता है। लेकिन कानून नैतिकता से अलग भी हो सकते हैं, इसलिए हम नैतिकता को कानून के बराबर नहीं मान सकते। **उदाहरण के लिए**, सरकार की असहमति और आलोचना को दबाने के लिए राजद्रोह कानून के दुरुपयोग ने भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बारे में चिंताएँ पैदा की हैं।
- **परिवार और शिक्षक (Family and Teachers)** : कोई भी बच्चा बचपन में एक सफेद कागज के समान होता है। उसके व्यवहार, दृष्टिकोण और मूल्यों को आकार देने में परिवार और शिक्षक सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन कभी-कभी बच्चे परिवार की शिक्षाओं से भटक भी सकते हैं।
- **रोल मॉडल (Role Models):** रोल मॉडल व्यक्तियों के नैतिक मूल्यों को भी प्रभावित कर सकते हैं। **उदाहरण के लिए** - ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में मंच पर पड़े छोटे से राष्ट्रीय ध्वज को उठाने का प्रधानमंत्री मोदी का इशारा राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करने जैसे मूल्यों को बढ़ावा देता है।
- **समय (Time):** समय के साथ-साथ सामूहिक और व्यक्तिगत विचारों का विकास होता है, जो कभी नैतिक था उसे अब अनैतिक माना जा सकता है, और जो कभी अनैतिक था उसे अब नैतिक माना जा सकता है। **उदाहरण के लिए**, 19वीं सदी में दुनिया के कई हिस्सों में दासता का उन्मूलन मानव अधिकारों और स्वतंत्रता के संबंध में नैतिक मानकों में एक महत्त्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है।
- **समाज (Society)** : किसी भी समाज में, ज़्यादातर लोग ऐसे मानकों को स्वीकार करते हैं जो वास्तव में नैतिक होते हैं। लेकिन नैतिकता का मतलब "वह करना नहीं है जो समाज स्वीकार करता है"। समाज में व्यवहार के मानक नैतिक व्यवहार से अलग हो सकते हैं। पूरा समाज नैतिक रूप से भ्रष्ट हो सकता है। **नाज़ी जर्मनी** नैतिक रूप से भ्रष्ट समाज का एक अच्छा उदाहरण है।

निजी और सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता

- नैतिकता हमारे जीवन में एक दिशासूचक की तरह काम करती है, जो यह तय करती है कि हम दूसरों के साथ कैसे व्यवहार करें। यह हमारे करीबी, व्यक्तिगत संबंधों और सार्वजनिक क्षेत्र में हमारे व्यापक परस्पर व्यवहारों दोनों में ही दिखाई देता है।
- निजी संबंधों में नैतिकता विश्वास और सम्मान को बढ़ावा देने पर केंद्रित होती है, जबकि सार्वजनिक नैतिकता निष्पक्षता और जवाबदेही जैसे सिद्धांतों पर जोर देती है।

निजी संबंधों में नैतिकता

- इसका तात्पर्य उन नैतिक मूल्यों से है जिनका पालन व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन में विभिन्न संबंधों जैसे पारिवारिक संबंध, मित्रता आदि को निभाते समय करता है।
- निजी संबंधों के लिए कोई औपचारिक नैतिक/आचारिक मानक नहीं हैं, बल्कि वे अनौपचारिक प्रकृति के होते हैं और व्यक्ति दर व्यक्ति भिन्न होते हैं।
- निजी संबंधों में कुछ **महत्त्वपूर्ण मूल्य निम्नलिखित हैं:**
  - **विश्वास (Trust):** यह किसी भी मजबूत संबंध की नींव है। इसमें ईमानदार होना, विश्वसनीय होना और विश्वास बनाए रखना शामिल है।
  - **सम्मान (Respect):** दूसरों के साथ गरिमा और सम्मान से पेश आना, भले ही आप उनसे असहमत हों। इसमें उनकी सीमाओं और अभिमतों का सम्मान करना भी शामिल है।
  - **ईमानदारी (Honesty):** अपने परस्पर व्यवहार में सच्चाई रखना, भले ही यह मुश्किल हो। इससे विश्वास बढ़ता है और संबंध मजबूत होते हैं।
  - **करुणा और समानुभूति (Compassion and Empathy):** दूसरों की भावनाओं को समझने और उनकी परवाह करने की कोशिश करना। मुश्किल समय में उन्हें सहारा देना और उनके साथ खड़े रहना।
  - **सहिष्णुता (Tolerance):** यह स्वीकार करना कि लोगों की मान्यताएँ और मूल्य अलग-अलग हैं। खुले विचारों वाला बनना और समझौता करने के लिए तैयार रहना।
- **निजी संबंधों में नैतिकता आम तौर पर निम्नलिखित द्वारा निर्देशित होती है:**
  - **व्यक्तिगत गुण:** ईमानदारी और सच्चाई जैसे गुण हमारे व्यक्तिगत संबंधों में नैतिक निर्णय लेने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
  - **धार्मिक मान्यताएँ:** धार्मिक व्यक्तियों के लिए, ईश्वरीय आज्ञाएँ उनके व्यक्तिगत जीवन में नैतिक दिशा-निर्देशों के रूप में कार्य करती हैं, जिनका पालन मोक्ष प्राप्त करने के लिए किया जाता है। (**उदाहरण:** दस आज्ञाएँ (The Ten Commandments) ईसाइयों को परिवार, पड़ोसियों और समाज के साथ उनके व्यवहार में मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।)
  - **सामाजिक प्रभाव:** मूल्य हमारे सामाजिक परिवेश द्वारा भी निर्धारित होते हैं, जिसमें परिवार, मित्र और समग्र रूप से समाज शामिल है। (उदाहरण: जो माता-पिता घर के कामों में हाथ बंटाते हैं और बच्चों के लिए समान अवसरों को बढ़ावा देते हैं, वे लैंगिक समानता के मूल्य को प्रदर्शित करते हैं।)
  - **कानूनी ढाँचा:** कुछ नैतिक सिद्धांत कानूनों और संवैधानिक मूल्यों में निहित हैं। (**उदाहरण:** महिलाओं की मर्यादा का सम्मान करना भारतीय संविधान में निहित एक मौलिक कर्तव्य है।)
- **निजी संबंधों में नैतिकता का महत्त्व:**
  - **चरित्र विकास** : ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, समानता आदि जैसे अच्छे मूल्यों का पालन चरित्र विकास में मदद करता है।
  - **सही निर्णय लेना** : यह हमें विशेष रूप से हितों के टकराव की स्थिति में सही निर्णय लेने में सक्षम बनाता है।
  - **अपूर्णता के प्रति अधिक सहिष्णुता (More Tolerance for Imperfection)**: लोगों में आपसी विश्वास, प्रेम और निर्भरता के कारण निजी संबंधों में अपूर्णता के प्रति अधिक सहिष्णुता हुआ करती थी।

- **बच्चों के लिए नैतिक शिक्षा:** निजी संबंधों में, विशेषकर घर में, नैतिक जीवन जीना बच्चों के व्यवहार को प्रभावित करता है, यह उनके लिए नैतिकता के प्रथम पाठ के रूप में कार्य करता है।
- **सार्वजनिक जीवन में स्वीकार्यता** : व्यक्तिगत संबंधों में नैतिकता व्यक्ति को सार्वजनिक जीवन में अधिक स्वीकार्य बनाती है।

सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता

- सार्वजनिक जीवन वह सब कुछ है जो सार्वजनिक क्षेत्र में स्थित होता है, घटित होता है, तथा अंतःक्रिया करता है, चाहे वह सार्वजनिक स्थानों पर हो या मीडिया के माध्यम से हो।
- सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता में किसी व्यक्ति द्वारा अपने व्यावसायिक जीवन में पारस्परिक व्यवहार और व्यापारिक लेन-देन के संबंध में अपनाए जाने वाले नैतिक मूल्य या नैतिक मानक शामिल होते हैं।

- **सर एम. विश्वेश्वरैया:** उन्होंने मैसूर के दीवान का पद स्वीकार करने से पहले अपने सभी रिश्तेदारों को खाने पर आमंत्रित किया था। उन्होंने उनसे साफ-साफ कह दिया था कि वह इस शर्त पर प्रतिष्ठित पद स्वीकार करेंगे कि उनमें से कोई भी एहसान के लिए उनसे संपर्क नहीं करेगा। आजकल ऐसी बातें सुनने को नहीं मिलतीं। कहा जाता है कि उनके पास मोमबत्तियों के दो सेट हुआ करते थे। एक सेट निजी तौर पर खरीदा गया था जिसका इस्तेमाल वे अपने निजी कामों के लिए करते थे और दूसरा सेट सरकार द्वारा दिया गया था जिसका इस्तेमाल वे केवल सरकारी कामों के लिए करते थे।
- **लाल बहादुर शास्त्री,** प्रधानमंत्री के रूप में एक कपड़ा मिल के दौरे पर थे जब मालिक ने उन्हें महंगी साड़ियाँ देने की पेशकश की, तो शास्त्री जी ने केवल उन्हीं साड़ियों को खरीदने और उनके पैसे चुकाने पर जोर दिया जो वे खरीद सकते थे। उन्होंने अपने बेटे की अनुचित पदोन्नति भी रद्द करवा दी। 1956 में अरियालुर रेल दुर्घटना के बाद, शास्त्री जी ने रेल मंत्री के रूप में नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए प्रधानमंत्री को अपना त्यागपत्र सौंप दिया था।

नोलन समिति: सार्वजनिक जीवन में सात सिद्धांत

सार्वजनिक जीवन में मानकों संबंधी समिति को कभी-कभी नोलन समिति **भी कहा जाता है**। इस समिति ने सार्वजनिक जीवन के निम्नलिखित सात सिद्धांतों को रेखांकित किया है:

- **सत्यनिष्ठा (Integrity)** : यह ईमानदार होने तथा नैतिक और आचारिक सिद्धांतों का निरंतर और बिना किसी समझौते के पालन करने का अभ्यास है। **उदाहरण** - महात्मा गांधी और अब्राहम लिंकन ऐसे अनुकरणीय नेता थे जो अपनी सत्यनिष्ठा के लिए प्रसिद्ध थे। दोनों ही संकट के समय में अपने मूल्यों पर अडिग रहे जैसे लिंकन दासता के उन्मूलन पर अडिग रहे और गांधी अहिंसा के प्रति।
- **वस्तुनिष्ठता (Objectivity)** : इसका मतलब है व्यक्तिगत राय या पूर्वाग्रह के बजाय स्थापित तथ्यों और आंकड़ों के आधार पर निर्णय लेना। **उदाहरण** - निजता के अधिकार जैसे ऐतिहासिक मामलों में निष्पक्ष निर्णय के लिए न्यायमूर्ति डी.वाई. चंद्रचूड़ की प्रतिष्ठा, न्यायपालिका में जनता के विश्वास को मजबूत करती है।
- **जवाबदेही (Accountability)** : सार्वजनिक पद-धारक अपने निर्णयों और कार्यों के लिए जनता के प्रति जवाबदेह होते हैं और उन्हें अपने पद के लिए उचित जाँच के लिए तैयार रहना चाहिए। **उदाहरण** - प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के अधीन रेल मंत्री के रूप में, लाल बहादुर शास्त्री ने आंध्र प्रदेश में एक बड़ी रेल दुर्घटना के बाद अपना त्यागपत्र दे दिया था।
- **खुलापन (Openness):** सार्वजनिक पद-धारकों को अपने सभी निर्णयों और कार्रवाइयों के बारे में यथासंभव खुलापन रखना चाहिए। उन्हें अपने निर्णयों के लिए कारण बताने चाहिए और जानकारी को केवल तभी रोकना चाहिए जब व्यापक जन हित में ऐसा करना स्पष्ट रूप से आवश्यक हो। **उदाहरण** - पूर्व नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक विनोद राय ने 2G घोटाले का पर्दाफाश करके CAG कार्यालय को खुलेपन और पारदर्शिता के लिए एक शक्तिशाली बल में परिवर्तित कर दिया।
- **ईमानदारी (Honesty):** इसे "भरोसेमंद, वफ़ादार, निष्पक्ष और ईमानदार होने" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। एक ईमानदार व्यक्ति छल-कपट से मुक्त होता है, सच्चा और ईमानदार होता है और झूठ नहीं बोलता। **उदाहरण** - एक कर सलाहकार अपने ग्राहक को सभी आय घोषित करने के लिए प्रोत्साहित करता है, भले ही इससे उच्च कर लग सकता हो।
- **नेतृत्व (Leadership):** सार्वजनिक पद पर आसीन लोगों को नेतृत्व और उदाहरण प्रस्तुत करके इन सिद्धांतों को बढ़ावा देना चाहिए और उनका समर्थन करना चाहिए। उदाहरण के लिए, IPS अधिकारी हर्ष पोद्दार की नवोन्मेषी पुलिसिंग रणनीतियों ने उन्हें व्यापक प्रशंसा दिलाई है। उनकी अनूठी 'युवा संसद चैम्पियनशिप (**Youth Parliament Championship**)' ने महाराष्ट्र में अपराध और आतंक के खिलाफ लगभग दो लाख युवा नेताओं को तैयार किया।

"नेता वह व्यक्ति होता है जो रास्ता जानता है, उस रास्ते पर चलता है और दूसरों को रास्ता दिखाता है " - जॉन सी मैक्सवेल

- **निःस्वार्थता (Selflessness) :** सार्वजनिक पद पर आसीन लोगों को केवल जनहित की दृष्टि से ही निर्णय लेने चाहिए। उन्हें अपने, अपने परिवार या अपने मित्रों के लिए वित्तीय या अन्य भौतिक लाभ प्राप्त करने के लिए निर्णय नहीं लेना चाहिए। उदाहरण के लिए, दिल्ली में, फायर फाइटर अमित कुमार ने जलती हुई इमारत में फंसे निवासियों को बचाते हुए अपनी जान गंवा दी, उन्होंने आत्म-रक्षा से ज़्यादा जान बचाने को प्राथमिकता दी।

ये सात सिद्धांत सार्वजनिक पद धारकों के लिए नैतिक मानकों के सबसे व्यापक विवरण हैं तथा प्रत्येक लोकतंत्र में सामान्य रूप से लागू होते हैं।

सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता का महत्त्व

सार्वजनिक संबंध वे होते हैं जो किसी के पेशे (जैसे सिविल सेवा) या समाज में दर्जे (जैसे प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति) का परिणाम होते हैं। सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता किसी व्यक्ति के कार्यों, निर्णयों और व्यवहार के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में काम करती है।

- **नैतिक निर्णय लेना (Ethical Decision-Making):** एक मजबूत नैतिक दिशा-निर्देश विकसित करने से लोक सेवकों को नैतिक दुविधाओं से निपटने और हितों के टकराव से बचने में मदद मिलती है।
- **समानता और निष्पक्षता (Equality and Fairness) :** भारत के संविधान का अनुच्छेद 14 सभी नागरिकों के लिए समान व्यवहार पर जोर देता है। लोक सेवकों को निष्पक्षता बनाए रखनी चाहिए और पक्षपात, भाई-भतीजावाद या ऐसी अन्य स्थितियों से बचना चाहिए जो निष्पक्षता से समझौता कर सकती हैं। यह "जनता दरबार" जैसी प्रथाओं में स्पष्ट दिखाई पड़ता है, जहाँ सभी को बिना किसी पक्षपात के अपनी चिंताएँ व्यक्त करने का अवसर मिलता है।
- **पारदर्शिता और भरोसा (Transparency and Trust):** नैतिक सार्वजनिक संबंधों के लिए सभी सूचनाओं को संभालने में पारदर्शिता की आवश्यकता होती है, चाहे वे कितनी भी संवेदनशील क्यों न हों। तथ्य और कल्पना के बीच अस्पष्टता जनता के भरोसे को कमज़ोर करती है और संस्था की विश्वसनीयता को नुकसान पहुँचाती है।

- **संतुलित और न्यायसंगत निर्णय (Balanced and Equitable Decisions):** नैतिक निर्णय लेने से सभी के लिए अधिक निष्पक्ष और संतुलित परिणाम प्राप्त होते हैं। इससे जनता का विश्वास बढ़ता है और हितधारकों के साथ संबंध मजबूत होते हैं। इस विश्वास को बनाने के लिए आचार संहिता का पालन करना महत्त्वपूर्ण है।
- **सम्मानजनक व्यवहार (Respectful Interactions):** हर किसी के साथ बुनियादी शिष्टाचार से पेश आना लोगों में अपनेपन की भावना को बढ़ावा देता है। उदाहरण के लिए, नागरिकों के साथ प्रशांत नायर (IAS) के सम्मानजनक व्यवहार के कारण उन्हें "कलेक्टर ब्रो (Collector Bro)" की संज्ञा दी गई है।

सार्वजनिक और निजी नैतिकता के बीच संबंध

निजी संबंध	सार्वजनिक संबंध
• निजी संबंधों में लोग आत्मीयता, वफादारी, प्रेम और स्नेह की अपेक्षा करते हैं। • कर्तव्य स्वैच्छिक, स्व-निर्धारित और अनौपचारिक होते हैं। यदि आप असफल हो जाते हैं, तो भी संबंध बरकरार रह सकता है। • इसमें मूल्य प्रणाली में समानता वाले लोग शामिल होते हैं। • **उदाहरण** - अपने मित्रों या प्रियजनों के साथ अच्छे-बुरे समय में खड़े रहना, अपने बच्चों को अच्छी सुविधाएँ उपलब्ध कराना आदि।	• सार्वजनिक संबंधों में सम्मान, ध्यान (Attention), शक्ति, अधिकार और भौतिक लाभ की अपेक्षा की जाती है। • कर्तव्य बाहरी तौर पर निर्धारित किए जाते हैं और औपचारिक रूप से संहिताओं में उल्लिखित होते हैं। पालन न करने पर आमतौर पर संबंध खत्म हो जाता है। • हमें ऐसे लोगों से निपटना पड़ता है जिनके स्वभाव बिल्कुल अलग होते हैं। • **उदाहरण** - अखिल भारतीय सिविल सेवा आचरण नियम।

निजी और सार्वजनिक दोनों जीवन की पृथकता को सुनिश्चित करने के विकल्प:

- **चयनात्मक प्रकटीकरण (Selective disclosure):** सार्वजनिक स्थानों पर केवल आवश्यक व्यक्तिगत जानकारी ही साझा करना।
- **सहकर्मियों के साथ सीमाएँ (Boundaries with colleagues):** अपने सहकर्मियों के साथ अत्यधिक व्यक्तिगत विवरण साझा करने से बचना।
- **समय प्रबंधन (Time management):** कार्य प्रबंधन के लिए विशिष्ट समय निर्धारित करना और व्यक्तिगत समय में कार्य के हस्तक्षेप से बचना।
- **दोहरे जीवन से बचना (Double life avoidance):** ऐसी गतिविधियों में शामिल नहीं होना जो आपकी पेशेवर छवि के विपरीत हों।
- **खुला संचार (Open communication):** मित्रों, परिवार और सहकर्मियों के साथ निजता की अपेक्षाओं पर चर्चा करना।

निजी और सार्वजनिक दोनों जीवन में स्पष्ट विभाजन क्यों संभव नहीं ?

निजी जीवन का व्यक्ति के सार्वजनिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है और इस प्रकार, निम्नलिखित कारणों से सार्वजनिक और निजी संबंधों में स्पष्ट विभाजन संभव नहीं है :

- निजी जीवन अक्सर व्यक्ति के काम को प्रभावित करता है और जीवन के सार्वजनिक क्षेत्रों में उसकी भूमिका को प्रभावित करता है। **उदाहरण के लिए**, यदि कोई व्यक्ति अपनी विलासितापूर्ण निजी जीवनशैली के कारण दिवालिया हो जाता है, तो वह भारत में सार्वजनिक पद धारण करने के लिए नैतिक रूप से अयोग्य है। क्योंकि यदि ऐसा आर्थिक रूप से परेशान व्यक्ति किसी सार्वजनिक पद पर है, तो उसके रिश्वत लेने की संभावना अधिक होती है।
- निजी संबंधों में नैतिकता सार्वजनिक संबंधों को मानवीय बनाने में मदद करती है और व्यक्ति की नैतिक प्रणाली के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- ईमानदारी, सम्मान, समानुभूति, विश्वास, समानता और दक्षता आदि जैसे कुछ मूल्य पेशेवर और निजी दोनों क्षेत्रों में हमारे कार्यों को समान रूप से निर्देशित करने वाले माने जाते हैं।

सार्वजनिक और निजी नैतिकता के बीच का द्वंद्व जटिल चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। हालाँकि ये दोनों क्षेत्र अलग-अलग हैं, लेकिन ये परस्पर अनन्य नहीं हैं। किसी व्यक्ति के निजी जीवन में नैतिक आचरण अक्सर सार्वजनिक भूमिकाओं में व्यवहार का आधार बनता है, और जब प्रत्येक क्षेत्र में निहित मूल्य आपस में टकराते हैं तो संघर्ष उत्पन्न हो सकता है। इन दो क्षेत्रों के बीच का परस्पर संबंध ही किसी व्यक्ति की समग्र नैतिक सत्यनिष्ठा को आकार देता है।

निष्कर्ष

नैतिकता जटिल परिस्थितियों से निपटने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है। हम नैतिक सिद्धांतों और उनके अनुप्रयोगों को समझकर, ऐसे सुविचारित निर्णय ले सकते हैं जो निष्पक्षता, सम्मान और स्वयं तथा दूसरों की भलाई को बढ़ावा देते हैं। यह नैतिक रूपरेखा हमें अधिक न्यायपूर्ण और जिम्मेदार दुनिया बनाने के लिए सशक्त बनाती है।

आचार-विचार (MORALS)

- MORAL शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द **मोरालिस (moralis)** (दूसरे शब्द **मोस (Mos) से व्युत्पन्न**) से हुई है, जिसका अर्थ है **"पारंपरिक रीति-रिवाज (Traditional customs)"।**
- आचार-विचार अनिवार्य रूप से दिशा-निर्देश हैं जिनका उपयोग लोग सही और गलत में अंतर करने के लिए करते हैं। वे एक आंतरिक दिशासूचक की तरह काम करते हैं, जो हमें जटिल परिस्थितियों से निपटने और हमारे मूल्यों के अनुरूप विकल्प चुनने में मदद करते हैं। यह सामान्यतः नैतिकता के प्रतिमानों पर आधारित होते हैं, इसीलिए इनका प्रयोग कई बार नैतिकता के संदर्भ में भी किया जाता है। **उदाहरण के लिए,** हमेशा सच बोलना, बड़ों का सम्मान करना, गरीबों की मदद करना आदि जैसी मान्यताएँ व्यक्तियों में नैतिकतावादी व्यवहार को बढ़ावा देती हैं।
- नैतिक संहिताएँ स्थिर नहीं होतीं। जैसे-जैसे समाज बदलता है और नए विचार सामने आते हैं, वैसे-वैसे सही और गलत के बारे में हमारी समझ बदल सकती है। अतीत में जो अनैतिक माना जाता था, आज उसे नैतिक माना जा सकता है, और अतीत में जो नैतिक माना जाता था, आज उसे अनैतिक माना जा सकता है।
  - **उदाहरण के लिए**, एक समय कई संस्कृतियों में स्वीकार्य मानी जाने वाली **दास प्रथा की** अब सब जगह निंदा की जाती है।
  - इसी तरह, कई समाजों में **महिलाओं को वोट देने और संपत्ति रखने के अधिकार से वंचित रखा गया था**। आज, लैंगिक समानता एक व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त नैतिक सिद्धांत है।

आचारिक रूप से नैतिक होना क्यों आवश्यक ?

- **एकजुट समाज के लिए सामाजिक ससंजक (Social Glue for a Cohesive Society):** नैतिकता (Morality) सामाजिक ससंजक की तरह काम करती है, सहिष्णुता को बढ़ावा देती है और विविध दृष्टिकोणों को स्वीकार करती है। इससे संघर्ष कम होता है और एक शांतिपूर्ण, स्थिर समाज को बढ़ावा मिलता है जहाँ हर कोई महसूस करता है कि वह उसका हिस्सा है।

- उदाहरण के लिए, एक सिविल सेवक को ईमानदारी और सत्यनिष्ठा को महत्त्व देना चाहिए, उसे हमेशा सच बोलने और नैतिक सिद्धांतों को बनाए रखने के लिए मार्गदर्शन करना चाहिए, भले ही इसके लिए व्यक्तिगत परिणाम भुगतना हो। यह मूल्य व्यक्ति के सही और गलत की भावना के लिए आंतरिक है, चाहे सामाजिक मानदंड या दबाव कुछ भी हों।
- ये **व्यक्तिगत मान्यताएँ हैं जो लोगों को** किसी न किसी तरीके से कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं। ये मूल्य आचारिक/नैतिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, राजनीतिक मूल्य, सामाजिक या सौंदर्य संबंधी मूल्य आदि हो सकते हैं।

मूल्यों के प्रकार

- **सापेक्ष और निरपेक्ष मूल्य (Relative and Absolute Values)**:
  - **सापेक्ष मूल्य** लोगों के बीच और बड़े पैमाने पर विभिन्न संस्कृतियों के लोगों के बीच भिन्न-भिन्न होते हैं। **उदाहरण** - भौतिकवादी मूल्य व्यक्तिगत और समाज विशिष्ट होते हैं।
  - **निरपेक्ष मूल्य को** दार्शनिक रूप से निरपेक्ष और व्यक्तिगत एवं सांस्कृतिक विचारों से स्वतंत्र मूल्य के रूप में वर्णित किया जा सकता है, साथ ही इस बात से भी स्वतंत्र होता है कि इसे जाना या समझा जाता है या नहीं। **उदाहरण** - अहिंसा, समानता, गैर-भेदभाव आदि।
- **आंतरिक और बाह्य मूल्य (Intrinsic & Extrinsic Values):**
  - आंतरिक मूल्य वह चीज़ है जिसका अपने आप में मूल्य होता है, जिसमें आंतरिक अर्थ होता है, जिसे पहचाना जा सकता है। **उदाहरण** – मित्रों और परिवार से जुड़ाव महसूस करना, दूसरों की परवाह करना, स्वयं के साथ सहज होना आदि।
  - बाह्य मूल्य से तात्पर्य उन मूल्यों से है जो स्वाभाविक रूप से मूल्यवान नहीं होते हैं और उनके प्रकटन के आधार पर उनका मूल्यांकन किया जाता है। **उदाहरण** - धन कमाने के लिए प्रयास करना, भौतिक सफलता के लिए प्रयास करना, अपनी छवि के बारे में चिंतित होना आदि।
- **संरक्षित मूल्य (Protected Values)**: यह वह मूल्य है जिसे कोई व्यक्ति त्यागने को तैयार नहीं होता, चाहे ऐसा करने से उसे कितना भी लाभ क्यों न हो। **उदाहरण** - कुछ लोग किसी दूसरे व्यक्ति को मारने के लिए तैयार नहीं हो सकते, भले ही इसका परिणाम कई अन्य व्यक्तियों को बचाना हो।
- **पवित्र मूल्य (Sacred Values):** कुछ मूल्यों को पवित्र माना जाता है और उन पर विश्वास करने वालों के लिए नैतिक कर्तव्यादेश (Moral imperatives) हैं। पवित्र मूल्यों से शायद ही कभी समझौता किया जाएगा क्योंकि उन्हें कर्तव्यों के रूप में माना जाता है। **उदाहरण** - कुछ लोगों के लिए उनका राष्ट्र ध्वज एक पवित्र मूल्य का प्रतिनिधित्व कर सकता है, लेकिन दूसरों के लिए वह ध्वज सिर्फ कपड़े का एक टुकड़ा हो सकता है।
- **व्यक्तिगत एवं सामुदायिक मूल्य (Personal & Community Values):** वे मूल्य जो व्यक्ति द्वारा अकेले निर्धारित किए जाते हैं, चाहे उसके सामाजिक संबंध कुछ भी हों, उन्हें **व्यक्तिगत मूल्य कहा जाता है**। **उदाहरण** - श्रम की गरिमा, संवेदनशीलता, स्वच्छता, विनम्रता, ईमानदारी, आदि।
  - वे मूल्य जो पूरे समुदाय में माने जाते हैं, **सामुदायिक मूल्य कहलाते हैं। उदाहरण** - बड़ों की देखभाल और सम्मान करना।

मूल्यों का महत्त्व

- **मानव व्यवहार का मार्गदर्शन** : मूल्य वे सिद्धांत और मौलिक दृढ़निश्चय हैं जो व्यवहार के लिए सामान्य मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं।
- **अच्छे जीवन के लिए आंतरिक संदर्भ** : व्यक्तिगत मूल्य अच्छे, लाभकारी, महत्त्वपूर्ण, उपयोगी, सुंदर, वांछनीय और रचनात्मक कार्य के लिए एक आंतरिक संदर्भ प्रदान करते हैं।
- **सही और गलत में अंतर करते हैं** : सभी मूल्य प्रभावी, संज्ञानात्मक और दिशात्मक पहलू हैं, वे हमें सही और गलत का निर्णय लेने में हमारी प्राथमिकताओं को निर्धारित करने में मार्गदर्शन करते हैं।
- **नैतिक निर्णय लेने में प्रेरक शक्ति** : नैतिक निर्णय लेने में मूल्यों को सार्वभौमिक रूप से प्रेरक शक्ति के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- **लक्ष्यों की पहचान** : मूल्यपरक शिक्षा (Value education) हमें अपनी इच्छाओं और लक्ष्यों की सही पहचान करने में मदद करती है, साथ ही उन्हें प्राप्त करने के तरीके भी बताती है।

नीतिशास्त्र, नैतिकता और मूल्य (ETHICS, MORALITY AND VALUES)

- सभी नीतिशास्त्रीय तत्त्व और आचार-विचार मूल्य हैं लेकिन सभी मूल्य नीतिशास्त्रीय नहीं हैं, जैसे -
  - **बहादुरी** एक मूल्य है, लेकिन यह नीतिशास्त्रीय तत्त्व नहीं है और जो लोग बहादुर नहीं हैं उन्हें अनैतिक नहीं माना जा सकता।
  - **समय की पाबंदी** एक मूल्य है, साथ ही नीतिशास्त्रीय तत्त्व भी है।
  - **कड़ी मेहनत** एक मूल्य है, लेकिन नीतिशास्त्रीय तत्त्व नहीं है।
- **व्यक्तिगत मूल्यों, नैतिकता और पेशेवर नीतिशास्त्र के बीच** भी द्वन्द्व हो सकता है।
  - **उदाहरण के लिए**, एक शाकाहारी डॉक्टर का उदाहरण लें जो **अहिंसा के मूल्य को बढ़ावा देता है** और मानता है कि मांस खाना **नैतिक रूप से गलत है। हालाँकि, उसका पेशेवर नीतिशास्त्र** रोगी की भलाई के लिए सभी उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने का समर्थन कर सकता है, जिसमें संभवतः पशुओं से बनने वाली दवाएँ भी शामिल हैं।

भ्रष्ट व्यवस्था में ईमानदारी बनाए रखने के साधनः

- **अपने मूल्यों पर स्थिरता:** सत्यनिष्ठा व्यक्तिगत निर्णय से शुरू होती है। ईमानदार रहना, क्योंकि आप इसमें विश्वास करते हैं, डर या दबाव के कारण नहीं।
- **सत्यवादिता : अपने** वरिष्ठों और अधीनस्थों के सामने अपनी ईमानदार राय रखने का साहस रखना। अपने सिद्धांतों के आधार पर कठिन निर्णय लेने का साहस रखना।
- **त्यागशीलता:** ईमानदारी के प्रतिकूल परिणाम भी हो सकते हैं। नौकरी में संभावित परिवर्तन के लिए तैयार रहना। याद रखना कि, स्वच्छ अंतःकरण ही सच्ची संतुष्टि देता है।
- **बदलाव लाना:** जिस ईमानदारी की आप वकालत करते हैं, उसे अपनाकर दूसरों को प्रेरित करना। वह उदाहरण बनना जो आप देखना चाहते हैं।
- **दृढ़ रहना:** सत्य, सत्य ही रहता है, भले ही इसके बार में कुछ लोग ही विश्वास करते हों। सत्यनिष्ठा की आवाज़ बनने का साहस करना, भले ही आप अकेले खड़े हों।
- **उत्तरदायित्वपूर्णता :** जिम्मेदारी से पीछे न हटना। एक ऐसा नेतृत्वकर्ता बनना जो मुद्दों का सीधे समाधान करे तथा स्वयं को और दूसरों को जवाबदेह ठहराए।

मूल्यों के विकास में परिवार की भूमिका

- "स्व-निर्मित व्यक्ति (Self-made man) जैसी कोई चीज़ नहीं होती। हम हज़ारों अन्य लोगों से मिलकर बने होते हैं।" *- जॉर्ज मैथ्यू एडम्स*
- "एक आदमी आमतौर पर अपने सबसे करीब पाँच लोगों से मिलकर बनता है।" *-जिम रोहन*

- **सामाजिक संस्था** : परिवार एक सामाजिक संस्था है जिसमें समान मान्यता, धर्म, रीति-रिवाज, संस्कृति, भाषा और जीवन शैली का बंधन होता है। यह विरासत और परंपराओं को पिछली पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक विरासत के रूप में आगे बढ़ाता है।
- **बच्चों के लिए मूल्य सीखने की पहली पाठशाला** : परिवार और माता-पिता बच्चों के लिए मूल्य सीखने की पहली पाठशाला के रूप में कार्य करते हैं। ईमानदारी, सच्चाई जैसे मूल्य उनके द्वारा बच्चों को दिए जाते हैं। **उदाहरण** के लिए, माता-पिता अपने बच्चों को किराने का सामान खरीदने का बजट बनाने में शामिल करते हैं, जिससे वित्तीय जिम्मेदारी और ईमानदारी बढ़ती है।
- **परिवार द्वारा सीखने का एक अनौपचारिक तरीका प्रदान करना**: प्रेम, करुणा, आत्म-त्याग तथा साझाकरण और देखभाल करने के मूल्य एक बच्चे के भीतर अंतर्निहित रूप से विकसित होते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** अपने मित्रों के साथ अपने लंच बॉक्स को साझा करने से उनमें दान और भाईचारे की भावना विकसित होती है।
- **बच्चों के लिए आदर्श**: माता-पिता और परिवार के सदस्य बच्चों के लिए आदर्श होते हैं और वे अक्सर उनके कार्यों, व्यवहार की नकल करते हैं। **उदाहरण** - यदि परिवार के सदस्य महिलाओं के साथ समान व्यवहार करते हैं और उनका सम्मान करते हैं, तो बच्चे के द्वारा भी भविष्य में ऐसा ही करने की संभावना होती है।
- **जरूरी भावनात्मक सहायता प्रदान करना:** जैसे कि बच्चे की देखभाल करना और उसे ऐसे नकारात्मक विचारों से बाहर निकलने के लिए परामर्श देना। उदाहरण - काम पर तनावपूर्ण दिन के बाद जीवनसाथी आराम से गले लगाता/लगाती है।
- **सांस्कृतिक संचरण में दादा-दादी की भूमिका : दादा-दादी पारिवारिक परंपराओं को संरक्षित करते हैं, मूल्यों और रीति-रिवाजों को आगे बढ़ाते हैं। उनकी जीवन की समझ माता-पिता के मार्गदर्शन की पूरक होती है, अद्वितीय दृष्टिकोण प्रदान करती है। वे अंतर-पीढ़ीगत बंधन (Intergenerational bonding)** भी प्रदान करते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** एक बच्चा अक्सर अपनी क्षेत्रीय भाषा में संवाद करना सीखता है क्योंकि वह अपने दादा-दादी के साथ अपनी मातृभाषा में संवाद करता है।

मूल्यों के विकास में शैक्षिक संस्थाओं की भूमिका

- "बुद्धि और चरित्र - यही शिक्षा का सच्चा उद्देश्य है।" *-मार्टिन लूथर किंग*
- **"मूल्यों के बिना शिक्षा, चाहे वह कितनी भी उपयोगी क्यों न हो, मनुष्य को** अधिक चतुर शैतान बनाती है।" *-सी.एस. लुईस*
- "मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि किसी राष्ट्र को भ्रष्टाचार मुक्त और सुंदर मनों वाला बनना है, तो उसमें समाज के तीन प्रमुख लोग बदलाव ला सकते हैं। वे हैं पिता, माता और शिक्षक।" *-एपीजे अब्दुल कलाम*

शिक्षा को बच्चों में मूल्यों को विकसित करने का सबसे शक्तिशाली साधन माना जाता है। स्कूल एक ऐसी जगह है जहाँ जीवन के प्रारंभिक वर्षों में व्यवस्थित शिक्षा मिलती है जो बच्चे को समाज में अपने व्यवहार को विनियमित करने का तरीका सीखने में सक्षम बनाती है।

- **मूल्यों की नींव का निर्माण करना:** पूरे इतिहास में, शिक्षा मूल्य प्रणाली पर आधारित रही है, जो शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक कल्याण में वृद्धि को बढ़ावा देती है।
  - **उदाहरण के लिए,** कई स्कूल सामुदायिक सेवा परियोजनाओं का आयोजन करते हैं जैसे समुद्र तट की सफाई के अभियान, अनाथालयों में स्वयंसेवा करना या वृक्षारोपण पहल। इससे समानुभूति, सामाजिक जिम्मेदारी और समाज को वापस देने की भावना को बढ़ावा मिलता है।
- **पाठ्यक्रम और दर्शन के माध्यम से नैतिक शिक्षा:** स्कूल के पाठ्यक्रम नैतिक दुविधाओं पर पाठों और नैतिक दर्शन (Moral philosophy) जैसे अलग विषय को शामिल करके नैतिक विकास को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे सकते हैं। इन पाठों में निम्नलिखित को शामिल किया जा सकता है:
  - **विश्व इतिहास:** फ्रांसीसी क्रांति - स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व।
  - **आधुनिक इतिहास** : गांधीजी की प्रिटोरिया तक की ट्रेन यात्रा - अन्याय के खिलाफ खड़े होना।
  - **साहित्य**: यह हमें किसी युग के मानव स्वभाव और प्रचलित सामाजिक मूल्यों को समझने में मदद करता है।
- **खेल भावना और टीम भावना:** छोटी उम्र में विभिन्न खेलों में भाग लेने से छात्रों में टीम भावना और खेल भावना जैसे मूल्यवान कौशल विकसित करने के अवसर मिलते हैं।
- **शिक्षा के माध्यम से समग्र विकास:** शिक्षा विभिन्न संस्कृतियों के बीच करुणा, सच्चाई और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व जैसे गुणों को बढ़ावा देकर एक अच्छे व्यक्तित्व को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। **उदाहरण के लिए,** स्कूल छात्र समूहों को **दादागीरी विरोधी अभियान (Anti-bullying campaigns)** आयोजित करने के लिए सशक्त बना सकते हैं। ये पहलें सभी के लिए सम्मान को बढ़ावा देती हैं और छात्रों को दादागीरी की स्थितियों में हस्तक्षेप करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।
- **सामाजिक नियंत्रण** : स्कूलों में आज्ञाकारिता, सम्मान और अनुशासन जैसे मूल्य सिखाए जाने चाहिए। स्कूल बच्चों को अच्छे छात्र, उत्पादक भावी कर्मचारी और कानून का पालन करने वाले नागरिक बनने के लिए प्रोत्साहित करके एकरूपता को बढ़ावा देते हैं।

मूल्य शिक्षा के लिए सिफारिशें

- "स्कूल प्रणाली में एक गंभीर दोष यह है कि इसमें सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा के प्रावधान का अभाव है।" - *कोठारी आयोग (1964-66)।*
- "छात्रों को उनके शैक्षिक जीवन के प्रारंभिक चरण से ही सच्चे नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए।" - *धार्मिक और नैतिक शिक्षा संबंधी श्री प्रकाश समिति।*

- **मूल्य-आधारित शिक्षा** : मूल्य शिक्षा को शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा बनाना, रोजमर्रा के कक्षा-शिक्षण में मूल मानवीय मूल्यों पर जोर देना।
- **खेल गतिविधियों के माध्यम से सीखना:** शिक्षक निष्पक्ष खेल, ईमानदारी, सहयोग और साहस जैसे मूल्यों को विकसित करने के लिए आकर्षक खेलों का उपयोग कर सकते हैं। **उदाहरण के लिए,** शिक्षक परीक्षा में नकल, स्कूलों

में दादागीरी आदि से संबंधित केस स्टडी प्रस्तुत कर सकते हैं। छात्रों में वाद-विवाद को प्रोत्साहित करने से समालोचनात्मक चिंतन और नैतिक निर्णय लेने को बढ़ावा मिलता है।

- **मूल्य शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी:** भविष्य के नेताओं को प्रौद्योगिकी के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों की संतुलित समझ प्रदान करना। उदाहरण के लिए, बच्चों में समानुभूति और विविध संस्कृतियों की समझ विकसित करने के लिए वर्चुअल रियलिटी के अनुभवों का उपयोग करना।
- **नकारात्मक प्रभावों को चुनौती देना:** तर्कसंगत सोच और सकारात्मक मूल्यों को बढ़ावा देकर लैंगिक पक्षपात, घृणा या जातिवाद जैसे पूर्वाग्रहों का प्रतिकार करना।
- **शिक्षक रोल मॉडल के रूप में:** शिक्षक नैतिक आचरण के उच्च मानदंड स्थापित करते हैं, ज्ञान के प्रसारक और चरित्र निर्माणकर्ता के रूप में कार्य करते हैं।

मूल्यों के विकास में समाज की भूमिका

- समाज **अनौपचारिक शिक्षा का स्थान है** जो मूलभूत नैतिक मूल्यों को व्यक्ति के मन में बिठाता है तथा समुदाय के सदस्यों के रूप में **व्यक्तियों के संपूर्ण व्यक्तित्व का पोषण करता है।**
- समाज **जीवन-पर्यन्त सीखने के प्रति प्रेम को बढ़ावा दे सकता है** जो शिक्षा से परे तक जाता है। समालोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करने, नैतिक दुविधाओं पर खुली चर्चा करने और विविध दृष्टिकोणों से परिचित कराने से व्यक्तियों में मजबूत नैतिक तर्क कौशल विकसित करने में मदद मिलती है।
- जब व्यक्ति अपने समुदायों में सहभागिता करते हैं, तो उनमें दूसरों के प्रति **जिम्मेदारी और समानुभूति की भावना विकसित होती है।** यह स्वयंसेवा, सामाजिक न्याय संबंधी पहलों या स्थानीय शासन में भागीदारी के माध्यम से भी हो सकता है।

- **समाज की रचनात्मक भूमिका**: समाज किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। वह नैतिक मूल्यों को व्यापक रूप से बनाए रखकर, व्यक्तियों को नैतिक बनने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। **उदाहरण के लिए,** सत्य, अहिंसा और करुणा जैसे **नैतिक धार्मिक मूल्यों को** बनाए रखने वाले समाज **सहिष्णुता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा देते हैं।**
- **समाज की हानिकारक भूमिका**: इसी तरह, समाज अपराध को एक उप-सांस्कृतिक परिघटना के रूप में विकसित करने में निर्णायक भूमिका निभा सकता है। यदि समाज अनैतिक व्यवहार/कृत्यों को अस्वीकार नहीं करता है, तो वह समाज में नैतिकता के मानकों को कम कर सकता है और इसके परिणामस्वरूप आपराधिक गतिविधियों में वृद्धि हो सकती है। **उदाहरण के लिए**, बुनियादी सेवाओं के लिए छोटी सी रिश्वत की स्वीकृति भी **भ्रष्टाचार की संस्कृति को मजबूत करती है** जो संस्थाओं में विश्वास को खत्म करती है।

- समाज **नैतिक मूल्यों को आत्मसात कराने में मदद करता है। उदाहरण के लिए,** स्वच्छता और पर्यावरणवाद को प्राथमिकता देने वाला समाज अपने सदस्यों को अपने आस-पास के वातावरण को साफ-सुथरा बनाए रखने के लिए बाध्य करेगा।
- समाज सामूहिक संघर्ष के माध्यम से जाति-पाति जैसी **सामाजिक कुरीतियों को दूर करने** में प्रमुख भूमिका निभाता है।

मूल्यों को आकार देने में समाज का महत्त्व

- **विविधता को बढ़ावा देना:** समाज विभिन्न प्रकार के मूल्यों को प्रोत्साहित करता है, जिससे व्यक्ति का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित होता है। यह विविधता व्यक्तियों को विकल्प और उन मूल्यों को चुनने की स्वतंत्रता भी प्रदान करती है जो उनके साथ प्रतिध्वनित होते हैं।
- **सांस्कृतिक मानदंड और परंपराएँ:** पीढ़ियों से चले आ रहे साझा रीति-रिवाज़ और प्रथाएँ सामाजिक मूल्यों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करती हैं। (उदाहरण के लिए, छुट्टियों का उत्सव)
- **सामंजस्य के लिए साझा मूल्य:** समाज ऐसे मूल्यों को बढ़ावा देता है जो सदस्यों को स्थापित परंपराओं और रीति-रिवाजों का सम्मान करने के लिए प्रोत्साहित करके स्थिरता और सद्भाव को बढ़ावा देते हैं, जिससे साझा पहचान की भावना पैदा होती है।
- **रोल मॉडल और विश्वसनीयता:** समाज में कुछ व्यक्ति, जैसे शिक्षक, नेता, मशहूर हस्तियाँ और धार्मिक हस्तियाँ, अपनी विश्वसनीयता के कारण महत्त्वपूर्ण प्रभाव रखते हैं। उनके मूल्यों और शिक्षाओं का अक्सर व्यक्तियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
- **सुदृढ़ीकरण तंत्र (Reinforcement Mechanisms):** समाज कुछ मूल्यों के पालन को प्रोत्साहित करने के लिए औपचारिक (कानून) और अनौपचारिक (सामाजिक दबाव) दोनों तरीकों का उपयोग करता है, जबकि अन्य मूल्यों के उल्लंघन को दंडित या हतोत्साहित करता है।

मूल्य क्षरण के उदाहरण

- मादक द्रव्यों का सेवन करना
- बुजुर्गों और महिलाओं का अनादर करना
- ग्रीनवाशिंग (Greenwashing)

मूल्यों के ह्रास में योगदान देने वाले कारक

- **नैतिक पतन (Moral Decline):** बढ़ती निराशावादिता, अधिकारों और जिम्मेदारियों के बीच असंगतता, भौतिकवाद और बढ़ती हिंसा, सामाजिक विवेक और नैतिक व्यवहार को कमजोर कर रही है।
  - **उदाहरण:** अनामिता (Anonymity) और संभावित परिणामों के बावजूद ऑनलाइन बदमाशी और ट्रोलिंग (Online bullying and trolling) में वृद्धि समानुभूति और व्यक्तिगत जिम्मेदारी की भावना में गिरावट को उजागर करती है।
- **कमजोर सामाजिक ताना-बाना (Weakened Social Fabric):** निहित स्वार्थ, आतंकवाद, सामाजिक विघटन और सांसारिक लक्ष्यों पर अत्यधिक ध्यान सामाजिक एकजुटता और स्थिरता में शून्यता पैदा कर रहे हैं।
- **भौतिकवादी संस्कृति (Materialistic Culture):** भौतिक संपत्ति की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयास और अनियंत्रित व्यावसायीकरण के कारण नैतिक मूल्य और पारंपरिक प्राथमिकताएँ नष्ट हो रही हैं।
  - **उदाहरण:** फास्ट फैशन के रुझान जो नैतिक श्रम प्रथाओं और पर्यावरणीय संधारणीयता की तुलना में कम कीमतों और उच्च कारोबार को प्राथमिकता देते हैं।
- **सोशल मीडिया का दुरुपयोग (Social Media Misuse):** गलत सूचना का प्रसार, "डीप फेक" और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का सामान्य दुरुपयोग मूल्यों के ह्रास में योगदान दे रहे हैं।

- **उदाहरण:** सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर टीकों के बारे में षड्यंत्र के सिद्धांतों और गलत सूचनाओं का प्रसार विज्ञान और सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों में विश्वास को खत्म कर रहा है।

- **मूकदर्शक प्रभाव (The Bystander Effect):** मूकदर्शकों की संख्या बढ़ने के कारण उदासीनता का माहौल पैदा होता है और सामाजिक जिम्मेदारी कमजोर होती है जिससे लोगों में आपात स्थितियों में हस्तक्षेप करने की प्रवृत्ति कम हो जाती है।
  - **उदाहरण:** ऐसे मामले जिनमें पीड़ित की मदद करने या सहायता के लिए पुकारने के बजाय, वहाँ खड़े लोग अपराध का वीडियो बनाने लग जाते हैं।

सिविल सेवकों में नैतिक ह्रास

हाल के दिनों में सिविल सेवकों में भी नैतिक उदासीनता बढ़ती देखी गई है।

नैतिक ह्रास के कारण	नैतिक ह्रास से निपटने की रणनीतियाँ
• **नौकरशाही की अक्षमता:** सरकारी विभागों और संस्थाओं का लगातार बढ़ता आकार, कमांड की श्रृंखला में भ्रम पैदा करता है। इससे अक्सर निर्णय लेने में देरी होती है और पारदर्शिता की कमी होती है, जिससे जवाबदेही में बाधा आती है। • **जिम्मेदारी से बचना:** लोगों में सफलता का श्रेय लेने की प्रवृत्ति होती है, लेकिन वे असफलताओं के लिए जिम्मेदारी लेने से बचते हैं। इससे ऐसी संस्कृति को बढ़ावा मिलता है, जहाँ कोई भी समस्याओं की जिम्मेदारी नहीं लेता, जिससे प्रगति और नैतिक आचरण में बाधा आती है। • **भ्रष्टाचार के प्रति सामाजिक सहनशीलता:** भ्रष्ट आचरण के प्रति समाज की बढ़ती स्वीकार्यता एक चिंताजनक प्रवृत्ति है। अच्छे लोगों की चुप्पी उन लोगों को प्रोत्साहित करती है जो अनैतिक व्यवहार में लिप्त होते हैं । • **मूल्यों की अपेक्षा भौतिकवाद को प्राथमिकता:** लोग भौतिकवाद और सांसारिक सफलता पर बढ़ते जोर के कारण नैतिक सिद्धांतों की अपेक्षा उन्हें प्राथमिकता दे रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप सत्यनिष्ठा और आध्यात्मिक कल्याण में गिरावट आ रही है।	• **व्हिसलब्लोअर को संरक्षण प्रदान करना:** ऐसे कानूनों का क्रियान्वयन और प्रवर्तन करना जो अधिकारियों के गलत कार्यों की रिपोर्ट करने वाले व्यक्तियों को संरक्षण प्रदान करते हैं, तथा पारदर्शिता और जवाबदेही को प्रोत्साहित करते हैं। • **नैतिक निर्णय लेने का प्रशिक्षण:** जनसंपर्क पेशेवरों और अधिकारियों को नैतिक दुविधाओं के प्रबंधन में सर्वोत्तम प्रथाओं के ज्ञान और अनुसंधान से युक्त करना। • **पारदर्शिता संबंधी पहलें:** स्पष्ट कानून बनाना जिसके तहत सरकारी अधिकारियों को अपने निर्णयों का औचित्य बताना आवश्यक हो, जिससे जनता में विश्वसनीयता और पारदर्शिता बढ़े। • **नैतिकता समीक्षा प्रक्रियाएं:** प्रमुख प्रक्रियाओं में सत्यनिष्ठा को खतरा पहुँचाने वाली संभावित कमजोरियों की पहचान करने और उन्हें दूर करने के लिए नियमित रूप से आंतरिक और बाह्य ऑडिट कराना। • **जवाबदेही के उपाय:** स्पष्ट अनुशासनात्मक प्रक्रियाएँ स्थापित करना और नैतिक संहिताओं के उल्लंघन के लिए दंड लागू करना, तथा कदाचार के लिए दंड सुनिश्चित करना।

भौतिकवादी उपलब्धियों के पीछे भागने से मूल्यों में गिरावट आई है और लालच, भ्रष्टाचार के साथ-साथ शोषण और पर्यावरण का ह्रास भी बढ़ा है। आर्थिक विकास को अधिक संधारणीय और समाज को अधिक शांतिपूर्ण बनाने के लिए मानव गरिमा और सामाजिक सद्भाव को विकसित करने की आवश्यकता है।

अन्य दार्शनिक संप्रदाय

- कुछ दर्शन और सिद्धांत ऐसे हैं जो नैतिक मानकों और नैतिकता के बारे में वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करने वाले सिद्धांतों की वकालत करते हैं
  - **नियतिवाद (Determinism):** यह सिद्धांत तर्क देता है कि हमारे विकल्प और कार्य उन बाहरी शक्तियों द्वारा पूर्वनिर्धारित होते हैं जो हमारे नियंत्रण से परे होती हैं। इसलिए, लोगों को उनके व्यवहार के लिए नैतिक रूप से जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है।
  - **नैतिक सापेक्षवाद बनाम नैतिक वस्तुनिष्ठवाद (Moral Relativism vs. Moral Objectivism):**
- **नैतिक सापेक्षवादी (Moral Relativists):** इनका मानना है कि कोई सार्वभौमिक नैतिक सत्य नहीं है, तथा क्या सही है या क्या गलत है, यह सांस्कृतिक या सामाजिक संदर्भ पर निर्भर करता है।
- **नैतिक वस्तुनिष्ठवादी (Moral Objectivists):** इनका मानना है कि वस्तुनिष्ठ नैतिक सत्य हैं जो हर किसी पर लागू होते हैं, चाहे वह किसी भी समय या स्थान पर हो। कुछ कार्य हमेशा सही होते हैं, और कुछ हमेशा गलत होते हैं।
  - **परिस्थिति नैतिकता (Situation Ethics):** अस्तित्ववाद से जुड़ा यह दृष्टिकोण सार्वभौमिक नियमों पर निर्भर होने के बजाय प्रत्येक स्थिति की अनूठी परिस्थितियों पर जोर देता है। नैतिकता विशिष्ट संदर्भ और उसके संभावित परिणामों से निर्धारित होती है।
  - **नैतिक व्यक्तिनिष्ठता (Moral Subjectivism) :** इस सिद्धांत के अनुसार नैतिक सत्य, व्यक्तिनिष्ठ होते हैं और व्यक्तिगत मान्यताओं पर आधारित होते हैं। एक व्यक्ति के लिए जो सही है वह दूसरे के लिए सही नहीं भी हो सकता है।
  - **मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद (Psychological Egoism):** यह सिद्धांत बताता है कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से अपने स्वार्थ के लिए कार्य करने के लिए प्रवृत्त होते हैं, और सच्ची परोपकारिता असंभव है।
  - **नैतिक स्वार्थवाद (Ethical Egoism):** यह सिद्धांत सुखवाद (Hedonism) का एक रूप है, जो तर्क देता है कि व्यक्तिगत खुशी को अधिकतम करना और दुःख को न्यूनतम करना परम नैतिक भलाई है।

निष्कर्ष

- आज, नैतिकता का महत्त्व मानव जीवन के हर क्षेत्र में महसूस किया जाता है। वर्तमान विश्व में अपराध, हिंसा, टकराव आदि की दर में वृद्धि हो रही है।
- ऐसा लगता है कि जीवन में शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जो घटते मनोबल से अछूता रह गया हो। इसलिए, आज हमारे समाज में नैतिकता की प्रासंगिकता और आवश्यकता पहले से कहीं ज़्यादा महसूस की जाती है।

समाचारों में नैतिक मुद्दे

इच्छामृत्यु (EUTHANASIA)

इच्छामृत्यु एक ऐसी प्रथा है जिसमें जानबूझ कर किसी व्यक्ति के जीवन को समाप्त कर दिया जाता है ताकि वह असहनीय पीड़ा से छुटकारा पा सके। ग्रीक

भाषा में इसका शाब्दिक अर्थ "अच्छी मृत्यु (Good death)" है।

- **निष्क्रिय इच्छामृत्यु (Passive Euthanasia):** किसी व्यक्ति को मरने देने के उद्देश्य से चिकित्सा उपचार को रोकना या वापस लेना, जैसे कि जीवन रक्षक प्रणाली को रोकना या हटाना निष्क्रिय इच्छामृत्यु के रूप में जाना जाता है।
- **सक्रिय इच्छामृत्यु (Active Euthanasia)**: इसके विपरीत, सक्रिय इच्छामृत्यु में किसी व्यक्ति के जीवन को दवाओं या किसी बाहरी बल, जैसे घातक इंजेक्शन देकर समाप्त करने के लिए सक्रिय हस्तक्षेप किया जाता है।

इच्छामृत्यु से संबंधित नैतिक मुद्देः

- **जीवन का अधिकार बनाम मृत्यु का अधिकार:** जीवन की पवित्रता (अनुच्छेद 21) और पीड़ा से बचने के अधिकार के बीच संतुलन करना।
- **'असाध्य पीड़ा' की परिभाषा:** कितनी और कितने लम्बे समय के लिए पीड़ा को इच्छामृत्यु के लिए उचित माना जा सकता है?
- **दुरुपयोग की संभावना:** कमजोर मरीजों पर जबरदस्ती या अनुचित दबाव की संभावना है।
- **डॉक्टर की भूमिका:** जीवन बचाने के डॉक्टर के कर्तव्य और मरीज की इच्छाओं का सम्मान करने के बीच द्वन्द्व की उत्पत्ति।
- **धार्मिक विचार:** कुछ धर्म इच्छामृत्यु को ईश्वर की इच्छा में हस्तक्षेप मानते हैं।

कानूनी स्थिति:

- **कुछ देशों में वैध:** नीदरलैंड, बेल्जियम, कनाडा, कोलंबिया, लक्जमबर्ग, न्यूज़ीलैंड (विशिष्ट परिस्थितियों में)।
- **कुछ अमेरिकी राज्यों में चिकित्सक की सहायता से आत्महत्या कानूनी है:** ओरेगन, वाशिंगटन, वर्मोंट, कैलिफोर्निया, मोंटाना, हवाई और डिस्ट्रिक्ट ऑफ कोलंबिया।

भारत में इच्छामृत्यु:

- **भारत में इच्छामृत्यु पर कानून** सक्रिय और निष्क्रिय इच्छामृत्यु के बीच अंतर करता है। घातक दवाइयों के उपयोग सहित सक्रिय इच्छामृत्यु के रूप भारत में अभी भी अवैध हैं। भारत के उच्चतम न्यायालय ने 2018 में एक ऐतिहासिक निर्णय में **"लिविंग विल (Living will)" की अवधारणा का हवाला देते हुए निष्क्रिय इच्छामृत्यु को वैध बनाया।**
- **न्यायालय ने संविधान के अनुच्छेद 21 का हवाला देते हुए** कहा कि गरिमापूर्ण मृत्यु, जीवन के अधिकार का एक तत्त्व है। किसी व्यक्ति के जीवन में उद्देश्य की भावना तब खत्म हो जाती है जब उसके जीवन के अंत के करीब उसकी गरिमा का हनन होता है।

लोगों के अधिकार बनाम पशुओं के अधिकार

- **भारत के उच्चतम न्यायालय ने** कहा कि आवारा कुत्तों के कारण होने वाली दुर्घटनाओं की बढ़ती संख्या को देखते हुए, मानव सुरक्षा और पशु अधिकारों के बीच संतुलन बनाए रखा जाना चाहिए।
- अदालत ने यह भी कहा कि जो लोग आवारा कुत्तों को खाना खिलाते हैं, उन्हें उनका टीकाकरण कराने तथा यदि कुत्ता किसी पर हमला करता है तो उसकी लागत वहन करने के लिए वित्तीय रूप से उत्तरदायी ठहराया जा सकता है।

मानव और पशु अधिकारों के बीच संतुलन बनाए रखना क्यों महत्त्वपूर्ण है?

- **मूल समस्या का समाधान:**
  - **समाज में जंगली जानवरों के अधिकार** सामान्य रूप से मनुष्यों द्वारा तथा विशेष रूप से भारतीय संविधान के मापदंडों द्वारा नियंत्रित होते हैं, जो इस मुद्दे से और भी अधिक उजागर होते हैं।
  - भारत की संस्कृति में सभी लोगों की स्वीकार्यता और सभी जीवित प्राणियों के प्रति सम्मान को महत्त्व दिया जाता है। हिंदू गायों को पवित्र पशु मानते हैं।
- **पशुओं को दण्ड देना गलत है:**
  - पशुओं को दण्ड देना अनैतिक है क्योंकि **उनमें सही और गलत के बीच भेद करने की मानसिक क्षमता का अभाव होता है,** इसलिए दंड देना अप्रभावी होगा।
  - वर्तमान कानूनी प्रणाली पालतू पशुओं के मालिकों को उनके पशुओं के प्रति लापरवाही से हुए किसी भी नुकसान के लिए दंडित करती है।

आगे की राह:

- पशुओं के प्रति क्रूरता को रोकने पर विशेष ध्यान देते हुए मानव अधिकारों और पशु अधिकारों के बीच पर्याप्त संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है। जिसके लिए विभिन्न उपाय किए जा सकते हैं।
  - अनुसंधान, कृषि, मनोरंजन और साथी के रूप में पशुओं की रक्षा करने वाले सख्त कानूनों का समर्थन करना। पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (PCA) अधिनियम, 1960 जैसे कानूनों को सख्ती से लागू करने की आवश्यकता है।
  - **स्कूली पाठ्यक्रमों में पशु कल्याण शिक्षा को शामिल करना।** इससे छोटी उम्र से ही पशुओं की ज़रूरतों के प्रति सहानुभूति और समझ विकसित होती है।
- इस प्रकार, पशुओं के हितों की अनदेखी किए बिना मनुष्यों की सुरक्षा और कल्याण के बीच संतुलन हासिल करना तत्काल आवश्यक है।

मूनलाइटिंग कार्य संस्कृति (MOONLIGHTING CULTURE)

- **"मूनलाइटिंग"** शब्द का प्रयोग कार्य के नियमित घंटों के अलावा अतिरिक्त कार्य करने की प्रथा को संदर्भित करता है।
- यह दूसरा कार्य नियोक्ता की जानकारी के बिना लिया जाता है और आमतौर पर यह सप्ताहांत या सायंकाल में किया जाता है।

मूनलाइटिंग के पीछे की प्रेरणा	मूनलाइटिंग से संबंधित चिंताएं
• **घर से काम करने की संस्कृति: घर से** काम करने की संस्कृति के कारण, नियोक्ता अब अपने कर्मियों की कार्यकुशलता का मूल्यांकन, क्लॉक-इन/क्लॉक-आउट टाइम शीट के आधार पर नहीं कर सकते हैं, जिससे अधिक लोगों को अतिरिक्त कार्य करने के लिए प्रोत्साहन मिला।	• **कानूनी लेकिन शायद अनैतिक:** ऐसा कोई सामान्य कानून नहीं है जो किसी व्यक्ति को एक से ज़्यादा काम करने से रोकता हो। हालाँकि, एक ही तरह का काम करने वाला व्यक्ति गोपनीयता से जुड़ी नैतिक समस्याएँ पैदा कर सकता है।
• **खर्च करने के लिए अधिक धन की आवश्यकता :** यदि उनकी प्राथमिक नौकरी में वेतन कम मिलता है और उन्हें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अतिरिक्त आय की आवश्यकता है।	• **अक्षमता:** जो कर्मचारी लंबे समय तक काम करने से शारीरिक रूप से थक जाते हैं, वे अपनी दूसरी नौकरी के परिणामस्वरूप अपना प्राथमिक कार्य करने में विचलित, अप्रभावी और लापरवाह हो सकते हैं।

- **अधिक कार्य अनुभव प्राप्त करना:** नई योग्यताएँ विकसित करना या ऐसे करियर को अपनाना जो उनकी रुचियों से अधिक निकटता से मेल खाते हों।
- **बोरियत से बचने के लिए:** कर्मचारी अपने प्राथमिक रोजगार में व्यस्त रहने के लिए, उपलब्ध खाली समय का उपयोग करने के लिए मूनलाइटिंग का विकल्प चुन सकते हैं।
- **कॉर्पोरेट संसाधनों का उपयोग:** जो कर्मचारी दूसरी नौकरी करते हैं, वे कॉर्पोरेट संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं, जिससे परिचालन लागत बढ़ जाती है।
- **स्वास्थ्य से समझौता:** खराब आहार, अपर्याप्त नींद और व्यायाम की कमी से कर्मचारी के स्वास्थ्य पर असर पड़ सकता है।

आगे की राह

- नियोक्ता संभावित हितों के टकराव, प्राथमिक नौकरी के प्रदर्शन पर प्रभाव, कॉर्पोरेट संसाधनों के दुरुपयोग, अनुपस्थिति, असावधानी या थकावट की चिंता के कारण दूसरी नौकरी करने के खिलाफ सलाह दे सकते हैं।
- नियोक्ताओं को वेतन की नियमित रूप से समीक्षा करनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कर्मचारियों को उनके कौशल और अनुभव के लिए पर्याप्त पारिश्रमिक मिल रहा है। प्रतिस्पर्द्धी लाभ पैकेज पेश करना जो वित्तीय चिंताओं को दूर करते हैं, जिससे आय के अतिरिक्त स्रोतों की आवश्यकता कम हो जाती है।
- कर्मचारियों को अंशकालिक कार्य करने का विकल्प मिलना चाहिए, जब तक कि ऐसा करने से उनके मूल कार्य से संबंधित कर्तव्यों की प्रभावशीलता और निष्ठा पर कोई प्रभाव न पड़े।

प्रभावशाली व्यक्ति/मशहूर हस्तियों के अनुमोदनों की नैतिकता

- अनुमोदन (Endorsement) एक प्रकार का विज्ञापन है जिसमें सुप्रसिद्ध व्यक्तियों या मशहूर हस्तियों का उपयोग किया जाता है, जिनके प्रति जनता में उच्च स्तर की जागरूकता, सम्मान या मान्यता होती है।
- विज्ञापनदाता और ग्राहक यह मानते हैं कि किसी मशहूर हस्ती का समर्थन या अनुमोदन उपभोक्ता व्यवहार को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा।
- **उदाहरण के लिए,** सचिन तेंदुलकर द्वारा खेल उपकरणों का अनुमोदन करने से युवाओं या बच्चों पर प्रभाव पड़ सकता है, जो उन्हें एक आदर्श के रूप में देखते हैं।

प्रभावशाली व्यक्तियों के अनुमोदन से संबंधित नैतिक मुद्दे

सेलिब्रिटी विज्ञापन, भारतीय विज्ञापन का एक बड़ा हिस्सा हैं। हालाँकि वे ग्लैमर और पहचान लाते हैं, लेकिन इसमें नैतिक चिंताएँ भी शामिल हैं जिन पर विचार किए जाने की आवश्यकता है।

- **भ्रामक दावे और जानकारी का अभाव (Misleading Claims and Lack of Knowledge):** प्रशंसक प्रभावशाली व्यक्तियों पर भरोसा करते हैं, लेकिन यदि उत्पाद सेलिब्रिटी से मेल नहीं खाता या उन्हें इसके बारे में जानकारी नहीं है तो विज्ञापन भ्रामक हो सकते हैं।
  - **उदाहरण**: एक सेलिब्रिटी फेयरनेस क्रीम का विज्ञापन कर रहा है, जबकि उसकी त्वचा प्राकृतिक रूप से गोरी है। तो हो सकता है कि वे उत्पाद के घटकों या संभावित दुष्प्रभावों को न समझते हों।
- **अस्वास्थ्यकर उत्पादों का गैर-जिम्मेदाराना प्रचार (Irresponsible Promotion of Unhealthy Products):** सेलिब्रिटी पर भरोसा करने वाले युवा प्रशंसकों के बीच अस्वास्थ्यकर उत्पादों का प्रचार उनके स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।
  - **उदाहरण** : क्रिकेटर' युवा प्रशंसकों जो उन्हें आदर्श मानते हैं, को लक्षित करके चीनी युक्त पेय या अस्वास्थ्यकर स्नैक्स का विज्ञापन करते हैं। इससे गलत आहार विकल्प चुनने की प्रवृत्ति पैदा हो सकती है। (यह भारत में डायबिटीज के बढ़ते मामलों के संबंध में विशेष रूप से सच है)।
- **प्रशंसकों की अतिप्रशंसा और विश्वास का दुरुपयोग (Exploiting Fan Adulation and Trust)** : विशेष रूप से युवा प्रशंसक सेलिब्रिटी विज्ञापनों पर अंध विश्वास करके बिना उचित मूल्यांकन के आवेगपूर्ण निर्णय ले सकते हैं।
  - **उदाहरण** : अभिनेता ऐसे शिक्षा ऐप का प्रचार कर रहे हैं, जिनका उन्होंने व्यक्तिगत रूप से इस्तेमाल नहीं किया है। प्रशंसक, खास तौर पर युवा लोग, उनके निर्णय पर भरोसा करते हैं और उचित जानकारी के बिना भी नामांकन कर सकते हैं।

आगे की राह

- **कड़े नियम**: विज्ञापन संस्थाएँ सेलिब्रिटी विज्ञापनों के लिए कड़े दिशा-निर्देश लागू कर सकती हैं, जिनमें अस्वीकरण (disclaimer) और उत्पाद की जानकारी का प्रमाण देना शामिल होगा।
- **सेलिब्रिटी की जागरूकता में वृद्धि:** सेलिब्रिटी को इस बात में अधिक चयनात्मक होना चाहिए कि वे किस उत्पाद का प्रचार करते हैं तथा उत्पाद के प्रभाव को समझना चाहिए।
- **मीडिया द्वारा जाँच**: मीडिया आउटलेट भ्रामक विज्ञापन के लिए मशहूर हस्तियों और ब्रांडों दोनों को जिम्मेदार ठहरा सकते हैं।
- **उपभोक्ता जागरूकता**: उपभोक्ताओं को सेलिब्रिटी विज्ञापनों के प्रति समालोचनात्मक होने तथा खरीदने से पहले स्वयं जानकारी प्राप्त करने के बारे में जागरूक करना।

इन चिंताओं को दूर करके, प्रभावशाली व्यक्तियों द्वारा उत्पादों का प्रचार एक अधिक नैतिक और जिम्मेदारीपूर्ण विपणन साधन बन सकता है।

भ्रामक विज्ञापन के विरुद्ध भारत के कानून

- **2019 का उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम** नए विनियमों के अनुरूप है, जो अनुचित व्यावसायिक प्रथाओं और भ्रामक विज्ञापन से उपभोक्ताओं के संरक्षण के लिए पारित किया गया था।
- उपभोक्ता मामलों के विभाग द्वारा **भ्रामक विज्ञापनों और भ्रामक विज्ञापनों के अनुमोदनों के निवारण के लिए दिशानिर्देश**, 2022 जारी किए गए।

प्रवासन की नैतिकता (ETHICS OF MIGRATION)

- पूरे इतिहास में, मानव प्रवासन एक निर्णायक बल रहा है, जिसने समाजों और संस्कृतियों का स्वरूप निर्धारित किया है। हालाँकि, सीमाओं के पार लोगों की आवाजाही से जटिल नैतिक प्रश्न उठते हैं।
- एक ओर, आवागमन की स्वतंत्रता एक मौलिक मानव अधिकार है। लोगों के पास पलायन करने के लिए मजबूर करने वाले कारण होते हैं जैसे सुरक्षा, रोजगार के अवसरों या परिवार के पुनर्मिलन की तलाश। दूसरी ओर, देशों को अपनी सीमाओं के प्रबंधन और अपने नागरिकों की भलाई सुनिश्चित करने के बारे में वैध चिंताएँ हैं।

प्रवासन से संबंधित नैतिक मुद्दे

- **अधिकार और दायित्व (Rights and Obligations):** प्रवासियों को अक्सर मेजबान देशों में बुनियादी अधिकार प्राप्त करने और सामाजिक दायित्वों को पूरा करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। (***कर्तव्यवादी दृष्टिकोण:*** नागरिकों के अधिकारों और प्रवासियों के अधिकारों के बीच संतुलन करना)।
- **एकीकरण और सामाजिक एकजुटता (Integration and Social Cohesion):** प्रवासियों का एकीकरण कठिन हो सकता है, जिससे सामाजिक तनाव और सामाजिक एकजुटता के लिए चुनौतियाँ पैदा हो सकती हैं।
- **प्रतिभा पलायन और असमान विकास (Brain Drain and Unequal Development):** विकासशील देशों से कुशल श्रमिकों का पलायन उन देशों के विकास में बाधा उत्पन्न कर सकता है। (***प्रयोजनवादी दृष्टिकोण:*** भेजने वाले और प्राप्त करने वाले देशों के लिए दीर्घकालिक विकास लक्ष्यों को प्राप्त करना)।
- **शोषण और मानव तस्करी (Exploitation and Human Trafficking):** असुरक्षित प्रवासियों को शोषण और तस्करी का ख़तरा रहता है। (***कर्तव्यवादी दृष्टिकोण:*** बुनियादी मानवाधिकारों और गरिमा की रक्षा करना)।
- **पर्यावरणीय प्रभाव (Environmental Impact):** बड़े पैमाने पर प्रवासन संसाधनों पर दबाव डाल सकता है और भेजने वाले तथा प्राप्त करने वाले दोनों देशों में पर्यावरणीय गिरावट में योगदान कर सकता है। (***उपयोगितावादी दृष्टिकोण:*** पर्यावरणीय प्रभाव और प्रवासन के आर्थिक लाभों के बीच संतुलन करना)।

आगे की राह

- **अंतरराष्ट्रीय सहयोग:** प्रवासियों के साथ उचित व्यवहार सुनिश्चित करने, प्रवासन के मूल कारणों का समाधान करने तथा जिम्मेदार प्रवासन नीतियों को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक समझौतों की आवश्यकता है।
- **एकीकरण रणनीतियाँ:** मेजबान देशों को व्यापक एकीकरण रणनीतियाँ बनाने की आवश्यकता है जो प्रवासियों के सामाजिक और आर्थिक समावेशन का समर्थन करती हों।
- **मानवाधिकार ढाँचा:** प्रवासन से संबंधित सभी नीतियाँ और प्रथाएँ मानवाधिकार ढाँचे के अनुरूप होनी चाहिए।
- **सतत विकास:** गरीबी और युद्ध जैसे वैश्विक मुद्दों का समाधान करके प्रवासन की आवश्यकता को कम किया जा सकता है।

देश इन नैतिक मुद्दों पर ध्यान देकर और एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाकर सीमा पार मानव प्रवास के लिए अधिक न्यायपूर्ण और मानवीय प्रणाली बना सकते हैं।

खेलों में डोपिंग (DOPING IN SPORTS)

खेल प्रदर्शन को बढ़ाने के उद्देश्य से एथलीटों द्वारा अवैध पदार्थों, गोलियों या उपचारों (Illegal substances, Pills, or Therapies) के उपयोग को **"डोपिंग"** कहा जाता है।

खेलों में डोपिंग से जुड़े नैतिक मुद्दे

- **अनुचित बढ़त और समान अवसर (Unfair Advantage and Level Playing Field):** डोपिंग उन एथलीटों के लिए अनुचित बढ़त पैदा करती है जो इसका उपयोग करते हैं, तथा निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा और समान अवसर की भावना को कमजोर करती है।
  - **उदाहरण** : लांस आर्मस्ट्रांग को साइकिलिंग में मिले पुरस्कारों को बाद में डोपिंग के कारण छीन लिया गया था, जिससे पता चलता है कि यह कैसे परिणामों को विकृत कर सकती है और ईमानदार एथलीटों की उपलब्धियों को कम कर सकती है।
- **स्वास्थ्य जोखिम और दीर्घकालिक प्रभाव (Health Risks and Long-Term Effects):** कई प्रदर्शन बढ़ाने वाली दवाओं (PED-Performance-enhancing drugs) के स्वास्थ्य पर गंभीर अल्पकालिक (जैसे, लीवर की क्षति) और दीर्घकालिक (जैसे, कैंसर) परिणाम होते हैं। संभावित स्वास्थ्य जोखिमों के बावजूद एथलीटों पर इनका उपयोग करने का दबाव डाला जाता है।
- **जीतने का दबाव और डोपिंग की संस्कृति (Pressure to Win and the Culture of Doping):** किसी भी कीमत पर जीतने का अत्यधिक दबाव खिलाड़ियों और सहयोगी कर्मचारियों को डोपिंग का सहारा लेने के लिए प्रेरित कर सकता है, जिससे एक ऐसी संस्कृति का निर्माण होता है जिसमें इसके उपयोग को सामान्य माना जाने लगता है।
  - **उदाहरण** : रूस जैसे देशों में व्यवस्थित डोपिंग कार्यक्रमों का खुलासा यह दर्शाता है कि किस प्रकार किसी भी कीमत पर जीतने की मानसिकता खेल संस्थाओं को भ्रष्ट कर सकती है।

डोपिंग से निपटने के लिए नैतिक उपाय

- **मजबूत डोपिंग रोधी कार्यक्रम**: अधिक वित्तपोषण और अधिक परिष्कृत विधियों के साथ सख्त परीक्षण व्यवस्था से डोपिंग को रोका जा सकता है और अपराधियों को पकड़ा जा सकता है।
- **जागरूकता कार्यक्रम**: एथलीटों, प्रशिक्षकों और सहयोगी कर्मचारियों को डोपिंग के खतरों के बारे में जागरूक करना और ईमानदार खेल भावना को बढ़ावा देना।
- **स्वतंत्र निगरानी**: निष्पक्ष जाँच और प्रतिबंध सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय या राजनीतिक प्रभाव से मुक्त स्वतंत्र एंटी-डोपिंग एजेंसियों की स्थापना करना।
- **स्वास्थ्य और कल्याण पर ध्यान केंद्रित करना** : ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देना जो किसी भी कीमत पर जीतने की तुलना में खिलाड़ी के स्वास्थ्य को प्राथमिकता दे, तथा दीर्घकालिक कल्याण पर ध्यान केंद्रित कर सके ।

इन नैतिक उपायों को लागू करके, हम सभी एथलीटों के लिए एक अधिक निष्पक्ष और स्वस्थ खेल वातावरण बना सकते हैं।

खेल में डोपिंग से निपटने के लिए उठाए गए कदम

- **वाडा (WADA - World Anti-Doping Agency)** की प्रमुख पहलों में डोपिंग से जुड़ी स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के बारे में जागरूकता बढ़ाना, डोपिंग प्रथाओं पर शोध करना, डोपिंग रोधी उपकरण विकसित करना और डोपिंग का पता लगाने के लिए परीक्षण प्रक्रियाएँ बनाना शामिल है।
- इसके अलावा, भारतीय संसद ने राष्ट्रीय डोपिंग रोधी विधेयक पारित किया है।

सामाजिक सुधार : कानून या नैतिकता का मामला

- बिहार में जहरीली शराब पीने से 70 से ज़्यादा लोगों की मौत हो गई। बिहार में पिछले छह सालों से शराब पर प्रतिबंध है। ये आपदाएँ सिर्फ़ बिहार में ही नहीं बल्कि कभी-कभार पूरे भारत में देखने को मिलतीं हैं।

- यह बहस का विषय है कि क्या व्यवहार में बदलाव लाना कानूनी मुद्दा है या सिर्फ़ नैतिक मुद्दा। दूसरा अहम मुद्दा यह है कि क्या राज्य को कल्याण के नाम पर किसी व्यक्ति की आज़ादी पर प्रतिबंध लगाना चाहिए।

भारत में शराब से संबंधित सख्त कानून की आवश्यकता

- **संवैधानिक दायित्व:** भारत के संविधान के अनुच्छेद 47 में सार्वजनिक स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की बात कही गई है। शराब के सेवन को विनियमित करने से इस लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मिल सकती है।
- **कमजोर समूहों की सुरक्षा:** सामाजिक अनुबंध सिद्धांत बताता है कि नागरिकों के कल्याण की रक्षा करना सरकार का नैतिक कर्तव्य है। भारत में, जहाँ पुरुषों का अक्सर घरों पर वर्चस्व होता है, वहाँ अत्यधिक शराब का सेवन परिवारों, विशेषकर महिलाओं और बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। शराब की सुलभता को प्रतिबंधित करने से इन कमज़ोर समूहों हेतु न्याय को बढ़ावा मिल सकता है।
- **उपयोगितावादी दृष्टिकोण:** उपयोगितावाद अधिकतम लोगों के अधिकतम कल्याण पर जोर देता है। शराब का अत्यधिक सेवन केवल पीने वाले को ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। शराब के सेवन को सीमित करने से संभवतः पूरे समाज को लाभ हो सकता है।

शराब कानून लागू करने में चुनौतियाँ

- **हितधारकों की भागीदारी (Stakeholder Involvement):** प्रभावी कानून अक्सर सभी संबंधित पक्षों के साथ व्यापक चर्चा से बनते हैं। उदाहरण के लिए, सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाने वाला कानून समुदाय के समर्थन के कारण सफल हुआ। इसके विपरीत, सार्वजनिक चर्चा के बिना जल्दबाजी में पारित किए गए कानून, जैसे कि कुछ शराब-रोधी कानून, अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में विफल हो सकते हैं।
- **औचित्य और वैधानिकता (Justification and Legality):** दासता में अंतर्निहित अमानवीयता जैसे मजबूत औचित्य, दासता-रोधी कानूनों जैसे सफल कानून बनाने के लिए प्रेरणास्रोत बन सकते हैं। इसके विपरीत, स्पष्ट औचित्य या कानूनी आधार की कमी वाले कानून (जैसे - कुछ भ्रष्टाचार-रोधी उपाय) कम प्रभावी हो सकते हैं।

इस प्रकार, यदि इन कारकों को ध्यान में रखा जाए तो शराब पर प्रतिबंध जैसे कानूनों को सफलतापूर्वक लागू किया जा सकता है और ऐसी पहलों में नैतिक मुद्दों को भी हल किया जा सकता है।

स्कूलों में भगवद्गीता की शिक्षा अनिवार्य बनाना

- गुजरात सरकार द्वारा शैक्षणिक वर्ष 2022-23 से कक्षा 6 से 12 तक के पाठ्यक्रम में भगवद् गीता को शामिल करने के निर्णय पर चर्चा छिड़ गई है।
- इसके समर्थक भगवद् गीता के नैतिक आचरण के शाश्वत मूल्यों पर प्रकाश डालते हैं, जो शैक्षणिक वातावरण से परे हैं। इन सिद्धांतों को विभिन्न क्षेत्रों में प्रासंगिक माना जाता है, जिसमें व्यावसायिक नैतिकता और प्रशासनिक नैतिकता शामिल है, जो व्यक्तियों और प्रणालियों दोनों के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

इससे संबंधित नैतिक मुद्दे

- **धार्मिक स्वतंत्रता (Freedom of Religion): (कर्तव्यवादी नैतिकता)**: भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है, जिसमें विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं। धार्मिक ग्रंथों को अनिवार्य बनाना धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन हो सकता है।
- **व्याख्या और पूर्वाग्रह (Interpretation and Bias): (सदाचार नैतिकता)**: भगवद् गीता की अलग-अलग व्याख्या की जा सकती है। किसकी व्याख्या पढ़ाई जाएगी? क्या यह किसी विशिष्ट हिंदू संप्रदाय का पक्ष लेगी?
- **शैक्षणिक स्वतंत्रता (Academic Freedom): (कर्तव्यवादी नैतिकता)**: क्या गीता को अनिवार्य बनाने से शिक्षकों के अपने पाठ्यक्रम को डिजाइन करने और अपने शिक्षण लक्ष्यों के अनूरूप सामग्री चुनने के अधिकार का उल्लंघन होता है?
- **वैकल्पिक धार्मिक शिक्षाएँ (Alternative Religious Teachings): (उपयोगितावाद)**: यदि गीता अनिवार्य है, तो क्या धार्मिक सहिष्णुता और समझ को बढ़ावा देने के लिए अन्य प्रमुख धर्मों की शिक्षाओं को भी इसमें शामिल किया जाना चाहिए?

आगे की राह

- **भगवद्गीता को एक वैकल्पिक पाठ्यक्रम के रूप में प्रस्तुत करना:** इच्छुक छात्रों को व्यापक दृष्टिकोण के लिए अन्य दार्शनिक या धार्मिक ग्रंथों के साथ इसका अध्ययन करने की अनुमति देनी चाहिए।
- **सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों पर ध्यान केन्द्रित करना:** गीता में विद्यमान उन सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों को उद्धृत करना और सिखाना चाहिए जो सभी धर्मों में समान हों।
- **धर्मनिरपेक्ष नैतिकता पाठ्यक्रम तैयार करना:** एक व्यापक नैतिकता पाठ्यक्रम लागू करना, जिसमें गीता सहित विभिन्न स्रोतों से सिद्धांतों को शामिल किया जाए, लेकिन यह केवल गीता तक ही सीमित न हो।
- **शिक्षक प्रशिक्षण और संवेदनशीलता:** शिक्षकों को विविध धार्मिक पृष्ठभूमि के छात्रों को संभालने के लिए और गीता की व्याख्याओं के लिए उचित प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

अंततः, नैतिक मूल्यों, समावेशिता और बौद्धिक स्वतंत्रता को प्राथमिकता देने वाला एक समग्र दृष्टिकोण स्कूलों में केवल धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने की तुलना में अधिक लाभकारी हो सकता है।

सरोगेट विज्ञापन (SURROGATE ADVERTISING)

- हाल ही में, एक बॉलीवुड अभिनेता को तंबाकू उत्पादों से जुड़े एक ब्रांड का विज्ञापन करने के लिए सोशल मीडिया पर आलोचना का सामना करना पड़ा। इसके जवाब में, अभिनेता ने विज्ञापन करार से हाथ खींच लिया। इस घटना ने विज्ञापन में नैतिक सिद्धांतों की कमी और तंबाकू विज्ञापन एवं सरोगेट मार्केटिंग पर सख्त नियमों की आवश्यकता के बारे में चर्चा को फिर से हवा दे दी है।
- सरोगेट विज्ञापन एक विपणन रणनीति है जिसका उपयोग उन उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है जिनका प्रत्यक्ष विज्ञापन निर्बंधित या प्रतिबंधित (Restricted or banned) है।
- ऐसा आमतौर पर उसी कंपनी द्वारा निर्मित एक अलग, वैध उत्पाद का विज्ञापन करके किया जाता है, जिसका उद्देश्य यह होता है कि उपभोक्ता विज्ञापित उत्पाद को प्रतिबंधित उत्पाद के साथ जोड़कर देखेंगे।
  - उदाहरण के लिए, सिगरेट के लिए जाना जाने वाला एक ब्रांड किसी रेसिंग इवेंट को प्रायोजित कर सकता है और अपना लोगो प्रमुखता से प्रदर्शित कर सकता है।

- एक शराब कंपनी किसी लोकप्रिय फिल्म में ब्रांडेड पानी की बोतल दिखा सकती है।

इससे संबंधित नैतिक मुद्दे

- **धोखा देना और उपभोक्ताओं को गुमराह करना (Deception and Consumer Manipulation):** सरोगेट विज्ञापन वास्तविक उत्पाद को छिपाकर उपभोक्ताओं को गुमराह करते हैं। कर्तव्यवाद का तर्क है कि यह ईमानदारी का उल्लंघन करता है और उपभोक्ता कल्याण एवं जन स्वास्थ्य को दीर्घकालिक नुकसान पहुँचाता है।
- **कमजोर समूहों को लक्षित करना (Targeting Vulnerable Groups):** ये विज्ञापन अक्सर युवाओं या नशे की लत के प्रति संवेदनशील लोगों को लक्षित करते हैं, जिससे लाभ अधिकतम होता है, लेकिन उनके संभावित नुकसान की उपेक्षा की जाती है।
- **सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयासों को कमजोर करना (Undermining Public Health Efforts):** तंबाकू या शराब के सरोगेट विज्ञापन उन सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियानों को कमजोर कर सकते हैं जिनका उद्देश्य सेवन को कम करना होता है। उपयोगितावादी दृष्टिकोण से, स्वास्थ्य समस्याओं में वृद्धि की सामाजिक लागत किसी भी आर्थिक लाभ से अधिक होती है।
- **वैश्विक बनाम स्थानीय विनियमन (Global vs. Local Regulations):** विभिन्न देशों के कानूनों में भिन्नता के कारण विनियमों की प्रभावशीलता बाधित हो सकती है।

आगे की राह

- **विनियमन को मजबूत करना (Strengthen Regulations):** सरोगेट विज्ञापन पर सख्त विनियमन लागू करना, स्वीकार्य सामग्री और प्लेसमेंट को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना।
- **उद्योग स्व-नियमन (Industry Self-Regulation):** विज्ञापन एजेंसियों और मीडिया कंपनियों को सरोगेट विज्ञापनों को अस्वीकार करने वाली नैतिक संहिता अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना।
- **वैश्विक सहयोग (Global Collaboration):** सरोगेट विज्ञापन के सीमा-पार प्रभाव को दूर करने के लिए अंतरराष्ट्रीय समझौते और विनियमन करना।
- **नैतिक विकल्पों को बढ़ावा देना (Promote Ethical Alternatives):** भ्रामक रणनीति का सहारा लिए बिना उत्पाद की विशेषताओं और लाभों पर ध्यान केंद्रित करने वाली विपणन रणनीतियों को प्रोत्साहित करना।
- **सार्वजनिक स्वास्थ्य संबंधी पहलें (Public Health Initiatives):** स्वस्थ जीवन शैली और जिम्मेदार विकल्पों को बढ़ावा देकर सरोगेट विज्ञापन के प्रभाव का मुकाबला करने वाले सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियानों को प्राथमिकता देना।

हम इन मुद्दों पर ध्यान देकर और इन समाधानों को लागू करके अधिक नैतिक और जिम्मेदार विज्ञापन की दिशा में काम कर सकते हैं।

बाल कलाकार (CHILD ARTISTS)

- हाल ही में राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (NCPCR) ने मनोरंजन उद्योग या किसी भी व्यावसायिक मनोरंजन गतिविधि में बच्चों और किशोरों की भागीदारी के लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं।
- आजकल, बाल कलाकारों को प्रदर्शन कलाओं द्वारा प्रदान किए जाने वाले अवसरों और अपने कल्याण एवं विकास के बीच संतुलन करने की जटिल चुनौती का सामना करना पड़ता है। इससे उनके कल्याण के बारे में कई नैतिक चिंताएँ पैदा होती हैं।

इससे संबंधित नैतिक मुद्दे

- **शोषण और दुर्व्यवहार (Exploitation and Abuse):** बाल कलाकारों को लंबे समय तक काम करना पड़ता है, शारीरिक रूप से कठिन दिनचर्या का सामना करना पड़ता है और उनका भावनात्मक रूप से शोषण किया जाता है। इससे शोषण और संभावित दुर्व्यवहार के बारे में चिंताएँ पैदा होती हैं।
- **शिक्षा और विकास (Education and Development):** कला क्षेत्र में करियर बनाने के लिए बच्चे की औपचारिक शिक्षा और समग्र विकास का नुकसान हो सकता है।
- **बचपन की हानि (Loss of Childhood):** बाल कलाकार प्रायः बचपन के सामान्य अनुभवों जैसे खेलने के समय और साथियों के साथ सामाजिक मेलजोल से वंचित रह जाते हैं।
- **वस्तुकरण और लैंगिककरण (Objectification and Sexualization):** बाल कलाकारों को इस प्रकार चित्रित किया जा सकता है जो उनकी उम्र के लिए अनुपयुक्त होता है, जिससे वस्तुकरण और संभावित लैंगिककरण को बढ़ावा मिलता है।
- **निजता और मीडिया का हस्तक्षेप (Privacy and Media Intrusion):** मीडिया के लगातार ध्यान और सार्वजनिक छवि बनाए रखने के दबाव के कारण बाल कलाकारों की निजता की अनदेखी हो सकती है।

आगे की राह

- **विनियमन और निगरानी:** सरकारी एजेंसियाँ और उद्योग निकाय कार्य के घंटे, शिक्षा संबंधी शर्तों, न्यूनतम आयु सीमा और वित्तीय पारदर्शिता के संबंध में स्पष्ट नियम बना सकते हैं।
- **स्वतंत्र प्रतिनिधित्व:** बाल कलाकारों को अनुबंधों पर बातचीत करने और अपने अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्वतंत्र प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए।
- **माता-पिता को जागरूक करना:** कला में करियर के संभावित जोखिम और लाभों के बारे में माता-पिता को जागरूक करने से उन्हें अपने बच्चों के लिए सुविचारित निर्णय लेने में मदद मिल सकती है।
- **नैतिक मीडिया प्रथाएं:** मीडिया आउटलेट्स को बाल कलाकारों को चित्रित करने के लिए नैतिक दिशानिर्देश तैयार करने चाहिए, जिसमें उनकी निजता और कल्याण का सम्मान करने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।

हम इन समाधानों को लागू करके और नैतिक प्रथाओं को बढ़ावा देकर बाल कलाकारों के लिए अपनी प्रतिभा को निखारने हेतु अधिक सुरक्षित और अधिक पोषणकारी वातावरण बना सकते हैं।

प्रमुख शब्दावली और उनके अर्थ

शब्द	अर्थ
नैतिक मौन (Moral Muteness)	नैतिक मौन तब होता है जब लोग अनैतिक व्यवहार को देखते हैं और कुछ भी नहीं कहना चाहते। यह तब भी हो सकता है, जब अस्पष्ट नैतिक मान्यताओं और प्रतिबद्धताओं के साथ लोग ऐसे तरीकों से संवाद करते हैं।

नैतिक अदूरदर्शिता (Moral Myopia)	नैतिक अदूरदर्शिता का अर्थ है नैतिक मुद्दों को स्पष्ट रूप से देखने में असमर्थता। मिनेट ड्रमराइट और पैट्रिक मर्फी द्वारा प्रतिपादित यह शब्द बताता है कि जब हम किसी समस्या के नैतिक निहितार्थों को नहीं पहचान पाते हैं, या हमारी नैतिक दृष्टि विकृत होती है तो क्या होता है। नैतिक अदूरदर्शिता के चरम रूप को नैतिक दृष्टिहीनता (Moral Blindness) कहा जाता है।
संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह (Cognitive Bias)	लोग आमतौर पर मानते हैं कि वे अपनी सोच, निर्णय और कार्यों में अधिकांशतः तर्कसंगत होते हैं। लेकिन सबसे बुद्धिमान और सबसे शिक्षित लोग भी अक्सर वित्तीय, चिकित्सीय, व्यक्तिगत और नैतिक निर्णय लेते समय संज्ञानात्मक त्रुटियाँ करते हैं। सोच में ये गलतियाँ, जिन्हें संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह भी कहा जाता है, लगभग हर स्थिति में सभी लोगों को प्रभावित करती हैं।
परिबद्ध नैतिकता (Bounded Ethicality)	परिबद्ध नैतिकता यह विचार है कि आंतरिक और बाहरी दबावों के कारण नैतिक विकल्प चुनने की हमारी क्षमता अक्सर सीमित या प्रतिबंधित हो जाती है। उदाहरण के लिए, बाहरी दबाव, जैसे कि हमारे आस-पास के लोगों के कार्यों के अनुरूप होने की प्रवृत्ति हमारे लिए सही काम करना कठिन बना सकती है। इसी प्रकार आंतरिक पूर्वाग्रह भी हो सकते हैं, जैसे कि स्वार्थ संबंधी पूर्वाग्रह, जो अक्सर हमें दूसरों की कीमत पर अवचेतन रूप से स्वयं का पक्ष लेने के लिए प्रेरित करता है।
अनुरूपता पूर्वाग्रह (Conformity Bias)	अनुरूपता पूर्वाग्रह वह प्रवृत्ति है जिसमें लोगों को अपने व्यक्तिगत निर्णय का उपयोग करने के बजाय अपने आस-पास के लोगों की तरह व्यवहार करना पड़ता है। उदाहरण के लिए- जब हम दूसरों को धोखा देने वालों को सफल होते देखते हैं, तो इससे हमारे द्वारा भी धोखा दिए जाने की संभावना बढ़ जाती है।
नैतिक अस्पष्टता (Ethical Fading)	नैतिक अस्पष्टता तब होती है जब किसी निर्णय के नैतिक पहलू दृश्य से गायब हो जाते हैं। ऐसा तब होता है जब लोग किसी निर्णय के किसी अन्य पहलू, जैसे लाभप्रदता या जीत पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं।
भूमिका नैतिकता (Role Morality)	यह धारणा है कि लोग कभी-कभी अपने स्वयं के नैतिक मानकों पर खरे उतरने में असफल हो जाते हैं क्योंकि वे स्वयं को एक निश्चित भूमिका निभाते हुए देखते हैं जो उन्हें उन मानकों से छूट प्रदान कर देती है। उदाहरण के लिए, मान लें कि कोई व्यक्ति स्वयं को किसी कंपनी का एक वफादार कर्मचारी मानता है। उस भूमिका में, वह अपने नियोक्ता को फायदा पहुँचाने के लिए अनैतिक तरीके से काम कर सकता है, जो वह स्वयं की मदद के लिए कभी नहीं करेगा।
नैतिक निरपेक्षवाद (Moral Absolutism)	नैतिक निरपेक्षवाद इस बात पर जोर देता है कि कुछ सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत हैं जिनके द्वारा सभी लोगों के कार्यों का मूल्यांकन किया जा सकता है। यह कर्तव्यवाद का एक रूप है।
नैतिक बोध (Moral Cognition)	यह नैतिक निर्णय लेने में मस्तिष्क की भूमिका का अध्ययन है। एक सामाजिक विज्ञान के रूप में, इसमें उन तर्कसंगतताओं और पूर्वाग्रहों को समझना शामिल है जो नैतिक निर्णय लेने को प्रभावित करते हैं। नैतिक बोध में मस्तिष्क का वैज्ञानिक अध्ययन भी शामिल है जो प्रौद्योगिकी के साथ विकसित हो रहा है।

विगत वर्षों के प्रश्न

- 'नैतिक अंतर्ज्ञान' से 'नैतिक तर्कशक्ति' का अंतर स्पष्ट करते हुए उचित उदाहरण दीजिए। **(2023)**
- "किसी से घृणा मत कीजिए, क्योंकि जो घृणा आपसे उत्पन्न होगी, वह निश्चित ही एक अंतराल के बाद आप तक लौट आएगी। यदि आप प्रेम करेंगे, तो वह प्रेम चक्र को पूरा करता हुआ आप तक वापस आएगा।" - स्वामी विवेकानंद **(2023)**
- "दयालुता के सबसे सरल कार्य, प्रार्थना में एक हज़ार बार झुकने वाले सिरों से कहीं अधिक शक्तिशाली हैं।" महात्मा गांधी **(2023)**
- "भ्रष्टाचार समाज में बुनियादी मूल्यों की असफलता की अभिव्यक्ति है।" आपके विचार में समाज में बुनियादी मूल्यों के उत्थान के लिए क्या उपाय अपनाये जा सकते हैं? **(2023)**
- ऑनलाइन पद्धति का उपयोग दिन-प्रतिदिन प्रशासन की बैठकों, सांस्थानिक अनुमोदन और शिक्षा क्षेत्र में शिक्षण तथा अधिगम से लेकर स्वास्थ्य क्षेत्र में सक्षम अधिकारी के अनुमोदन से टेलीमेडिसिन तक लोकप्रिय हो रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि लाभार्थियों और व्यवस्था दोनों के लिए बड़े पैमाने पर इसके लाभ और हानियाँ हैं। विशेषतः समाज के कमजोर समुदाय के लिए ऑनलाइन पद्धति के उपयोग में शामिल नैतिक मामलों का वर्णन तथा विवेचन कीजिए। **(2022)**
- यह माना जाता है कि मानवीय कार्यों में नैतिकता का पालन किसी संगठन/व्यवस्था के सुचारु कामकाज को सुनिश्चित करेगा। यदि हाँ, तो नैतिकता मानव जीवन में किसे बढ़ावा देना चाहती है? दिन-प्रतिदिन के कामकाज में उसके सामने आने वाले संघर्षों के समाधान में नैतिक मूल्य किस प्रकार सहायता करते हैं? **(2022)**
- व्यापक राष्ट्रीय शक्ति (सी. एन. पी.) के तीन मुख्य घटकों जैसे मानवीय पूंजी, मृदु शक्ति (संस्कृति और नीतियाँ) तथा सामाजिक सद्भाव की अभिवृद्धि में नीति-शास्त्र और मूल्यों की भूमिका का विवेचन कीजिए। **(2020)**
- "शिक्षा एक निषेधाज्ञा नही है, यह व्यक्ति के समग्र विकास और सामाजिक बदलाव के लिए एक प्रभावी और व्यापक साधन है।" उपरोक्त कथन के आलोक में नई शिक्षा नीति, 2020 (एन.ई. पी. ,2020) का परीक्षण कीजिए। **(2020)**
- विधि और नियम के बीच विभेदन कीजिए। इनके सूत्रीकरण में नीति-शास्त्र की भूमिका का विवेचन कीजिए। **(2020)**

- सार्वजनिक जीवन के आधारित सिद्धांत क्या हैं? इन में से किन्हीं तीन सिद्धांतों को उपयुक्त उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिए। **(2019)**
- सांविधानिक नैतिकता से आप क्या समझते हैं? सांविधानिक नैतिकता का अनुरक्षण कोई किस प्रकार करता है? **(2019)**
- सिविल सेवाओं के संदर्भ में सार्विक प्रकृति के, तीन आधारिक मूल्यों का कथन कीजिए और उनके महत्त्व को उजागर कीजिए। **(2018)**
- लोकहित से क्या अभिप्राय है? सिविल कर्मचारियों द्वारा लोकहित में कौन-कौन से सिद्धांतों और कार्यविधियों का अनुसरण किया जाना चाहिए। **(2018)**
- कार्यवाहियों की नैतिकता के संदर्भ में एक दृष्टिकोण तो यह है, की साधन सर्वोपरि महत्त्व के होते हैं और दूसरा दृष्टिकोण यह है कि परिणाम साधनों को उचित सिद्ध करते हैं। आपके विचार में इनमें से कौन-सा दृष्टिकोण अपेक्षाकृत अधिक उपयुक्त है? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क पेश कीजिए। **(2018)**
- वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों का संकट, सद-जीवन की संकीर्ण धारणा से जुड़ा हुआ है। विवेचना कीजिए। **(2017)**
- स्पष्ट कीजिए कि आचारनीति समाज और मानव का किस प्रकार भला करती हैं। **(2016)**
- विधि एवं आचारनीति मानव आचरण को नियन्त्रित करने वाले दो उपकरण माने जाते हैं ताकि आचरण को सभ्य सामाजिक अस्तित्व के लिए सहायक बनाया जा सकें।

  (a) चर्चा कीजिए कि वे इस उद्देश्य की किस प्रकार पूर्ति करते हैं।

  (b) उदाहरण देते हुए यह बताइए कि ये दोनों अपने उपागमों में किस प्रकार एक-दूसरे से भिन्न हैं। **(2016)**

2 अभिवृत्ति

- *"किसी कठिन कार्य की शुरुआत में हमारी अभिवृत्ति ही किसी भी अन्य चीज़ की तुलना में उसके सफल परिणाम को अधिक प्रभावित करती है। "*

  -विलियम जेम्स
- *"अभिवृत्ति एक मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति है जो किसी विशेष अस्तित्व का कुछ हद तक पक्ष या विपक्ष के साथ मूल्यांकन करके व्यक्त की जाती है। "*

  -ईगली और चाइकेन
- *"आप अक्सर अपनी अभिवृत्ति बदलकर अपनी परिस्थितियों को बदल सकते हैं। "*

  -एलेनोर रूज़वेल्ट
- *"अभिवृत्ति एक छोटी सी चीज है जो बड़ा अंतर पैदा करती है। "*

  -विंस्टन चर्चिल

परिचय

- अभिवृत्ति **लोगों द्वारा व्यक्तियों, वस्तुओं, विचारों या घटनाओं का** एक **मूल्यांकन है।** उदाहरण के लिए, आधा भरा गिलास सिद्धांत का एक उदाहरण लीजिए - एक व्यक्ति की अभिवृत्ति यह निर्धारित करती है कि, 'यह आधा भरा है।' या 'यह आधा खाली है।'
- अभिवृत्तियाँ किसी व्यक्ति या संगठन के मूल्यों के आधार पर किसी विशिष्ट स्थिति के प्रति दृष्टिकोण है।
- यह किसी विशेष वस्तु का पक्ष या विपक्ष में **मूल्यांकन करने की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति है।**

अभिवृत्ति की विशेषताएँ

- **संज्ञानात्मक, भावात्मक और व्यवहारिक घटक (Cognitive, Affective, and Behavioural Components)**: अभिवृत्तियों में विचार, संवेग और क्रियाएँ शामिल होती हैं।
- **मूल्यांकन और निर्णय (Evaluation and Judgement)** : अभिवृत्ति में सकारात्मक या नकारात्मक मूल्यांकन शामिल होता है।
- **संदर्भ-निर्भर और व्यक्तिपरक (Context-Dependent and subjective)**: अभिवृत्तियाँ अलग-अलग स्थितियों में भिन्न-भिन्न हो सकती हैं और व्यक्ति दर व्यक्ति भी भिन्न हो सकती हैं।
- **मनोवैज्ञानिक संरचना (Psychological Construct)**: अभिवृत्ति एक मानसिक मूल्यांकन और पूर्वाग्रह है।
- **अधिगम और अर्जन (Learned and Acquired)**: अभिवृत्तियाँ समाजीकरण के माध्यम से सीखी या अर्जित की जाती हैं।

अभिवृत्ति की संरचना/घटक

अभिवृत्ति तीन मुख्य घटकों से बनी होती है: भावात्मक, व्यावहारिक और संज्ञानात्मक।

- **संज्ञानात्मक (Cognitive)**: अभिवृत्ति के इस घटक में किसी चीज़ या व्यक्ति के बारे में हमारे विचार और मान्यताएँ शामिल होती हैं। यह हमारे द्वारा एकत्रित की गई जानकारी और उसके बारे में हमारी समझ पर आधारित होती है। हम जो जानते हैं उसके आधार पर निर्णय लेते हैं और राय बनाते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** व्यक्ति X के उदाहरण पर विचार कीजिए जो मानता है कि व्यक्तिगत कार्य पर्यावरणीय मुद्दों में सकारात्मक अंतर ला सकते हैं और वह असंधारणीय प्रथाओं के परिणामों को समझता है।
- **भावात्मक (Affective)**: अभिवृत्ति का भावात्मक घटक किसी चीज़ या किसी व्यक्ति के प्रति हमारे संवेगों और भावनाओं से संबंधित होता है। यह बताता है कि हम किसी विशेष वस्तु, व्यक्ति, मुद्दे या घटना के बारे में कैसा महसूस करते हैं। इसमें भय, घृणा, प्रसन्नता या यहाँ तक कि प्रेम जैसी भावनाएँ भी शामिल हो सकती हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** व्यक्ति X पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं जैसे कि पुन: प्रयोज्य बैग का उपयोग करने या जल संरक्षण करने आदि में खुशी और संतुष्टि महसूस करता है।
- **व्यावहारिक (Behavioural)**: अभिवृत्ति का व्यावहारिक घटक यह बताता है कि हमारी अभिवृत्ति हमारे व्यवहार या कार्यों को कैसे प्रभावित करती है। यह वह तरीका है जिससे हम अपनी अभिवृत्ति के आधार पर कार्य या व्यवहार करते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** वही व्यक्ति X नियमित रूप से पुनर्चक्रण करता है, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करता है, और पर्यावरण स्वच्छता अभियान में सक्रिय रूप से भाग लेता है।

उदाहरण:

- **पुर्तगाल के फुटबॉल खिलाड़ी रोनाल्डो** जब हंगरी के साथ पुर्तगाल के मैच से पहले टूर्नामेंट की अपनी पहली प्री-मैच प्रेस कॉन्फ्रेंस के लिए बैठे, तो उन्होंने देखा कि उनके सामने कोका-कोला की दो बोतलें रखी हुई थीं। उन्होंने तुरंत कैमरे के सामने से कोल्ड ड्रिंक हटा दी और उनकी जगह पानी की बोतल रख दी।
- दिए गए उदाहरण में, **संज्ञानात्मक घटक** रोनाल्डो का यह ज्ञान है कि कोका कोला स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। **भावात्मक घटक** कोका कोला के प्रति घृणा की भावना है और **व्यावहारिक घटक** कोका कोला की बोतलों को हटाना है।

अभिवृत्ति का निर्माण

अभिवृत्ति के निर्माण को समझाने के लिए निम्नलिखित सिद्धांतों का उपयोग किया जाता है:

- **सहायक अनुकूलन (Instrumental Conditioning)** : इस सिद्धांत के अनुसार, सकारात्मक परिणाम व्यवहार को मजबूत करते हैं जबकि नकारात्मक परिणाम व्यवहार को दबा देते हैं।
  - **उदाहरण** - एक व्यक्ति की धूम्रपान के कारण लगातार निंदा की जाती है, वह व्यक्ति अंततः इसके प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करके धूम्रपान छोड़ देगा।
- **क्लासिकी या पावलोवियन अनुकूलन (Classical or Pavlovian Conditioning)** : इसमें अनुकुलित अनुक्रिया (Conditioned response) प्राप्त करने के लिए पूर्ववर्ती तटस्थ उद्दीपक (Previously neutral stimulus) को गैर-अनुकूलित उद्दीपक (Unconditioned stimulus) के साथ जोड़ा जाता है।
  - **उदाहरण** - नागरिक उन सिविल सेवकों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं जो लगातार लोगों की भलाई के लिए काम करते हैं।

इवान पावलोव ने क्लासिकी अनुकूलन की खोज की थी:
उन्होंने कुत्तों में अनुकूलित अनुक्रिया प्राप्त करने के लिए पूर्ववर्ती तटस्थ उद्दीपक (घंटी की आवाज़, जिसे सुनकर कुत्तों ने कोई अनुक्रिया नहीं की) को गैर-अनुबंधित उद्दीपक (कुत्ते का भोजन) के साथ जोड़ा। अनुकूलित अनुक्रिया के कारण, घंटी बजते ही कुत्ते के मुँह से लार आने लगी।

- **अवलोकनात्मक अधिगम (Observational Learning):** यह सिद्धांत कहता है कि एक व्यक्ति, दूसरों को मिलने वाले पुरस्कार या दंड का अवलोकन करके अपने व्यवहार/विचार को संशोधित करता है।
  - **उदाहरण** – कंपनियों में सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी पुरस्कार इसलिए दिए जाते हैं ताकि कर्मचारियों की अभिवृत्ति बदली जा सके।
- **सामाजिक मानदंड (Social Norms)**: मानदंड **समूह द्वारा अपनाई गई मान्यताएँ हैं** कि किसी दिए गए संदर्भ में सदस्यों को किस तरह व्यवहार करना चाहिए। यह अनौपचारिक समझ है जो समाज के व्यवहार को नियंत्रित करती है।
  - **उदाहरण** - भारतीय समाज में पैर छूना सम्मान का प्रतीक माना जाता है।
- **आनुवंशिक कारक (Genetic Factors)**: यह किसी भी वस्तु या इकाई के प्रति अभिवृत्ति को आकार देने और विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
  - **उदाहरण** - ऑक्सीटोसिन रिसेप्टर जीन जैसे जीनों में भिन्नता समानुभूति के स्तर को प्रभावित कर सकती है, जिससे इस पर प्रभाव पड़ता है कि हम दूसरों की भावनाओं से कैसे जुड़ते हैं और उनके प्रति कैसी अनुक्रिया करते हैं।
- **संस्कृति (Culture)**: संस्कृति व्यक्ति पर बहुत अधिक प्रभाव डालती है। संस्कृति में धर्म, परंपरा, रीति-रिवाज, निषेध, पुरस्कार और प्रतिबंध शामिल हैं।
  - **उदाहरण** - जापान में, बड़े-बड़े उपहार देना एक सांस्कृतिक आदर्श है, जो व्यावसायिक शिष्टाचार को आकार देता है और पदानुक्रम के प्रति सम्मान पर जोर देता है।

अभिवृत्ति के कार्य

अभिवृत्ति के मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं :

- **निर्णय लेने का कार्य (Decision Making Function)** : हमारे निर्णय इस बात पर आधारित होते हैं कि हम परिस्थितियों का मूल्यांकन कैसे करते हैं। अभिवृत्ति निर्णय लेने में सहायता करती है।
  - **उदाहरण** - पर्यावरण के प्रति जागरूक व्यक्ति प्लास्टिक के स्थान पर पुनः उपयोग में लाई जा सकने वाली किराने की थैलियों का चयन करता है (इससे कचरा कम होता है)।
- **उपयोगितावादी कार्य (Utilitarian Function)**: उपयोगितावादी अभिवृत्ति ऐसे व्यवहार की ओर ले जाती है जो व्यक्ति की रुचि को अनुकूलतम बनाता है। पुरस्कार से जुड़ी वस्तुओं के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति और दंड से जुड़ी वस्तुओं के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति।
  - **उदाहरण** - सरकार द्वारा भारत रत्न, पद्म भूषण, पद्म विभूषण आदि पुरस्कार नागरिकों में अपने-अपने कार्यों और समाज सेवा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करने के लिए प्रदान किए जाते हैं।
- **मूल्य भावबोधक कार्य (Value Expressive Function)** : यह किसी व्यक्ति को दूसरों के सामने अपनी छवि प्रदर्शित करने में मदद करता है। यह हमारे बुनियादी मूल्यों को व्यक्त करता है। यह किसी व्यक्ति के लिए सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने में मदद करता है।
  - **उदाहरण** - अन्याय के शिकार लोगों के साथ एकजुटता से खड़ा होना (भले ही कोई सीधे तौर पर इससे संबंधित न हो) साहस और सभी के लिए समानता के मूल्यों को प्रदर्शित करता है।
- **सामाजिक समायोजन कार्य (Social Adjustment Function)**: अभिवृत्ति हमें सामाजिक समायोजन में मदद करती है। अभिवृत्ति हमें दुनिया के बारे में हमारी धारणा को सरल बनाने और इसे हमारे लिए अधिक प्रबंधनीय बनाने में मदद करती है।
  - **उदाहरण** - माइकल की खुले विचारों वाली अभिवृत्ति उसे विविध सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को अपनाने, सामाजिक संपर्क को सुविधाजनक बनाने और वैश्वीकृत दुनिया में समझ को बढ़ावा देने में मदद करती है।
- **सामाजिक पहचान कार्य (Social Identity Function)**: यह किसी व्यक्ति की अभिवृत्ति की जानकारी को दूसरों के सामने प्रदर्शित करने में सहायता करता है।
  - **उदाहरण** - लोग अपनी LGBTQ+ पहचान का जश्न मनाते हैं, समावेशिता को बढ़ावा देते हैं और सामाजिक कलंक को चुनौती देते हैं।
- **अहं रक्षात्मक कार्य (Ego Defensive Function)**: यह व्यक्ति को अपने बारे में बुनियादी सच्चाई या जीवन की कठोर वास्तविकताओं को स्वीकार करने से बचाता है। यह व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक रूप से शत्रुतापूर्ण या खतरनाक माने जाने वाले समूहों से अलग करने में मदद करता है।
  - **उदाहरण** - व्यक्ति X शायद मेस्सी की तरह फुटबॉल नहीं खेल सकता। वह इस वास्तविकता को स्वीकार करने के बजाय, अपनी आत्म-छवि बनाए रखने के लिए दावा कर सकता है कि उसे फुटबॉल पसंद नहीं है।
- **आत्म-जागरूकता कार्य** : अभिवृत्ति लोगों को उन चीजों के प्रति अभिवृत्ति रखने में मदद कर सकती है जो उनके लिए फायदेमंद हैं और उन चीजों से बचने में मदद कर सकती है जो उनके लिए हानिकारक हैं।
  - **उदाहरण** - व्यक्ति X की स्वास्थ्यप्रद भोजन के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति उसे पौष्टिक भोजन का विकल्प चुनने और हानिकारक आहार संबंधी आदतों से बचने के लिए प्रेरित करती है।

व्यवहार पर अभिवृत्ति का प्रभाव

- हमारी **अभिवृत्तियाँ**, जो मान्यताओं, भावनाओं और चीजों के प्रति हमारी पूर्वधारणाओं का समूह हैं, हमारे **व्यवहार पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं**, अर्थात विभिन्न स्थितियों में हम जिस तरह कार्य करते हैं, उस पर प्रभाव डालती हैं।

- उदाहरण के लिए, यदि किसी को व्यायाम करना अच्छा लगता है (सकारात्मक अभिवृत्ति), तो हो सकता है कि उसके दौड़ने जाने की संभावना अधिक हो (व्यवहार)।
- संक्षेप में, अभिवृत्ति एक व्यक्तिगत गुण है, जबकि व्यवहार एक सामाजिक गुण है।

अभिवृत्ति और व्यवहार के बीच अंतर

अभिवृत्ति	व्यवहार
अभिवृत्ति हमारी अनुभूति (ज्ञान या सूचना) का एक आंतरिक घटक है।	व्यवहार ऐसी अभिवृत्ति का प्रकटीकरण या प्रदर्शन है।
मुख्य रूप से वातावरण, अनुभव और नैतिक मूल्य जैसे कारक अभिवृत्ति को प्रभावित करते हैं।	अभिवृत्ति, चारित्रिक गुण, अंतःस्रावी और तंत्रिका प्रतिक्रियाएँ जैसे जैविक कारक हमारे व्यवहार को प्रभावित करते हैं।
यह अधिक व्यक्तिगत है।	यह अधिक सामाजिक है।
अभिवृत्ति व्यक्ति के संवेगों, अभिमतों और विचारों **(Emotions, opinions and thoughts)** को प्रतिबिंबित करती है।	व्यवहार व्यक्ति की अभिवृत्ति को प्रतिबिंबित करता है, क्योंकि कार्य हमारे विचारों का प्रतिबिंब होते हैं।
उदाहरण - किशोरों में बड़ों और गरीब लोगों के प्रति सम्मान का भाव होता है।	**उदाहरण** - यह अभिवृत्ति उनके व्यवहार में देखी जा सकती है (बस में बुजुर्गों को सीट देना या उन्हें सड़क पार करने में मदद करना)।

अभिवृत्ति की श्रेणियाँ (CATEGORIES OF ATTITUDE)

अभिवृत्तियों को विभिन्न श्रेणियों में बांटा जा सकता है, जो दर्शाती हैं कि व्यक्ति लोगों, घटनाओं या विचारों को कैसे देखते हैं और उन पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं। अभिवृत्तियों को मुख्य रूप से स्पष्ट और अंतर्निहित अभिवृत्तियों में विभाजित किया जा सकता है।

स्पष्ट अभिवृत्ति और अंतर्निहित अभिवृत्ति (EXPLICIT ATTITUDE AND IMPLICIT ATTITUDE)

- **स्पष्ट अभिवृत्ति : इसे "स्वयं सूचित अभिवृत्ति"** भी कहा जाता है। यह अभिवृत्ति हमारे चेतन मन में अंतर्निहित होती है या सरल शब्दों में कहें तो संबंधित व्यक्ति अपनी अभिवृत्ति से अवगत होता है।
- **अंतर्निहित अभिवृत्ति** : यह अभिवृत्ति अधिकांशतः **अतीत की स्मृतियों से संचालित होती है,** यह अभिवृत्ति हमारे अचेतन मन में अंतर्निहित होती है। यह हमारे अनुभवों के कारण **अनजाने में उत्पन्न होती है।**

स्पष्ट अभिवृत्ति	अंतर्निहित अभिवृत्ति
व्यक्ति अपनी अभिवृत्तियों के बारे में अवगत होता है।	व्यक्ति अंतर्निहित मान्यताओं के बारे में अनभिज्ञ रहता है।
इसका निर्माण सचेतन रूप से होता है।	यह एक अवचेतन अभिवृत्ति है।
यह अधिक व्यक्तिगत है।	यह अधिक सामाजिक है।
यह मूल्यों, मान्यताओं और वांछित अनुक्रियाओं को प्रतिबिंबित करती है।	यह सामाजिक अनुकूलन (Social conditioning) पर आधारित अनुभवों को दर्शाती है।
उदाहरण – पर्यावरण के अनुकूल तरीके से निर्मित किसी उत्पाद के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति।	**उदाहरण** - बचपन के दिनों में माता-पिता द्वारा उपयोग किए जाने वाले उत्पादों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति।

अभिमत और अभिवृत्ति (OPINION AND ATTITUDE)

अभिमत किसी **व्यक्ति का** किसी चीज़ के बारे में यह विचार या मान्यता है, कि वह अच्छी है या बुरी। यह हर व्यक्ति में अलग-अलग हो सकता है। **उदाहरण** - विकसित और विकासशील देशों में परमाणु हथियार रखने, जलवायु परिवर्तन की ऐतिहासिक जिम्मेदारी के बारे में परस्पर विरोधी अभिमत हैं।

अभिमत	अभिवृत्ति
यह निर्णय की अभिव्यक्ति है।	यह एक निश्चित तरीके से कार्य करने की प्रवृत्ति है।
अभिमत आम तौर पर दूसरों के लिए सलाह योग्य प्रकृति का होता है	यह व्यक्ति, स्थान, वातावरण आदि के प्रति स्वयं की पसंद या नापसंद से संबंधित होती है।
यह तथ्यों या ज्ञान पर आधारित हो भी सकता है और नहीं भी।	यह स्वयं की विश्वास प्रणाली से उत्पन्न होती है।
उदाहरण- एक लेखक ने एक लेख के माध्यम से लोकतंत्र पर सकारात्मक अभिमत व्यक्त किया।	**उदाहरण-** लेखक ने विभिन्न प्रकार की सरकारों का अध्ययन करके लोकतंत्र के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति अपनाई।

मान्यता और अभिवृत्ति (BELIEF AND ATTITUDE)

मान्यता किसी ऐसी चीज़ के बारे में निश्चित होना है जो अस्तित्व में है या सत्य है। **उदाहरण-** संयमित जीवन जीने और अपव्यय से बचने की मान्यता बचत और विवेकपूर्ण उपभोग की प्रवृत्ति को जन्म देती है।

मान्यता	अभिवृत्ति
यह एक ऐसा विचार है जिसे एक व्यक्ति सत्य मानता है।	यह एक मानसिक प्रवृत्ति है जिसके परिणामस्वरूप एक विशेष व्यवहार होता है।
यह विगत अनुभवों, सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंडों या शिक्षा से उत्पन्न हो सकती है।	यह हमारे अंतर्निहित मूल्यों और मान्यताओं से उत्पन्न होती है।
मान्यता बदलने से अभिवृत्ति बदल सकती है।	अभिवृत्ति बदलने से मान्यता भी बदल सकती है।
उदाहरण - पशुओं के प्रति अहिंसा के बारे में मान्यता।	**उदाहरण** - किसी व्यक्ति की यह मान्यता उसे शाकाहारी भोजन के लिए प्रेरित करती है।

मूल्य और अभिवृत्ति (VALUE AND ATTITUDE)

मूल्य वे **दृढ़ मान्यताएँ और सिद्धांत हैं** जो व्यक्ति के व्यवहार और निर्णय प्रक्रिया को निर्देशित करते हैं तथा यह दर्शाते हैं कि जीवन में क्या महत्त्वपूर्ण और वांछनीय माना जाता है। **दाहरण-** एक व्यक्ति की ईमानदारी का मूल्य उसे हमेशा सच बोलने के लिए मजबूर करता है, भले ही यह कठिन या असुविधाजनक हो।

मूल्य	अभिवृत्ति
इसका तात्पर्य उन व्यक्तिगत मान्यताओं या सिद्धांतों से है जो व्यवहार और निर्णय प्रक्रिया का मार्गदर्शन करते हैं।	इसका तात्पर्य व्यक्ति, वस्तु, स्थिति या वातावरण के बारे में व्यक्तिगत भावना (नकारात्मक, सकारात्मक या तटस्थ भावना) से है।
इससे यह निर्णय लेने में मदद मिलती है कि क्या सही है और क्या गलत।	यह चीजों, लोगों और वस्तुओं के प्रति हमारी पसंद, नापसंद है।
वे एक ऐसी मान्यता का प्रतिनिधित्व करते हैं जो वस्तुओं और स्थितियों के संबंध में कार्यों और निर्णय को निर्देशित करती है।	वे किसी विशिष्ट वस्तु या स्थिति के बारे में कई मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं।
किसी विशेष व्यक्ति की नैतिकता और उसके समग्र चरित्र को प्रदर्शित करती है।	व्यक्तित्व के माध्यम से किसी व्यक्ति के व्यवहार को उजागर करती है।
मूल्य सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं से उत्पन्न होते हैं।	यह एक व्यक्तिगत अनुभव है।
उदाहरण - एक छात्र जिसमें धैर्य और दृढ़ता का मूल्य है।	**उदाहरण** - एक छात्र परीक्षा की तैयारी के दौरान कठिनाइयों का सामना करता है लेकिन पढ़ाई जारी रखता है और सफल होता है।

मूल्य और अभिवृत्ति के बीच समानता

- **मार्गदर्शक सिद्धांत (Guiding Principles):** मूल्य और अभिवृत्ति दोनों ही आंतरिक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं जो हमारे विकल्पों और कार्यों को प्रभावित करते हैं।
- **दिशा और मूल्यांकन (Direction and Evaluation):** दोनों ही दिशा प्रदान करते हैं और चीजों को अच्छा, बुरा, महत्त्वपूर्ण या महत्त्वहीन के रूप में मूल्यांकन करने का तरीका प्रदान करते हैं।
- **व्यवहार का आधार (Basis for Behavior):** मूल्य और अभिवृत्ति दोनों ही हमारे व्यवहार को तथा अन्य लोगों के साथ परस्पर व्यवहार को आकार दे सकते हैं।
- **धारणा पर प्रभाव (Influence on Perception):** दोनों ही इस बात को प्रभावित कर सकते हैं कि हम परिस्थितियों और अपने आस-पास के लोगों को किस प्रकार देखते हैं।

संज्ञानात्मक असंगति (COGNITIVE DISSONANCE)

- **संज्ञानात्मक असंगति** एक **मनोवैज्ञानिक अवधारणा है** जो उस **असहज तनाव को दर्शाती है जो हम तब महसूस करते हैं जब हमारा व्यवहार हमारी मान्यताओं या अभिवृत्तियों से मेल नहीं खाता।** असहजता की यह भावना हमें असंगति को कम करने और अपने भीतर सामंजस्य पुनः स्थापित करने के लिए अपनी अभिवृत्ति या अपने व्यवहार को बदलने के लिए प्रेरित कर सकती है।
  - **उदाहरण के लिए**, जब आप किसी ऐसे तरीके से कार्य करते हैं जो आपकी मान्यताओं के विपरीत होता है, तो इससे एक प्रकार की मानसिक असहजता पैदा होती है।
  - **उदाहरण के लिए**, यदि आप मानते हैं कि धूम्रपान आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, लेकिन फिर भी आप धूम्रपान करना जारी रखते हैं, तो आपकी मान्यता (धूम्रपान बुरा है) और आपके कार्य (धूम्रपान) के बीच यह विरोधाभास संज्ञानात्मक असंगति पैदा करता है।

असंगति को दूर करना

लोग संज्ञानात्मक असंगति को कम करने और आंतरिक सद्भाव पुनः स्थापित करने के लिए विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करते हैं:

- **अभिवृत्ति या व्यवहार बदलना (Changing Attitudes or Behaviours)** : असंगति को कम करने का सबसे सीधा तरीका है कि आप अपने व्यवहार को अपनी मान्यताओं के अनुरूप बदलना या अपनी मान्यताओं को अपने कार्यों से बेहतर ढंग से मेल खाने के लिए समायोजित करना। उदाहरण के लिए, एक धूम्रपान करने वाला व्यक्ति अपनी स्वास्थ्य संबंधी मान्यताओं के अनुसार धूम्रपान छोड़ सकता है।
- **औचित्य की तलाश करना (Seeking Justification)** : अपने व्यवहार या अभिवृत्ति का समर्थन करने वाली नई जानकारी इकट्ठा करके भी असंगति को कम किया जा सकता है। यदि किसी व्यक्ति को किसी अध्ययन के बारे में पता चलता है जिसमें सुझाव दिया गया है कि कम मात्रा में शराब पीने से स्वास्थ्य लाभ हो सकता है, तो वे स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के बावजूद शराब पीने के बारे में कम दोषी महसूस कर सकते हैं।
- **महत्त्व को कम करना (Minimising the Importance)**: कुछ लोग असंगति के महत्त्व को कम आंक सकते हैं। एक व्यक्ति अपने कार्यों और अपनी स्वास्थ्य संबंधी मान्यताओं के बीच तनाव को कम करने के लिए यह सोच सकता है कि "यह सिर्फ एक सिगरेट ही तो है।"
- **आत्म-सांत्वना (Self-Consolation)** : परिस्थितियों पर विचार करके या अपने सकारात्मक कार्यों पर ध्यान केंद्रित करके व्यवहार को तर्कसंगत बनाकर भी असंगति को कम किया जा सकता है। कोई व्यक्ति झूठ को यह सोचकर उचित ठहरा सकता है कि उसने जब ईमानदारी बरती थी तो उसका क्या परिणाम रहा था, या यह मानकर झूठ को उचित ठहरा सकता है कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाने से बचने के लिए झूठ बोलना ज़रूरी था।

नैतिक अभिवृत्ति (MORAL ATTITUDE)

- यह **सही और गलत के नैतिक विश्वास पर आधारित है।**
- नैतिक अभिवृत्तियाँ **तीव्र संवेगों में गहराई से निहित होती हैं**, जो वास्तव में नैतिक जीवन के लिए आवश्यक हैं। इन संवेगों के बिना नैतिकता आकस्मिक और असंगत हो जाती है।
- नैतिक अभिवृत्तियों में हमारे नैतिक निर्णय (सही और गलत) शामिल होते हैं तथा ये व्यक्ति के मूल मूल्यों को प्रतिबिंबित करती हैं।
  - उदाहरण के लिए **सुकरात और प्लेटो की** नैतिक अभिवृत्ति यह थी कि अन्याय सहना, अन्याय करने से बेहतर है। इसी तरह, अन्याय के जवाब में **अहिंसा में गांधी का विश्वास** उनके मजबूत नैतिक रुख से उत्पन्न हुआ था।
- हालाँकि, **हमारी सभी अभिवृत्तियों का नैतिक आयाम नहीं होता है। उदाहरण के लिए**, किसी व्यक्ति का साँपों से डरना स्वाभाविक रूप से नैतिक नहीं है। हालाँकि, लोकतंत्र के प्रति अभिवृत्ति के मजबूत नैतिक निहितार्थ हो सकते हैं।

नैतिक अभिवृत्ति के गुण (QUALITIES OF MORAL ATTITUDE)

नैतिक अभिवृत्ति न तो स्थायी होती है और न ही सार्वभौमिक। नैतिक अभिवृत्ति को आकार देने वाले कई कारक हैं। ये इस प्रकार हैं:

- **सत्यता (Veracity)** : इसका तात्पर्य सच्चाई, निष्ठा या स्थिरता और जिम्मेदारी के प्रति जागरूकता से है।
  - **उदाहरण के लिए**, एक व्यवसाय मालिक लागत में कटौती करने के लिए बाजार के दबाव के बावजूद, कर्मचारियों के लिए उचित वेतन को प्राथमिकता देता है, जो ईमानदार और नैतिक व्यवहार के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
- **श्रद्धा (Reverence):** न्याय के लिए दूसरों के प्रति गहरा सम्मान आवश्यक है। इसके लिए उनके अधिकारों को स्वीकार करना और सत्ता की अपनी इच्छा पर अंकुश लगाना आवश्यक है। श्रद्धा के बिना, सत्ता के आगे समर्पण करना या आत्म-त्याग करना असंभव हो जाता है।
- **जागरूकता के साथ जिम्मेदारी (Responsibility with Awareness):** एक जिम्मेदार व्यक्ति आंतरिक मूल्य रखता है। इसमें निर्णय लेने में मार्गदर्शन करने वाली उच्च शक्ति को पहचानना शामिल है, जिससे कठिन परिस्थितियों में सावधानीपूर्वक विचार करने का साहस मिलता है।
- **निष्ठा (Faithfulness):** किसी व्यक्ति या ध्येय के प्रति वफ़ादारी, जो लगातार कार्य के ज़रिए व्यक्त की जाती है, निष्ठा कहलाती है। यह वफ़ादारी जितनी मज़बूत होगी, व्यक्ति नैतिक मूल्यों को अपनाने में उतना ही ज़्यादा सक्षम होगा।
- **अच्छाई (Goodness):** प्रेम में निहित अच्छाई वह मूलभूत अभिवृत्ति है जो हमें दयालुता और उदारता प्रदर्शित करने के लिए प्रेरित करती है।

नैतिक अभिवृत्ति का प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव	नकारात्मक प्रभाव
नैतिक अभिवृत्ति मजबूत संवेगों से बंधी होती है। इसलिए सामाजिक बहिष्कार के डर से विचलित व्यवहार को रोकती है। **उदाहरण** - किसान कर्ज में डूबे होने के बावजूद चोरी जैसी अनैतिक प्रथाओं का पालन नहीं करते हैं।	लोग इसका उपयोग हिंसक व्यवहार और पागलपन को उचित ठहराने के लिए कर सकते हैं और फिर भी समाज इसे स्वीकार कर लेगा, क्योंकि नैतिक अभिवृत्ति मजबूत संवेग हैं। **उदाहरण** - धार्मिक, क्षेत्रीय मुद्दों को सही ठहराने के लिए किसी व्यक्ति को दंगे, नरसंहार और आतंकवाद के लिए प्रेरित करना।
किसी व्यक्ति को परोपकारिता, स्वयंसेवा, समाज सेवा के प्रति प्रेरित करती है।	चूँकि नैतिक अभिवृत्ति मजबूत संवेगों से जुड़ी होती है, इसलिए लोग उन लोगों का साथ नहीं देते जिनकी नैतिक अभिवृत्ति उनसे भिन्न होती है। उदाहरण: असहिष्णुता।

सामाजिक अभिवृत्ति (SOCIAL ATTITUDE)

- यह **सामाजिक संस्थाओं जैसे कि** समाज, संस्कृति, संगठन, संस्थाओं आदि **के प्रति व्यक्ति की अभिवृत्ति है।**
- यह एक भावना और मान्यता है जो किसी व्यक्ति के मन में कुछ मुद्दों के प्रति होती है। ये अभिवृत्तियाँ समय के साथ बदल सकती हैं तथा संस्कृति, पीढ़ी और मीडिया के प्रभाव जैसे कारकों के आधार पर भिन्न हो सकती हैं।
- यह एक **व्यवहार पैटर्न** अर्थात् किसी सामाजिक उद्दीपन के प्रति अनुकूलित अनुक्रिया (Conditioned response) या पूर्वानुमानित प्रवृत्ति है।
- इसका स्वरूप **व्यक्तिगत अनुभवों और अवलोकनों द्वारा निर्धारित होता है।**

सिविल सेवक के लिए महत्त्व

- **कमजोरी को समझना (Understanding Vulnerability):** गरीबी, अभाव और भेदभाव जैसे मुद्दों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति एक सिविल सेवक की वंचितों के प्रति समानुभूति और चिंता को दर्शाती है। यह हाशिये पर स्थित लोगों और कठिनाई का सामना करने वालों के प्रति करुणा दर्शाती है।
  - **उदाहरण**: रैम्प, ब्रेल साइनेज और समावेशी सार्वजनिक स्थानों पर बढ़ता ध्यान दिव्यांगों को शामिल करने के लिए बढ़ती सामाजिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
- **पूर्वाग्रह से बचना (Combating Bias):** निष्पक्ष व्यवहार बहुत ज़रूरी है। सिविल सेवकों को व्यक्तियों के साथ अपने व्यवहार में रूढ़िवादिता या पूर्वाग्रह के हावी होने से बचना चाहिए।
  - **उदाहरण**: IAS अधिकारी अमित गुप्ता की "डलिया जलाओ" पहल बदायूं जिले (यू.पी.) में हाथ से मैला ढोने (मैनुअल स्कैवेंजिंग) के खिलाफ सफल कार्रवाई का उदाहरण है, जो पूर्वाग्रह पर काबू पाने की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करती है।
- **सर्वोदय और अंत्योदय (Sarvodaya and Antyodaya):** सिविल सेवकों को सर्वोदय (सभी के कल्याण) और अंत्योदय (सबसे वंचितों का उत्थान) के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित होना चाहिए। उन्हें समाज की बेहतरी के लिए प्रयास करना चाहिए, जिसमें सबसे गरीब वर्गों को सशक्त बनाने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
- **सहिष्णुता (Tolerance)**: सिविल सेवकों को कमजोर वर्गों की जरूरतों को पूरा करने के लिए सहिष्णु होना चाहिए।

पूर्वाग्रह (PREJUDICE)

- पूर्वाग्रह में **लोगों के पूरे समूह के बारे में नकारात्मक पूर्वधारणाएँ शामिल होती हैं, जो अक्सर रूढ़िवादिता पर आधारित होती हैं।**
- ये निर्णय **तर्क या व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित नहीं** होते, बल्कि पूरी तरह से व्यक्ति के किसी विशेष सामाजिक समूह से संबंधित होने पर आधारित होते हैं।
- पूर्वाग्रह से ग्रस्त लोग व्यक्तिगत भिन्नताओं को नज़रअंदाज़ करते हुए **समूह के सभी सदस्यों को एक जैसा मान लेते हैं**। इससे भेदभाव हो सकता है।
- **उदाहरण के लिए** महिलाओं द्वारा वाहन चलाने के प्रति पूर्वाग्रह, दलितों की क्षमताओं पर संदेह करना, या जनजातीय समुदायों में स्वच्छता की कमी की अनुचित धारणा रखना।

पूर्वाग्रह का अवरोध कैसे करें?

- **स्रोत को निशाना बनाएं:** पूर्वाग्रह के अंतर्निहित कारणों को प्रभावी ढंग से दूर करने के लिए उसके स्रोत की पहचान करना ।
- **पूर्वाग्रह के अनुभव को सीमित करना:** पक्षपातपूर्ण जानकारी या पूर्वाग्रह को बढ़ावा देने वाले वातावरण का सामना करने के अवसरों को कम करना ।
- **साझा पहचान को बढ़ावा देना:** व्यक्तियों को केवल संकीर्ण समूह संबद्धता पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय राष्ट्रीय या वैश्विक नागरिकता जैसी व्यापक सामाजिक पहचान पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करना।

- **अंतर-समूह संपर्क बढ़ाएँ** : विश्वास बढ़ाने और अविश्वास को कम करने के लिए विभिन्न समूहों के बीच बातचीत को बढ़ावा देना।
  - **उदाहरण के लिए,** अंतर-धार्मिक संवाद का आयोजन करना, जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग अपनी मान्यताओं पर चर्चा करते हैं, इससे आपसी समझ बढ़ती है और धार्मिक पूर्वाग्रह समाप्त होते हैं।
- **शिक्षा और सूचना का प्रसार** : रूढ़िवादिता को चुनौती देने और समझ को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा और सूचना के प्रसार का उपयोग करना।
  - **उदाहरण के लिए,** स्कूल पाठ्यक्रम में विविधता और विभिन्न समुदायों के योगदान को उजागर करने वाले पाठों को शामिल करना, इससे बच्चों में छोटी उम्र से ही पूर्वाग्रह को समाप्त किया जा सकता है।

राजनीतिक अभिवृत्ति (POLITICAL ATTITUDE)

- इसका तात्पर्य **राजनीतिक हस्तियों, संस्थाओं, घटनाओं और मुद्दों के बारे में किसी व्यक्ति या समूह के दृष्टिकोण से है।** यह विभिन्न **विचारधाराओं पर उनके रुख को दर्शाता है।**
- राजनीतिक अभिवृत्ति यह दर्शाती है कि व्यक्ति राजनीतिक दलों, विषयों और विश्वास प्रणालियों को किस प्रकार देखते हैं।
- लोगों के मौजूदा वैचारिक झुकाव यह निर्धारित करते हैं कि वे विशिष्ट कोणों से राजनीतिक मुद्दों का विश्लेषण कैसे करते हैं।

हमारी राजनीतिक विचारधाराओं को प्रभावित करने वाले कारक

- **परिवार का प्रभाव :** बच्चे अक्सर अपने माता-पिता के राजनीतिक पदचिन्हों का अनुसरण करते हैं।
  - **उदाहरण** - प्रमुख राजनीतिक हस्तियों के बच्चे अक्सर अपने परिवार की विचारधारा और समर्थन आधार को आगे बढ़ाते हुए स्वयं राजनीति में प्रवेश करते हैं।
- **जाति की भूमिका:** किसी व्यक्ति की जातिगत पृष्ठभूमि उसके राजनीतिक झुकाव को प्रभावित कर सकती है। कुछ देशों (जैसे, भारत) में, चुनाव अभी भी जाति से काफी प्रभावित हैं। राजनेता अक्सर वोट हासिल करने के लिए निर्वाचन क्षेत्र में प्रमुख जाति के आधार पर उम्मीदवारों का चयन करते हैं।
- **धर्म का प्रभाव:** धार्मिक विश्वास नैतिक मूल्यों को आकार दे सकते हैं, जो बाद में राजनीतिक विचारों को प्रभावित कर सकते हैं।
  - **उदाहरण** - धार्मिक तनाव और विवादों (जैसे भारत में अयोध्या विवाद) का राजनीतिक दलों द्वारा धार्मिक आधार पर मतदाताओं को लामबंद करने के लिए फायदा उठाया जा सकता है।
- **शिक्षा का प्रभाव:** स्कूल का पाठ्यक्रम और अंतर्निहित विचारधारा छात्रों की राजनीतिक मान्यताओं को आकार देने में भूमिका निभा सकती है। उदाहरण के लिए, जो शिक्षा प्रणाली किसी विशेष विचारधारा को बढ़ावा देती है, जैसे कि चीन की शिक्षा प्रणाली साम्यवाद पर जोर देती है, वह अन्य राजनीतिक प्रणालियों के बारे में छात्रों के विचारों को प्रभावित कर सकती है।
- **सोशल मीडिया**: आईटी के युग में सोशल मीडिया लोगों की राजनीतिक विचारधाराओं को प्रभावित करने वाले प्रचार का एक प्रमुख उपकरण बन गया है।
  - **उदाहरण** - राजनीतिक दल वोट बैंक को आकर्षित करने के लिए सोशल मीडिया हैंडल का उपयोग करते हैं।
- **आर्थिक स्थिति** : गरीब लोग समाजवादी विचारधारा की ओर झुकाव रखते हैं और अमीर लोग पूँजीवादी विचारधारा की ओर झुकाव रखते हैं।
  - **उदाहरण** - गरीब लोगों द्वारा उन दलों को वोट देने की अधिक संभावना होती है जो उन्हें सब्सिडी वाले खाद्यान्न, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा आदि का वादा करते हैं।

राजनीतिक अभिवृत्ति का महत्त्व

- **मतदान व्यवहार को आकार देना**: राजनीतिक अभिवृत्ति इस बात को प्रभावित करती है कि व्यक्ति किसको वोट देता है और वह किन नीतियों का समर्थन करता है। लोग उन उम्मीदवारों के साथ जुड़ते हैं जो उनके मूल्यों और प्राथमिकताओं को साझा करते हैं।
- **राजनीतिक भागीदारी का निर्धारण**: व्यक्ति के राजनीतिक विचार यह निर्धारित कर सकते हैं कि वह राजनीतिक प्रक्रिया में कितनी सक्रियता से भाग लेता है। इसमें मतदान, स्वयंसेवा या विरोध प्रदर्शन शामिल हो सकता है।
- **जनमत और नीति निर्माण**: समाज की सामूहिक राजनीतिक अभिवृत्ति जनमत को प्रभावित करती है, जो सरकारी नीतियों को आकार दे सकता है।
- **पहचान और समुदाय**: राजनीतिक विचार व्यक्ति की पहचान की भावना को आकार दे सकते हैं और उसे समान विचारधारा वाले लोगों के साथ जोड़ सकते हैं, जिससे समुदाय की भावना को बढ़ावा मिलता है।

लोकतांत्रिक अभिवृत्ति (DEMOCRATIC ATTITUDE)

- लोकतांत्रिक अभिवृत्ति में मूल्यों का एक समूह शामिल होता है जो समाज में निष्पक्षता, सम्मान और समावेशिता को बढ़ावा देता है।
- यह मतभेदों का सम्मान करती है तथा हितधारकों की भागीदारी की सराहना करती है।
- लोक सेवा के मामले में, इसका तात्पर्य सिविल सेवकों की उन अभिवृत्तियों से है जो निर्णय लेने में लोगों की भागीदारी को बढ़ावा देती हैं। वे शक्ति या प्राधिकार के प्रत्यायोजन को बढ़ावा देती हैं। नियम और विनियमन के स्थान पर करुणा, सहिष्णुता और समावेशिता पर अधिक ध्यान दिया जाता है।
- इसकी निम्नलिखित **विशेषताएँ हैं** :
  - **निर्णय प्रक्रिया:** लोगों की इच्छा से निर्देशित होती है, जो अक्सर जनमत सर्वेक्षणों या चुनावों में परिलक्षित होती है।
  - **बहुमत का सम्मान:** निर्णय प्रक्रिया में शामिल अधिकाधिक लोगों द्वारा लिए गए निर्णयों की वैधता को मान्यता दी जाती है।
  - **लोक कल्याण पर ध्यान:** इसका उद्देश्य ऐसी नीतियाँ बनाना है जिनसे जनसंख्या के सबसे बड़े हिस्से को लाभ पहुँचे।
  - **प्रतिनिधि शासन:** यह निर्वाचित अधिकारियों पर निर्भर करता है कि वे उन लोगों की चिंताओं और हितों को आवाज दें जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं।

गुण	दोष
• यह **लोगों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देती है।** इसलिए, यह जमीनी स्तर पर लोकतांत्रिक संस्थाओं को बढ़ावा देगी और मजबूत करेगी।	• निर्णय लेने की प्रक्रिया **धीमी और समय लेने वाली हो जाएगी।** • समाज के हर वर्ग को संतुष्ट करना कठिन है। कभी-कभी ऐसी अभिवृत्ति **विकास प्रक्रिया में बाधा बन जाती है।**

• लोक सेवा प्रदान करने में अधिक पारदर्शिता और दक्षता लाएगी। • यह शासन प्रणाली को अधिक जवाबदेह बनाएगी क्योंकि इसमें लोगों की सक्रिय भागीदारी होती है।	• **उदाहरण** - वन अधिनियम, 2006 के तहत अनिवार्य परामर्श के कारण अनुसूचित क्षेत्र में खनन और औद्योगिक विकास परियोजना की मंजूरी में देरी।

नौकरशाही अभिवृत्ति (BUREAUCRATIC ATTITUDE)

- नौकरशाही अभिवृत्ति का तात्पर्य एक ऐसी **मानसिकता या दृष्टिकोण है** जो किसी संगठनात्मक या संस्थागत व्यवस्था के भीतर नियमों, प्रक्रियाओं और औपचारिकताओं के अत्यधिक पालन से संबंधित होती है।
- यह दिशा-निर्देशों और विनियमों का सख्ती से पालन करने को प्राथमिकता देती है। यह दृष्टिकोण तटस्थता, वस्तुनिष्ठता और निष्पक्षता के सिद्धांतों पर आधारित है।

नौकरशाही अभिवृत्ति की विशेषताएँ

- **नियमों के अनुसार निर्णय लेना:** निर्णय मौजूदा कानूनों और विनियमों के आधार पर ही लिए जाते हैं।
- **प्रत्येक चरण का पालन करना:** सभी स्थापित प्रक्रियाओं और नियमों का पालन किया जाता है, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों।
- **जनता की राय को कम महत्त्व दिया जाना:** निर्णय लेने में जनता की राय या फीडबैक को प्रमुख स्थान नहीं दिया जाता है।
- **निर्वाचित अधिकारियों के साथ टकराव:** नियमों का कड़ाई से पालन कभी-कभी जनता की भावनाओं के प्रति उत्तरदायी निर्वाचित प्रतिनिधियों के साथ टकराव पैदा कर सकता है।

गुण	दोष
• मानक संचालन प्रक्रिया का **सख्त अनुपालन।** • निर्णय लेने की पदानुक्रमिक प्रक्रिया के कारण **निर्णयों के लिए जिम्मेदारी तय करना** आसान है। • चूँकि इसमें जनता से परामर्श की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए **निर्णय शीघ्र लिए जा सकते हैं।**	• **लालफीताशाही** देखने को मिलती है, क्योंकि लक्ष्य प्राप्ति में कोई तत्परता नहीं होती है। • यह **कठोर है**; इसलिए लोक सेवा वितरण प्रभावी नहीं हो सकता। • नौकरशाह व्यवस्था में परिवर्तन के विरोधी होते हैं, जिससे **गतिरोध पैदा होता है।** • **नियम के रूप में आम लोगों के प्रति उदासीनता** ही सर्वोच्च होती है, नागरिक सर्वोच्च नहीं होते हैं।

लोकतांत्रिक अभिवृत्ति और नौकरशाही अभिवृत्ति के बीच अंतर

लोकतांत्रिक अभिवृत्ति	नौकरशाही अभिवृत्ति
यह भागीदारी, मानवतावादी और लचीले दृष्टिकोण और नीचे से ऊपर की ओर निर्णय लेने पर आधारित है।	यह पदानुक्रमिक अनुशासन, आदेशों के प्रति अंतर्निहित आज्ञाकारिता, ऊपर से नीचे की ओर निर्देश और नियमबद्ध दृष्टिकोण को दर्शाती है।
यह लोगों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देती है।	नियम के रूप में आम लोगों के प्रति उदासीनता ही सर्वोच्च होती है, नागरिक सर्वोच्च नहीं होते हैं।
यह जवाबदेही, जन भागीदारी, पारदर्शिता, कानून के लचीलेपन और जनहित पर अधिक ध्यान केंद्रित करती है।	यह नियम-प्रक्रिया, ऊपर से नीचे की ओर और केंद्रीकृत निर्णय-प्रक्रिया को मजबूत करने और उसका पालन करने ध्यान केंद्रित करती है।
पारदर्शिता, समावेशिता के मूल्यों पर आधारित है।	वस्तुनिष्ठता और तटस्थता पर आधारित है।
उदाहरण - सार्वजनिक सेवा प्रदान करने वाली संस्थाओं जैसे बैंक और PDS दुकानों को लोकतांत्रिक अभिवृत्ति की आवश्यकता होती है।	**उदाहरण** - त्वरित निर्णय लेने तथा राष्ट्रीय सुरक्षा और देश की संप्रभुता के प्रश्न से निपटने वाले क्षेत्रों में नौकरशाही अभिवृत्ति की आवश्यकता है।

सामाजिक व्यवहार

- **सामाजिक व्यवहार** से तात्पर्य उस तरीके से है जिससे **व्यक्ति समाज में दूसरों के साथ परस्पर व्यवहार करते हैं और जुड़ाव रखते हैं।** इसमें कई तरह की क्रियाएं, प्रतिक्रियाएँ और संप्रेषण शैलियाँ शामिल हैं जो इस बात को प्रभावित करती हैं कि हम एक समूह में कैसे काम करते हैं।
- ऐसा कहा जाता है कि किसी व्यक्ति के व्यवहार को बदलना कठिन होता है। ऐसा निम्नलिखित **कारणों से होता है** :
  - **सुस्थापित परंपराएं:** सदियों से चली आ रही प्रथाएं, जैसे घर के अंदर शौचालय बनाने के बजाय बाहर शौचालय बनाना, परिवर्तन का विरोध करती हैं, क्योंकि उन्हें आदर्श के रूप में देखा जाता है।
  - **सांस्कृतिक मानदंड:** सांस्कृतिक पदानुक्रम में कुछ समूह दूसरों की तुलना में अधिक शक्ति रखते हैं (जैसे महिलाओं का अधीनीकरण), इसे खत्म करना कठिन हो सकता है।
  - **पूर्वाग्रह:** मौजूदा रूढ़िवादिता और पूर्वाग्रह, जैसे कि यह मान्यता कि महिलाओं को अधीनस्थ होना चाहिए, समानता की दिशा में प्रगति में बाधा उत्पन्न कर सकते हैं।

व्यवहार कैसे बदला जा सकता है?

लोगों के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं।

- **सांस्कृतिक मानदंडों का लाभ उठाना:** सफल अभियान अक्सर सांस्कृतिक और सामाजिक परंपराओं को एकीकृत करते हैं। उदाहरण के लिए, "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" अभियान में उन धर्मग्रंथों का संदर्भ दिया जा सकता है जिनमें महिलाओं को शक्तिशाली हस्तियों के रूप में सम्मानित किया गया है।
- **जनता की प्रतिबद्धता को प्रोत्साहन:** पूर्व-प्रतिबद्धता रणनीतियाँ प्रभावी हो सकती हैं, जिनमें लोग सरकारी अभिकर्ताओं की मौजूदगी में विशिष्ट लक्ष्यों के लिए प्रतिज्ञा करते हैं। स्वच्छ भारत अभियान (स्वच्छ भारत मिशन) "स्वच्छाग्रहियों" (स्वच्छता स्वयंसेवकों) के माध्यम से नागरिकों को स्वच्छता संबंधी प्रतिबद्धताओं के लिए मार्गदर्शन करने में इसका उपयोग कर सकता है।
- **सफलता की कहानियाँ प्रदर्शित करना:** प्रशंसापत्रों या उदाहरणों के माध्यम से कार्यक्रम के वास्तविक लाभार्थियों को उजागर करने से अन्य लोगों को भाग लेने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।
- **भावनात्मक जुड़ाव को बढ़ावा देना:** सरकार की पारदर्शिता और सक्रिय भागीदारी नागरिकों के साथ भावनात्मक जुड़ाव पैदा करती है। इससे विश्वास और सामाजिक प्रगति के लिए साझा जिम्मेदारी की भावना पैदा होती है।

नैतिक पुलिसिंग (MORAL POLICING)

- **नैतिक** (मोरल) पुलिस एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल समाज में नैतिकता के नियम लागू करने के लिए काम करने वाले निगरानी समूहों के लिए किया जाता है। वे कानून को अपने हाथ में लेते हैं और लोगों पर अनुशासन लागू करने की कोशिश करते हैं।
- कभी-कभी मोरल पुलिसिंग **सतर्कता समूहों द्वारा न्याय (Vigilante justice)** का रूप ले लेती है, जिसमें समूह अपनी नैतिक संहिता का उल्लंघन करने वालों को दंडित करने के लिए कानून अपने हाथ में ले लेते हैं। यह खतरनाक हो सकता है और हिंसा का कारण बन सकता है।
  - **उदाहरण** - स्वयंभू नैतिक संरक्षक और निगरानी समूह वेलेंटाइन दिवस के उत्सव में बाधा डालते हैं, तथा प्रेम के सार्वजनिक प्रदर्शन को अनैतिक मानते हैं।

नैतिक (मोरल) पुलिसिंग हानिकारक क्यों है?

- **स्वतंत्रता पर अंकुश लगाना:** यह मौलिक अधिकारों, विशेषकर महिलाओं जैसे कमजोर समूहों के मौलिक अधिकारों का दमन करती है।
- **कानून का उल्लंघन करना:** न्यायेतर होने के कारण, यह कानून और व्यवस्था की अनदेखी करती है, जिससे अराजकता फैलती है।
- **विश्वास को कम करना:** कानूनी व्यवस्था में विश्वास कम होता है, तथा असहिष्णुता में वृद्धि होती है।
- **उग्रवाद को बढ़ावा देना:** यह त्वरित, अक्सर हिंसक, "न्याय" की माँग को बढ़ावा देता है, जिसके कारण भीड़ द्वारा हत्या की घटनाएँ (Mob lynchings) देखने को मिल सकती हैं।

नैतिक (मोरल) पुलिसिंग रोकने के तरीके

- **कानून प्रवर्तन का सुदृढ़ीकरण:** पुलिस व्यवस्था में सुधार करना और कानून का उल्लंघन करने वालों को जवाबदेह ठहराया जाना।
- **सार्वजनिक शिक्षा:** पूर्वाग्रह को चुनौती देने और स्वीकृति को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता अभियान प्रारम्भ करना।
- **लक्षित पुलिसिंग:** मोरल पुलिसिंग की संभावना वाले क्षेत्रों में पुलिस की उपस्थिति बढ़ाएँ (जैसे, वैलेंटाइन दिवस के दौरान पब के आस-पास)।
- **सामुदायिक सहायता:** संवेदनशील समय के दौरान सहायता प्रदान करने के लिए सामुदायिक पुलिसिंग और स्वयंसेवी नेटवर्क का निर्माण करना ।
- **खुली चर्चा:** प्रियजनों के साथ इन मुद्दों पर चर्चा करना, सहिष्णुता पर जोर देना और व्यक्तिगत विकल्पों का सम्मान करना।

सामाजिक प्रभाव (SOCIAL INFLUENCE)

- यह दर्शाता है कि **व्यक्तिगत विचार, क्रियाएँ और भावनाएँ सामाजिक समूहों से कैसे प्रभावित होती हैं।** यह एक ऐसा गुण है जो समाज में अन्य लोगों के साथ परस्पर व्यवहार के परिणामस्वरूप किसी व्यक्ति के कार्यों, अभिवृत्तियों और भावनाओं में बदलाव ला सकता है।
- सामाजिक प्रभाव हमें सकारात्मक काम करने के लिए प्रेरित कर सकता है, जैसे दूसरों की मदद करना या स्वयंसेवा करना। लेकिन यह हमें नकारात्मक काम करने के लिए भी प्रेरित कर सकता है, जैसे सनक का अनुसरण करना या किसी को धमकाना।

व्यक्ति द्वारा सामाजिक प्रभावों पर अलग-अलग तरीके से प्रतिक्रिया

- **अनुपालन (Compliance):** बिना किसी दृढ़ विश्वास के सार्वजनिक सहमति। (**उदाहरण:** जब किसी व्यक्ति का मित्र नस्लवादी टिप्पणी करता है तो वह चुप रहता है।)
- **पहचान (Identification):** किसी प्रशंसित व्यक्ति की नकल करने के लिए उसके व्यवहार को अपनाना। (**उदाहरण:** एक युवा प्रशंसक अपने पसंदीदा एथलीट द्वारा प्रचारित ब्रांड का पेय पीता है।)
- **आंतरिककरण (Internalisation):** समान मान्यताओं के कारण किसी के साथ जुड़ना। (**उदाहरण:** दो मित्र हैं जो दोनों नस्लवादी विचार व्यक्त करते हैं)।

सामाजिक प्रभाव के प्रकार

- **मानक प्रभाव (Normative Influence)**: एक व्यक्ति पसंद किए जाने और स्वीकार किए जाने के लिए भीड़ का अनुसरण करता है। कोई व्यक्ति समान मान्यताओं, मूल्यों, अभिवृत्तियों और व्यवहार पर सहमत होने से अपनी स्वीकृति और अस्तित्व की संभावनाओं को बढ़ाता है।
- **सूचनात्मक प्रभाव (Informational Influence)**: एक व्यक्ति भीड़ का समर्थन करता है क्योंकि उसे लगता है कि भीड़ उससे ज़्यादा जानती है। **दो तरह की परिस्थितियाँ** सूचनात्मक प्रभाव पैदा करती हैं:
  - **अस्पष्ट स्थितियाँ:** जब व्यक्ति को यह पता नहीं होता कि क्या करना है।
  - **संकट की स्थिति:** जब किसी व्यक्ति के पास यह सोचने का समय नहीं होता कि क्या करना है। उदाहरण के लिए , भगदड़ के दौरान।

सार्वजनिक भावना

ओडिशा में त्रासदी: जनता ने बढ़चढ़ कर रक्तदान किया

- ओडिशा के बालासोर में हुए रेल हादसे में करीब 200 लोगों की मौत हो गई और कई लोग घायल हो गए। इस आपदा के जवाब में, समुदाय ने अथक परिश्रम करने वाले चिकित्सा कर्मचारियों का साथ दिया।
- ग्रामीणों ने रक्तदान करने के लिए अस्पतालों के बाहर लंबी लाइनें लगाकर असाधारण करुणा का परिचय दिया। सिविल सोसायटी समूह भी इस प्रयास में शामिल हुए, जिसके परिणामस्वरूप तत्काल ज़रूरतों से ज़्यादा रक्तदान हुआ।

सामाजिक प्रभाव के सिद्धांत (PRINCIPLES OF SOCIAL INFLUENCE)

- **पारस्परिकता (Reciprocity)**: लोग वही लौटाते हैं जो उन्हें प्राप्त हुआ है।
  - उदाहरण - व्यक्तियों के बीच पारस्परिक मुस्कुराहट।
- **संगति (Consistency)** : आमतौर पर लोग अपने पिछले कार्यों, विचारों और कथनों के साथ संगति बनाए रखने की कोशिश करते हैं।
  - **उदाहरण-** विराट कोहली का फिटनेस के प्रति समर्पण और मैदान पर कड़ी मेहनत भावी क्रिकेटरों को प्रेरित करती है।
- **सामाजिक प्रमाण (Social Proof)**: लोग अक्सर दूसरों को देखकर यह निर्णय लेते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए।
- **पसंद (Liking)**: लोग अक्सर उन लोगों से प्रभावित होते हैं जिन्हें वे पसंद करते हैं।
  - **उदाहरण** - यदि कोई प्रभावशाली व्यक्ति किसी समारोह में कूड़ा उठाकर कूड़ेदान में डालता है, तो कई लोग भी उसका अनुसरण करते हुए वही काम करने लगते हैं।

- **दुर्लभता (Scarcity)** : वस्तुएँ और अवसर तब अधिक वांछनीय हो जाते हैं जब उनकी सुलभता कम होती है।
  - **उदाहरण** - सीमित संस्करण या बिक्री के लिए अंतिम सप्ताह जैसे नारों का प्रयोग तत्काल प्रभाव डालता है।

अनुनय (PERSUASION)

- अनुनय से तात्पर्य किसी घटना, विचार, वस्तु या किसी अन्य व्यक्ति (व्यक्तियों) के प्रति **लक्षित समूह की अभिवृत्ति और व्यवहार को** इच्छित दिशा में बदलने की प्रक्रिया से है, जिसमें लिखित या मौखिक शब्दों का उपयोग करके सूचना, भावनाओं या तर्क आदि को व्यक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए -
  - **धूम्रपान के विरुद्ध सार्वजनिक सेवा घोषणाएँ (Public Service Announcements (PSAs) Against Smoking):** लोगों को उनके एवं अन्य लोगों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर धूम्रपान करने से हतोत्साहित करना।
  - **ऊर्जा स्टार रेटिंग प्रणाली (Energy Star Rating System):** उपभोक्ताओं को पैसा बचाने और ऊर्जा संरक्षण के लिए ऊर्जा की कम खपत करने वाले उपकरण चुनने के लिए प्रेरित करना।
  - **मांस रहित सोमवार (Meatless Mondays):** पर्यावरण और स्वास्थ्य कारणों से लोगों को मांस का सेवन कम करने के लिए प्रोत्साहित करना।
  - **बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ** - छात्राओं के प्रति लोगों का नजरिया बदलना।
- अनुनय-विनय के परिणामस्वरूप **अधिक समर्पण और आज्ञाकारिता भी देखने को मिल सकती है।**
- यह एक **प्राप्तकर्ता केंद्रित प्रयास (Receiver Centric Exercise) है।** यह वक्ता के कथन पर नहीं बल्कि सुनने वाला क्या समझता है, इस पर निर्भर करता है।

अनुनय के कार्य

- **नैतिक अनुकूलन (Moral Conditioning)** : अनुनय लोगों की सामाजिक अभिवृत्ति में बदलाव ला सकता है। उदाहरण के लिए, स्टेशन को साफ रखने के लिए नियमित घोषणाएँ लोगों को उनके व्यवहार को बदलने के लिए प्रेरित करती हैं।
- **अभिवृत्ति को बढ़ाना (Intensify Attitude):** जब श्रोताओं की अभिवृत्ति एक समान रहती है, तो अनुनय वर्तमान अभिवृत्ति को बढ़ा सकता है।
- **प्रतिरोध को न्यूनतम करना (Minimise Resistance):** जब श्रोताओं के विचार कम विरोधी हों, तो अनुनय श्रोताओं को तटस्थता की ओर ले जा सकता है।
- **अभिवृत्ति बदलना (Change Attitude)**: जब दर्शकों की अभिवृत्ति विपरीत हो, तो अनुनय दर्शकों को वर्तमान अभिवृत्ति के साथ कम सहज बनाने में मदद कर सकता है
- **व्यवहार में सुधार (Gain Behaviour)** : जब दर्शक अनुनयकर्ता के साथ दृढ़तापूर्वक तालमेल बिठा लेते हैं, तो अंतिम उद्देश्य दर्शकों को कार्य करने के लिए प्रेरित करना होता है।

अनुनय का विरोध करने के तरीके (WAYS TO RESIST PERSUASION)

- **अभिवृत्ति निष्प्रभावन (Attitude Inoculation):** कल्पना कीजिए कि रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने के लिए कमजोर वायरस को शरीर में प्रवेश कराया जाता है। इसी तरह, विरोधी-तर्कों के संपर्क में आने से व्यक्ति अनुनय-विनय के प्रयासों के प्रति प्रतिरोधी हो सकता है।
- **बैकयर इफेक्ट (Backfire Effect):** जब कोई व्यक्ति अनुनय का दृढ़ता से विरोध करता है, तो यह बैकफ़ायर कर सकता है। बूमरैंग (boomerang) की तरह, अनुनय के प्रयास को और भी अधिक मजबूत विरोधी प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ सकता है। (कोविड के दौरान मेडिकल स्टाफ पर हुए हमले के बारे में सोचिए - कुछ लोगों ने उपचार के बारे में इतना नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर लिया कि वे मेडिकल स्टाफ पर भड़कने लगे।)
- **पूर्ववर्ती चेतावनी से प्रतिरोध वृद्धि (Forewarned is Forearmed):** यदि किसी को पता चल जाता है कि उसे अनुनय के लिए निशाना बनाया जा रहा है, तो वह पहले से ही प्रतिरोध का निर्माण कर सकता है। यह पूर्व चेतावनी उन्हें विरोधी-तर्क प्रस्तुत करने में मदद करती है।
- **ज्ञान ही शक्ति है (Knowledge is Power):** अच्छे ज्ञान और संसाधनों वाले लोग (जैसे कि अच्छी तरह से पढ़े-लिखे) अनुनय-विनय के प्रयासों का विरोध करने में बेहतर ढंग से सक्षम होते हैं। एक स्वस्थ व्यक्ति के बारे में सोचें जिसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत हो और वह बीमारी से लड़ रहा हो।

अनुनय को प्रभावी कैसे बनाएं?

- **प्रेरक संदेश तैयार करना (Crafting Persuasive Messages):** दर्शकों के साथ आम सहमति बनाने के साथ-साथ स्पष्ट भाषा, डेटा और तर्क महत्त्वपूर्ण हैं। संदेश दर्शकों के अनुकूल होना चाहिए, और उचित चैनलों का उपयोग करना चाहिए। (उदाहरण के लिए, गाँवों में सामाजिक मुद्दों पर नुक्कड़ नाटक)।
- **भावनात्मक जुड़ाव (Emotional Connection):** भावनात्मक अपील शक्तिशाली हो सकती है। (उदाहरण के लिए, आश्रय दान को प्रोत्साहित करने के लिए उपेक्षित जानवरों को दर्शाने वाले विज्ञापन)।
- **नाजुक संतुलन के साथ भय की अपील (Fear Appeals with Delicate Balance):** मध्यम भय प्रेरित कर सकता है, लेकिन प्रबल भय विपरीत परिणाम भी दे सकता है। (उदाहरण के लिए, ग्राफिक चित्रण के साथ धूम्रपान विरोधी अभियान)।
- **सामाजिक प्रमाण की शक्ति (The Power of Social Proof):** प्रस्तावित परिवर्तन के साथ दूसरों की सफलता को उजागर करना प्रेरक हो सकता है। (उदाहरण के लिए, हरियाणा सरकार कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए महिला एथलीटों का उपयोग कर रही है)।
- **बुद्धिमत्ता का प्रयोग (Appealing to Intelligence):** तथ्यों द्वारा समर्थित तर्क, विश्लेषणात्मक विचारकों को पसंद आते हैं।
- **अभाव का सिद्धांत (Scarcity Principle):** तात्कालिकता की भावना पैदा करने के लिए सीमित उपलब्धता पर जोर देना। (उदाहरण के लिए, "सीमित ऑफर" वाली बिक्री)

प्रशासन और जनता

- प्रशासन ऐसी नीतियाँ बनाता और लागू करता है जो जनता के जीवन को प्रभावित करती हैं। इन नीतियों में जनता की हिस्सेदारी होती है और वह अपने कल्याण के लिए सरकारी सेवाओं पर निर्भर रहती है।
- हालाँकि, कई बार उम्मीदों और वास्तविकता के बीच बेमेल के कारण इन दोनों के बीच संघर्ष उत्पन्न हो जाता है, जिससे प्रशासन और जनता के बीच संबंध तनावपूर्ण हो जाते हैं।

सरकारी अधिकारी जनता के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति क्यों रखते हैं?

- **जटिलता के कारण हताशा (Frustration with complexity):** जनता की इच्छाएँ विरोधाभासी हो सकती हैं और हर किसी की जरूरतों को पूरा करना कठिन हो सकता है।

- **सूचना का आधिक्य (Information overload):** सरकारी अधिकारियों को जनता से अनेक प्रकार के विचार मिलते हैं, जिससे वास्तविक जनभावना का पता लगाना कठिन हो जाता है।
- **अल्पकालिक बनाम दीर्घकालिक (Short-termism vs. long-term):** जनता का दबाव अक्सर तात्कालिक समाधान पर केंद्रित होता है, जबकि अधिकारी दीर्घकालिक लाभ को प्राथमिकता दे सकते हैं।
- **निरंतर आलोचना (Constant Criticism):** यहाँ तक कि नेक इरादों वाले निर्णयों के लिए भी, सरकारी अधिकारियों को निरंतर जाँच का सामना करना पड़ता है।
- **अवास्तविक अपेक्षाएँ (Unrealistic Expectations):** एक अधिकारी क्या कर सकता है, इस बारे में जनता की परस्पर विरोधी इच्छाएँ या अवास्तविक अपेक्षाएँ हो सकती हैं।

जनता की सरकारी अधिकारियों के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति क्यों है?

- **कथित भ्रष्टाचार (Perceived Corruption):** यह भावना अविश्वास पैदा कर सकती है कि सरकारी अधिकारी अपनी जेबें भर रहे हैं या विशेष हितों से प्रभावित हैं।
- **प्रभावहीनता (Ineffectiveness):** यदि लोगों को महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर प्रगति नहीं दिखती, तो वे कार्रवाई की कमी या परिणाम के लिए अधिकारियों को दोषी ठहरा सकते हैं।
- **अत्यधिक वेतन/लाभ (Excessive Pay/Benefits):** राजनेताओं के अत्यधिक वेतन और लाभों के बारे में जनता की धारणा असंतोष का कारण बन सकती है।
- **घोटाले और कदाचार (Scandals and Misconduct):** सरकारी अधिकारियों से जुड़े उच्च-स्तरीय घोटाले पूरे पेशे को कलंकित कर सकते हैं।
- **मीडिया द्वारा चित्रण (Media Portrayal):** सरकारी अधिकारियों के बारे में मीडिया में नकारात्मक कवरेज से जनमत प्रभावित होता है।

जनता और प्रशासन के बीच संबंध कैसे सुधारें?

- जनता को **अपनी नकारात्मक भूमिका त्यागकर सकारात्मक भूमिका अपनानी चाहिए** - किसी भी सरकारी कार्यक्रम की सफलता के लिए नागरिकों का समर्थन और सहयोग आवश्यक है।
- प्रशासन में **एक जनसंपर्क एजेंसी की स्थापना की जानी चाहिए जो जनता और प्रशासन के बीच संपर्क सूत्र का काम करेगी।**
- प्रशासन को **जनता के साथ निरंतर संपर्क बनाए रखना चाहिए**, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के साथ। (होता समिति)।
- सार्वजनिक बैठकों को अनिवार्य बनाकर **सिविल सेवकों की पहुँच बढ़ानी चाहिए।**
- **ई-गवर्नेंस का उपयोग** सरकार को नागरिकों के दरवाजे तक पहुँचने में मदद करता है।
- **सामाजिक लेखापरीक्षा (Social audit),** जिसमें लाभार्थियों द्वारा परियोजना की लेखापरीक्षा की जाती है।
- नागरिकों को प्राप्त सेवा की गुणवत्ता और **शिकायत निवारण तंत्र** के बारे में जागरूक करने के लिए **नागरिक चार्टर** का प्रावधान किया जाना चाहिए।

एक अच्छे प्रशासन को जनता की प्रतिक्रिया और चिंताओं को ध्यान में रखना चाहिए। यह प्रतिक्रिया प्रशासन को अपनी नीतियों और सेवाओं को बेहतर बनाने में मदद करती है।

मुख्य शब्द

शब्द	अर्थ
अभिवृत्ति (Attitude)	किसी विशेष वस्तु के पक्ष या विपक्ष में मूल्यांकन करने की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति।
व्यवहार (Behaviour)	एक व्यक्ति जिस तरह से स्वयं को संचालित करता है। हमारा व्यवहार काफी हद तक हमारी अभिवृत्ति से निर्धारित होता है। एक सकारात्मक अभिवृत्ति अच्छे व्यवहार के रूप में प्रकट होती है।
अभिमत (Opinion)	किसी व्यक्ति के किसी चीज़ के बारे में विचार या मान्यताएं, चाहे वह अच्छी हों या बुरी। अभिमत एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न हो सकता है।
मान्यता (Belief)	किसी ऐसी चीज़ के बारे में निश्चित होना, जो मौजूद है या सत्य है।
पूर्वाग्रह (Prejudice)	किसी विशेष व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह और वरीयताओं के प्रति अनुचित नापसंदगी।
रूढ़वादिता (Stereotype)	लिंग, लैंगिक पहचान, नस्ल और जातीयता, राष्ट्रीयता, आयु, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, भाषा आदि के आधार पर किसी विशिष्ट समूह के बारे में पूर्वाग्रहित धारणाएं।
अनुनय (Persuasion)	किसी व्यक्ति की अभिवृत्ति में परिवर्तन लाने का प्रयास।

प्रमुख शब्दावलियाँ

क्लासिकी या पावलोवियन अनुबंधन; सहायक अनुबंधन; अवलोकनात्मक अधिगम; उपयोगितावादी/सहायक कार्य; स्वयंसेवा और सामाजिक सेवा; सकारात्मक अभिवृत्ति; दयालु अभिवृत्ति; सहिष्णुता; सक्रिय समानुभूति; रूढ़िवादिता और पूर्वाग्रह; अराजकतावाद; अधिनायकवाद; साम्यवाद; रूढ़िवाद; उदारवाद; फासीवाद; नाजीवाद; पर्यावरणवाद; नारीवाद; पहचान की राजनीति; मानक/सूचनात्मक प्रभाव; पारस्परिकता; संगति

विगत वर्षों के प्रश्न

- सभी सिविल सेवकों को प्रदान किए गए नियम और विनियम समान हैं, फिर भी प्रदर्शन में अंतर है। सकारात्मक सोच वाले अधिकारी नियमों और विनियमों के मामले के पक्ष में व्याख्या करने और सफलता प्राप्त करने में समर्थ होते हैं, जबकि नकारात्मक सोच वाले अधिकारी मामले के खिलाफ समान नियमों और विनियमों की व्याख्या करके लक्ष्य प्राप्त करने में असमर्थ होते हैं। सोदाहरण विवेचन कीजिए। **(2022)**
- अभिवृत्ति एक महत्त्वपूर्ण घटक है, जो मानव के विकास में निवेश (इनपुट) का काम करता है। ऐसी उपयुक्त अभिवृत्ति का विकास कैसे करें जो एक लोक सेवक के लिए आवश्यक है? **(2021)**
- निम्नलिखित उद्धरण का आपके अनुसार क्या अर्थ है? "प्रत्येक कार्य की सफलता से पहले उसे सैकड़ों कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है। जो दृढ़निश्चयी है वे ही देर-सबेर प्रकाश को देख पाएंगे।" - स्वामी विवेकानंद **(2021)**

- सकारात्मक अभिवृत्ति एक लोक सेवक की अनिवार्य विशेषता मानी जाती है जिसे प्रायः नितांत दबाव में कार्य करना पड़ता है। एक व्यक्ति की सकारात्मक अभिवृत्ति में क्या योगदान देता है? **(2020)**
- "घृणा व्यक्ति के विवेक और अंतःकरण को नष्ट कर देती है, जो राष्ट्र की भावना को विषाक्त कर सकती है।" क्या आप इस विचार से सहमत हैं? अपने उत्तर को स्पष्ट करें। **(2020)**
- अन्तःकरण का संकट का क्या अभिप्राय है? सार्वजनिक अधिकार क्षेत्र में यह किस प्रकार अभिव्यक्त होता है? **(2019)**
- कार्यवाहियों की नैतिकता के संदर्भ में एक दृष्टिकोण तो यह है, की साधन सर्वोपरि महत्त्व के होते हैं और दूसरा दृष्टिकोण यह है कि परिणाम साधनों को उचित सिद्ध करते हैं। आपके विचार में इनमें से कौन-सा दृष्टिकोण अपेक्षाकृत अधिक उपयुक्त है? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क पेश कीजिए। **(2018)**
- नैतिक आचरण वाले तरुण लोग सक्रिय राजनीति में शामिल होने के लिए उत्सुक नही होते हैं। उनको सक्रिय राजनीति में अभिप्रेरित करने के लिए उपाय सुझाइए। **(2017)**
- सामान्यतः साझा किए गए तथा व्यापक रूप से मोरचाबंद नैतिक मूल्यों और दायित्वों के बिना न तो कानून, न तो लोकतंत्रीय सरकार, न ही बाजार अर्थव्यवस्था ठीक से कार्य कर पाएंगे। इस कथन से आप क्या समझते है? समकालीन समय के उदाहरण द्वारा समझाइए। **(2017)**
- सामाजिक प्रभाव और समझाना-बुझाना स्वच्छ भारत अभियान की सफलता के लिए किस प्रकार योगदान कर सकते हैं? **(2016)**
- जीवन, कार्य, अन्य व्यक्तियों एवं समाज के प्रति हमारी अभिवृतियाँ आमतौर पर अनजाने में परिवार एवं उस सामाजिक परिवेश के द्वारा रुपित हो जाती हैं, जिसमें हम बड़े होते हैं। अनजाने में नागरिकों के लिए अवांछनीय होते हैं।
  - आज के शिक्षित भारतीयों में विद्यमान ऐसे अवांछनीय मूल्यों की विवेचना कीजिए।
  - ऐसी अवांछनीय अभिवृत्तियों को कैसे बदला जा सकता है तथा लोक सेवाओं के लिए आवश्यक समझे जाने वाले सामाजिक-नैतिक मूल्यों को आकांक्षी तथा कार्यरत लोक सेवकों में किस प्रकार संवर्धित किया जा सकता है? **(2016)**
- लोक सेवकों की अपने कार्य के प्रति प्रदर्शित दो अलग-अलग प्रकारों की अभिवृत्तियों की पहचान अधिकारीतंत्रीय अभिवृत्ति और लोकतांत्रिक अभिवृत्ति के रूप में की गई है।
  - इन दो पदों के बीच विभेदन कीजिए और उनके गुणों-अवगुणों को बताइए।
  - अपने देश का तेजी से विकास की दृष्टि से बेहतर प्रशासन के निर्माण के लिए क्या दोनों में संतुलन स्थापित करना संभव है? **(2015)**

3 अभिक्षमता

"अभिवृत्ति के बिना अभिक्षमता अंधी है; और अभिक्षमता के बिना अभिवृत्ति लंगड़ी है" **-रिचर्ड मार्सेल प्रथम**

"प्रतिभा कुछ और नहीं बल्कि धैर्य की एक महान अभिक्षमता है।" **- बेंजामिन फ्रैंकलिन**

परिचय

- अभिक्षमता (Aptitude) से तात्पर्य उन **प्राकृतिक या अर्जित क्षमताओं से** है जो किसी व्यक्ति की कतिपय क्षेत्रों में दक्षता विकसित करने की क्षमता को दर्शाती है। यह एक निश्चित क्षेत्र में किसी को मिलने वाली शुरुआती बढ़त की तरह है। उदाहरण के लिए, संगीत की अभिक्षमता वाला कोई व्यक्ति जल्दी से कोई वाद्ययंत्र बजाना सीख सकता है या उसे लय की अच्छी समझ हो सकती है।
- सकारात्मक अभिवृत्ति के साथ अंतर्निहित अभिक्षमता, किसी व्यक्ति को लोगों के जीवन में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन लाने और उनका जीवन स्तर बेहतर बनाने में मदद करती है।
  - **उदाहरण** - उद्यमी बंकर रॉय की सामाजिक नवाचार के प्रति रुचि ने उन्हें बेयरफुट कॉलेज की स्थापना के लिए प्रेरित किया, जहाँ बिना किसी औपचारिक शिक्षा वाली ग्रामीण महिलाओं को सौर इंजीनियर बनने के लिए प्रशिक्षण दिया गया, इस प्रकार उनके समुदायों को सशक्त बनाया गया।
- यह **कुछ विशेष कौशलों को** सफलतापूर्वक सीखने की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है; इन कौशलों को सही जानकारी और शिक्षा द्वारा सुधारा जा सकता है।
- प्रशिक्षण या औपचारिक उपायों के माध्यम से इसमें सुधार किया जा सकता है, लेकिन सुधार की सीमाएँ हो सकती हैं।

अभिक्षमता का अन्य गुणों के साथ संबंध

अभिक्षमता और कौशल (APTITUDE AND SKILLS)

- **'अभिक्षमता' एक अपरिष्कृत जन्मजात प्रतिभा** है जिस पर काम किया जा सकता है। दूसरी ओर, **'कौशल' प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त किया जाता** है और लगातार उन्नत किया जाता है। अभिक्षमता कौशल नहीं है, बल्कि वह है जो पहले से ही मौजूद है जिसे पोषित किया जा सकता है। कौशल वे योग्यताएँ हैं जिन्हें पढ़ने, अवलोकन, अभ्यास और प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, जबकि अभिक्षमता जन्मजात और अद्वितीय होती है।
  - **उदाहरण** - विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने की अभिक्षमता वाला एक कुशल मध्यस्थ समुदाय के भीतर विवादों को शांतिपूर्ण और निष्पक्ष तरीके से सुलझाने में मदद करता है।

अभिक्षमता और अभिरुचि (APTITUDE AND INTEREST)

- **अभिरुचि** किसी **व्यक्ति की** दूसरों के सापेक्ष एक या एक से अधिक विशिष्ट कार्यों में संलग्न होने की प्राथमिकता है जबकि अभिक्षमता **उस कार्य को करने की क्षमता है।** हम अभिरुचि के कारण चीजों की ओर आकर्षित होते हैं, इसलिए नहीं कि हम उनमें विशेष रूप से कुशल हैं।
  - **उदाहरण** - शिक्षण के प्रति अभिरुचि रखने वाला तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ काम करने में वास्तविक अभिरुचि रखने वाला शिक्षक एक सुरक्षित तथा समावेशी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देता है, जो सभी छात्रों को उन्नति करने का अवसर प्रदान करता है।

अभिक्षमता और बुद्धिमत्ता (APTITUDE AND INTELLIGENCE)

बुद्धिमत्ता, व्यापक है और इसका तात्पर्य बोध आदि जैसी **मानसिक क्षमताओं की एक विस्तृत शृंखला से है।** दूसरी ओर, अभिक्षमता का दायरा सीमित होता है जिसमें व्यक्तिगत ताकत और कमजोरियाँ शामिल होती हैं और यह उस बुद्धिमत्ता की विशेष प्रकृति को दर्शाती है जो किसी चीज़ की ओर निर्देशित होती है। अभिक्षमता के लिए **एक हद तक बुद्धिमत्ता की आवश्यकता होती है** ताकि किसी काम को अच्छी तरह से किया जा सके। **उदाहरण**- पशु व्यवहार के लिए अभिक्षमता वाले और सतत समाधान तैयार करने की बुद्धिमत्ता वाले संरक्षण जीवविज्ञानी ऐसे कार्यक्रम विकसित कर सकते हैं जो लुप्तप्राय प्रजातियों और उनके पर्यावासों की रक्षा कर सकते हैं।

अभिक्षमता और योग्यता (APTITUDE AND ABILITY)

अभिक्षमता व्यक्ति की क्षमता को इंगित करती है, अर्थात् व्यक्ति क्या सीखने/करने में सक्षम होगा, जबकि **योग्यता इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करती है कि व्यक्ति अभी क्या करने में सक्षम है। उदाहरण**- एक युवा डॉक्टर, सीमित अनुभव के बावजूद, एक आपातकालीन स्थिति के दौरान असाधारण शल्य चिकित्सा अभिक्षमता का प्रदर्शन करता है, जिससे एक ऐसे व्यक्ति का जीवन बच जाता है जो कम कुशल सर्जन के कारण नहीं बच पाता।

अभिक्षमता और मूल्य (APTITUDE AND VALUES)

- **अभिक्षमता** का तात्पर्य आपकी स्वाभाविक प्रतिभा या विशेष कौशल सीखने की योग्यता से है। **मूल्य,** आपके मूल सिद्धांत या मान्यताएँ हैं जो आपके निर्णयों और कार्यों का मार्गदर्शन करते हैं। वे यह निर्धारित करते हैं कि आप किस प्रकार के व्यक्ति हैं और आप जीवन में क्या महत्त्वपूर्ण मानते हैं। मूल्यों के उदाहरणों में ईमानदारी, दयालुता, करुणा और कड़ी मेहनत शामिल हैं।
- **अभिक्षमता और मूल्य एक दूसरे को प्रभावित कर सकते हैं।** आपके मूल्य इस बात को प्रभावित कर सकते हैं कि आप अपनी अभिक्षमताओं को कैसे विकसित करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप रचनात्मकता को महत्त्व देते हैं, तो आप अपनी कलात्मक प्रतिभाओं को विकसित करने की अधिक संभावना रखते हैं। इसी तरह, आपकी अभिक्षमताएँ इस बात को प्रभावित कर सकती हैं कि आप किन मूल्यों को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। यदि आप गणित और विज्ञान में अच्छे हैं, तो आप तर्क और बुद्धि को महत्त्व दे सकते हैं।

अभिवृत्ति और अभिक्षमता में अंतर
(DIFFERENCE BETWEEN ATTITUDE AND APTITUDE)

मापदंड	अभिवृत्ति	अभिक्षमता
परिभाषा	यह किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या विचार के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक या तटस्थ भावना है।	यह एक निश्चित प्रकार का कार्य करने की दक्षता है।
प्रकृति	काफी हद तक मानसिक।	मानसिक के साथ-साथ शारीरिक भी।
कार्य	यह निर्धारित करती है कि आप कैसे काम करते हैं या लक्ष्य की ओर कैसे बढ़ते हैं।	यह निर्धारित करती है कि किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आपके पास विशिष्ट कौशल सीखने की कितनी क्षमता है।
परिवर्तन	अपेक्षाकृत स्थायी होता है।	परिवर्तित और विकसित होता है।
संगठन	चरित्र या सद्गुणों से संबद्ध होती है तथा नकारात्मक, सकारात्मक या तटस्थ हो सकती है।	दक्षता या प्रतिभा से संबद्ध होती है, जैसे संख्यात्मक अभिक्षमता, मानसिक अभिक्षमता आदि।
योग्यता और कौशल	यह कुछ निश्चित धारणाओं के साथ विद्यमान क्षमताओं और कौशलों से संबंधित है।	यह कौशल, योग्यता और ज्ञान अर्जित करने की संभावित योग्यता है।
घटक	अभिवृत्ति के घटकों में संज्ञानात्मक, भावात्मक और व्यवहारिक घटक शामिल हैं।	अभिक्षमता के घटकों में अभिवृत्ति, कौशल और ज्ञान शामिल हैं।

- **उदाहरण**- एक प्रशासक में सांप्रदायिक मुद्दों को सुलझाने की अच्छी अभिक्षमता हो सकती है (अभिक्षमता अंश) लेकिन किसी विशेष समुदाय के प्रति उसकी अभिवृत्ति नकारात्मक हो सकती है (अभिवृत्ति अंश) जो स्वाभाविक रूप से उसके समग्र निर्णयों को प्रभावित करेगी।

सिविल सेवा के लिए अभिक्षमता और इसकी भूमिका

सिविल सेवाओं में अभिक्षमता, भूमिका, उससे जुड़ी ज़िम्मेदारियों और संस्थागत माहौल को आसानी से समझने में मदद करती है। मोटे तौर पर, एक सिविल सेवक में निम्नलिखित प्रकार की अभिक्षमता की अपेक्षा की जाती है:

- **निर्णय क्षमता (Decision Making)**: सिविल सेवकों को दृढ़ विश्वास के साथ विवेक का प्रयोग करने हेतु तत्काल निर्णय लेने के कौशल और समालोचनात्मक चिंतन की प्रचुरता की आवश्यकता होती है।
    - **उदाहरण** - पूर्णिया (बिहार) के जिलाधिकारी राहुल कुमार ने कोविड-19 की दूसरी लहर के दौरान अपनी स्मार्ट प्लानिंग से मेडिकल ऑक्सीजन की व्यवस्था की और शहर में खराब ऑक्सीजन प्लांट को फिर से चालू कराया।
- **संप्रेषण कौशल (Communication Skills)**: एक सिविल सेवक के पास अच्छा संप्रेषण और पारस्परिक कौशल होना आवश्यक है क्योंकि उसे निर्णय लेने के लिए विभिन्न हितधारकों को एक मंच पर लाना एवं संवाद करना होता है।
    - **उदाहरण** - झारखंड के प्रभागीय वन अधिकारी विकास कुमार उज्ज्वल ने स्थानीय समुदाय को साथ लेकर माओवाद प्रभावित क्षेत्र को पर्यटन स्थल में बदल दिया।
- **अनुनय कौशल (Persuasive Skills)**: दूसरों के साथ अनुनय और बातचीत के कौशल की आवश्यकता होती है क्योंकि समाज में परिवर्तन या किसी भी नई पहल के खिलाफ प्रतिरोध हो सकता है।
    - **उदाहरण** - आंध्र प्रदेश के एक सरकारी कॉलेज की लेक्चरर किरण नाइक दूरदराज के गाँवों का दौरा करना और माता-पिता को अपने बच्चों को शिक्षित करने के लिए प्रेरित करना।
- **आशावाद (Optimism)**: सिविल सेवकों को आशावादी होना चाहिए, जिससे उनमें अत्यधिक तनाव में भी कार्य करने के लिए सकारात्मकता और आत्मविश्वास आए।
    - **उदाहरण** - दंतेवाड़ा में IAS अधिकारी सौरभ कुमार द्वारा 'लंच विद कलेक्टर' पहल स्थानीय छात्रों को सही करियर विकल्प चुनने में मदद करके समस्याओं का समाधान करती है।
- **नेतृत्व कौशल (Leadership Skills)**: सिविल सेवकों में नेतृत्व, संगठनात्मक और सहयोग कौशल होना आवश्यक है क्योंकि उन्हें निर्णय लेने, नीति का कार्यान्वयन आदि जैसे विविध प्रकार के उत्तरदायित्व सौंपे जाते हैं।
    - **उदाहरण** - तमिलनाडु के जिला कलेक्टर जे. मेघनाथ रेड्डी ने दिव्यांग व्यक्तियों के लिए उनके घरों में शौचालय बनाने हेतु प्रोजेक्ट उद्यम (Project Udhayam) की शुरुआत की।
- **पेशेवर अंदाज (Professionalism)**: लोक प्रशासन के उच्च मानकों को बनाए रखने के लिए उच्च स्तर के पेशेवर अंदाज की आवश्यकता होती है क्योंकि वे प्रशासन की रीढ़ हैं।
    - **उदाहरण** – कछार, सिलचर जिला प्रशासन द्वारा "देबो ना नेबो ना (नहीं देंगे, नहीं लेंगे) पहल" के तहत भ्रष्टाचार को रोकने के लिए सभी सरकारी कार्यालयों के बाहर ड्रॉप-बॉक्स की व्यवस्था की गई है।
- **नवप्रवर्तन (Innovation)**: चूँकि सिविल सेवकों को हर दिन विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इसलिए उन्हें इन समस्याओं, चुनौतियों के लिए अभिनव समाधान खोजने में सक्षम होना चाहिए।
    - **उदाहरण** - अरुणाचल प्रदेश के पूर्वी कामेंग जिले में अधिकारियों ने टीकाकरण के प्रति हिचकिचाहट को दूर करने के लिए धार्मिक नेताओं, गैर सरकारी संगठनों और स्थानीय प्रभावशाली लोगों को शामिल किया।

निष्कर्ष

सिविल सेवा सरकार की एक महत्त्वपूर्ण संस्था है जिसका कार्य नीतियों का कार्यान्वयन और प्रभावी शासन एवं सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना है। चूँकि, अभिक्षमता एक जन्मजात क्षमता है, इसलिए, यदि यह किसी व्यक्ति के मनो-शारीरिक तंत्र (Psychophysical system) में पूरी तरह से अनुपस्थित है, तो वह अभिक्षमता विकसित नहीं कर सकता है। सिविल सेवकों के लिए इन आवश्यक सेवाओं को निष्पादित करने के लिए अभिक्षमताएँ आवश्यक हैं।

सिविल सेवा के लिए मूलभूत मूल्य

- मूल्य **व्यक्तिगत सिद्धांत या गुण** हैं जो किसी व्यक्ति या समूह के निर्णय और व्यवहार को निर्देशित करते हैं।
    - **उदाहरण** - मदर टेरेसा, सहानुभूति को सर्वोच्च मूल्य मानती थीं।
- ये मूलभूत मूल्य सिविल सेवक की पहचान का आधार बनते हैं, जो उनके लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं। उदाहरण के लिए ईमानदारी और करुणा।
- ये मूल्य नागरिकों की सिविल सेवकों से नैतिक अपेक्षाओं को निर्धारित करते हैं, निष्पक्ष व्यवहार सुनिश्चित करते हैं और उनके अधिकारों को कायम रखते हैं।

- **उदाहरण के लिए,** IAS अधिकारी प्रशांत नायर ने करुणा के मूल मूल्य से प्रेरित होकर "कंपेसनेट कोझिकोड (Compassionate Kozhikode)" परियोजना शुरू की।

समाचारों में नैतिक मुद्दे

सार्वजनिक पदों पर आसीन लोगों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

- उच्चतम न्यायालय ने कहा कि सार्वजनिक पद पर आसीन लोगों के लिए एक अलिखित नियम है कि उन्हें आत्मसंयम बरतना चाहिए तथा अन्य देशवासियों के लिए बहुत अपमानजनक बातें नहीं करनी चाहिए।
- लोक अधिकारियों का कर्तव्य है कि उन्हें अपने मतदाताओं का प्रतिनिधित्व करने के साथ जनता का विश्वास बनाए रखना चाहिए। हालाँकि, उनकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और नैतिक विचारों के बीच कभी-कभी द्वन्द्व हो सकता है।

लोक अधिकारियों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से संबंधित नैतिक मुद्दे

- **हिंसा या घृणा को बढ़ावा देना:** लोक अधिकारी शक्तिशाली और प्रभावशाली पदों पर होते हैं। उनके शब्द कुछ समूहों के प्रति हिंसा या घृणा को भड़का सकते हैं, जिससे सामाजिक अशांति पैदा हो सकती है और सार्वजनिक सुरक्षा को खतरा हो सकता है।
  - **उदाहरण:** अल्पसंख्यकों को निशाना बनाकर राजनेताओं द्वारा की गई भड़काऊ बयानबाजी सामाजिक विभाजन को बढ़ावा दे सकती है तथा हिंसा फैला सकती है। (उदाहरण के लिए, आर्थिक समस्याओं के लिए आप्रवासियों को दोष देने वाले भाषण)।
- **गोपनीय जानकारी का खुलासा:** लोक अधिकारियों की अक्सर संवेदनशील जानकारी तक पहुँच होती है। इस जानकारी को अनुचित तरीके से साझा करने से राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा हो सकता है या नागरिकों की पहचान उजागर हो सकती है।
  - **उदाहरण:** व्यक्तिगत लाभ के लिए मीडिया को गोपनीय जानकारी लीक करना नैतिक आचरण का उल्लंघन हो सकता है और राष्ट्रीय सुरक्षा को संभावित रूप से खतरा हो सकता है।
- **हितों का टकराव:** लोक अधिकारियों को ऐसी व्यक्तिगत राय या रुख व्यक्त करने से बचना चाहिए, जिसे निजी हितों या संभावित वित्तीय लाभ से प्रभावित माना जा सकता है।
  - **उदाहरण:** एक राजनेता द्वारा ऐसी नीतियों की वकालत करना, जो किसी ऐसी कंपनी को लाभ पहुँचाती हैं, जिसके साथ उसका वित्तीय संबंध है, हितों का टकराव पैदा करता है, जो नैतिक शासन को कमजोर करता है।

इन मुद्दों के समाधान के उपाय:

- **पारदर्शिता और जवाबदेही:** सरकारी अधिकारियों को अपने कार्यों में पारदर्शी होना चाहिए और अपने शब्दों के प्रति जवाबदेह होना चाहिए। इसमें स्पष्ट आचार संहिता और नैतिकता प्रशिक्षण से मदद मिल सकती है।
- **तथ्यों की जाँच करना और उत्तरदायी मीडिया:** मीडिया संगठनों को तथ्यों की जाँच को प्राथमिकता देनी चाहिए तथा लोक अधिकारियों के सनसनीखेज या भड़काऊ बयानों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने से बचना चाहिए।
- **सार्वजनिक संवाद और नागरिक सहभागिता:** खुले सार्वजनिक संवाद और नागरिक सहभागिता को प्रोत्साहित करने से सुविज्ञ नागरिक वर्ग को बढ़ावा मिलता है, जो लोक अधिकारियों को जवाबदेह बना सकता है।
- **व्हिसलब्लोअर संरक्षण:** व्हिसलब्लोअर्स के लिए बिना किसी प्रतिशोध के भय के लोक अधिकारियों के अनैतिक आचरण की रिपोर्ट करने के अवसर उपलब्ध कराने से पारदर्शिता सुनिश्चित करने में मदद मिल सकती है।

इन नैतिक उपायों को लागू करके, हम एक ऐसा माहौल बना सकते हैं जहाँ लोक अधिकारी अपनी अभिव्यक्ति की **स्वतंत्रता** के अधिकार का जिम्मेदारी से प्रयोग कर सकें, साथ ही जनता का विश्वास बनाए रख सकें और स्वस्थ लोकतंत्र को बढ़ावा दे सकें।

प्रमुख शब्दावलियाँ

अभिक्षमता, कौशल, अभिरुचि, बुद्धि, योग्यता, मूल्य, प्रवीणता, उपलब्धि, दक्षता, प्रबंधन, नेतृत्व, पेशेवर अंदाज, अनुनय कौशल, अनुकूलनशीलता, आशावाद, समावेशिता, संवैधानिक मूल्य, गैर-पक्षपात, संवैधानिक संस्कृति।

विगत वर्षों के प्रश्न

- बौद्धिक दक्षता और नैतिक गुणों के अलावा सहानुभूति और करुणा कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण वैशिष्ट्य हैं, जो सिविल सेवकों को निर्णायक मामलों को सुलझाने अथवा महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने में अधिक सक्षम बनाते हैं। उपयुक्त उदाहरणों के साथ व्याख्या कीजिए। **(2022)**
- सभी सिविल सेवकों को प्रदान किए गए नियम और विनियम समान हैं, फिर भी प्रदर्शन में अंतर है। सकारात्मक सोच वाले अधिकारी नियमों और विनियमों के मामले के पक्ष में व्याख्या करने और सफलता प्राप्त करने में समर्थ होते हैं, जबकि नकारात्मक सोच वाले अधिकारी मामले के खिलाफ समान नियमों और विनियमों की व्याख्या करके लक्ष्य प्राप्त करने में असमर्थ होते हैं। सोदाहरण विवेचन कीजिए। **(2022)**
  - उन पाँच नैतिक लक्षणों की पहचान कीजिए, जिनके आधार पर लोक सेवक के कार्य-निष्पादन का आकलन किया जा सकता है। मेट्रिक्स में उनके समावेश का औचित्य सिद्ध कीजिए।
  - उन दस आधारभूत मूल्यों की पहचान कीजिए, जो एक प्रभावी लोकसेवक होने के लिए आवश्यक है। लोक सेवकों में गैर-नैतिक व्यवहार के निवारण के तरीकों और साधनों का वर्णन कीजिए। **(2021)**
- सार्वजनिक जीवन के आधारित सिद्धांत क्या हैं? इन में से किन्हीं तीन सिद्धांतों को उपयुक्त उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिए। **(2019)**
- सिविल सेवा के संदर्भ में निम्नलिखित की प्रासंगिकता का परीक्षण कीजिए :
  - पारदर्शिता
  - जवाबदेही
  - निष्पक्षता तथा न्याय
  - (दृढ़ विश्वास का साहस
  - सेवा भाव **(2017)**
- स्पष्ट कीजिए कि आचारनीति समाज और मानव का किस प्रकार भला करती हैं।
  - क्या कारण है कि निष्पक्षता और अपक्षपातीयता को लोक सेवाओं में, विशेषकर वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ में, आधारभूत मूल्य समझना चाहिए? अपने उतर को उदाहरणों के साथ सुस्पष्ट कीजिए। **(2016)**

- (a) "केवल कानून का अनुपालन ही काफी नहीं है, लोक सेवक में, अपने कर्तव्यों के प्रभावी पालन करने के लिए, नैतिक मुद्दों पर एक सुविकसित संवेदन-शक्ति का होना भी आवश्यक है।" क्या आप सहमत हैं? दो उदाहरणों की सहायता से स्पष्ट कीजिए, जहाँ
  - कृत्य नैतिकतः सही है, परंतु वैध रूप से नहीं है तथा
  - कृत्य वैध रूप से सही है, परंतु नैतिकतः सही नहीं है।
- (b) विश्वसनीयता और सहन-शक्ति के सद्गुण लोक सेवा में किस प्रकार प्रदर्शित होते हैं। उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिए। **(2015)**

- लोक सेवकों की अपने कार्य के प्रति प्रदर्शित दो अलग-अलग प्रकारों की अभिवृत्तियों की पहचान अधिकारी तंत्रीय अभिवृत्ति और लोकतांत्रिक अभिवृत्ति के रूप में की गई है।
  - इन दो पदों के बीच विभेदन कीजिए और उनके गुणों-अवगुणों को बताइए।
  - अपने देश का तेजी से विकास की दृष्टि से बेहतर प्रशासन के निर्माण के लिए क्या दोनों में संतुलन स्थापित करना संभव है? **(2015)**
- वर्तमान समाज व्यापक विश्वास-न्यूनता से ग्रसित है। इस स्थिति के व्यक्तिगत कल्याण और सामाजिक कल्याण के संदर्भ में क्या परिणाम है? आप अपने को विश्वसनीय बनाने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर क्या कर सकते हैं? **(2014)**

4 सत्यनिष्ठा

- *"ज्ञान के बिना सत्यनिष्ठा कमज़ोर और व्यर्थ है, लेकिन सत्यनिष्ठा के बिना ज्ञान खतरनाक और भयानक है।"* **-सैमुअल जॉनसन**
- *"सत्यनिष्ठा का मतलब है अपने विचारों और कार्यों को व्यक्तिगत लाभ के बजाय मूल्यों के आधार पर चुनना।"* **- क्रिस कार्चर**

परिचय

सत्यनिष्ठा का मतलब है **सभी काल खंडों में, समान परिस्थितियों में, समान मानकों या नैतिक सिद्धांतों को अपनाना**। यह **ईमानदार होने का गुण** है, इसमें मजबूत नैतिक सिद्धांतों पर स्थिर रहना और उनमे परिवर्तन के लिए तैयार न होना शामिल है।

सत्यनिष्ठ व्यक्ति की विशेषताएँ

- **नैतिक निर्णय लेना:** ऐसे व्यक्तियों के पास एक मजबूत नैतिक दिशा-निर्देश होते हैं, और वे इस आधार पर कार्यवाही का रास्ता चुनते हैं कि क्या सही है, भले ही वह कठिन हो।
- **अपने मूल्यों के अनुरूप कार्य करना:** ऐसे व्यक्ति अपने निर्णयों का पालन करते हैं और अपनी मान्यताओं के अनुसार जीवन जीते हैं, भले ही वह असुविधाजनक हो।
- **ईमानदार और सत्यनिष्ठ:** वे विश्वसनीय होते हैं तथा अपने शब्दों और कार्यों में सत्यनिष्ठा रखते हैं।
  - **उदाहरण** - वरिष्ठ IAS अधिकारी **अशोक खेमका** ने अपने विचार और कार्यों में निरंतरता के साथ पेशेवर ईमानदारी दिखाई है तथा सही आचरण का रास्ता चुना है।
- **अपने निर्णयों की जिम्मेदारी लेना:** वे अपने निर्णयों और कार्यों के लिए जवाबदेह हैं, चाहे परिणाम कुछ भी हो
  - **उदाहरण** - अब्राहम लिंकन और महात्मा गांधी ऐसे अनुकरणीय नेता थे जो अपनी सत्यनिष्ठा के लिए प्रसिद्ध थे, और दोनों ही संकट के समय में क्रमशः दासता उन्मूलन और अहिंसा जैसे अपने मूल्यों पर अडिग रहे।

सत्यनिष्ठा के उदाहरण

- **नेल्सन मंडेला** : मंडेला रंगभेद के खिलाफ लड़ाई के लिए 27 साल जेल में रहने के बाद भी सुलह और क्षमा के लिए प्रतिबद्ध बने रहे। उन्होंने व्यक्तिगत बदला लेने की तुलना में राष्ट्र निर्माण को प्राथमिकता दी, शांति और न्याय के अपने मूल्यों को कायम रखते हुए सत्यनिष्ठा दिखाई।
- **अब्राहम लिंकन** एक उच्च निष्ठावान व्यक्ति थे और विरोध का सामना करने पर भी अपने सिद्धांतों पर अड़े रहे। उन्होंने कहा "मैं जीतने के लिए बाध्य नहीं हूँ, लेकिन मैं सच्चा होने के लिए बाध्य हूँ। मैं सफल होने के लिए बाध्य नहीं हूँ, लेकिन मैं अपने पास मौजूद ज्ञान के अनुसार जीने के लिए बाध्य हूँ। मुझे हर उस व्यक्ति के साथ खड़ा होना चाहिए जो सही है, और जब वह सही है तो उसके साथ खड़ा होना चाहिए, और जब वह गलत हो जाए तो उससे अलग हो जाना चाहिए।"
- **कोलिन कैपरनिक (Colin Kaepernick):** इस NFL खिलाड़ी ने नस्लीय अन्याय के विरोध में राष्ट्रगान के दौरान घुटने टेक दिए, तथा अपनी मान्यताओं के लिए अपने करियर का बलिदान कर दिया।

सिविल सेवाओं में सत्यनिष्ठा का महत्त्व

- **जनता की सेवा करना:** सिविल सेवकों के पास समाज द्वारा सौंपे गए शक्तिशाली पद होते हैं। समाज के कल्याण और विकास को बढ़ावा देने के लिए उनकी सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता और ईमानदारी आवश्यक है।
  - **उदाहरण:** एक सिद्धांतवादी शिक्षा अधिकारी समावेशी नीतियाँ लागू करता है जो सभी बच्चों, विशेषकर वंचित पृष्ठभूमि के बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच की गारंटी देती हैं।
- **सुशासन को कायम रखना:** सत्यनिष्ठा, सुशासन की आधारशिला है। यह एक ऐसे परिवेश का निर्माण करती है जहाँ लोक अधिकारी ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन कर सकते हैं; यह कुशल प्रशासन को बढ़ावा देती है, तथा जवाबदेही और पारदर्शिता के प्रति प्रतिरोध को हतोत्साहित करती है।
- **भ्रष्टाचार से निपटना:** लोक सेवा में भ्रष्टाचार से निपटने के लिए सत्यनिष्ठा के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता बहुत ज़रूरी है। भ्रष्टाचार न केवल नागरिकों को उनके उचित लाभों से वंचित करता है, बल्कि आर्थिक विकास में भी बाधा डालता है।
  - **उदाहरण के लिए**, केरल के एक सरकारी अस्पताल के डॉक्टर ने अनावश्यक और महँगी दवा लिखने से इनकार कर दिया तथा संभावित वित्तीय लाभ की अपेक्षा मरीज की भलाई और नैतिक आचरण को प्राथमिकता दी।
- **सार्वजनिक संसाधनों का प्रबंधन** : लोक सेवक नागरिकों के लाभ के लिए उन्हें सौंपे गए सार्वजनिक संसाधनों और धन के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार होते हैं।
  - **उदाहरण के लिए**, एक आपदा प्रबंधन अधिकारी धन के निष्पक्ष और कुशल आवंटन को प्राथमिकता देता है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित लोगों तक समय पर सहायता पहुँचे।
- **संवैधानिक दायित्व** : भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता तथा अन्य संवैधानिक सिद्धांतों को बनाए रखना और उनकी रक्षा करना, इसे संवैधानिक और नैतिक दायित्व बनाना।
- **सत्ता का दुरुपयोग न करना: सत्यनिष्ठा,** यह सुनिश्चित करती है कि सिविल सेवकों अपने निजी हितों को आगे बढ़ाने के लिए अपने सरकारी पद का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए और अपनी सर्वोत्तम क्षमता के अनुसार जनता और उनके मामलों का निष्पक्ष, कुशलतापूर्वक और संवेदनशील तरीके से निपटान करना चाहिए।
- **कर्तव्यों का पालन** : एक सत्यनिष्ठ व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन विवेक के साथ करता है।

- उदाहरण के लिए, यदि पुलिसकर्मियों को निहत्थे शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने का आदेश दिया जाता है तो ईमानदार पुलिसकर्मी आदेश का पालन करेंगे, जबकि सत्यनिष्ठ पुलिसकर्मी गोली चलाने से इनकार कर देंगे।

सत्यनिष्ठा के बारे में द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग की सिफारिशें

द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग (ARC) ने लोक प्रशासन प्रणाली में सुधार के लिए एक विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की। इसने निम्नलिखित सिफारिशें कीं:

किसी व्यक्ति को यह नहीं करना चाहिए	किसी व्यक्ति को यह अवश्य करना चाहिए
• बिना अधिकार के जानकारी प्रकट करना। • अपने कर्तव्यों के दौरान प्राप्त जानकारी का उपयोग करके आधिकारिक पद का दुरुपयोग करना। • ऐसे उपहार या आतिथ्य स्वीकार करना जिससे उसके निर्णय प्रभावित हो सकते हैं।	• कानून का पालन करना और प्रशासनिक न्याय को बनाए रखना। • अपने कर्तव्यों और दायित्वों को जिम्मेदारी से पूरा करना। • यह सुनिश्चित करना कि सार्वजनिक धन और संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया जाए। • ऐसे तरीके से कार्य करना जो पेशेवर हो और जनता का विश्वास पाने योग्य हो तथा उसे बनाए रखे। • अपने सार्वजनिक व्यवहार में पारदर्शिता और खुलापन रखना।

ईमानदारी और सत्यनिष्ठा में अंतर

ईमानदारी	सत्यनिष्ठा
ईमानदारी का मतलब केवल सच बोलना या अपनी बात पर अडिग रहना है।	सत्यनिष्ठा का तात्पर्य आचरण में स्थिरता से है जो व्यक्ति के मूल्यों और वादों के सक्रिय पालन द्वारा नियंत्रित होती है।
काफी हद तक मानसिक।	ईमानदारी के बिना सत्यनिष्ठा संभव नहीं है।
उदाहरण - ईमानदारी का मतलब है कि एक व्यक्ति झूठ बोल सकता है और जब वह कहता है कि उसने झूठ बोला है तो वह ईमानदार हो सकता है।	**उदाहरण** - सत्यनिष्ठा माँग करती है कि व्यक्ति को झूठ नहीं बोलना चाहिए और उच्च स्तर का व्यवहार दिखाना चाहिए।

उदाहरण के लिए, व्यक्ति X द्वारा यह स्वीकार करना कि उसने किसी प्रोजेक्ट में गलती की है, ईमानदारी दर्शाता है। जिम्मेदारी लेना और गलती को ठीक करने के लिए समाधान प्रस्तुत करना सत्यनिष्ठा दर्शाता है।

सत्यनिष्ठा समझौता (INTEGRITY PACT)

- सत्यनिष्ठा समझौता एक सतर्कता उपकरण है, जो **संभावित विक्रेताओं/बोलीदाताओं और क्रेता के बीच एक समझौते की परिकल्पना करता है,** जिसमें दोनों पक्ष संविदा के किसी भी पहलू पर किसी भी भ्रष्ट प्रभाव का प्रयोग नहीं करने के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त करते हैं।
  - **उदाहरण के लिए**, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन के आपूर्तिकर्ताओं के साथ समझौते के तहत उन्हें नैतिक सिद्धांतों का पालन करना होता है। इससे निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा मिलता है, रिश्वतखोरी को हतोत्साहित किया जाता है और आपूर्ति की जाने वाली वस्तुओं की गुणवत्ता सुनिश्चित होती है।
- सत्यनिष्ठा समझौता एक ऐसा **समझौता है जिसका उपयोग सार्वजनिक अनुबंधों में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए किया जाता है।** यह एक सरकारी एजेंसी और संविदा पर बोली लगाने वाले व्यवसायों के बीच एक स्वैच्छिक समझौता है।
- इस समझौते में खरीद प्रक्रिया के दौरान **नैतिक आचरण के सामान्य सिद्धांतों की रूपरेखा दी जाती है**, जैसे कि रिश्वतखोरी और मिलीभगत से बचने के लिए सरकार और व्यवसाय दोनों की प्रतिबद्धता।
- समझौते के अनुपालन की निगरानी करने तथा भ्रष्टाचार के बारे में किसी भी शिकायत की रिपोर्ट करने के लिए एक माध्यम उपलब्ध कराने हेतु अक्सर **स्वतंत्र निरीक्षकों को शामिल किया जाता है।**

सत्यनिष्ठा समझौते का महत्त्व

- **सुव्यवस्थित संविदा (Streamlined Contracting):** सत्यनिष्ठा समझौते, विलंब और विवादों को न्यूनतम करके संविदा प्रक्रिया में तेजी लाते हैं।
- **प्रतिष्ठा में वृद्धि (Enhanced Reputation):** सत्यनिष्ठा समझौतों का पालन करने से कंपनी की सकारात्मक छवि बनती है और उसमें हितधारकों का विश्वास बढ़ता है।
- **न्यूनतम कानूनी जोखिम (Minimized Legal Risks):** सत्यनिष्ठा समझौते से खरीद संबंधी अनियमितताओं के कारण होने वाले मुकदमों की संभावना कम हो जाती है।
- **कुशल खरीद (Efficient Procurement):** सत्यनिष्ठा समझौते, पारदर्शिता और निष्पक्षता को बढ़ावा देकर एक सुचारू और अधिक कुशल खरीद प्रक्रिया का निर्माण करते हैं।

निष्कर्ष

'सिविल सेवा आचरण नियम' सिविल सेवकों के लिए 'पूर्ण सत्यनिष्ठा' की सिफारिश करते हैं, चाहे उनका विभाग कोई भी हो। सुशासन सुनिश्चित करने और सिविल सेवकों को ईमानदारी के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करने की अनुमति देने के लिए सिविल सेवाओं में सत्यनिष्ठा महत्त्वपूर्ण है।

समाचारों में नैतिक मुद्दे

ईमानदारी वाली दुकानें (HONESTY SHOPS)

- हाल ही में, स्टूडेंट पुलिस कैडेट (Student Police Cadet, SPC) परियोजना के तहत केरल के लगभग 15 स्कूलों में 'ईमानदारी वाली दुकानें' खोली गईं।
- इसमें छात्रों के लिए विश्वास, सत्यता और सत्यनिष्ठा पर कुछ मूल्यवान पाठों पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- इन दुकानों के काउंटरों पर कोई सेल्समैन नहीं होता और छात्र टेबल पर रखे कलेक्शन बॉक्स में हर सामान के पैसे डाल सकते हैं। वे अंदर जाकर अपनी पसंद का सामान चुन सकते हैं और प्रदर्शित मूल्य सूची के आधार पर उसका भुगतान कर सकते हैं।

- 2008 में शुरू की गई SPC परियोजना का उद्देश्य छात्रों में बेहतर नागरिक भावना पैदा करना तथा उन्हें जिम्मेदार युवा के रूप में तैयार करना था, जो समाज की माँगों पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देंगे।

प्रमुख शब्दावलियाँ

मजबूत नैतिक सिद्धांत, न्यायपरायणता, तर्कसंगत सिद्धांत, नैतिक सत्यनिष्ठा, बौद्धिक सत्यनिष्ठा, पेशेवर सत्यनिष्ठा, सार्वजनिक संसाधनों का प्रबंधन, सत्यनिष्ठा समझौता, ईमानदारी वाली दुकानें, गहन निष्ठा

विगत वर्षों के प्रश्न

- 'सत्यनिष्ठा प्रभावी शासन प्रणाली और सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए अनिवार्य है।' विवेचना कीजिए **(2023)**
- "सत्यनिष्ठा ऐसा मूल्य है जो मनुष्य को सशक्त बनाता है।" उपयुक्त दृष्टांत सहित औचित्य सिद्ध कीजिए। **(2021)**
- शासन में सत्यनिष्ठा से आप क्या समझते हैं ? इस शब्द की आपकी अपनी समझ के आधार पर, सरकार में सत्यनिष्ठा को सुनिश्चित करने के उपाय सुझाइए। **(2019)**
- "नियुक्ति के लिए व्यक्तियों की खोज करते समय आप तीन गुणों को खोजते हैं: सत्यनिष्ठा, बुद्धिमत्ता और ऊर्जा। यदि .उनमें पहला गुण नही है, तो अन्य दो गुण आपको समाप्त कर देंगे।" -वारेन बफेट **(2018)**
- समझौते से पूर्ण रूप से इनकार करना सत्यनिष्ठा की एक परख है। इस संदर्भ में वास्तविक जीवन से उदाहरण देते हुए व्याख्या कीजिए। **(2017)**
- ''ज्ञान के बिना ईमानदारी कमजोर और व्यर्थ है, परन्तु ईमानदारी के बिना ज्ञान खतरनाक और भयानक होता हैं।'' इस कथन से आप क्या समझते हैं? आधुनिक संदर्भ से उदाहरण लेते हुए अपने अभिमत को स्पष्ट कीजिए। **(2014)**
- लोक सेवा के संदर्भ में निम्नलिखित शब्दों से आप क्या समझते हैं?
  - सत्यनिष्ठा
  - अध्यवसाय
  - सेवा-भाव
  - प्रतिबद्धता
  - साहसपूर्ण दृढ़ता **(2013)**

5 निष्पक्षता

"निष्पक्ष रहना सबसे अधिक बुद्धिमानी है। यदि आपका स्वास्थ्य अच्छा है, और आपको उससे लगाव है, तो आपको हमेशा स्वास्थ्य के खराब होने का डर रहेगा। और यदि आपको उस नुकसान का डर है, और आप बीमार हो जाते हैं, तो आपको परेशानी होगी। तो फिर क्यों न हमेशा स्वयं में आनंदित रहें?"

- परमहंस योगानंद

- निष्पक्षता, **निष्पक्ष होने का गुण है, अर्थात किसी भी चीज़ या व्यक्ति के प्रति पूर्वाग्रह न रखना या पक्षपात न करना।**
- **निष्पक्षता का** मतलब है व्यक्तिगत भावनाओं, अभिमतों या पूर्वाग्रहों के बजाय **वस्तुनिष्ठ तथ्यों और साक्ष्यों के आधार पर निर्णय या फैसले लेना।** न्यायालय में एक न्यायाधीश की कल्पना कीजिए - उन्हें निर्णय लेने के लिए कानून और तथ्यों का मूल्यांकन करना चाहिए, न कि किसी एक पक्षकार का इसलिए पक्ष लेना चाहिए क्योंकि उन्हें उसका भाषण पसंद है।
- निष्पक्ष होने का मतलब है **किसी परिस्थिति में शामिल सभी लोगों के साथ निष्पक्ष** और पक्षपात रहित व्यवहार करना। यह लोगों, विचारों या यहाँ तक कि चीज़ों पर भी लागू होता है।
- **उदाहरण के लिए,** शिक्षक को असाइनमेंट का मूल्यांकन करते समय सभी छात्रों को उनके काम के आधार पर समान अंक देने चाहिए, न कि इस आधार पर कि उनमे कोई सर्वश्रेष्ठ छात्र है या कोई कक्षा का मूर्ख छात्र है।

उदाहरण:

- **सचिन तेंदुलकर** अपने निष्पक्ष खेल और खेल भावना के लिए जाने जाते हैं। 2004 में पाकिस्तान के खिलाफ़ कॉट-बिहाइंड आउट (caught-behind dismissal) की अपील को उन्होंने यह मानते हुए वापस ले लिया था कि बल्लेबाज़ आउट नहीं था।
- **जॉन लुईस (John Lewis) ने** जाति की परवाह किए बिना सभी के लिए समानता की वकालत की और सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए अहिंसक तरीकों का इस्तेमाल किया।
- **सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार ने** 18 वर्ष से अधिक आयु के सभी लोगों को, किसी समूह, लिंग, जाति, धर्म या सामाजिक स्थिति के प्रति किसी भी पक्षपात के बिना मतदान का अधिकार प्रदान किया।
- **नीलम संजीव रेड्डी** (भारत के छठे राष्ट्रपति और दो बार लोकसभा अध्यक्ष) ऐसे पहले अध्यक्ष थे जिन्होंने लोक सभा अध्यक्ष चुने जाने पर अपनी पार्टी से त्यागपत्र दे दिया था। उन्होंने कार्यवाही को इतनी सहजता से चलाया कि उनके कार्यकाल के दौरान एक बार भी विपक्ष ने वॉकआउट नहीं किया।

सिविल सेवकों के लिए निष्पक्षता

सिविल सेवकों के लिए निष्पक्षता दो अलग-अलग स्तरों पर काम करती है :

- **राजनीतिक निष्पक्षता** : इसका तात्पर्य विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं वाली सरकारों की समान रूप से सेवा करना है, भले ही किसी सिविल सेवक की व्यक्तिगत राय कुछ भी हो।
  - **उदाहरण के लिए,** सिविल सेवक राजनीतिक परिवर्तन के दौरान आवश्यक सेवाओं और प्रशासनिक कार्यों को बनाए रखकर निरंतरता प्रदान करते हैं। वे सत्तारूढ़ पार्टी की परवाह किए बिना सुचारू सरकारी संचालन सुनिश्चित करते हैं।
- **सार्वजनिक निष्पक्षता** : इसका तात्पर्य है कि एक सिविल सेवक किसी विशेष व्यक्ति या हित के विरुद्ध भेदभाव किए बिना निष्पक्ष, न्यायसंगत, वस्तुनिष्ठ और समतापूर्ण तरीके से अपने दायित्वों का निर्वहन करता है।
  - **उदाहरण के लिए,** एक ग्रामीण अस्पताल में एक सरकारी डॉक्टर चिकित्सा की तात्कालिकता के आधार पर उपचार को प्राथमिकता देता है, तथा सभी रोगियों के साथ समान व्यवहार करता है, चाहे उनकी सामाजिक स्थिति या रिश्वत देने की क्षमता कुछ भी हो।

निष्पक्षता का महत्त्व

- **अशांति के समय निष्पक्ष निर्णय:** पूर्वाग्रह से मुक्त सिविल सेवक; दंगों, सांप्रदायिक हिंसा या अन्य जटिल स्थितियों के दौरान निष्पक्ष निर्णय ले सकते हैं, जिससे न्यायोचित प्रतिक्रिया सुनिश्चित हो सके।
- **अल्पसंख्यकों की सुरक्षा:** निष्पक्षता, भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में अल्पसंख्यकों की आवाज़ को दबाने से रोकती है। सिविल सेवकों को अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा के लिए काम करना चाहिए।
- **सटीक आकलन:** निष्पक्षता अधीनस्थों, परियोजनाओं या रिपोर्टों का मूल्यांकन करते समय सिविल सेवकों को सही तस्वीर पेश करने की अनुमति देती है, जिससे अंततः लोक कल्याण को लाभ होता है।
- **समानता को बढ़ावा देना:** निष्पक्षता लोकतंत्र के मूलभूत मूल्यों - समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व - को बढ़ावा देती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के साथ-साथ हाशिये पर स्थित वर्गों की जरूरतों पर विचार किया जाए।

गैर-पक्षपात (NON-PARTISANSHIP)

''पक्षपात हमारा सबसे बड़ा अभिशाप है। हम बहुत आसानी से यह मान लेते हैं कि हर चीज के दो पहलू होते हैं और यह हमारा कर्तव्य है कि हम उनमें से किसी एक पर रहें। "

-जेम्स हार्वे रॉबिन्सन

- यह **किसी भी राजनीतिक दल या विचारधारा के प्रति संबद्धता की कमी को दर्शाता है।**

- **गैर-पक्षपातपूर्ण व्यवहार, निष्पक्षता को प्राथमिकता देता है** और किसी एक राजनीतिक दल या विचारधारा को दूसरे पर तरजीह देने से बचता है। निर्णय राजनीतिक संबद्धता के बजाय योग्यता और जन कल्याण पर आधारित होते हैं।
- जो लोग गैर-पक्षपाती होते हैं, वे सभी पक्षों के साथ **अपने व्यवहार में निष्पक्ष और न्यायपूर्ण होने का प्रयास करते हैं।** वे निर्णय लेने से पहले सभी दृष्टिकोणों और परिप्रेक्ष्यों पर विचार करते हैं। यह एक **संतुलित दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है** जो किसी मुद्दे के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखता है।

उदाहरण:
- **टी.एन. शेषन को** मुख्य निर्वाचन आयुक्त के रूप में उनकी निष्पक्ष भूमिका के लिए याद किया जाता है।
- भारत के पूर्व राष्ट्रपति **श्री के.आर. नारायणन ने** उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार को बर्खास्त करने की संयुक्त मोर्चा के प्रधानमंत्री की सिफारिशों को अस्वीकार करके अपनी निष्पक्षता को रेखांकित किया।

लोक सेवा में गैर-पक्षपात का महत्त्व

- **जनता में विश्वास पैदा करना:** एक गैर-पक्षपातपूर्ण सिविल सेवा, सार्वजनिक हित के लिए निष्पक्षता और समर्पण का प्रदर्शन करके सरकार में जनता का विश्वास बढ़ाती है।
- **निर्णय लेने में तटस्थता सुनिश्चित करना:** गैर-पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण परियोजनाओं का मूल्यांकन करते समय व्यवहार्यता और सार्वजनिक लाभ जैसे वस्तुनिष्ठ मानदंडों को प्राथमिकता देता है, जिससे संसाधनों का कुशल आवंटन सुनिश्चित होता है।
    - **उदाहरण के लिए,** गैर-पक्षपाती सिविल सेवक, व्यवहार्यता और सार्वजनिक लाभ के आधार पर बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं का मूल्यांकन करते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि संसाधनों को सबसे अधिक प्रभाव वाली परियोजनाओं की ओर निर्देशित किया जाए।
- **पेशेवर अंदाज और सार्वजनिक धारणा को बढ़ावा देना:** गैर-पक्षपातपूर्ण व्यवहार पेशेवर नौकरशाही को बढ़ावा देता है। सिविल सेवक गैर सरकारी संगठनों (NGOs) जैसे विविध समूहों और नागरिकों के साथ काम करते हैं, राजनीतिक एजेंडों पर सार्वजनिक सुरक्षा को प्राथमिकता देते हैं, जिससे सिविल सेवा में जनता का विश्वास मजबूत होता है।
- **समानता और न्याय को बढ़ावा देना:** एक गैर-पक्षपातपूर्ण सिविल सेवा सभी नागरिकों के लिए निष्पक्ष व्यवहार सुनिश्चित करती है, चाहे उनकी राजनीतिक संबद्धता कुछ भी हो, जिससे एक अधिक न्यायपूर्ण और समतापूर्ण समाज का निर्माण होता है।

गैर-पक्षपात सुनिश्चित करने की विधि

- **गैर-पक्षपात आचरण नियम (Non-Partisan Conduct Rules):** केंद्रीय सिविल सेवा आचरण नियम (1964) और अखिल भारतीय सेवा आचरण नियम (1968) में सिविल सेवकों के लिए दिशा-निर्देशों की रूपरेखा दी गई है। ये नियम कर्तव्य के प्रति पूर्ण समर्पण पर जोर देते हैं और सार्वजनिक अंतःक्रियाओं में देरी करने की रणनीति पर रोक लगाते हैं।
- **नैतिकता संहिता (Code of Ethics) (1997):** इस संहिता ने लोक सेवकों के लिए पहला नैतिक ढाँचा प्रस्तुत करके भारत में बेहतर शासन की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाया।

निष्पक्षता और गैर-पक्षपात में अंतर

गैर पक्षपात (Non-Partisanship)	निष्पक्षता (Impartiality)
यह एक प्रकार की अभिवृत्ति है।	यह किसी विशेष परिस्थिति में एक प्रकार का व्यवहार है।
यह राजनीतिक कार्यपालकों के साथ सिविल सेवकों के संबंधों से संबंधित है, इसलिए यह एक संकीर्ण अवधारणा है।	यह न केवल राजनीतिक कार्यपालकों के साथ बल्कि लोगों के साथ भी सिविल सेवकों के संबंधों से संबंधित है, इसलिए यह एक व्यापक अवधारणा है।

भारत निर्वाचन आयोग का उदाहरण लीजिए, यह सुनिश्चित करता है कि चुनाव के दौरान प्रत्येक उम्मीदवार को राजनीतिक संबद्धता की परवाह किए बिना समान मीडिया कवरेज मिले (**निष्पक्षता**)। यह किसी भी राजनीतिक पार्टी का समर्थन या प्रचार नहीं करता है, तथा तटस्थता **बनाए रखता है (गैर-पक्षपात)।**

निष्कर्ष

नौकरशाही और राजनीतिक नेतृत्व के बीच सामंजस्य बनाए रखने और टकराव से बचने के लिए गैर-पक्षपातपूर्ण अभिवृत्ति ज़रूरी है। यह बात बार-बार टी.एन. शेषन, विनोद राय जैसे अनुकरणीय सिविल सेवकों द्वारा साबित की गई है, जिन्होंने क्रमशः भारत में चुनाव और लेखा परीक्षा प्रणाली में कई बदलाव किए हैं।

तटस्थता (NEUTRALITY)

"तटस्थता जैसा कुछ नहीं है। यह केवल अपने पूर्वाग्रहों के बारे में अधिक या कम जागरूकता है।" - फिलिस रोज़

- यह **किसी भी मुद्दे, टकराव या स्थिति पर पक्ष न लेने की स्थिति है।**
- तटस्थता **राजनीतिक तटस्थता** के विशिष्ट संदर्भ में है, अर्थात सिविल सेवकों और राजनीतिक कार्यपालकों के बीच संबंध।
- तटस्थता **निर्णय में वस्तुनिष्ठता और व्यवहार में निष्पक्षता के लिए प्रयास करती है।** एक तटस्थ व्यक्ति का लक्ष्य किसी मुद्दे के सभी पक्षों को बिना किसी पूर्वाग्रह के प्रस्तुत करना होता है और एक दृष्टिकोण को दूसरे पर तरजीह देने से बचना होता है।

प्रतिबद्ध नौकरशाही

- **नकारात्मक परिप्रेक्ष्य (Negative Perspective):** इसका तात्पर्य राजनीतिक नौकरशाही से है, जहाँ प्रशासनिक प्रणाली केवल सत्ता में मौजूद राजनीतिक दल के संकीर्ण हितों की पूर्ति करती है, जैसे - नाजी जर्मनी की प्रशासनिक प्रणाली।
- **सकारात्मक परिप्रेक्ष्य (Positive Perspective):** इसका तात्पर्य यह है कि सिविल सेवक राज्य, संविधान, कानून आदि के उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्ध हैं और राज्य, संविधान आदि के उद्देश्यों के अनुरूप राजनीतिक कार्यपालिका के कार्यक्रमों में विश्वास रखते हैं। यहाँ वे सत्तारूढ़ दल के राजनीतिक दर्शन (political philosophy) को तकनीकी सलाह देते हैं।

संवैधानिक पदों की तटस्थता

हाल के संदर्भ: हाल के दिनों में, राज्यपाल (जैसे महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल), राज्य विधानसभाओं में अध्यक्ष जैसे विभिन्न संवैधानिक पदों की तटस्थता 'राजनीतिक तटस्थता के सिद्धांत (**Doctrine of Political Neutrality**)' के आधार पर उच्चतम न्यायालय की जाँच के दायरे में आ गई है।

संवैधानिक भूमिकाओं में निष्पक्षता का महत्त्व

- **सार्वजनिक विश्वास बनाए रखना:** संवैधानिक पद सार्वजनिक विश्वास पर निर्भर करते हैं, जिसके लिए तटस्थ कार्यों और निर्णयों की आवश्यकता होती है।
- **निष्पक्षता बनाए रखना:** इन शक्तिशाली पदों पर कोई भी राजनीतिक पूर्वाग्रह लोकतंत्र में समान अवसर को बाधित कर सकता है।
- **सहकारी शासन (Cooperative Governance):** सहकारी संघवाद (Cooperative federalism) महत्त्वपूर्ण है, इसमें केंद्र और राज्य सहयोग करते हैं। संवैधानिक पदों में तटस्थता की कमी टकराव पैदा कर सकती है, जैसा कि पश्चिम बंगाल सरकार और केंद्र सरकार के बीच हाल ही में हुए तनाव में देखा गया है।

सिविल सेवा की तटस्थता के लिए चुनौतियाँ

- **राजनीतिक प्रभाव पर निर्भरता (Dependence on Political Influence):** नौकरी में स्थानान्तरण, पदोन्नति और हितलाभ के लिए स्वतंत्र प्रणालियों की कमी से ऐसा माहौल बनता है, जिसमें सिविल सेवकों को वांछित पद या लाभ प्राप्त करने के लिए विशिष्ट राजनीतिक दलों का पक्ष लेने का दबाव महसूस हो सकता है।
- **अनावश्यक गोपनीयता (Unnecessary Secrecy):** अस्पष्ट सरकारी संचालन राजनेताओं और नौकरशाहों के बीच गठजोड़ को बढ़ावा दे सकता है। यह गोपनीयता उन्हें सार्वजनिक हित से परे व्यक्तिगत लाभ उठाने की अनुमति देती है।
- **आंतरिक विभाजन (Internal Divisions):** भाषा, धर्म, जाति या क्षेत्र जैसे कारकों के आधार पर सरकारी सेवाओं के भीतर गुटबाजी के कारण सिविल सेवक तटस्थता की अपेक्षा अपने समूह के हितों को प्राथमिकता देते हैं, तथा अपने गुट के लिए पदोन्नति या लाभ प्राप्त करने के लिए राजनीतिक समर्थन की माँग करते हैं।
- **पथभ्रष्ट निष्ठा (Misguided Loyalty):** सत्तारूढ़ पार्टी के प्रति निष्ठा की विकृत भावना कुछ सिविल सेवकों को जनता की निष्पक्ष सेवा करने के अपने कर्तव्य की अपेक्षा किसी विशेष पार्टी के राजनीतिक एजेंडे को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित कर सकती है।

आगे की राह

राजनीतिक तटस्थता संवैधानिक पदों पर निष्पक्षता, सहिष्णुता और विचारों की स्वतंत्रता के लोकतांत्रिक सिद्धांतों को बनाए रखने की जिम्मेदारी डालती है और इन पदों पर आसीन व्यक्तियों का आचरण ऐसा होना चाहिए कि इसमें कोई राजनीतिक हस्तक्षेप न हो।

प्रमुख शब्दावलियाँ

निष्पक्षता, गैर-पक्षपात, पूर्वाग्रह, सक्रिय तटस्थता, निष्क्रिय तटस्थता, प्रतिबद्ध नौकरशाही

विगत वर्षों के प्रश्न

- क्या सफल लोक सेवक बनने के लिए निष्पक्ष और गैर-पक्षपाती होना अनिवार्य गुण माना जाना चाहिए? दृष्टांत सहित चर्चा कीजिए। **(2021)**
- क्या कारण है कि निष्पक्षता और अपक्षपातीयता को लोक सेवाओं में, विशेषकर वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ में, आधारभूत मूल्य समझना चाहिए? अपने उतर को उदाहरणों के साथ सुस्पष्ट कीजिए। **(2016)**

6 वस्तुनिष्ठता

"वस्तुनिष्ठता का अर्थ निर्लिप्तता नहीं है, इसका अर्थ है सम्मान, अर्थात विकृत न करने और कपट न करने की योग्यता।" - एरिक फ्रॉम

वस्तुनिष्ठता (OBJECTIVITY)

- वस्तुनिष्ठता का तात्पर्य किसी **व्यक्ति द्वारा अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं और भावनाओं के बजाय तथ्यों पर अडिग रहने से है।**
- नैतिकता में वस्तुनिष्ठता व्यक्तिगत भावनाओं या पूर्वाग्रहों पर नहीं, बल्कि **ठोस तर्क और निष्पक्षता के आधार पर निर्णय लेने का प्रयास करती है।**
  - **उदाहरण: वर्गीस कुरियन (संस्थापक, अमूल):** कुरियन के सहकारी डेयरी मॉडल अमूल ने व्यक्तिगत संबंधों के बजाय गुणवत्ता के आधार पर दूध खरीद को प्राथमिकता देकर किसानों को सशक्त बनाया।
- नैतिक वस्तुनिष्ठता समालोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करती है तथा सर्वाधिक ठोस नैतिक निर्णय पर पहुँचने के लिए **विरोधी दृष्टिकोणों का स्वागत करती है।**
  - **उदाहरण:** भारत के संविधान के निर्माता बी.आर. अंबेडकर ने संविधान के प्रारूपण के दौरान खुली बहस और तर्क-वितर्क का समर्थन किया। उन्होंने न्यायपूर्ण और समावेशी संविधान सुनिश्चित करने के लिए विविध दृष्टिकोणों पर विचार किया।

वस्तुनिष्ठता का महत्त्व

- **न्याय और निष्पक्षता में वृद्धि:** वस्तुनिष्ठ निर्णय लेने से यह सुनिश्चित होता है कि सभी को निष्पक्ष सुनवाई का अवसर मिले और उनके मामले पर योग्यता के आधार पर निर्णय लिया जाए, न कि व्यक्तिगत संबंधों या पूर्वाग्रहों के आधार पर।
  - **उदाहरण:** किसी कानूनी मामले की सुनवाई कर रहा न्यायाधीश केवल प्रस्तुत साक्ष्य और कानूनी संहिता पर ही विचार करता है, प्रतिवादी या उनकी पृष्ठभूमि के बारे में व्यक्तिगत राय को नजरअंदाज कर देता है।
- **पूर्वाग्रह और पक्षपात को कम करना:** वस्तुनिष्ठता पूर्वाग्रहों और रूढ़ियों के प्रभाव को कम करती है, जिससे अधिक समावेशी और न्यायसंगत परिणाम प्राप्त होते हैं।
  - **उदाहरण:** एक नियुक्ति प्रबंधक, उम्मीदवारों का मूल्यांकन केवल उनकी योग्यता और कौशल के आधार पर करने के लिए एक मानकीकृत साक्षात्कार प्रक्रिया और ब्लाइंड रिज्यूमे रिव्यू (blind resume review) का उपयोग करता है।
  - **साक्ष्य-आधारित निर्णयों को प्रोत्साहन:** वस्तुनिष्ठता भावनाओं या अनुमान की तुलना में तथ्यों और आंकड़ों को प्राथमिकता देती है, जिससे सुविचारित और प्रभावी समाधान प्राप्त होते हैं।
  - **उदाहरण:** एक डॉक्टर किसी मरीज का निदान, चिकित्सीय परीक्षणों और लक्षणों के आधार पर करता है, न कि किसी उपाख्यानात्मक साक्ष्य या व्यक्तिगत अनुमान के आधार पर।
- **पारदर्शिता और जवाबदेही में वृद्धि:** वस्तुनिष्ठ निर्णय पारदर्शी तरीके से लिए जाते हैं, जिससे उनकी समीक्षा की जा सकती है और यह सुनिश्चित होता है कि कार्रवाइयाँ न्यायोचित और नैतिक हैं।
  - **उदाहरण:** एक शोध दल अपनी कार्यप्रणाली और डेटा का खुलासा करता है ताकि उनके निष्कर्षों की स्वतंत्र रूप से समीक्षा और सत्यापन किया जा सके।
- **हितों के टकराव को कम करना:** वस्तुनिष्ठता व्यक्तिगत लाभ या स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों से प्रभावित निर्णयों को हतोत्साहित करती है, तथा विश्वास और नैतिक आचरण को बढ़ावा देती है।
  - **उदाहरण:** यदि किसी लोक अधिकारी की किसी कंपनी में वित्तीय हिस्सेदारी है तो वह उससे संबंधित किसी परियोजना के बारे में निर्णय लेने की प्रक्रिया से स्वयं को अलग कर लेता है।

वस्तुनिष्ठता के लिए क्या करें	वस्तुनिष्ठता के लिए क्या न करें
• साक्ष्य, तथ्य और विकल्प प्रस्तुत करके जानकारी और सलाह प्रदान करना। • योग्यता के आधार पर निर्णय लिया जाना। • विशेषज्ञ और पेशेवर सलाह को ध्यान में रखा जाना।	• सलाह देते समय या निर्णय लेते समय असुविधाजनक तथ्यों या प्रासंगिक विचारों को नजरअंदाज करना। • लिए गए निर्णयों से उत्पन्न होने वाली कार्रवाइयों से बचना।

एक लोक सेवक के लिए निष्पक्षता का महत्त्व:

- **उचित निर्णय लेना:** वस्तुनिष्ठता तथ्यों, आंकड़ों और विशेषज्ञों की सलाह के आधार पर निर्णय लेने को बढ़ावा देती है, जिससे अधिक प्रभावी नीतियाँ और संसाधनों का आवंटन संभव होता है।
- **पूर्वाग्रह में कमी:** वस्तुनिष्ठता उन व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और पक्षपातों को कम करती है जो निर्णय को प्रभावित कर सकते हैं और भेदभावपूर्ण व्यवहारों को प्रेरित कर सकते हैं।
  - **उदाहरण:** एक सार्वजनिक आवास परियोजना का प्रबंधन करने वाला एक सिविल सेवक जातीयता या धर्म के बारे में व्यक्तिगत मान्यताओं के आधार पर नहीं, बल्कि पूर्वनिर्धारित आवश्यकता और पात्रता मानदंडों के आधार पर आवेदनों को वस्तुनिष्ठ रूप से प्राथमिकता देता है।
- **कानून के शासन को कायम रखना:** वस्तुनिष्ठता स्थापित कानूनों और विनियमों का पालन सुनिश्चित करती है, तथा सभी नागरिकों के लिए न्यायसंगत और पूर्वानुमेय प्रणाली को बढ़ावा देती है।
  - **उदाहरण:** एक न्यायाधीश वस्तुनिष्ठ रूप से एक कानूनी मामले की सुनवाई करता है, तथा अपना निर्णय कानून और प्रस्तुत साक्ष्य के आधार पर देता है, न कि प्रतिवादी के बारे में व्यक्तिगत राय के आधार पर।

- **भ्रष्टाचार को रोकना:** वस्तुनिष्ठता पक्षपात और व्यक्तिगत लाभ को हतोत्साहित करती है, भ्रष्टाचार और सार्वजनिक संसाधनों के दुरुपयोग के अवसरों को कम करती है।
  - **उदाहरण:** एक सरकारी अधिकारी वस्तुनिष्ठ रूप से प्रतिस्पर्द्धी बोली प्रक्रिया के माध्यम से संविदाएँ प्रदान करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि करदाताओं के पैसे से सर्वोत्तम मूल्य प्राप्त हो, न कि व्यक्तिगत लाभ।
- **संसाधनों का कुशल आवंटन:** वस्तुनिष्ठता यह सुनिश्चित करती है कि संसाधनों को साक्ष्य-आधारित आंकड़ों और प्राथमिकताओं के आधार पर सबसे अधिक आवश्यकता वाले क्षेत्रों की ओर निर्देशित किया जाए।
  - **उदाहरण:** एक नगर योजनाकार सड़क निर्माण परियोजनाओं के लिए संसाधन आवंटित करने से पहले यातायात डेटा और निवासियों की आवश्यकताओं का वस्तुनिष्ठ रूप से विश्लेषण करता है, तथा सबसे अधिक भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है।

सिविल सेवकों में वस्तुनिष्ठता कैसे विकसित करें?

- **पारदर्शिता अपनाना:** हितों के संभावित टकराव, निर्णय लेने की प्रक्रिया और विचार किए गए साक्ष्य का खुलासा करना। (**उदाहरण:** निष्पक्ष मूल्यांकन दिखाने के लिए परमिट आवेदन समीक्षा को सार्वजनिक रूप से प्रलेखित करना)।
- **विविध इनपुट प्राप्त करना:** निर्णय लेने से पहले सभी प्रासंगिक हितधारकों से सक्रिय रूप से जानकारी और विचार एकत्रित करना। (**उदाहरण:** सामुदायिक चिंताओं पर विचार करने के लिए बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं पर सार्वजनिक सुनवाई आयोजित करना।)
- **कानून के शासन को बनाए रखना:** व्यक्तिगत राय या राजनीतिक दबाव की परवाह किए बिना, कानूनों और विनियमों को लगातार और निष्पक्ष रूप से लागू करना। (**उदाहरण:** पर्यावरण संबंधी नियमों को सभी व्यवसायों के लिए समान रूप से लागू करना।)
- **व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों को पहचानना:** व्यक्तिगत मूल्यों और अनुभवों के प्रति सचेत रहना, जो निर्णय लेने को प्रभावित कर सकते हैं। पूर्वाग्रहों को कम करने के तरीके खोजना। (**उदाहरण:** हितों के संभावित टकराव वाली परियोजना से खुद को अलग कर लें)
- **साक्ष्य-आधारित निर्णय लेना:** व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों के बजाय सत्यापन योग्य डेटा, शोध और वस्तुनिष्ठ मानदंडों के आधार पर निर्णय लेना। (**उदाहरण:** लोक सेवा परीक्षाओं को ग्रेडिंग प्रदान करने के लिए मानकीकृत परीक्षणों का उपयोग करना, जिससे योग्यता के आधार पर चयन सुनिश्चित हो सके।)
- **पेशेवर दूरी बनाए रखना:** ऐसे व्यक्तिगत संबंधों से बचना जो विशिष्ट व्यक्तियों या समूहों के प्रति पक्षपात की धारणा पैदा कर सकते हैं। (**उदाहरण:** सरकार से जुड़े हितों वाले दलों से उपहार या पक्ष लेने से मना करना)।

तटस्थता (NEUTRALITY)

- तटस्थता का मतलब है एक ऐसा रुख अपनाना जो नैतिक दुविधा में एक पक्ष को दूसरे पक्ष पर तरजीह देने से बचता है। यह वस्तुनिष्ठ और निष्पक्ष बने रहने के बारे में है, अर्थात् उन स्थितियों में निष्पक्षता के लिए प्रयास करना जहाँ प्रतिस्पर्द्धी मूल्य या हित टकराते हैं।
- यह नैतिक निर्णय लेने में पक्षपात या वरीयता की अनुपस्थिति को संदर्भित करता है। यह नैतिक मुद्दों के प्रति विमुखता या उदासीनता के बारे में नहीं है, बल्कि उचित और निष्पक्ष मन से उन पर विचार करने के बारे में है।
  - उदाहरण के लिए, हालाँकि पत्रकारों के अपने विचार हो सकते हैं, लेकिन नैतिक पत्रकारिता के लिए समाचारों को तटस्थता से प्रस्तुत करना तथा पूर्वाग्रह या सनसनी फैलाने से बचना आवश्यक है।

एक लोक सेवक के लिए तटस्थता का महत्त्व:

- **न्यायसंगतता और निष्पक्षता:** सिविल सेवक सभी नागरिकों के लिए समान व्यवहार सुनिश्चित करते हैं, चाहे उनकी पृष्ठभूमि या राजनीतिक संबद्धता कुछ भी हो। (**उदाहरण:** एक सामाजिक कार्यकर्ता राजनीतिक पार्टी की सदस्यता के आधार पर नहीं, बल्कि ज़रूरत के आधार पर कल्याणकारी लाभों के लिए सभी आवेदकों का वस्तुनिष्ठ तरीके से मूल्यांकन करता है।)
- **जनता का विश्वास:** तटस्थता सरकार में जनता के विश्वास को बढ़ाती है, क्योंकि इससे यह पता चलता है कि निर्णय व्यक्तिगत लाभ या राजनीतिक दबाव के बजाय योग्यता और कानून पर आधारित हैं। (**उदाहरण:** एक न्यायाधीश भविष्य के निर्णयों में निष्पक्षता बनाए रखने के लिए किसी भी राजनीतिक उम्मीदवार से अभियान योगदान लेने से मना कर देता है।)
- **पेशेवर अंदाज:** सिविल सेवक यह सुनिश्चित करते हुए राजनीतिक एजेंडों से पेशेवर दूरी बनाए रखते हैं कि निर्णय विशेषज्ञता और वस्तुनिष्ठ मानदंडों पर आधारित हों। (**उदाहरण:** पर्यावरण एजेंसी के लिए काम करने वाला एक वैज्ञानिक राजनीतिक लॉबिंग से बचता है और निष्पक्ष वैज्ञानिक डेटा प्रस्तुत करने पर ध्यान केंद्रित करता है।)
- **जवाबदेही:** तटस्थता सिविल सेवकों को कानून और जन कल्याण के प्रति जवाबदेह बनाती है, न कि किसी राजनीतिक दल या विचारधारा के प्रति। (**उदाहरण:** एक कर संग्रहकर्ता करदाता के राजनीतिक संबंधों की परवाह किए बिना लगातार कर कानूनों को लागू करता है।)
- **शासन की निरंतरता:** तटस्थ सिविल सेवा सरकारों के बीच सुचारू हस्तांतरण सुनिश्चित करती है, स्थापित नीतियों और प्रक्रियाओं को कायम रखती है। (**उदाहरण:** एक नौकरशाह नेतृत्व में परिवर्तन के बाद भी एक सार्वजनिक बुनियादी ढाँचा परियोजना का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करना जारी रखता है।)

वस्तुनिष्ठता और तटस्थता में अंतर

मापदंड	वस्तुनिष्ठता	तटस्थता (निष्क्रिय तटस्थता)
निर्णय का आधार	यह मजबूत साक्ष्यों पर आधारित होती है।	यह साक्ष्य पर आधारित हो भी सकती है और नहीं भी (लेकिन राजनीतिक कार्यपालिका के आदेश पर आधारित होती है।)
प्रभाव	यह जनता में विश्वास पैदा करेगी और जन सहयोग सुनिश्चित करेगी।	कुछ विशेष वर्ग (सरकार की नीतियों के कारण समस्याओं का सामना कर रहे वर्ग) शायद सिविल सेवकों से संपर्क करना नहीं चाहेंगे।
कार्य	समानता और समावेशिता बनाए रखने में मदद करती है।	कभी-कभी, उन्हें जानबूझकर सरकार की तुष्टिकरण नीतियों को लागू करना पड़ सकता है।

नीतियों का कार्यान्वयन	यदि सिविल सेवकों की वर्तमान सरकार से असहमति हो तो इससे नीतियों का ठीक से क्रियान्वयन नहीं हो सकता है।	नीतियों का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करती है।

निष्कर्ष

वस्तुनिष्ठता और तटस्थता के मूल्य एक दूसरे के पूरक हैं। वे नैतिक निर्णय लेने के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत हैं, जो न्यायसंगतता, सटीकता और विश्वास को बढ़ावा देते हैं।

अनामिकता सिविल सेवकों की ताकत है। सिविल सेवक अशोक के प्रतीक के चौथे सिंह की तरह हैं, जो अदृश्य रहता है, फिर भी हर समय अपनी उपस्थिति का एहसास कराता है।" - नरेन्द्र मोदी

- लोक सेवा के संदर्भ में, अनामिकता का मतलब पर्दे के पीछे रहना है। यह सिविल सेवाओं में स्थायित्व और तटस्थता की अवधारणाओं से संबंधित है।
- इसका मतलब यह है कि सिविल सेवक पर्दे के पीछे रहकर काम करते हैं और मीडिया की सुर्खियों एवं जनता की नज़रों से बचते हैं। सिविल सेवकों को न तो सफलता का श्रेय मिलता है और न ही असफलता के लिए उन्हें दोषी ठहराया जाता है। इसके लिए राजनीतिक कार्यपालिका की जिम्मेदारी होती है।

उदाहरण:

- एक सिविल सेवक किसी सरकारी कार्यक्रम पर आलोचनात्मक रिपोर्ट तैयार करता है। अनामिकता की वजह से उन्हें सार्वजनिक आलोचना के डर के बिना ईमानदार और वस्तुनिष्ठ रहने के लिए प्रोत्साहन मिलता है।
- एक वरिष्ठ नौकरशाह एक मंत्री को जोखिम भरे नीतिगत निर्णय के खिलाफ सलाह देता है। अनामिकता की वजह से उन्हें बिना किसी राजनीतिक दबाव के खुलकर सलाह देने का अवसर मिलता है।

सिविल सेवकों की सार्वजनिक छवि

समाज के सुचारू संचालन में सिविल सेवकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। लेकिन उनकी तकनीकी विशेषज्ञता से परे, उनकी सार्वजनिक छवि भी महत्त्वपूर्ण होती है। यह छवि जनता के विश्वास, सहयोग और अंततः उनकी पहल की सफलता को आकार देती है। इसलिए इसके महत्त्व के साथ-साथ इससे जुड़ी चिंताओं को उजागर करना भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

महत्त्व के संबंध में तर्क:

- **प्रेरणा और जन हित (Motivation and Public Good)** : एक सकारात्मक सार्वजनिक छवि सिविल सेवकों को प्रेरित कर सकती है और जन हित के लिए उनकी समर्पण भावना को सुदृढ़ कर सकती है।
- **युवाओं के लिए नैतिक नेतृत्व (Moral Leadership for Youth):** सिविल सेवक युवाओं के लिए आदर्श बन सकते हैं, तथा उन्हें नैतिक आचरण और लोक सेवा के प्रति प्रतिबद्धता हेतु प्रेरित कर सकते हैं।
- **जनता की स्वीकृति और सेवा वितरण (Public Acceptance and Service Delivery):** एक अच्छी सार्वजनिक छवि जनता के विश्वास और सहयोग को बढ़ावा देती है, जिससे सेवा वितरण सुचारू होता है और परिणाम बेहतर होते हैं।
- **सकारात्मक कार्य वातावरण (Positive Work Environment):** सिविल सेवकों के प्रति जनता का गहरा सम्मान, अधिक सहयोगात्मक और सहायक कार्य वातावरण का निर्माण कर सकता है, जिससे समग्र प्रभावशीलता में वृद्धि हो सकती है।
- **सार्वजनिक संप्रेषण (Public Communication):** एक विश्वसनीय सार्वजनिक छवि सिविल सेवकों को संकट (जैसे, कोविड-19) के दौरान प्रभावी ढंग से जानकारी संप्रेषित करने और जन धारणा को बदलने में मदद करती है।

सावधानी के लिए तर्क (ARGUMENTS FOR CAUTION):

- **ध्यान भंग होना और अल्पकालिक लाभ (Distraction and Short-Term Gains)** : सार्वजनिक छवि के प्रति अत्यधिक चिंता सिविल सेवकों को दीर्घकालिक लक्ष्यों से विचलित कर सकती है और उन्हें उचित निर्णय लेने की अपेक्षा अल्पकालिक लोकप्रियता को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित कर सकती है।
- **लोकलुभावनवाद बनाम वस्तुनिष्ठता (Populism vs. Objectivity):** जनता के अनुमोदन के प्रति जुनूनी होने से तर्कसंगत विश्लेषण और वस्तुनिष्ठ सर्वोत्तम प्रथाओं के बजाय जन भावना पर आधारित निर्णय लिए जा सकते हैं।
- **पदानुक्रम और कार्य संस्कृति (Hierarchy and Work Culture):** सार्वजनिक छवि पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करने से स्थापित पदानुक्रम के प्रति अनादर और मौजूदा कार्य संस्कृति में व्यवधान उत्पन्न हो सकता है।
- **अनामिकता और राजनीतिक एजेंडा (Anonymity and Political Agendas):** सार्वजनिक छवि की चिंता अनामिकता के महत्त्व को कम कर सकती है, जबकि अनामिकता उन्हें अनुचित दबाव से बचा सकती है और उन्हें अपने कर्तव्यों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद कर सकती है। जन धारणा राजनीतिक एजेंडों से भी प्रभावित हो सकती है।

आगे की राह

एक सिविल सेवक की सार्वजनिक छवि जिम्मेदारी का भार वहन करती है। आदर्श रूप से, इसे विश्वास को प्रेरित करना चाहिए और लोकसेवकों को अधिक से अधिक अच्छे काम करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। हालाँकि, संतुलन बनाना महत्त्वपूर्ण है। एक सकारात्मक सार्वजनिक छवि, सेवा वितरण में सुधार कर सकती है और व्हिसलब्लोइंग को प्रोत्साहित कर सकती है, जबकि लोकप्रियता पर अत्यधिक जोर देने से वस्तुनिष्ठता के बजाय जन भावना के आधार पर निर्णय लिए जा सकते हैं। अंततः, सिविल सेवकों को लोक सेवा के लिए योग्यता, सत्यनिष्ठा और समर्पण पर आधारित प्रतिष्ठा के लिए प्रयास करना चाहिए।

लोक सेवा के प्रति समर्पण (DEDICATION TO PUBLIC SERVICE)

"हमें फल की चिंता किए बिना अपने कर्तव्यों का पालन निष्ठा और ईमानदारी से करना चाहिए। " ***-भगवद गीता***

- लोक सेवा के प्रति समर्पण सिविल सेवकों के लिए एक मुख्य नैतिक मूल्य है। यह जनता की सेवा करने के लिए एक मजबूत प्रतिबद्धता को दर्शाता है, तथा व्यक्तिगत लाभ या उन्नति से ऊपर नागरिकों की जरूरतों और हितों को प्राथमिकता देता है।
- यह प्रतिबद्धता से भिन्न है, जो औपचारिक रूप से बाध्यकारी होती है, जबकि समर्पण जुनून के साथ प्रतिबद्धता है और कुछ आदर्शों से प्रेरित होकर कर्तव्य की भावना से निर्देशित होती है।

- लोक सेवा के प्रति समर्पण यह सुनिश्चित करता है कि सिविल सेवकों को ईमानदारी से काम करना चाहिए और अपनी मुख्य जिम्मेदारी को पूरा करना चाहिए, अर्थात् आम लोगों की भलाई के लिए काम करना। इससे जनता का, सरकार में भरोसा बढ़ता है और एक अधिक न्यायपूर्ण और समतापूर्ण समाज को बढ़ावा मिलता है।

उदाहरण:

- एक सिविल सेवक द्वारा अपने विभाग में भ्रष्टाचार के बारे में सूचना देना, भले ही इससे उसका करियर खतरे में पड़ जाए।
- एक नौकरशाह द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक शिक्षा में सुधार के लिए नवीन कार्यक्रम विकसित किया जाना।
- एक सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा महामारी के दौरान रोग नियंत्रण के लिए स्वयं को समर्पित करना, जिससे उसकी अपनी सुरक्षा खतरे में पड़ रही है।
- एक सामाजिक कार्यकर्ता द्वारा हाशिये पर पड़े समुदायों के अधिकारों के लिए अथक प्रयास करना।

लोक सेवा में समर्पण क्यों मायने रखता है?

- **उत्साह से परे प्रेरणा: (Motivation Beyond Excitement)** समर्पण आंतरिक प्रेरणा को बढ़ाता है, जिससे सिविल सेवक कठिन या चुनौतीपूर्ण कार्यों में भी दृढ़ बने रहते हैं, तथा निरंतर सेवा प्रदान करना सुनिश्चित करते हैं।
- **जटिलताओं से निपटना (Navigating Complexities):** लोक सेवा में अक्सर अप्रत्याशित परिस्थितियाँ और कठिन निर्णय शामिल होते हैं। समर्पण सिविल सेवकों को इन जटिलताओं को प्रभावी ढंग से संभालने के लिए सक्षम बनाता है।
- **समानुभूति और जनता पर ध्यान केंद्रित करना (Empathy and Public Focus) :** समर्पण से उस जनता के प्रति समानुभूति बढ़ती है जिसकी वे सेवा करते हैं, जिससे उनके जीवन को बेहतर बनाने और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने की वास्तविक इच्छा पैदा होती है।
- **न्यायपूर्ण समाज का निर्माण करना (Building a Just Society):** समर्पित सिविल सेवक एक सुचारू रूप से कार्य करने वाली सरकार की रीढ़ होते हैं, जो संविधान के आदर्शों को बनाए रखने तथा सभी के लिए न्याय और समानता सुनिश्चित करने के लिए अथक प्रयास करते हैं।

सहिष्णुता (TOLERANCE)

"मैं आपकी बात से सहमत नहीं हूँ, लेकिन मैं आपके बात कहने के अधिकार की रक्षा मरते दम तक करूँगा ।" **- वॉल्टेयर**

"सभ्यता तभी आगे बढ़ेगी जब वह चरित्र और विचार की विविधता को महत्त्व देना सीखेगी" **- आर्थर सी क्लार्क**

"सहिष्णुता के व्यवहार में, व्यक्ति का शत्रु ही सबसे अच्छा शिक्षक होता है। " **- दलाई लामा**

- सहिष्णुता से तात्पर्य उन लोगों के प्रति उचित, वस्तुनिष्ठ और अनुमोदक अभिवृत्ति से है जिनके अभिमत, प्रथाएं, प्रजाति, धर्म, राष्ट्रीयता आदि हमारे अभिमत, प्रथा, प्रजाति, धर्म और राष्ट्रीयता से भिन्न हैं।
- इसमें विभिन्न दृष्टिकोणों, मान्यताओं और पृष्ठभूमियों को बिना किसी निर्णय या भेदभाव के स्वीकार करना और समझना शामिल है।
- सहिष्णुता, दूसरों की सराहना करने और उन्हें सहन करने की क्षमता है, चाहे उनकी जाति, धर्म, जातीयता या अन्य विशेषताएँ कुछ भी हों।
  - **उदाहरण** - राष्ट्रीय एकता की भावना का जश्न मनाने और सहिष्णुता सिखाने के लिए 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम शुरू किया गया है।

अन्य उदाहरण:

- ए.आर. रहमान का संगीत भारतीय शास्त्रीय संगीत को पश्चिमी प्रभावों के साथ सहजता से मिश्रित करता है, तथा सांस्कृतिक सराहना और सहिष्णुता को बढ़ावा देता है।
- मिल्खा सिंह ने विभाजन के दौरान पाकिस्तान में भेदभाव का सामना करने के बावजूद खेल भावना और सहिष्णुता का परिचय देते हुए अपने नए देश भारत की ओर से खेल प्रतियोगिता में भाग लिया।

विभिन्न स्तरों पर सहिष्णुता की भूमिका

स्तर	भूमिका
व्यक्तिगत स्तर	यह हमें दूसरों का सम्मान करना तथा सभी परिस्थितियों में सहनशील अभिवृत्ति बनाए रखना सिखाती है। **उदाहरण -** सचिन तेंदुलकर ने विदेश में मैचों के दौरान नस्लीय टिप्पणियों का सामना करते समय शालीनता और असाधारण खेल भावना के साथ इसका जवाब दिया, जिससे उन्हें विश्व स्तर पर प्रशंसकों का सम्मान प्राप्त हुआ।
सामाजिक स्तर	सामाजिक स्तर पर सहिष्णुता शांति को बढ़ावा देती है और सामाजिक सद्भाव बनाए रखती है। **उदाहरण -** स्वामी विवेकानंद की यूरोपीय शिष्या सिस्टर निवेदिता ने भारत के सामाजिक उत्थान के लिए स्वयं को समर्पित करके तथा अंतर-धार्मिक समझ को बढ़ावा देकर सामाजिक मानदंडों को चुनौती दी।
सरकारी स्तर	सरकारी स्तर पर सहिष्णुता वैधता बढ़ाती है और विभिन्न मुद्दों पर समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है। **उदाहरण -** अटल बिहारी वाजपेयी ने पाकिस्तान के साथ शांति वार्ता शुरू की, जो पिछले टकरावों के बावजूद सुलह की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम था, तथा इसने वार्ता के प्रति सरकारी सहिष्णुता को प्रदर्शित किया।
अंतरराष्ट्रीय स्तर	अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहिष्णुता शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देती है तथा स्थिर विश्व व्यवस्था बनाए रखने में मदद करती है। **उदाहरण -** दलाई लामा विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों में शांति और सहिष्णुता को बढ़ावा देते हैं तथा संघर्ष के अहिंसक समाधान की वकालत करते हैं।

सहिष्णुता का महत्त्व

- **समानता और गैर-भेदभाव (Equality and Non-Discrimination):** सहिष्णुता सुनिश्चित करती है कि सभी नागरिकों के साथ उनकी पृष्ठभूमि, मान्यताओं या सामाजिक-आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना निष्पक्ष व्यवहार किया जाए। (उदाहरण: एक सिविल सेवक द्वारा सभी समुदायों को समान सहायता कार्यक्रम प्रदान करना)
- **जनता का विश्वास (Public Trust):** नागरिक एक सहिष्णु सरकार पर भरोसा करते हैं कि वह विभिन्न हितों का निष्पक्ष रूप से प्रतिनिधित्व करेगी। (उदाहरण: किसी त्यौहार के दौरान धार्मिक समूहों के बीच मध्यस्थता करने वाला नेता)

- **प्रभावी नीति निर्माण (Effective Policy Making):** समावेशी नीति विभिन्न दृष्टिकोणों पर विचार करती है, जिससे अधिक प्रभावी समाधान निकलते हैं। (उदाहरण: सिंचाई परियोजना से पहले किसानों और पर्यावरणविदों, दोनों से परामर्श करना।)
- **शांतिपूर्ण समाज (Peaceful Society):** सहिष्णुता समझदारी का माहौल बनाती है, जिससे सामाजिक तनाव और टकराव कम होते हैं। (उदाहरण: एक सिविल सेवक द्वारा अंतरधार्मिक संवाद को बढ़ावा देना।)
- **सामाजिक सद्भाव (Social Harmony):** सहिष्णुता अपनेपन की भावना को बढ़ावा देती है और सामाजिक अलगाव को कम करती है। (उदाहरण: विभिन्न जातीयताओं को प्रदर्शित करने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन)
- **मध्यस्थता करना (Building Bridges):** सहिष्णुता विपरीत दृष्टिकोण वाले लोगों के बीच भी सम्मानजनक संवाद और बातचीत में मदद करती है। (उदाहरण: दो देशों के बीच सीमा विवाद में मध्यस्थता करने वाला राजनयिक)

निष्कर्ष

इस प्रकार सहिष्णुता केवल निष्क्रिय स्वीकृति नहीं है; यह मतभेदों को समझने और उनका सम्मान करने के लिए एक सक्रिय प्रतिबद्धता है। यह सिविल सेवकों के लिए एक महत्त्वपूर्ण नैतिक मूल्य है, जो उन्हें निष्पक्ष, प्रभावी ढंग से जनता की सेवा करने में सक्षम बनाता है, और इस तरह एक अधिक न्यायपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण समाज को बढ़ावा मिलता है।

स्वीकृति (ACCEPTANCE)

"क्योंकि व्यक्ति स्वयं पर विश्वास करता है, इसलिए वह दूसरों को समझाने की कोशिश नहीं करता। क्योंकि व्यक्ति स्वयं से संतुष्ट होता है, इसलिए उसे दूसरों के अनुमोदन की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि व्यक्ति स्वयं को स्वीकार करता है, इसलिए पूरी दुनिया उसे स्वीकार करती है। " - लाओ त्सू **(Lao Tzu)**

- स्वीकृति से तात्पर्य **किसी व्यक्ति या समूह द्वारा किसी स्थिति या अवस्था** (आमतौर पर नकारात्मक और अप्रिय) की वास्तविकता को स्वीकार करना तथा बिना किसी विरोध या परिवर्तन के प्रयास के उसे स्वीकार करना है।
- इसका तात्पर्य **विभिन्न दृष्टिकोणों, मान्यताओं और अनुभवों को स्वीकार करना और उनका सम्मान करना** है, भले ही वे आपके अपने दृष्टिकोणों, मान्यताओं और अनुभवों से अलग हों। इसमें बिना किसी निर्णय या पूर्वाग्रह के दूसरों के दृष्टिकोण को समझने की इच्छा शामिल है।
- स्वीकृति का **मतलब हर बात से सहमत होना नहीं है**। इसका मतलब है दूसरों के अलग विचार रखने के अधिकार का सम्मान करना।
    - **उदाहरण के लिए, महात्मा गांधी ने** भारत की स्वतंत्रता के लिए अहिंसक प्रतिरोध का समर्थन किया, तथा अपने स्वयं के दृष्टिकोण का समर्थन करते हुए अंग्रेजों के अपने विचार रखने के अधिकार को स्वीकार किया।
- सहिष्णुता पर्याप्त नहीं है, बल्कि स्वीकृति का विचार ही विविधताओं को समायोजित करता है और समाज को समावेशी बनाता है।

स्वीकृति का महत्त्व

- **निष्पक्षता और न्याय में वृद्धि:** हम मतभेदों को स्वीकार करके यह सुनिश्चित करते हैं कि हर किसी को अपनी बात कहने का अधिकार हो और उनकी जरूरतों पर विचार किया जाए।
- **टकराव को कम करना और सहयोग में वृद्धि:** विभिन्न दृष्टिकोणों को स्वीकार करने से शांतिपूर्ण संवाद और साझा आधार खोजने में मदद मिलती है।
- **खुले विचारों और व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहन:** विविध दृष्टिकोणों के संपर्क में आने से दुनिया और स्वयं के बारे में हमारी समझ व्यापक होती है।

सहिष्णुता और स्वीकृति में अंतर

मापदंड	सहिष्णुता	स्वीकृति
परिभाषा	यह भिन्न अभिमत, अभिवृत्ति आदि के प्रति एक अनुमोदक अभिवृत्ति है और उन्हें सहन करने की इच्छा है।	यह सहिष्णुता से भी बढ़कर है तथा इसमें भिन्न-भिन्न अभिमतों, अभिवृत्तियों आदि को स्वीकृति और मान्यता दी जाती है।
नापसंदगी के प्रति अभिवृत्ति	इसमें निष्क्रिय परित्याग होता है और नापसंदगी बनी रह सकती है।	स्वीकृति के साथ, नापसंदगी से छुटकारा पाने का सक्रिय प्रयास होता है।
उदाहरण	***अकबर के इबादतखाने की चर्चाएँ***	***वसुधैव कुटुम्बकम का दर्शन***

समानुभूति और करुणा

- *"समानुभूति दूसरे की आँखों से देखना, दूसरे के कानों से सुनना और दूसरे के दिल से महसूस करना है। "* **- अल्फ्रेड एल्डर**
- *"भक्त को सार्वभौमिक समानुभूति महसूस करनी चाहिए। जो व्यक्ति अपने आप की तुलना में सभी प्राणियों के सुख और दुःख दोनों में सच्ची समानता को देखता है, वह पूर्ण योगी है।"*
  - भगवान कृष्ण का पवित्र भगवद् गीता में अभिकथन
- *"मैं उसे धार्मिक कहता हूँ जो दूसरों के दुःख को समझता है।"* **- महात्मा गांधी**

समानुभूति (EMPATHY)

- समानुभूति दूसरे व्यक्ति की भावनाओं को समझने और साझा करने की क्षमता है। इसमें स्वयं को उसकी जगह रखकर दुनिया को उनके नज़रिए से देखना शामिल है।
- समानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण अपने स्वयं के हितों, वर्तमान स्वभाव और कारक के साथ संबंध को अलग रखकर तथा किसी व्यक्ति के कार्यों से उसके आसपास के लोगों पर पड़ने वाले प्रभावों के प्रति समानुभूति रखकर प्राप्त किया जाता है।
    - उदाहरण के लिए, **सुनीता कृष्णन (मानव तस्करी-रोधी कार्यकर्ता)** मानव तस्करी के पीड़ितों को बचाने के लिए काम करती हैं, तथा उनके मानसिक आघात और शोषण के प्रति समानुभूति रखती हैं।

सिविल सेवाओं में समानुभूति की आवश्यकता

- **जरूरतों को समझना:** समानुभूति से सिविल सेवकों को नागरिकों के नजरिए से मुद्दों को देखने में मदद मिलती है, जिससे अधिक संवेदनशील नीतियाँ और कार्यक्रम बनाए जाते हैं।
- **विश्वास पैदा करना: लोगों के प्रति** वास्तविक चिंता विश्वासनीयता को बढ़ाती है तथा नागरिकों और सरकार के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करती है।
- **निष्पक्षता एवं समानता:** समानुभूति पूर्वाग्रहों की पहचान करने और उनका समाधान करने में मदद करती है, तथा सभी नागरिकों के प्रति निष्पक्ष व्यवहार को बढ़ावा देती है।
- **प्रभावी समाधान:** नागरिकों के सामने आने वाली चुनौतियों को समझने से अधिक लक्षित और प्रभावी समाधान निकलते हैं। उदाहरण के लिए, **किरण बेदी (IPS अधिकारी) ने** समानुभूति के साथ जेल सुधारों को फिर से परिभाषित किया, कैदियों के पुनर्वास और कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित किया।

- **विवादों का समाधान:** समानुभूति विभिन्न दृष्टिकोणों को स्वीकार करके विवादों के शांतिपूर्ण समाधान को सुगम बनाती है।
- **मानवतावादी दृष्टिकोण:** सेवा वितरण में समानुभूति शासन के प्रति जन-केंद्रित दृष्टिकोण सुनिश्चित करती है।

समानुभूति विकसित करने की रणनीतियाँ:

- **अनुभवजन्य ज्ञानार्जन:** दूसरों के अनुभवों की गहरी समझ विकसित करने के लिए स्थलीय अध्ययन (फील्डवर्क), भूमिका निभाने वाले खेल (role-playing games) और परिप्रेक्ष्य-अभ्यास जैसी गतिविधियों में शामिल होना।
- **घर और स्कूल में मूल्यों का पोषण:** परिवार और शैक्षिक संस्थान छोटी उम्र से ही करुणा, समझ और सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर देकर मजबूत समानुभूति पैदा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- **अंतर-सांस्कृतिक संवाद:** विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक समूहों के बीच बातचीत और समझ को बढ़ावा देना, "सर्व धर्म समभाव" (सभी धर्मों के लिए समान सम्मान) की भावना को बढ़ावा देना।
- **कला की शक्ति का उपयोग:** मानव संवेगों का पता लगाने और विविध अनुभवों से जुड़ने के लिए सिनेमा, साहित्य और संगीत जैसे कला रूपों का उपयोग करना। (उदाहरण के लिए, सत्यजीत रे की "पाथेर पाँचाली" ग्रामीण जीवन के संघर्षों के प्रति समानुभूति प्रकट करती है)।

करुणा (COMPASSION)

"करुणा धर्म नामक वृक्ष की जड़ है। " — ***भगवद गीता***

- करुणा उन लोगों के प्रति सहानुभूति और देखभाल की भावना है जो पीड़ित हैं। इसमें दूसरे व्यक्ति के दुःख को समझना और उसे कम करने में मदद करना शामिल है।
- करुणा, समानुभूति से कहीं बढ़कर है। समानुभूति किसी की भावनाओं को समझना मात्र है, जबकि करुणा सामान्यतः 'दूसरों के दुःख को दूर करने की सक्रिय इच्छा' पैदा करती है।
  - उदाहरण के लिए, **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम,** जिन्हें "जनता के राष्ट्रपति" के रूप में जाना जाता है, छात्रों के साथ सक्रिय रूप से बातचीत करते थे तथा विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में उन्हें शिक्षा और विकास के प्रति अपने समर्पण से प्रेरित करते थे।
- यह मजबूत रिश्ते बनाने और अधिक न्यायपूर्ण एवं सहानुभूतिपूर्ण विश्व का निर्माण करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सिविल सेवकों के लिए करुणा का महत्त्व :

- **आवश्यकताओं को समझना:** करुणा से सिविल सेवकों को नागरिकों की आवश्यकताओं और चुनौतियों को समझने में मदद मिलती है, जिससे जन कल्याण के लिए अधिक प्रभावी समाधान निकलता है।
  - **उदाहरण:** करुणा के साथ काम करने वाला एक सामाजिक कार्यकर्ता केवल बुनियादी आवश्यकताएँ प्रदान करने के अलावा अपेक्षित सहायता प्रदान करने के लिए परिवार की स्थिति का भी पता लगाता है।
  - **न्यायसंगतता और निष्पक्षता:** करुणा न्यायसंगतता और निष्पक्षता की भावना को बढ़ावा देती है, तथा यह सुनिश्चित करती है कि सेवाओं और संसाधनों का वितरण आवश्यकता के आधार पर हो, न कि पक्षपात के आधार पर।
  - **उदाहरण:** एक करुणायुक्त अधिकारी यह सुनिश्चित करता है कि भूमि विवाद समाधान के दौरान सभी को निष्पक्ष सुनवाई मिले।
- **विवाद समाधान:** करुणा समानुभूति और समझ को बढ़ावा देती है, जिससे सिविल सेवकों को विवादों में शांतिपूर्ण ढंग से मध्यस्थता करने और सहमति बनाने में सहायता मिलती है।
  - **उदाहरण:** एक करुणायुक्त पुलिस अधिकारी दोनों पक्षों की बात सुनकर तथा सभी की चिंताओं को ध्यान में रखते हुए समाधान ढूंढकर तनावपूर्ण स्थिति को शांत करता है।
- **अभिप्रेरणा और कार्यनिष्पादन:** एक करुणायुक्त कार्य वातावरण कर्मचारियों के मनोबल और अभिप्रेरणा को बढ़ावा देता है, जिससे कार्यनिष्पादन और सेवा वितरण में सुधार होता है।
  - **उदाहरण:** एक करुणायुक्त सुपरवाइजर कर्मचारियों के सामने आने वाली व्यक्तिगत चुनौतियों को समझता है और सहायता प्रदान करता है, जिसके परिणामस्वरूप अधिक समर्पित और उत्पादक कार्यबल देखने को मिलता है।
- **मानवीय संबंध:** सरकार में बैठे लोगों को करुणा याद दिलाती है कि वे साथी मनुष्यों के साथ व्यवहार कर रहे हैं। यह समुदाय की भावना को बढ़ावा देती है और बेहतर भविष्य के लिए साझा जिम्मेदारी को बढ़ावा देती है।
  - **उदाहरण:** एक करुणायुक्त नेता लोक सेवकों को अतिरिक्त प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे समुदाय में सकारात्मक प्रभाव की लहर पैदा होती है।

चिढ़ (ANTIPATHY), उदासीनता (APATHY), सहानुभूति (SYMPATHY), समानुभूति (EMPATHY) और करुणा (COMPASSION) का तुलनात्मक विवरण

चिढ़	किसी व्यक्ति या समूह के प्रति नापसंदगी या अरुचि, परंतु तीव्र घृणा नहीं।	**उदाहरण-** यदि कोई भूखा व्यक्ति आपके पास भोजन के लिए आता है तो आप उसकी मदद करने के बजाय उसे डांटते हैं।
उदासीनता	दूसरों की भलाई के प्रति अभिरुचि या चिंता की कमी। यह उदासीनता उनकी ज़रूरतों के प्रति सामान्य उपेक्षा के रूप में प्रकट हो सकती है।	**उदाहरण-** यदि कोई भूखा व्यक्ति आपके पास भोजन के लिए आता है तो आप उसके प्रति उदासीन रहते हैं।
सहानुभूति	दूसरे व्यक्ति की परेशानी की भावनाओं को पहचानना और उन्हें साझा करना। हालाँकि, दी जाने वाली मदद दूसरे व्यक्ति की वास्तविक ज़रूरतों के बजाय धारणाओं पर आधारित हो सकती है।	**उदाहरण-** यदि कोई भूखा व्यक्ति आपके पास भोजन के लिए आता है तो आप उसे कोल्ड ड्रिंक, फ्रूटी आदि देते हैं, जबकि उस व्यक्ति को दाल-रोटी की जरूरत है।
समानुभूति	दूसरे व्यक्ति की भावनाओं को उनके नज़रिए से समझने और साझा करने की क्षमता। दी जाने वाली मदद दूसरे व्यक्ति की स्थिति और ज़रूरतों की स्पष्ट समझ पर आधारित होती है।	**उदाहरण-** यदि कोई भूखा व्यक्ति आपके पास भोजन के लिए आता है, तो आप उसे उसकी जरूरत की चीजें, जैसे दाल-रोटी आदि देते हैं।

करुणा	यह समानुभूति और दूसरों के दुःख को कम करने की तीव्र इच्छा का संयोजन है। इसमें उनकी भलाई के लिए गहरी चिंता और मदद के लिए कार्रवाई करने की प्रेरणा शामिल है।	**उदाहरण-** यदि कोई भूखा व्यक्ति आपके पास भोजन के लिए आता है, तो आप उसे दाल-रोटी देते हैं, लेकिन यह भी सुनिश्चित करते हैं कि उसे नियमित भोजन मिले और उसे इस तरह भीख न माँगनी पड़े।

करुणा का मतलब सिर्फ़ किसी के लिए तरस खाना नहीं है; इसका मतलब है दुःख को कम करने और खुशहाली को बढ़ावा देने के लिए कदम उठाना। सिविल सेवक करुणा को अपने नैतिक ढाँचे में शामिल करके सभी के लिए अधिक न्यायपूर्ण, समतापूर्ण और मानवीय समाज का निर्माण कर सकते हैं।

अनुशासन और निष्कपटता

- *"अनुशासन सेना की आत्मा है। यह छोटी टुकड़ी को भी दुर्जेय बना देता है; कमज़ोरों को सफलता और सभी को सम्मान दिलाता है।"* - जॉर्ज वाशिंगटन।
- *"वफादारी और निष्कपटता को पहला सिद्धांत मानें।"* **—कन्फ्यूशियस**
- *"जब हम अपना आभार व्यक्त करते हैं, तो हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि सर्वोच्च प्रशंसा शब्दों को बोलना नहीं है, बल्कि उनके अनुसार जीना है।"* ***-जॉन एफ. कैनेडी***
- **अनुशासन** स्वयं को नियंत्रित करने और नियमों या अपेक्षाओं का पालन करने की क्षमता है। इसमें निम्नलिखित शामिल हैं:
  - **आत्म-नियंत्रण (Self-control):** लक्ष्य प्राप्ति पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए आवेगों और विकर्षणों को रोकना।
  - **निरंतरता (Consistency):** चुनौतियों के बावजूद दिनचर्या और प्रतिबद्धताओं पर कायम रहना।
  - **दृढ़ता (Perseverance):** आसानी से हार न मानना तथा बाधाओं का सामना करने पर भी अपने लक्ष्य की दिशा में काम करते रहना।
    - **उदाहरण के लिए, विराट कोहली** अपनी कठोर अभ्यास दिनचर्या और फिटनेस के प्रति अटूट समर्पण के लिए प्रसिद्ध हैं, जिसने उनकी क्रिकेट उपलब्धियों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।
- **निष्कपटता** का तात्पर्य व्यक्ति के शब्दों, भावनाओं या इरादों में सच्चाई होना है। इसका मतलब है अपनी कथनी और करनी में ईमानदार, सच्चा और सुसंगत होना। एक निष्कपट व्यक्ति वह होता है जिस पर आप भरोसा कर सकते हैं कि वह जो कहता है, उसके अनुसार कार्य करेगा, भले ही ऐसा करना मुश्किल हो।
  - **उदाहरण के लिए,** एक **शिक्षक संघर्षरत छात्र को अतिरिक्त सहायता देता है** क्योंकि वह वास्तव में चाहता है कि वह सफल हो। इसी तरह, **एक वादा निभाना,** भले ही वह असुविधाजनक हो, प्रतिबद्धता और निष्कपटता दिखाता है।
- अनुशासन और निष्कपटता सिविल सेवकों को आचार संहिता के सिद्धांतों का पालन करने के लिए प्रेरित करती है।
  - **उदाहरण के लिए,** एक अनुशासित और निष्कपट सिविल सेवक समाज में अन्याय से निपटने में साहस और दृढ़ विश्वास दिखाता है।

पहलू	अनुशासन	निष्कपटता
अर्थ	अनुशासन का तात्पर्य है स्वयं को नियंत्रित करने और कुछ मामलों में, खास तौर पर चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में दूसरों को नियंत्रित करने की क्षमता। इसमें स्थापित नियमों और मानकों का पालन करना शामिल है।	अनुशासन का तात्पर्य है स्वयं को नियंत्रित करने और कुछ मामलों में, खास तौर पर चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में दूसरों को नियंत्रित करने की क्षमता। इसमें स्थापित नियमों और मानकों का पालन करना शामिल है।
स्रोत	अनुशासन स्व-प्रेरित हो सकता है या स्थापित मानदंडों और अपेक्षाओं के माध्यम से बाहरी रूप से लागू किया जा सकता है।	निष्कपटता से किए गए कार्य वे होते हैं जो व्यक्ति के अपनी मूल मान्यताओं और मूल्यों से प्रेरित होते हैं। यह आंतरिककरण गहरी प्रतिबद्धता और सकारात्मक सुदृढ़ीकरण की ओर ले जाता है।
कार्य	अनुशासन संगठनों में व्यवस्था और पूर्वानुमेयता लाता है, अराजकता और कुप्रबंधन को रोकता है। यह सुसंगत और कुशल संचालन सुनिश्चित करता है।	निष्कपटता मन को अन्य सद्गुणों को अपनाने के लिए तैयार करती है। यह एक अनुकूल वातावरण तैयार करती है जहाँ अन्य सकारात्मक मूल्य पोषित और मज़बूत हो सकते हैं।

सेवकों के लिए अनुशासन और ईमानदारी का महत्त्व

- **जवाबदेही (Accountability):** अनुशासन नियमों और विनियमों का पालन सुनिश्चित करता है, तथा जनता के विश्वास के प्रति जवाबदेही की भावना को बढ़ावा देता है।
- **दक्षता (Efficiency):** कार्य करने की अनुशासित आदतों से कुशल सेवा वितरण होता है, विलंब न्यूनतम होता है और सार्वजनिक लाभ अधिकतम होता है।
  - **उदाहरण:** परमिट अनुमोदन के लिए समय सीमा का पालन करने से यह सुनिश्चित होता है कि व्यवसाय सुचारू रूप से कार्य कर सकेंगे।
- **जनता का विश्वास (Public Trust):** निष्कपटता से सरकारी सेवाओं में जनता का विश्वास बढ़ता है। जब नागरिकों को लगता है कि अधिकारी सच्चे हैं, तो वे सहयोग करने के लिए अधिक इच्छुक होते हैं।
- **पेशेवर अंदाज (Professionalism):** अनुशासन एक पेशेवर कार्य वातावरण को बढ़ावा देता है, गंभीरता को बढ़ावा देता है और लोक सेवा पर ध्यान केंद्रित करता है।
  - **उदाहरण:** नागरिकों के साथ बातचीत के दौरान पेशेवर व्यवहार बनाए रखने से पद की गरिमा बनी रहती है।
- **आदर्श आचरण (Exemplary Conduct):** सिविल सेवक आदर्श के रूप में कार्य करते हैं। अनुशासन और निष्कपटता जनता के लिए एक सकारात्मक उदाहरण स्थापित करते हैं।
  - **उदाहरण:** सहकर्मियों के कदाचार की रिपोर्ट करना नैतिक व्यवहार के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

दृढ़ता (PERSEVERANCE)

- *"जब तक कोई काम पूरा न हो जाए, तब तक वह असंभव ही लगता है। "*

  -नेल्सन मंडेला
- *"दृढ़ता एक लंबी दौड़ नहीं है; यह एक के बाद एक कई छोटी दौड़ हैं। "*

  - वाल्टर इलियट
- *"हर काम को सफल होने से पहले सैकड़ों कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है। जो लोग दृढ़ रहते हैं, उन्हें देर-सबेर सफलता अवश्य मिलेगी। "*

  - स्वामी विवेकानंद
- **दृढ़ता** वह गुण है जो कठिनाइयों, असफलता या विरोध के बावजूद कुछ करने या हासिल करने के प्रयासों की निरंतरता का गुण है। यह समर्पण, सहनशक्ति और कठिन परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्यों पर केंद्रित रहने से संदर्भित है।
- इसका संबंध केवल अंतिम परिणाम से नहीं, बल्कि लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किए गए निरंतर प्रयास से होता है।
- इसके लिए मजबूत आंतरिक प्रेरणा और आप क्या हासिल करना चाहते हैं, इसके स्पष्ट दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

उदाहरण:

- **जे.के. रोलिंग को** विश्वव्यापी सफलता प्राप्त करने से पहले अपनी हैरी पॉटर पांडुलिपि के लिए कई बार अस्वीकृतियों का सामना करना पड़ा था।
- कम उम्र में ही एएलएस (ALS) रोग से पीड़ित होने के बावजूद **स्टीफन हॉकिंग ने भौतिकी में मौलिक अनुसंधान जारी रखा।**

सिविल सेवकों के लिए दृढ़ता का महत्त्व

- **बाधाओं पर काबू पाना (Overcoming Obstacles):** दृढ़ता से सिविल सेवकों को जटिल चुनौतियों और नौकरशाही संबंधी बाधाओं से बिना हार माने निपटने में मदद मिलती है, जिससे कुशल सेवा वितरण सुनिश्चित होता है।
- **दीर्घकालिक दृष्टिकोण (Long-Term Vision):** दृढ़ता दीर्घकालिक परियोजनाओं के प्रति प्रतिबद्धता को बढ़ावा देती है, जो जन कल्याण को लाभ पहुँचाती हैं, भले ही तत्काल परिणाम दिखाई न दें।
  - **उदाहरण:** एक मेहनती सिविल सेवक सूखाग्रस्त क्षेत्र के लिए एक स्थायी जल प्रबंधन योजना विकसित करता है।
- **नैतिक निर्णय लेना (Ethical Decision-Making):** दृढ़ता सिविल सेवकों को दबाव का प्रतिरोध करने और विरोध के बावजूद अपनी नैतिक प्रतिबद्धता पर अडिग रहने में सहायता करती है।
- **जवाबदेही और अनुपालन (Accountability and Follow-Through):** दृढ़ता; सिविल सेवकों को अपने वादों के प्रति जवाबदेह रहना तथा जनता को दिए गए वचनों का पालन करना सुनिश्चित करती है।
  - **उदाहरण:** एक दृढ़ निश्चयी अधिकारी ग्रामीण क्षेत्र में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं की वकालत करता रहता है।
- **अनुकूलनशीलता और नवाचार (Adaptability and Innovation):** दृढ़ता सिविल सेवकों को बदलती परिस्थितियों के अनुकूल ढलने और जनता की नई-नई जरूरतों को पूरा करने के लिए समाधान खोजने में सक्षम बनाती है।
  - **उदाहरण:** एक अधिकारी सीमित बुनियादी ढाँचे के बावजूद दूरदराज के समुदायों को शैक्षिक संसाधन उपलब्ध कराने के लिए नए तरीके खोजने में लगा रहता है।

दृढ़ता सिर्फ़ एक व्यक्तिगत गुण नहीं है; यह सिविल सेवकों के लिए नैतिक आचरण की आधारशिला है। वे दृढ़ता से काम करके जन कल्याण करने, विश्वास को बढ़ावा देने और अधिक न्यायपूर्ण एवं समतापूर्ण समाज के निर्माण के लिए अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हैं।

साहस (COURAGE)

"साहस सभी गुणों में सबसे महत्त्वपूर्ण है क्योंकि साहस के बिना आप किसी अन्य गुण का लगातार पालन नहीं कर सकते।" ***- माया एंजेलो***

- **साहस** जोखिम उठाने, दृढ़ रहने और खतरे, भय या कठिनाई का सामना करने की मानसिक या नैतिक शक्ति है। यह भय की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि इसके बावजूद कार्य करने की क्षमता है। साहस के बारे में कुछ मुख्य बातें इस प्रकार हैं:
- शारीरिक बहादुरी, भावनात्मक दृढ़ता, सही बात का समर्थन करना, जोखिम उठाना और चुनौतियों का सामना करना, इन सभी के लिए साहस की आवश्यकता होती है।
- **यह लापरवाही की बात नहीं है,** साहस में **सोच-समझकर जोखिम उठाना और सोच-समझकर कदम उठाना शामिल है।**

उदाहरण:

- **मलाला यूसुफजई को** लड़कियों की शिक्षा की वकालत करने के कारण तालिबान ने गोली मार दी थी, इसके बावजूद वह डटी रहीं और सबसे कम उम्र की नोबेल पुरस्कार विजेता बनीं।
- **मशहूर अभिनेत्री और नृत्यांगना सुधा चंद्रन ने** एक दुर्घटना में अपना एक पैर खो दिया। इसके बावजूद सुधा एक प्रसिद्ध भरतनाट्यम नृत्यांगना बनीं, जिससे अनगिनत लोगों को प्रेरणा मिली।

सिविल सेवकों के लिए महत्त्व

- **कानून को कायम रखना:** साहस सिविल सेवकों को शक्तिशाली व्यक्तियों के दबाव या धमकियों के बावजूद भी कानूनों को निष्पक्ष रूप से लागू करने की अनुमति देता है।
  - **उदाहरण** : कर निर्धारण पर राजनीतिक प्रभाव के विरुद्ध दृढ़ता से खड़ा एक कर अधिकारी।
- **भ्रष्टाचार पर आवाज़ उठाना:** व्यवस्था के भीतर गलत कामों को उजागर करने के लिए साहस की आवश्यकता होती है, लेकिन पारदर्शिता और विश्वास बनाए रखने के लिए यह महत्त्वपूर्ण है।
- **जन हित की रक्षा:** साहसी सिविल सेवक व्यक्तिगत लाभ या राजनीतिक हितों की अपेक्षा जन हित को प्राथमिकता देते हैं।
  - **उदाहरण** : एक पर्यावरण अधिकारी आर्थिक दबाव के बावजूद प्रदूषण फैलाने वाली फैक्ट्री पर रोक लगाता है।
- **कठिन निर्णय लेना:** साहस अलोकप्रिय लेकिन आवश्यक कदम उठाने में सक्षम बनाता है, जैसे आर्थिक कठिनाई के दौरान बजट में कटौती करना।
- **भेदभाव के विरुद्ध खड़े होना:** नैतिक सिविल सेवक व्यवस्था के भीतर भेदभावपूर्ण प्रथाओं के विरुद्ध साहस के साथ लड़ते हैं।

- **उदाहरण** : एक सामाजिक कार्यकर्ता जो हाशिये पर रहने वाले समुदाय के लिए लाभों तक समान पहुँच की वकालत करता है
- **गलतियों को स्वीकार करना:** गलतियों को स्वीकार करने और सुधारात्मक कार्रवाई करने के लिए साहस की आवश्यकता होती है, लेकिन इससे जनता का विश्वास मजबूत होता है।

केस स्टडी

प्रकाश सिंह समिति की रिपोर्ट में एक परेशान करने वाली प्रवृत्ति सामने आई है- हरियाणा में कई सिविल सेवकों ने जाट आरक्षण आंदोलन के दौरान अपनी जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ लिया। जब इन अधिकारियों से उनके कार्यों के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने साहस की कमी के कारण कठिन निर्णय लेने के डर का हवाला दिया। अपनी बात के पक्ष में खड़े होने का साहस शासन में सिविल सेवकों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसका लोगों के रोजमर्रा के जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है और यह शासन में ईमानदारी की नीति को जारी रखने से सत्यनिष्ठा सुनिश्चित करता है।

अनुक्रियाशीलता (RESPONSIVENESS)

"मुझे ऐसा लगता है कि नैतिक दावे क्या हैं और वे हम पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं, इसे समझने के लिए अनुक्रियाशीलता एक बेहतर स्रोत है।" - जूडिथ बटल इसका तात्पर्य प्रतिदिन आने वाले नए अवसरों और चुनौतियों के प्रति सजग रहने तथा अनुक्रिया करने तथा जनता की उभरती जरूरतों के प्रति सजग रहने के गुण से है।

उदाहरण:

- **अपनी अनुक्रियाशीलता के लिए जाने जाने वाले** IPS अधिकारी शिवदीप वामन लांडे (2006 बैच) का ट्रैक रिकॉर्ड बहुत अच्छा है। उन्होंने कई मुद्दों को संभाला है: अपराधियों को गिरफ्तार करना, महिलाओं की सुरक्षा को बढ़ावा देना, दवा माफिया से निपटना आदि। यह उल्लेखनीय है कि लांडे सुलभता को प्राथमिकता देते हैं, कथित तौर पर जनता से प्रतिदिन सैकड़ों संदेश प्राप्त करते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि हर एक पर ध्यान दिया जाए।
- **जो ग्राहक सेवा प्रतिनिधि** ग्राहक की शिकायत को ध्यानपूर्वक सुनता है और तुरंत समाधान प्रस्तुत करता है, वह अनुक्रियाशीलता प्रदर्शित करता है।

सिविल सेवकों के लिए महत्त्व

- **उपलब्धता (Accessibility):** सिविल सेवकों को निर्दिष्ट चैनलों के माध्यम से जनता के लिए आसानी से उपलब्ध होना चाहिए, जिससे विश्वासनीयता और खुले संचार में वृद्धि होगी।
  - **उदाहरण:** कार्यालय समय में नियमित रूप से जनता से मिलना या टाउन हॉल आयोजित करना।
- **समयबद्धता (Timeliness):** पूछताछ और शिकायतों का त्वरित समाधान करना जनता के समय और जरूरतों के प्रति सम्मान दर्शाता है।
  - **उदाहरण:** प्रत्युत्तर के लिए स्पष्ट समय-सीमा निर्धारित करना और उसका पालन करना।
- **पारदर्शिता (Transparency):** निर्णय लेने की पूरी प्रक्रिया के दौरान स्पष्ट और संक्षिप्त जानकारी उपलब्ध कराने से जनता का विश्वास बढ़ता है और सुविचारित भागीदारी संभव होती है।
  - **उदाहरण:** आवेदन की स्थिति और निर्णय के औचित्य को ऑनलाइन प्रकाशित करना।
- **जवाबदेही (Accountability):** गलतियों को खुले तौर पर संबोधित करने सहित कार्यों और निर्णयों की जिम्मेदारी लेने से जनता का विश्वास मजबूत होता है।
  - **उदाहरण:** सार्वजनिक रूप से कमियों को स्वीकार करना और सुधारात्मक उपायों की रूपरेखा प्रस्तुत करना।
- **अनुकूलनशीलता (Adaptability):** बदलती जरूरतों और अप्रत्याशित परिस्थितियों पर प्रभावी ढंग से अनुक्रिया करने से यह सुनिश्चित होता है कि सेवा वितरण प्रासंगिक और प्रभावशाली बना रहता है।
  - **उदाहरण:** प्राकृतिक आपदाओं या आर्थिक मंदी को ध्यान में रखकर सेवा मॉडल को समायोजित करना।

विवेक (PRUDENCE)

- *"यह एक सर्वविदित सत्य है कि युवावस्था में उतावलापन आता है, जैसे कि बुढ़ापे में विवेक आता है।"* ***-सिसेरो***
- *"किसी अन्य सुरक्षा की आवश्यकता नहीं है, बशर्ते आप विवेकानुसार कार्य करें।"* ***-जुवेनल***
- विवेक का तात्पर्य **व्यावहारिक मामलों में अच्छे निर्णय, सावधानी और दूरदर्शिता का प्रयोग करने के गुण से है।** इसका संबंध संभावित परिणामों पर विचार करते हुए भविष्य के लिए योजना बनाने के बारे में बुद्धिमानी से निर्णय लेने से है।
- विवेकशील होने का अर्थ है सिद्धांत के आधार पर बुद्धिमानी से निर्णय लेना और अपने व्यावहारिक मामलों को चतुराई और विवेकपूर्ण तरीके से प्रबंधित करना।

उदाहरण:

- **सेवानिवृत्ति के लिए निवेश:** अपने बाद के वर्षों में वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपनी आय का एक हिस्सा नियमित रूप से बचाना।
- **साइकिल चलाते समय हेलमेट पहनना:** दुर्घटना की स्थिति में सिर पर चोट लगने के जोखिम को कम करने के लिए सुरक्षा सावधानी बरतना।
- **सोशल मीडिया संबंधी जागरूकता**: एक विवेकशील व्यक्ति **वायरल सोशल मीडिया** पोस्ट पर प्रतिक्रिया देने से पहले उसकी पुष्टि करने का प्रयास करता है।
- **सार्वजनिक वित्त प्रबंधन और विवेक:** सरकार राजकोषीय समेकन की दिशा में कदम उठा रही है, भारतीय रिज़र्व बैंक की मौद्रिक नीति दरों का उद्देश्य विवेकपूर्ण राजकोषीय प्रबंधन है।
- **विवेक का अभाव**: हम अचानक कोई चीज खरीद लेते हैं और बाद में पता चलता है कि हमें वास्तव में इसकी जरूरत नहीं थी और हमें उस पैसे को किसी और चीज के लिए बचाकर रखना चाहिए था।

सिविल सेवकों के लिए महत्त्व

- **उचित निर्णय लेना:** विवेक परिस्थितियों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करने तथा कार्रवाई करने से पहले संभावित परिणामों पर विचार करने को बढ़ावा देता है।
  - **उदाहरण:** एक सिविल सेवक किसी परियोजना को मंजूरी देने से पहले उसके दीर्घकालिक आर्थिक प्रभाव का आकलन करता है।

- **जोखिम प्रबंधन:** विवेकपूर्ण निर्णय लेने में संभावित जोखिमों की पहचान करना और उन्हें कम करना, सार्वजनिक संसाधनों की सुरक्षा करना शामिल है।
  - **उदाहरण:** एक सिविल सेवक बुनियादी ढाँचे के विकास के दौरान पर्यावरणीय क्षति से बचने के लिए मजबूत सुरक्षा उपायों को लागू करता है।
- **वित्तीय उत्तरदायित्व:** सार्वजनिक धन के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए आवश्यक सेवाओं को प्राथमिकता देना और फिजूलखर्ची से बचना आवश्यक है।
  - **उदाहरण:** एक सिविल सेवक, कार्यालय के भव्य नवीनीकरण की अपेक्षा सार्वजनिक स्वास्थ्य अवसंरचना में सुधार के लिए संसाधन आबंटन को प्राथमिकता देता है।
- **संधारणीयता:** विवेकपूर्ण योजना में निर्णयों के दीर्घकालिक सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों पर विचार किया जाता है।
  - **उदाहरण:** वडोदरा में पानी की भारी कमी की समस्या से निपटने के लिए, IAS शालिनी अग्रवाल ने राज्य के स्कूलों में वर्षा जल संचयन का एक अभिनव समाधान निकाला, जिससे हर साल 10 करोड़ लीटर पानी की बचत करके 1.8 लाख छात्रों को मदद मिली।
- **दीर्घकालिक विजन:** विवेकशील नेतृत्व भविष्य की आवश्यकताओं और चुनौतियों को ध्यान में रखता है तथा भावी पीढ़ियों की भलाई के लिए योजना बनाता है।
  - **उदाहरण:** एक सिविल सेवक भविष्य में कार्यबल संबंधी माँगों को पूरा करने के लिए दीर्घकालिक शिक्षा योजनाएँ बनाता है।

विवेक सिविल सेवकों को जनहित में प्रभावी ढंग से काम करने के लिए सक्षम बनाता है। यह जिम्मेदार निर्णय लेने को बढ़ावा देता है, विश्वास को बढ़ाता है और समाज की बेहतरी के लिए संसाधनों का संधारणीय उपयोग सुनिश्चित करता है।

संयम (TEMPERANCE)

"संयम का अर्थ है अच्छी चीजों में संयम बरतना और बुरी चीजों से पूरी तरह दूर रहना।" ***- फ्रांसिस ई. विलार्ड***

- **संयम का** मतलब है जीवन के सभी पहलुओं में **आत्म-नियंत्रण और संयम का अभ्यास करना।** यह 'अति' से बचने और अपने कार्यों, विचारों और इच्छाओं में एक स्वस्थ संतुलन खोजने के बारे में है।
- संयम वह गुण है जो हमें सुख की शारीरिक इच्छा को नियंत्रित करने में मदद करता है।
- यह पूर्ण परहेज (complete abstinence) के बारे में नहीं है, बल्कि एक उचित और टिकाऊ दृष्टिकोण खोजने के बारे में है।

उदाहरण:

- **मैराथन धावक** परिश्रमपूर्वक प्रशिक्षण लेता है, लेकिन चोट से बचने और सर्वोच्च प्रदर्शन बनाए रखने के लिए अत्यधिक प्रशिक्षण से बचता है।
- **बजट के प्रति जागरूक खरीदार,** खरीदारी की सूची बनाता है और उसका पालन करता है, आवेगपूर्ण खरीदारी से बचता है और अपनी वित्तीय क्षमता के भीतर रहता है।

सिविल सेवकों के लिए महत्त्व

- **उचित निर्णय लेना:** संयम आवेगों या व्यसनों से निर्णय को प्रभावित होने से बचाकर स्पष्ट सोच को बढ़ावा देता है।
  - **उदाहरण** : एक संयमित सिविल सेवक बड़े उपहारों को अस्वीकार करके हितों के टकराव से बचता है।
- **कुशल संसाधन प्रबंधन:** संयमी व्यक्ति सार्वजनिक संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग को प्राथमिकता देते हैं, तथा अपव्यय से बचते हैं।
  - **उदाहरण** : बजट-अनुकूल यात्रा विकल्पों का चयन संयम को दर्शाता है।
- **निष्पक्षता और न्याय:** संयमित सिविल सेवक सभी के साथ निष्पक्ष व्यवहार करते हैं तथा भावनात्मक पूर्वाग्रहों या व्यक्तिगत एजेंडों का विरोध करते हैं।
  - **उदाहरण** : नौकरी के आवेदनों का केवल योग्यता के आधार पर मूल्यांकन करना संयम को दर्शाता है।
- **दबाव में आत्म-नियंत्रण:** संवेगों और तनाव को प्रबंधित करने की क्षमता कठिन परिस्थितियों में संतुलित अनुक्रिया सुनिश्चित करती है।
  - **उदाहरण** : एक संयमित अधिकारी सार्वजनिक संकट के दौरान जल्दबाजी में निर्णय लेने से बचता है।
- **जिम्मेदार सामाजिक आचरण:** कार्यस्थल के बाहर संयमित व्यवहार सिविल सेवक की प्रतिष्ठा को बनाए रखता है और उन्हें उनकी स्थिति से समझौता करने से बचाता है।
  - **उदाहरण** : सार्वजनिक रूप से नशा करने से बचने से एक लोक सेवक की अपेक्षित गरिमा बनी रहती है।

गोपनीयता (CONFIDENTIALITY)

- *"गोपनीयता एक प्राचीन और सर्वमान्य सामाजिक मूल्य है।"* ***- के रेडफील्ड जैमिसन***
- *"गोपनीयता वफादार का गुण है, जैसे वफादारी विश्वसनीयता का गुण है।"* ***- एडविन लुइस कोल***
- *" खुफिया काम में, साझा की जाने वाली जानकारी की मात्रा की सीमाएँ होती हैं। गोपनीयता ज़रूरी है। "* ***-गिज़ डे व्रीस***
- *" गोपनीयता ही विश्वसनीय होने का मूल तत्त्व है।"* ***-बिली ग्राहम***
- गोपनीयता से तात्पर्य संवेदनशील या वर्गीकृत सूचना, डेटा या ज्ञान को गोपनीय रखने तथा अनधिकृत व्यक्तियों या अनपेक्षित दर्शकों के समक्ष इसके प्रकटीकरण को रोकने की प्रथा/आश्वासन से है।
- इसका तात्पर्य व्यापक जनहित के लिए कुछ सूचनाओं या मामलों को जनता की नजर से गुप्त रखना है।

उदाहरण:

- एक **डॉक्टर,** विशिष्ट कानूनी परिस्थितियों को छोड़कर, मरीज के बारे में सभी चिकित्सीय जानकारी गोपनीय रखता है।
- **सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 8** और शासकीय गोपनीयता अधिनियम (Official Secrets Act) में व्यापक जनहित में गोपनीयता का प्रावधान है।
- **यौन अपराधों के पीड़ितों की पहचान का खुलासा न करना** : उनकी पहचान को सुरक्षित रखा जाता है ताकि उन्हें अनावश्यक उपहास, सामाजिक बहिष्कार और उत्पीड़न का सामना न करना पड़े।

सिविल सेवकों के लिए महत्त्व

- **राष्ट्रीय सुरक्षा:** राष्ट्र को बाहरी खतरों से बचाने के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित संवेदनशील जानकारी को गोपनीयता की आवश्यकता होती है।
  - **उदाहरण:** वर्गीकृत सैन्य रणनीतियों को लीक नहीं किया जाना चाहिए ताकि राष्ट्रीय सुरक्षा से समझौता न हो सके।

- **गोपनीयता और जन हित में संतुलन करना:** असाधारण परिस्थितियों में, जन हित गोपनीयता से अधिक महत्त्वपूर्ण हो सकता है।
    - **उदाहरण के लिए**, सार्वजनिक स्वास्थ्य जोखिमों को उजागर करना आवश्यक हो सकता है।
- **ग्राहक/नागरिक की निजता:** सिविल सेवकों का यह कर्तव्य है कि वे उन व्यक्तियों की निजता की रक्षा करें जिनके साथ वे अंतःक्रिया करते हैं। इसमें सेवा वितरण के दौरान प्रकट किया गया व्यक्तिगत डेटा और जानकारी भी शामिल है।
    - **उदाहरण:** एक सामाजिक कार्यकर्ता को ग्राहक के चिकित्सा इतिहास को गोपनीय रखना चाहिए।
- **व्यावसायिक वार्ता:** चल रही वार्ताओं के संबंध में गोपनीय जानकारी सरकार की सौदेबाजी की स्थिति की रक्षा करती है और बाहरी पक्षों द्वारा हेरफेर को रोकती है।
    - **उदाहरण:** किसी अन्य देश के साथ व्यापार वार्ता में संवेदनशील आर्थिक डेटा शामिल हो सकता है।
- **आंतरिक विचार-विमर्श:** सरकार के भीतर खुली चर्चाओं के लिए गोपनीयता की आवश्यकता होती है ताकि विचारों का ईमानदारी से आदान-प्रदान हो सके और सुविचारित निर्णय लिया जा सके।
    - **उदाहरण:** कैबिनेट मंत्री समय से पहले लीक होने के डर के बिना नीतिगत विकल्पों पर बहस कर सकते हैं।

निजता और गोपनीयता

निजता	गोपनीयता
• निजता वह स्थिति है जब व्यक्ति सार्वजनिक व्यवधान और दखलंदाजी से मुक्त होता है। हर व्यक्ति का यह अधिकार है कि उसे अपने निजी मामलों में अकेला छोड़ दिया जाए क्योंकि हर किसी का अपना निजी जीवन होता है। • यह वह स्थिति है जब व्यक्ति सार्वजनिक हस्तक्षेप से मुक्त होता है। • निजता में किसी भी व्यक्ति को किसी व्यक्ति के निजी मामलों में हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं होती है। • यदि पक्षों के बीच संबंध वैश्वासिक है, तो निजता एक अधिकार है। **उदाहरण :** • व्यक्तिगत क्रेडिट कार्ड की जानकारी। • स्वयं के सोशल मीडिया पोस्ट और व्यक्ति की ब्राउज़िंग हिस्ट्री को नियंत्रित करना।	• गोपनीयता से तात्पर्य उस स्थिति से है जब किसी व्यक्ति से सूचना को गुप्त रखने का इरादा या अपेक्षा की जाती है। • यह वह स्थिति है जब सूचना को किसी अन्य व्यक्ति की पहुँच से गुप्त रखा जाता है। • गोपनीयता में कुछ निर्दिष्ट और विश्वसनीय लोगों को सूचना तक पहुँच की अनुमति दी जाती है। • यदि पक्षों के बीच संबंध वैश्वासिक है, तो गोपनीयता एक समझौता है। **उदाहरण :** • एक नागरिक का वोट • वित्तीय संस्थाएँ – ग्राहक व्यवसाय वार्ता

खुलापन (OPENNESS)

सूर्य के प्रकाश को सबसे अच्छा कीटाणुनाशक कहा जाता है।"

- लुईस डी. ब्रैंडिस

- खुलापन **व्यक्तित्व का एक लक्षण है** जो नए विचारों, अनुभवों और संस्कृतियों पर विचार करने की इच्छा को दर्शाता है।
- **खुलेपन पर नोलन समिति की रिपोर्ट** : सार्वजनिक पद पर बैठे लोगों को अपने सभी निर्णयों और कार्यों के बारे में यथासंभव खुला होना चाहिए। उन्हें अपने निर्णयों के लिए कारण बताने चाहिए और केवल तभी जानकारी देनी चाहिए जब व्यापक जन हित में ऐसा करना स्पष्ट रूप से आवश्यक हो।

उदाहरण:

- **एक बिजनेस लीडर एक नई मार्केटिंग रणनीति पर विचार कर रहा है** जो पारंपरिक तरीकों को चुनौती देती है।
- **एक श्रोता किसी ऐसे व्यक्ति के साथ सम्मानपूर्वक बातचीत कर रहा है** जो विपरीत विचार रखता है।
- कोविड-19 के टीकाकरण अभियान के दौरान **कोविन प्लेटफॉर्म का विकास।**
- प्रशासन में खुलापन लाने के लिए **सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 लागू किया गया।**
- राजस्थान सरकार का **जन सूचना पोर्टल खुलेपन को बढ़ावा देता है।**

सिविल सेवकों के लिए महत्त्व

- **जनता की भागीदारी:** खुलापन नीति निर्माण में नागरिकों की भागीदारी को प्रोत्साहित करता है, जिससे अधिक सुविचारित निर्णय लिए जा सकते हैं
- **भ्रष्टाचार में कमी:** खुलापन सार्वजनिक निगरानी बढ़ाकर रिश्वतखोरी और सार्वजनिक धन के दुरुपयोग को हतोत्साहित करता है **उदाहरण:** खरीद विवरण ऑनलाइन प्रकाशित करना।
- **त्रुटि सुधार:** खुलापन नीति या सेवा वितरण में त्रुटियों की शीघ्र पहचान और सुधार करने में मदद करता है।
- **नवाचार:** खुलापन विभागों के बीच विचारों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करके सहयोग और नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देता है। **उदाहरण:** ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर का विकास।
- **वैश्विक सहयोग:** सरकारों के बीच खुला डेटा साझाकरण वैश्विक चुनौतियों के बारे में सहयोग को सुगम बनाता है। **उदाहरण:** अंतरराष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन पहलों के लिए पर्यावरण संबंधी डेटा साझा करना।

निःस्वार्थता (SELFLESSNESS)

"हम अपने विचारों से बनते और ढलते हैं। जिनके मन निःस्वार्थ विचारों से आकार लेते हैं, वे बोलते या कार्य करते समय आनंद देते हैं। " - गौतम बुद्ध

- **निःस्वार्थता** वह गुण है जिसमें व्यक्ति अपनी ज़रूरतों और कल्याण से ज़्यादा दूसरों की ज़रूरतों और कल्याण के बारे में सोचता है। इसमें **दूसरों के फ़ायदे के लिए काम करना भी शामिल है**, भले ही इसके लिए उसे अपना समय, आराम या संसाधन त्यागना पड़े।
- निःस्वार्थ दृष्टिकोण से **सिविल सेवकों को भ्रष्टाचार से बचने में मदद मिलती है।** जनहित के प्रति उनका अटूट समर्पण उन्हें व्यक्तिगत लाभ, चाहे वह वित्तीय हो या किसी अन्य प्रकार का, के प्रलोभनों से बचाता है।
- **नोलन सिद्धांत:** नोलन रिपोर्ट लोक अधिकारियों के लिए निःस्वार्थता को एक मुख्य सिद्धांत के रूप में महत्त्व देती है। इसमें कहा गया है कि उन्हें हमेशा जनता के सर्वोत्तम हित में कार्य करना चाहिए, तथा अपने, अपने परिवार या मित्रों के लिए व्यक्तिगत लाभ से प्रेरित किसी भी कार्य से बचना चाहिए।

उदाहरण :

- **अग्निशामक दल** जलती हुई इमारतों से दूसरों को बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डालते हैं, तथा अपनी सुरक्षा से पहले उन लोगों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हैं जिन्हें वे जानते तक नहीं।

- **अंगदाता,** उच्च स्तर की निःस्वार्थता दिखाते हुए किसी अजनबी व्यक्ति का जीवन बचाने के लिए अपना एक अंग दान कर देते हैं।
- मदर टेरेसा ने स्वयं को पीड़ित और प्रताड़ित मानवता की निःस्वार्थ सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

सिविल सेवकों के लिए महत्त्व

लोक सेवा, न कि स्व-सेवा (Public Service, Not Self-Service): सिविल सेवक जनता के विश्वास के संरक्षक के रूप में कार्य करते हैं, तथा व्यक्तिगत लाभ या उन्नति से ऊपर सामूहिक हित को प्राथमिकता देते हैं।

- **सुविधा के बजाय कर्तव्य का चुनाव (Duty Over Convenience):** निःस्वार्थता का अर्थ है अधिक कठिन लेकिन नैतिक मार्ग चुनना, भले ही लघु मार्ग अपनाना आसान हो।
  - **उदाहरण:** एक सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा एक दूरदराज के गाँव में आवश्यक टीके उपलब्ध कराने के लिए अतिरिक्त प्रयास किया जाना।
- **दीर्घकालिक दृष्टिकोण (Long-Term Vision):** निःस्वार्थ निर्णय लेने में नीतियों के भविष्य के प्रभाव पर विचार किया जाता है, न कि केवल तात्कालिक राजनीतिक दबाव पर।
- **दूसरों को सशक्त बनाना (Empowering Others):** निःस्वार्थता में समुदाय के भीतर क्षमता निर्माण करना, नागरिकों को सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए सशक्त बनाना शामिल है।
  - **उदाहरण:** एक ग्रामीण विकास अधिकारी द्वारा ग्रामीणों को टिकाऊ कृषि पद्धतियों पर प्रशिक्षण देने के लिए कार्यशालाएँ आयोजित किया जाना।
- **उदाहरण प्रस्तुत करना (Leading by Example):** निःस्वार्थ आचरण दूसरों को ईमानदारी से कार्य करने और जन हित को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित करता है।
  - **उदाहरण:** एक समर्पित और ईमानदार सिविल सेवक द्वारा अपने सहकर्मियों को विभाग में नैतिक आचरण का स्तर ऊँचा उठाने के लिए प्रेरित किया जाना।

समाचारों में नैतिक मुद्दे

समलैंगिक विवाह (SAME-SEX MARRIAGE)

संदर्भ:

- हाल ही में, केंद्र सरकार ने उच्चतम न्यायालय को सूचित किया है कि समलैंगिक व्यक्तियों द्वारा सहवास और यौन संबंध बनाने की क्रिया, जिसे अब अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया गया है, को पति, पत्नी और उनसे पैदा हुए बच्चों से बनी पारंपरिक भारतीय परिवार इकाई के बराबर नहीं माना जा सकता।
- यह बयान समलैंगिक विवाह को मान्यता देने की माँग वाली याचिकाओं के जवाब में दिया गया।

समलैंगिक विवाह से संबंधित नैतिक मुद्दे

- **धार्मिक आपत्तियाँ (Religious Objections):** कई धर्म विवाह को एक पुरुष और एक महिला के बीच मिलन के रूप में देखते हैं। यह समलैंगिक विवाह की अवधारणा से विरोधी है, जिससे धार्मिक स्वतंत्रता, तथा धर्म और राज्य के पृथक्करण पर सवाल उठते हैं।
- **पारंपरिक मूल्य (Traditional Values):** कुछ लोग तर्क देते हैं कि विवाह को पारंपरिक पारिवारिक संरचनाओं को संरक्षित रखना चाहिए, जो संभवतः विवाह को पुनः परिभाषित करने के विचार का विरोधाभासी है। (**कर्तव्य-सिद्धांत** - पारंपरिक कर्तव्यों और सामाजिक अनुबंधों को कायम रखना।)
- **संतानोत्पत्ति और "प्राकृतिक" परिवार (Procreation and "Natural" Families):** कुछ लोगों का मानना है कि विवाह का उद्देश्य संतानोत्पत्ति है, जिसे समलैंगिक जोड़े जैविक रूप से प्राप्त नहीं कर सकते। इससे बच्चे पैदा करने से परे विवाह की मूल भावना के बारे में सवाल उठता है। (**उद्देश्य सिद्धांत** - विवाह के उद्देश्य और अंतिम लक्ष्य पर सवाल उठाना।)
- **फिसलन भरी ढलान का तर्क (Slippery Slope Argument):** विरोधियों को डर है कि समलैंगिक विवाह को वैध बनाने से विवाह की और अधिक पुनर्परिभाषाएँ हो सकती हैं, जैसे बहुविवाह। (**कर्तव्य-सिद्धांत** - पारंपरिक परिभाषाओं और सीमाओं को कायम रखना।)
- **कानून और नैतिकता का पृथक्करण (Separation of Law and Morality):** कुछ लोगों का मानना है कि व्यक्तिगत नैतिकता के आधार पर कानूनी अधिकारों का निर्धारण नहीं करना चाहिए, तथा उनका तर्क है कि समलैंगिक विवाह की प्रकृति के बारे में व्यक्तिगत मान्यताओं की परवाह किए बिना उसे मान्यता दी जानी चाहिए।

आगे की राह

- **खुला संवाद और शिक्षा (Open Dialogue and Education):** समलैंगिक विवाह के बारे में सम्मानजनक बातचीत को बढ़ावा देना। शिक्षा, लोगों को अलग-अलग दृष्टिकोणों को समझने और पूर्वाग्रहों पर काबू पाने में मदद कर सकती है।
- **साझा मूल्यों पर ध्यान देना (Focus on Shared Values):** लैंगिक उन्मुखता (sexual orientation) की परवाह किए बिना प्यार, प्रतिबद्धता और परिवार बनाने के महत्त्व पर प्रकाश डालना। ये मूल्य विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों की समझ में आ सकते हैं।
- **धर्म और राज्य का पृथक्करण (Separation of Religion and State):** यह सुनिश्चित करना कि धार्मिक द्वारा, नागरिक कानूनों का निर्धारण न किया जाए। व्यक्ति अपने धर्म का स्वतंत्र रूप से पालन कर सकते हैं, जबकि राज्य सभी नागरिकों के लिए समानता को कायम रखता है।
- **कानूनी संरक्षण (Legal Protections):** ऐसे कानूनों का निर्माण जो LGBTQ+ लोगों को विवाह, रोजगार और आवास जैसे क्षेत्रों में भेदभाव से बचाएं। इससे समानता को बढ़ावा मिलता है और बुनियादी अधिकार सुनिश्चित होते हैं।

अंततः, समलैंगिक विवाह के मुद्दे पर आगे बढ़ने के लिए एक ऐसे समाज का निर्माण करना महत्त्वपूर्ण है जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता और विविधता का सम्मान करता हो।

प्रमुख शब्दावलियाँ

वस्तुनिष्ठता, तटस्थता, अनामिकता, लोक सेवा के प्रति समर्पण, सहिष्णुता, स्वीकृति, समानुभूति, करुणा, चिढ़, उदासीनता, सहानुभूति, निष्कपटता, दृढ़ता, साहस, निःस्वार्थता, गोपनीयता, खुलापन, संयम, विवेक, अनुक्रियाशीलता, साहस, दृढ़ता, अनुशासन

विगत वर्षों के प्रश्न

- बौद्धिक दक्षता और नैतिक गुणों के अलावा सहानुभूति और करुणा कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण वैशिष्ट्य हैं, जो सिविल सेवकों को निर्णायक मामलों को सुलझाने अथवा महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने में अधिक सक्षम बनाते हैं। उपयुक्त उदाहरणों के साथ व्याख्या कीजिए। **(2022)**
- उन पाँच नैतिक लक्षणों की पहचान कीजिए, जिनके आधार पर लोक सेवक के कार्य-निष्पादन का आकलन किया जा सकता है। मेट्रिक्स में उनके समावेश का औचित्य सिद्ध कीजिए।
- उन दस आधारभूत मूल्यों की पहचान कीजिए, जो एक प्रभावी लोकसेवक होने के लिए आवश्यक है। लोक सेवकों में गैर-नैतिक व्यवहार के निवारण के तरीकों और साधनों का वर्णन कीजिए। **(2021)**
- एक विचार यह है कि शासकीय गुप्त बात अधिनियम सूचना के अधिकार अधिनियम के क्रियान्वयन में एक बाधा है। क्या आप इस विचार से सहमत हैं? विवेचना कीजिए। **(2019)**
- अनुशासन मे सामान्यतः आदेश पालन और अधीनता निहित है। फिर भी यह संगठन के लिए प्रति-उत्पादक हो सकता है। चर्चा कीजिए। 2017
- सिविल सेवा के संदर्भ में निम्नलिखित की प्रासंगिकता का परीक्षण कीजिए:
  - पारदर्शिता
  - जवाबदेही
  - निष्पक्षता तथा न्याय
  - दृढ़ विश्वास का साहस
  - सेवा भाव

  (2017)
- विश्वसनीयता और सहन-शक्ति के सद्गुण लोक सेवा में किस प्रकार प्रदर्शित होते हैं। उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिए। **(2015)**

7 भावनात्मक बुद्धिमत्ता

- *"जब संवेगों/भावनाओं के बारे में जागरूकता आ जाती है, तो हमारे जीवन में शक्ति आ जाती है।"* ***-तारा मेयर रॉबसन***
- *"कोई भी क्रोधित हो सकता है- यह आसान है, लेकिन सही समय पर सही व्यक्ति पर और सही उद्देश्य से क्रोधित होना - यह हर किसी के बस की बात नहीं है और यह आसान भी नहीं है"।* ***-अरस्तू***
- *"सफलता, चरित्र, खुशी और आजीवन उपलब्धियों के लिए जो चीज वास्तव में मायने रखती है, वह है भावनात्मक कौशलों का एक निश्चित समूह, अर्थात् आपकी भावनात्मक लब्धि (EQ)- न कि केवल विशुद्ध संज्ञानात्मक योग्यताएं, जिन्हें पारंपरिक बुद्धि लब्धि (IQ) परीक्षणों द्वारा मापा जाता है।"* ***- डैनियल गोलेमैन***

परिचय

- संवेगों को आम तौर पर किसी व्यक्ति या चीज़ के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल तीव्र भावनाओं के रूप में समझा जाता है। उदाहरण- प्रसन्नता, उदासी, भय, घृणा, क्रोध, आश्चर्य आदि।
- भावनाएँ **हमारी इच्छाओं को प्रभावित करते हैं** और हमें कार्रवाई करने के लिए प्रेरित करते हैं। **उदाहरण के लिए,** भूख लगने पर हम भोजन की तलाश करते हैं।
- संवेग/भावना **हमारे विकल्पों को** सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से प्रभावित कर सकते हैं। **उदाहरण के लिए,** डर महसूस करने से हम किसी ख़तरनाक स्थिति से बच सकते हैं।
- संवेग **हमें दूसरों से जुड़ने में मदद करते हैं**। संवेगों को साझा करने से समानुभूति और समझ बढ़ती है।

भावनाओं (Emotions) और मनोभाव (Feelings) में अंतर

- यद्यपि दोनों शब्दों का प्रयोग समान रूप से किया जाता है, लेकिन 'मनोभाव' का प्रयोग किसी व्यक्ति के निजी भावनात्मक अनुभव या किसी विशिष्ट भावना की आत्म-धारणा को संदर्भित करने के लिए किया जाता है।
- भावना घटनाओं या उद्दीपकों से प्रेरित होने वाली **मौलिक, स्वचालित अनुक्रियाएँ** हैं। वे बहुत तेज़ी से होती हैं, जैसे कि अचानक कोई प्रतिक्रिया हो। दूसरी ओर, मनोभाव उन भावनाओं की हमारी सचेत व्याख्या से उत्पन्न होती हैं।
    - **उदाहरण:** आप देखते हैं कि ट्रैफ़िक में कोई आपके सामने आ जाता है (घटना)। आपका शरीर तुरंत तनावग्रस्त हो जाता है और आपकी हृदय गति बढ़ जाती है (**भावना:** क्रोध)। फिर आप सचेत रूप से तय करते हैं कि यह क्रोध उचित है या नहीं और यह कितना प्रबल है (**मनोभाव:** निराशा, झुंझलाहट या क्रोध)।

भावनाओं की कार्य प्रणाली

- **अंतर-वैयक्तिक कार्य (Interpersonal Functions):** संवेग दूसरों के लिए संकेत के रूप में कार्य करते हैं, हमारी आंतरिक स्थिति को बताते हैं और सामाजिक संपर्क को बढ़ावा देते हैं।
    - **उदाहरण:** दुःख व्यक्त करने से हमारे आस-पास के लोगों से समानुभूति या सहानुभूति प्राप्त हो सकती है, जिससे सामाजिक बंधन मजबूत होते हैं।
- **अंतरा-वैयक्तिक कार्य (Intrapersonal Functions)** : संवेग हमारे व्यवहार को निर्धारित करने और निर्णय लेने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे हमें चुनौतियों का सामना करने और दुनिया में प्रभावी ढंग से कार्य करने में मदद करते हैं। (जैसे डर हमें खतरे से बचने के लिए प्रेरित करता है।)
    - **उदाहरण:** खुशी रचनात्मकता को बढ़ावा दे सकती है और हमारा ध्यान व्यापक कर सकती है, जिससे हमें नए विचारों और समाधानों का पता लगाने में मदद मिलती है।
- **समाज निर्माण:** सामाजिक संरचनाओं और सांस्कृतिक मानदंडों के निर्माण और रखरखाव में संवेग महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
    - **उदाहरण:** विश्वास एक मूल संवेग है, यह एक सामाजिक ससंजक के रूप में कार्य करता है जो व्यक्तियों को एकजुट करता है और समुदायों के भीतर सहयोग बढ़ाता है।
- **विकल्पों को सुव्यवस्थित करना:** संवेग अत्यधिक नकारात्मक संवेगों से जुड़े विकल्पों को तेजी से समाप्त करके निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित कर सकते हैं।
    - **उदाहरण:** कपड़े खरीदते समय, किसी विशेष रंग के प्रति अत्यधिक नापसंदगी के कारण हम उसे तुरंत अस्वीकार कर सकते हैं, जिससे निर्णय प्रक्रिया सरल हो जाती है।

संवेग हमारे नैतिक दिशा-निर्देशों को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संवेग निर्णय को प्रभावित कर सकते हैं, लेकिन वे नैतिक कार्रवाई के लिए शक्तिशाली प्रेरक भी हो सकते हैं, सहानुभूति को बढ़ावा दे सकते हैं, कार्रवाई को प्रेरित कर सकते हैं और हमारे नैतिक अंतर्ज्ञान का मार्गदर्शन कर सकते हैं। संवेगों के महत्त्व को पहचानने से हम अधिक संतुलित और पूर्ण नैतिक निर्णय ले पाते हैं।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EMOTIONAL INTELLIGENCE)

- भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) का तात्पर्य अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सकारात्मक तरीकों से अपने संवेगों को समझने, उनका उपयोग करने और उन्हें प्रबंधित करने की क्षमता से है। इसमें दूसरों के संवेगों को पहचानना, समझना और उन पर प्रभाव डालना भी शामिल है।

- भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) अपने व्यवहार और निर्णय लेने की क्षमता को प्रबंधित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है।
    - उदाहरण के लिए, एक ग्राहक सेवा एजेंट एक निराश ग्राहक के साथ शांत रहकर, उनकी चिंताओं को सक्रिय रूप से सुनकर, तथा सम्मानजनक तरीके से समाधान प्रस्तुत करके व्यवहार करता है।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI), शब्द 1990 में दो शोधकर्ताओं - पीटर सलोवी और जॉन मेयर द्वारा प्रतिपादित गया था, लेकिन यह 1996 में डैनियल गोलमैन की पुस्तक 'इमोशनल इंटेलिजेंस' से लोकप्रिय हुआ।

बुद्धिमत्ता (Intelligence) क्या है?
- बुद्धिमत्ता का तात्पर्य, ज्ञान और कौशल प्राप्त करने और उन्हें लागू करने की क्षमता से है। इसमें सीखने, तर्क करने, समस्या-समाधान, समालोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता और नई परिस्थितियों के अनुकूल होने जैसे विभिन्न पहलू शामिल हैं।
- बुद्धिमत्ता, जन्म से ही निश्चित नहीं होती; यह जीवन भर सीखने और अनुभवों के माध्यम से विकसित हो सकती है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) के चार चरण

सलोवी और मेयर ने भावनात्मक बुद्धि के प्रबंधन के चार चरण बताए हैं।
- **संवेगों का अनुमान लगाना (Perceiving Emotions)**: भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) का आधार दूसरों के संवेगों का सही ढंग से अनुमान लगाना है। इसमें प्रायः शारीरिक हाव-भाव और चेहरे के भाव जैसे अशाब्दिक संकेतों को समझना शामिल होता है।
- **संवेग के साथ तर्क (Reasoning with Emotion)**: संवेग सिर्फ़ भावनाएँ नहीं हैं - वे हमारी सोच और संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को बढ़ावा दे सकते हैं। संवेग हमें यह प्राथमिकता निर्धारित करने में मदद करते हैं कि हमें किस पर ध्यान देना चाहिए, और हमारी प्रारंभिक प्रतिक्रियाओं को निर्देशित करते हैं।
- **संवेगों को समझना (Understanding Emotions)**: संवेगों के कई अर्थ हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, किसी के गुस्से को समझने के लिए, हमें उनकी हताशा के स्रोत और उसके अर्थ को समझना होगा।
- **अपने संवेगों को प्रबंधित करना (Managing Your Emotions)**: भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) अपने संवेगों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने पर निर्भर करती है। इसमें अपनी भावनाओं को नियंत्रित करना, परिस्थितियों के अनुसार उचित तरीके से प्रतिक्रिया करना और दूसरों के संवेगों के प्रति संवेदनशील होना शामिल है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) के घटक

डैनियल गोलमैन के अनुसार, भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) **पाँच** प्रमुख घटकों पर आधारित होती है:
- **आत्म-बोध (Self-Awareness):** इसका मतलब है स्वयं को सही तरीके से समझना। इसमें अपनी ताकत, कमज़ोरियाँ और अवसरों के उपयोग के लिए दोनों का लाभ उठाना शामिल है। इसमें आत्मविश्वास, यथार्थवादी आत्म-मूल्यांकन और स्वयं पर हंसने की क्षमता (स्वस्थ तरीके से) शामिल है।
    - **उदाहरण:** मिशेल ओबामा ने अपने सार्वजनिक भाषण कौशल को अपनी ताकत के रूप में पहचाना और इसका उपयोग शिक्षा और सामाजिक हितों के लिए एक शक्तिशाली समर्थक बनने के लिए किया।
- **आत्म-नियमन (Self-Regulation):** यह विभिन्न स्थितियों में अपने संवेगों, विचारों और व्यवहारों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने की क्षमता है। इसमें विश्वसनीयता, सत्यनिष्ठा, आत्म-नियंत्रण, अनुकूलनशीलता और परिवर्तन के प्रति खुलापन शामिल है।
    - **उदाहरण:** मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने नागरिक अधिकार आंदोलन के दौरान शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया, जिसमें उन्होंने आत्म-नियंत्रण और संवेगों को प्रभावी कार्रवाई में बदलने की क्षमता का प्रदर्शन किया।
- **आंतरिक प्रेरणा (Internal Motivation):** इसमें काम करने के लिए पैसे या हैसियत जैसे बाहरी पुरस्कारों से परे अपने स्वयं के कारण खोजना शामिल है। इसमें जुनून, असफलताओं के प्रति सहनशीलता और दबाव में कामयाब होने की क्षमता शामिल है।
    - **उदाहरण:** जलवायु परिवर्तन से संबंधित कार्रवाई के लिए ग्रेटा थनबर्ग के अथक प्रयास पृथ्वी के लिए बेहतर भविष्य बनाने की उनकी आंतरिक प्रेरणा से उत्पन्न हुए हैं।
- **समानुभूति (Empathy):** इसमें स्वयं को किसी दूसरे की जगह रखकर देखना और उनकी भावनाओं, इच्छाओं, विचारों और कार्यों को समझना शामिल है। इसमें दूसरे व्यक्ति की भावनात्मक स्थिति और दृष्टिकोण का अनुमान लगाना, समझना और उस पर प्रतिक्रिया करना शामिल है।
    - **उदाहरण:** समानुभूति रखने वाले लोक सेवक ऐसी परिस्थितियों से निपट सकते हैं जहाँ जनजातीय रीति-रिवाज सरकारी नियमों से टकराते हैं, तथा ऐसे समाधान ढूंढ़ सकते हैं जो दोनों का सम्मान करते हों।
    - **उदाहरण:** नेल्सन मंडेला की समानुभूति के कारण उन्हें सभी लोगों में, यहाँ तक कि अपने शत्रुओं में भी, साझा मानवता देखने में मदद मिली।
- **सामाजिक कौशल (Social Skills):** यह रिश्तों को बनाने और प्रबंधित करने में आपकी दक्षता है। इसमें सहमति बनाना, तालमेल बनाना और अनुनय, सहनशीलता, व्यवहार कुशलता और अच्छी सामाजिक याददाश्त जैसे कौशल होना शामिल है।
    - **उदाहरण:** अलीगढ़ के SSP आकाश कुलहरि की सामाजिक कुशलता उस समय स्पष्ट हुई जब वे निहत्थे ही एक विरोध प्रदर्शन में चले गए और छात्रों के प्रदर्शन के अधिकार को मान्यता देते हुए शांति की अपील की।

भावनात्मक लब्धि (EQ) और बुद्धि लब्धि (IQ) में अंतर

- भावनात्मक लब्धि (EQ) किसी व्यक्ति की भावनात्मक बुद्धि की माप है, अर्थात् अपने संवेगों पर नजर रखने, दबावों और माँगों से निपटने, तथा अपने विचारों और कार्यों को नियंत्रित करने की क्षमता की माप है।
- बुद्धि लब्धि (IQ) अन्य लोगों की तुलना में किसी व्यक्ति की संज्ञानात्मक क्षमताओं का अनुमान है।
- IQ और EQ के बीच निम्नलिखित अंतरों पर विचार करें।

	बुद्धि लब्धि (IQ)	भावनात्मक लब्धि (EQ)
केंद्र बिंदु	तर्क शक्ति, समस्या समाधान और ज्ञान अवधारण जैसी संज्ञानात्मक क्षमताओं को मापती है। यह बौद्धिक कौशल पर ध्यान केंद्रित करती है	यह भावनात्मक बुद्धि को मापती है, जिसमें आत्म-बोध, समानुभूति, सामाजिक कौशल और भावनात्मक विनियमन शामिल है। यह भावनात्मक कौशल पर ध्यान केंद्रित करती है।

मूल्यांकन	आमतौर पर वस्तुनिष्ठ प्रश्नों द्वारा मानकीकृत परीक्षणों के माध्यम से मूल्यांकन किया जाता है।	इसका मूल्यांकन प्रायः आत्म-मूल्यांकन, अवलोकन और दूसरों से प्राप्त फीडबैक के माध्यम से किया जाता है, जिससे यह अधिक व्यक्तिपरक हो जाती है।
विकास	इसे जीवन भर अपेक्षाकृत स्थिर माना जाता है, हालाँकि कुछ लोग प्रशिक्षण के माध्यम से थोड़े सुधार की बात कहते हैं।	अधिक लचीली तथा आत्म-चिंतन और अभ्यास के माध्यम से काफी विकसित की जा सकती है और उसमें सुधार किया जा सकता है।
अनुप्रयोग	विज्ञान, गणित और विश्लेषणात्मक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।	नेतृत्व, संप्रेषण, टीमवर्क और सामाजिक स्थितियों से निपटने के लिए महत्त्वपूर्ण है।
उदाहरण - (डॉक्टर द्वारा कठिन निदान की जानकारी दिया जाना)	एक उच्च बुद्धि लब्धि **(IQ)** वाला डॉक्टर जटिल चिकित्सा पहलुओं को समझते हुए, किसी मरीज की गंभीर बीमारी का सटीक निदान करता है।	उच्च भावनात्मक लब्धि **(EQ)** वाला डॉक्टर संवेदनशीलता के साथ जानकारी देता है, रोगी की भावनात्मक स्थिति पर विचार करता है, तथा सहायता और संसाधन प्रदान करता है।

- इस प्रकार, बुद्धि लब्धि (IQ) की कल्पना एक इंजन के रूप में की जा सकती है जो एक वाहन को शक्ति प्रदान कर सकता है लेकिन भावनात्मक लब्धि (EQ) उस वाहन के स्टीयरिंग के रूप में कार्य करेगा जो बुद्धि लब्धि को दिशा देगा।
- इसलिए, सफलता के लिए सिर्फ़ बुद्धि लब्धि (IQ) ही काफी नहीं है। यह किसी व्यक्ति को सिर्फ़ नौकरी दिलवा सकती है, लेकिन नौकरी में सफल होने के लिए, उस व्यक्ति को दूसरों के साथ सहयोग और तालमेल बिठाने की ज़रूरत होती है, जहाँ भावनात्मक लब्धि (EQ) एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भावनात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति के गुण

उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) वाले व्यक्तियों के कुछ प्रमुख गुण इस प्रकार हैं:

- **मजबूत सत्यनिष्ठा (Strong Integrity):** उनका आत्म-बोध और अपने आस-पास के माहौल की समझ उनके व्यवहार में स्थिरता लाती है। वे प्रामाणिकता के साथ काम करते हैं, जिससे उनके अंतरमन और बाहरी कार्यों के बीच का अंतर कम हो जाता है।
  - **उदाहरण:** नेल्सन मंडेला ने जीवन भर नस्लीय समानता की वकालत की और अपनी अटूट सत्यनिष्ठा का परिचय दिया।
- **समानुभूति और समझ (Empathy and Understanding):** भावनात्मक रूप से बुद्धिमान लोग दूसरों के संवेगों और दृष्टिकोणों को समझ सकते हैं, जो समानुभूति का एक प्रमुख पहलू है और भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) के लिए महत्त्वपूर्ण है।
- **बेहतर संप्रेषण (Enhanced Communication):** आत्म-बोध, आत्म-नियमन और सामाजिक कौशल उनके आत्मविश्वास और सकारात्मकता में योगदान करते हैं। इससे प्रभावी संप्रेषण और दूसरों के साथ मजबूत संबंध बनाने में मदद मिलती है।
  - **उदाहरण:** बराक ओबामा के करिश्मे और भावनात्मक बुद्धि ने उन्हें विविध पृष्ठभूमि के लोगों से जुड़ने और जटिल विचारों को स्पष्ट रूप से संप्रेषित करने में सक्षम बनाया।
- **तनाव में कमी (Reduced Stress):** संवेगों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने की उनकी क्षमता उन्हें चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी शांत और संयमित रहने में मदद करती है, जिससे तनाव का स्तर कम हो जाता है।
  - **उदाहरण:** अपोलो 13 संकट के दौरान, मिशन कमांडर जिम लवेल अत्यधिक दबाव में भी शांत और संयमित रहे, तथा उन्होंने अपने चालक दल को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने के लिए अपनी भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) का प्रयोग किया।
- **रचनात्मक क्षमता (Creative Potential):** वे अपने संवेगों को रचनात्मक कार्यों में व्यक्त कर सकते हैं, जिससे रचनात्मकता को बढ़ावा मिलता है और नए विचारों का सृजन होता है।
  - **उदाहरण:** स्टीव जॉब्स की उपयोगकर्ता की जरूरतों को समझने और उन्हें आईपॉड और आईफोन जैसे क्रांतिकारी उत्पादों में उपयोग करने की क्षमता।

भावनात्मक बुद्धि का महत्त्व

व्यक्तिगत जीवन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) का महत्त्व

- **सुविचारित निर्णय (Informed Decisions):** भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) हमें तर्क और संवेगों को मिलाकर अच्छे निर्णय लेने में मदद करती है। सकारात्मक संवेग स्पष्ट सोच और अधिक रचनात्मक समाधान की ओर ले जा सकते हैं।
  - **उदाहरण:** छंटनी पर विचार कर रहा एक प्रबंधक कर्मचारियों पर पड़ने वाले भावनात्मक प्रभाव को पहचानता है और कम से कम लोगों को नौकरी से निकालने के लिए रचनात्मक समाधान खोजता है, इस प्रकार समानुभूति और जिम्मेदार निर्णय लेने का प्रदर्शन करता है।
- **व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देना (Unlocking Personal Growth):** भावनात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति अनुकूलनशील होते हैं और सकारात्मक परिवर्तन के लिए तैयार रहते हैं, जिससे व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा मिलता है और जीवन में बेहतर परिणाम प्राप्त होते हैं।
  - **उदाहरण:** वैवाहिक कठिनाइयों का सामना कर रहे एक दम्पति एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझने के लिए खुली बातचीत और समानुभूति का उपयोग करते हैं, जिससे अधिक मजबूत रिश्ता बनता है ।
- **भावनात्मक स्वास्थ्य (Emotional Wellbeing):** संवेगों को प्रबंधित करने से तनाव कम होता है तथा चिंता और अवसाद से बचाव होता है। भावनात्मक स्वास्थ्य आपको स्वस्थ तरीके से दबाव से निपटने में भी मदद करता है।
  - **उदाहरण:** शैक्षणिक दबाव का सामना कर रहा एक छात्र तनाव को प्रबंधित करने और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए व्यायाम और विश्राम तकनीकों जैसे स्वस्थ रक्षा तंत्र का उपयोग करता है।
- **आशावाद का विकास (Cultivating Optimism):** भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) हमें नकारात्मकता को नियंत्रित करने और आशावादी दृष्टिकोण बनाए रखने में मदद करती है, जिससे आशावाद और सहनशीलता बढ़ती है।

- **उदाहरण:** चोट के कारण असफलता का सामना कर रहा एक एथलीट, रिकवरी के दौरान सकारात्मक बने रहने के लिए अपनी आत्म-प्रेरणा और आशावाद का उपयोग करता है, तथा अपने दीर्घकालिक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करता है।

- **विवाद समाधान और सहयोग (Conflict Resolution and Collaboration):** भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) हमें कूटनीति और समानुभूति के साथ कठिन बातचीत और स्थितियों को संभालने में सक्षम बनाती है। आप प्रभावी संप्रेषण के माध्यम से मिलजुल कर समाधान निकाल सकते हैं।
  - **उदाहरण:** एक वार्ताकार सांस्कृतिक विभाजन को दूर करने और व्यापारिक सौदे में पारस्परिक रूप से लाभकारी समाधान खोजने के लिए मजबूत संप्रेषण कौशल और भावनात्मक बुद्धि का उपयोग करता है।

सिविल सेवाओं/प्रशासन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) का महत्त्व

"किसी काम में 80% सफलता भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) पर निर्भर करती है, जबकि केवल 20% सफलता बुद्धि लब्धि (IQ) पर निर्भर करती है"

- डैनियल गोलमैन

- **आत्म-नियंत्रण (Self-Control):** भावनात्मक रूप से बुद्धिमान सिविल सेवक आवेगपूर्ण निर्णयों से बचते हैं, रूढ़िवादिता पर भरोसा नहीं करते हैं, और अपने मूल्यों से समझौता नहीं करते हैं। वे नैतिक निर्णय लेना सुनिश्चित करने के लिए अपने संवेगों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** IAS अशोक खेमका का भ्रष्टाचार के खिलाफ अडिग रुख मूल्यों को कायम रखने में भावनात्मक नियंत्रण को दर्शाता है।
- **प्रभावी संप्रेषण (Effective Communication):** भावनात्मक रूप से बुद्धिमान सिविल सेवक सक्रिय रूप से दूसरों की बात सुनते हैं और स्पष्ट रूप से संवाद करते हैं। यह कौशल उन्हें बेहतर सार्वजनिक समझ के माध्यम से नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करने में मदद करता है।
  - **उदाहरण:** एक सिविल सेवक जनता की चिंताओं को दूर करने और पारदर्शी तरीके से सवालों के जवाब देने के लिए टाउन हॉल बैठकें आयोजित करता है।
- **बेहतर सहयोग (Improved Collaboration):** भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) सिविल सेवकों में जागरूकता और करुणा को बढ़ावा देती है, जिससे अधीनस्थों के साथ उनके संबंधों में अहंकार, गर्व या नकारात्मकता का प्रभाव कम हो जाता है।
  - **उदाहरण:** एक सिविल सेवक जो नियमित रूप से अपनी टीम के साथ संपर्क में रहता है, सहयोग प्रदान करता है, तथा सफलताओं का जश्न मनाता है, वह अधिक सहयोगात्मक और सकारात्मक कार्य वातावरण को बढ़ावा देता है।
- **सकारात्मक कार्य-वातावरण (Positive Work Environment):** भावनात्मक रूप से बुद्धिमान नेतृत्वकर्ता, कार्यस्थल पर सकारात्मक ऊर्जा लाते हैं जिससे सभी कर्मचारियों के लिए अधिक उत्पादक और सहयोगात्मक वातावरण बनता है।
- **वार्ता कौशल (Negotiation Skills):** भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) मजबूत वार्ता और विवाद समाधान कौशल को बढ़ावा देती है, जो असहमति को दूर करने और सहमति बनाने के लिए आवश्यक है - जो लोक सेवा का एक मुख्य कार्य है।
  - **उदाहरण** : एक राजनयिक जो तनावपूर्ण अंतरराष्ट्रीय स्थिति पर वार्ता कर रहा है, वह शांत, सम्मानजनक है, तथा आम सहमति बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।
- **360-डिग्री नेतृत्व (360-Degree Leadership):** उच्च भावनात्मक बुद्धि वाले सिविल सेवक सभी स्तरों पर मजबूत संबंध बनाने में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं:
  - **ऊर्ध्वगामी नेतृत्व (Upward Leadership):** वे वरिष्ठों के साथ विश्वास और सहयोग विकसित करते हैं।
  - **अधोमुखी नेतृत्व (Downward Leadership):** वे अपने अधीनस्थ टीमों के साथ सकारात्मक और सहायक संबंध विकसित करते हैं।
  - **क्षैतिज नेतृत्व (Horizontal Leadership):** वे विभिन्न विभागों के सहकर्मियों के साथ मजबूत संबंध बनाते हैं।
  - **बाह्य नेतृत्व (External Leadership):** वे सरकार से बाहर के हितधारकों, जिनमें गैर सरकारी संगठन, शिक्षाविद, मीडिया और नागरिक शामिल हैं, के साथ प्रभावी ढंग से जुड़ते हैं।

प्रशासन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) के विकास में चुनौतियाँ

- **अनामिकता और कम जवाबदेही (Anonymity and Reduced Accountability):** अनामिकता नौकरशाही की एक कथित ताकत है, जो जिम्मेदारी लेने की प्रेरणा को कम कर सकती है। यह पहल करने की कमी या उच्च अधिकारियों पर जिम्मेदारी डालने के रूप में प्रकट हो सकती है।
  - **उदाहरण:** कोई सरकारी अधिकारी अपने वरिष्ठ अधिकारी से अनुमति न मिलने का हवाला देकर किसी स्पष्ट रूप से निराश्रित व्यक्ति (जिसके पास दस्तावेज नहीं है) को सार्वजनिक वितरण प्रणाली का लाभ देने से इनकार कर सकता है।
- **कार्यभार और दबाव (Workload and Pressure):** नौकरशाही में अत्यधिक कार्यभार के कारण "किसी भी कीमत पर कार्य संपादित करने" की मानसिकता पैदा हो सकती है, जिससे नैतिक निर्णय लेने और भावनात्मक अनुक्रियाशीलता पर संभावित रूप से समझौता हो सकता है।
  - **उदाहरण:** एक पुलिस अधिकारी, कोटा पूरा करने के दबाव में या कम समय सीमा का सामना करते हुए, छोटे-मोटे अपराधों के लिए नागरिकों को अनावश्यक रूप से हिरासत में लेने या उनके साथ दुर्व्यवहार करने जैसे कठोर तरीकों का सहारा ले सकता है।
- **कौशल अंतराल - EI प्रशिक्षण की कमी (Skills Gap-Lack of EI Training) :** नौकरशाही प्रशिक्षण अक्सर तकनीकी कौशल पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करता है और भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) प्रशिक्षण की उपेक्षा करता है। इससे वे जिस जनता की सेवा करते हैं, उसके प्रति समानुभूति और समझ की कमी हो सकती है।
  - **उदाहरण:** एक वन रेंजर वन संसाधनों पर निर्भर स्थानीय समुदायों की आजीविका की जरूरतों को समझने की अपेक्षा नियमों को लागू करने को प्राथमिकता दे सकता है, जिससे अनावश्यक तनाव पैदा हो सकता है।
- **प्रौद्योगिकी और मानवीय भावना (Technology and the Human Touch):** यद्यपि प्रौद्योगिकी प्रशासन को सुव्यवस्थित कर सकती है, लेकिन भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) में इसकी सीमाएँ जनता के साथ वास्तविक संबंध में बाधा उत्पन्न कर सकती हैं।

- **सांस्कृतिक बेमेल (Cultural Disconnect) :** नौकरशाही और जनता के बीच सांस्कृतिक अंतराल समानुभूति और समझ में बाधा डाल सकता है। इससे दोनों पक्षों में संप्रेषण संबंधी बाधाएँ और निराशा पैदा होती है।
  - **उदाहरण:** शहरी परिवेश में पले-बढ़े एक नौकरशाह को ग्रामीण समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने में कठिनाई हो सकती है, जिसके परिणामस्वरूप असंवेदनशील नीतियाँ बन सकती हैं या उनकी आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता में कमी देखी जा सकती है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) कैसे विकसित करें?

व्यक्तिगत जीवन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) का विकास

- **आत्म-नियंत्रण का अभ्यास करना (Practising Self-Control):** हम अपने संवेगों को नियंत्रित करके तीव्र भावनाओं से प्रेरित होकर आवेगपूर्ण निर्णय लेने और नकारात्मक कार्यों से बच सकते हैं।
  - **उदाहरण** : क्रोध आने पर गहरी सांस लेना और प्रतिक्रिया देने से पहले बड़े परिदृश्य पर विचार करना।
- **फीडबैक को स्वीकार करना (Embracing Feedback):** आलोचना के प्रति तैयार रहना। इससे धैर्य, सहनशीलता और सामाजिक कौशल विकसित होते हैं, जिससे व्यक्ति दबाव में भी शांत रह सकता है।
  - **उदाहरण:** जैसे कि गांधीजी, जो चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी आलोचना के प्रति तैयार रहते हुए शांत बने रहे।
- **आत्म-चिंतन (Self-Reflection):** स्वयं के बारे में गहरी समझ हासिल करने के लिए विभिन्न स्थितियों में अपने संवेगों और प्रतिक्रियाओं का नियमित मूल्यांकन करना।
  - **उदाहरण:** अत्यधिक क्रोध का विश्लेषण करके उसमें सम्मिलित संवेगों और प्रतिक्रियाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
- **परिणामों पर विचार करना (Considering Consequences):** इस बारे में सोचना कि किसी के कार्यों का दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ता है। इससे व्यक्ति को बेहतर परिणामों के लिए अपने व्यवहार को बेहतर बनाने में मदद मिलती है।
  - **उदाहरण:** कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान, लोगों को प्रवासी श्रमिकों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को ध्यान में रखते हुए उन्हें सहायता प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया गया था।
- **ज्ञान का विस्तार करना (Expanding Horizons):** साहित्य और विविध स्रोतों के माध्यम से नए विचारों से जुड़ना। इससे ज्ञान का विस्तार होता है तथा समानुभूति और सामाजिक कौशल में वृद्धि होती है।
  - **उदाहरण:** IAS परिवीक्षाधीन अधिकारी भारतीय संस्कृति और विभिन्न सामाजिक पहलुओं के बारे में समझ बढ़ाने के लिए "भारत दर्शन" में भाग लेते हैं।

सिविल सेवकों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) का विकास

- **आत्म-बोध प्रशिक्षण (Self-Awareness Training):** कार्यशालाओं से सिविल सेवकों को अपने संवेगों को पहचानने, उनके कारणों को समझने तथा अपनी प्रतिक्रियाओं को नैतिक रूप से प्रबंधित करने में मदद मिल सकती है।
  - **उदाहरण:** किसी माँग करने वाले नागरिक की निराशा को पहचानकर अधिक धैर्यपूर्ण और पेशेवर प्रतिक्रिया दी सकती है।
- **समानुभूति पैदा करने का अभ्यास (Empathy Building Exercises):** भूमिका-निर्वाह परिदृश्यों से नागरिकों की चिंताओं के प्रति समानुभूति विकसित हो सकती है, तथा बेहतर समझ और संप्रेषण को बढ़ावा मिल सकता है।
  - **उदाहरण:** एक निराश किसान के साथ बैठक का अनुकरण करने से सिविल सेवकों को स्थिति को किसान के दृष्टिकोण से देखने में मदद मिलती है।
- **नैतिक निर्णय लेने की रूपरेखा (Ethical Decision-Making Frameworks):** उपयोगितावाद या अधिकार-आधारित नैतिकता जैसी रूपरेखाओं में प्रशिक्षण सिविल सेवकों को संवेगों और वस्तुनिष्ठ सिद्धांतों के बीच संतुलन करने में सक्षम बनाता है।
  - **उदाहरण:** भूमि विवाद में शामिल सभी पक्षों की आवश्यकताओं को समझने से अधिक संतुलित और नैतिक समाधान संभव हो पाता है।
- **सचेतता और तनाव प्रबंधन तकनीक (Mindfulness and Stress Management Techniques):** सचेत रहने का अभ्यास सिविल सेवकों को तनाव प्रबंधन में मदद कर सकता है, जिससे अधिक संयमित और नैतिक व्यवहार को बढ़ावा मिलता है।
  - **उदाहरण:** सार्वजनिक सुनवाई से पहले गहरी साँस लेने के व्यायाम से सिविल सेवकों को तनाव का प्रबंधन करने और वस्तुनिष्ठ बने रहने में मदद मिलती है।
- **मार्गदर्शन और सहकर्मी सहायता (Mentorship and Peer Support):** मार्गदर्शन कार्यक्रम और सहकर्मी सहायता समूह सिविल सेवकों को भावनात्मक चुनौतियों पर चर्चा करने और नैतिक मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान कर सकते हैं।
  - **उदाहरण:** किसी मार्गदर्शक के साथ अनुभव साझा करने से किसी नए सिविल सेवक को किसी नागरिक के साथ जटिल भावनात्मक स्थिति से निपटने में मदद मिल सकती है।
- **भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) का मूल्यांकन (Emotional Intelligence Assessments):** आवधिक मूल्यांकन भावनात्मक शक्तियों और कमजोरियों के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है, तथा विकास के लक्षित प्रयासों में मार्गदर्शन कर सकता है।
  - **उदाहरण:** सार्वजनिक रूप से बोलने में कठिनाई महसूस करने वाले किसी सिविल सेवक की पहचान करके ऐसी परिस्थितियों में भावनात्मक नियंत्रण में सुधार के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

सरकारें इन नैतिक उपायों को लागू करके सिविल सेवकों को जटिल परिस्थितियों से निपटने, सही निर्णय लेने और निष्पक्षता, समानुभूति और सम्मान के साथ जनता की सेवा करने के लिए आवश्यक भावनात्मक बुद्धि का विकास कर सकती हैं। इससे जनता का विश्वास मजबूत होता है और एक अधिक न्यायपूर्ण एवं नैतिक समाज का निर्माण होता है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) से जुड़ी समस्याएं

- **भावनात्मक हेरफेर (Emotional Manipulation) :** उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) का उपयोग व्यक्तिगत लाभ के लिए दूसरों की भावनाओं में हेरफेर करने के लिए किया जा सकता है।
  - उदाहरण के लिए, एक विक्रेता किसी व्यक्ति पर खरीदारी के लिए दबाव डालने के लिए चापलूसी या अपराधबोध का प्रयोग कर सकता है।

- **अप्रामाणिकता (Inauthenticity):** भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) के केवल बाहरी प्रदर्शन पर ध्यान केंद्रित करने से अप्रामाणिक परस्पर व्यवहार देखने को मिल सकता है।
  - उदाहरण के लिए, ऐसा लग सकता है कि कोई व्यक्ति समानुभूति रखता है, लेकिन वह वास्तव में दूसरे की भावनाओं की परवाह नहीं करता।
- **भावनात्मक श्रम का बोझ (Emotional Labor Burden) :** उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) की आवश्यकता वाली नौकरियाँ भावनात्मक रूप से थका देने वाली हो सकती हैं, जिससे अत्यधिक थकावट हो सकती है।
  - उदाहरण के लिए, ग्राहक सेवा प्रतिनिधि ग्राहकों को खुश करने के लिए लगातार अपने संवेगों को नियंत्रित करते रहते हैं।
- **संवेगों का हथियार के रूप में उपयोग करना (Emotional Weaponization):** संवेगों को पहचानने में कुशल लोग दूसरों को डराने या नियंत्रित करने के लिए इस क्षमता का फायदा उठा सकते हैं।
  - उदाहरण के लिए, एक धमकाने वाला व्यक्ति अपने पीड़ित की कमजोरियों को पहचानने और उनका फायदा उठाने के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) का उपयोग कर सकता है।
- **बुद्धिमत्ता के अन्य रूपों को महत्त्व न देना (Devaluing Other Forms of Intelligence) :** भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) पर अत्यधिक जोर तर्क शक्ति, विश्लेषणात्मक कौशल और तकनीकी ज्ञान के महत्त्व को कम कर सकता है।
  - **सीमित दायरा:** भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) मुख्य रूप से पारस्परिक व्यवहार पर केंद्रित होती है, तथा व्यक्ति के भावनात्मक स्वास्थ्य की उपेक्षा करती है।

	उच्च भावनात्मक लब्धि (High EQ)	निम्न भावनात्मक लब्धि (Low EQ)
अभिभाषण	उच्च भावनात्मक लब्धि वाला व्यक्ति खुले संप्रेषण के लिए एक सुरक्षित माहौल बनाता है, तथा सामूहिक सोच को रोकता है (सभी लोग विकल्पों पर विचार किए बिना एक ही विचार का अनुसरण करते हैं)।	निम्न भावनात्मक लब्धि वाला व्यक्ति आवश्यक होने पर भी बोलने या अपनी बात कहने से बचता है।
अभिप्रेरण	दूसरों की प्रेरणाओं को समझता है और उन्हें उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।	आसानी से तनावग्रस्त हो जाता है, अपने तनाव से दूसरों को प्रभावित करता है।
विवाद समाधान	विवादों को प्रभावी ढंग से सुलझाता है, नाटक नहीं करता है और तनाव को बढ़ने से रोकता है।	द्वेष रखता है और गलत समझा गया महसूस करता है, जिससे समाधान में बाधा आती है।
अवसरों की पहचान करना	संभावित और नए अवसरों के प्रति पैनी नजर रखता है।	दूसरों के विचारों को सुने बिना ही रक्षात्मक हो जाता है और बहस करने लगता है।

सामाजिक बुद्धिमत्ता (SOCIAL INTELLIGENCE)

" सामाजिक बुद्धि लोगों को समझने और मानवीय संबंधों में बुद्धिमानी से कार्य करने की क्षमता है। " **- एडवर्ड थोर्नडाइक**

- सामाजिक बुद्धिमत्ता (SI) किसी व्यक्ति की वह क्षमता है, जिसके द्वारा वह अन्य लोगों के संवेगों को समझ सकता है तथा सूक्ष्म व्यवहारिक संकेतों को पढ़कर किसी परिस्थिति में सबसे प्रभावी प्रतिक्रिया चुन सकता है।
- इसका तात्पर्य **सामाजिक अंत:क्रियाओं को प्रभावी ढंग से समझने और संचालित करने की क्षमता** से है।
  - उदाहरण के लिए, **एक सोशल मीडिया इन्फ़्लुएंसर ऑनलाइन बदमाशी की नकारात्मक प्रवृत्ति को नोटिस करता है।** वह इसके प्रभाव को समझने के लिए सामाजिक जागरूकता का उपयोग करता है और अपनी सामग्री में इस मुद्दे को संबोधित करने की कोशिश करता है, इससे ऑनलाइन अंतःक्रियाओं में समानुभूति और दयालुता को बढ़ावा मिलता है।

सामाजिक बुद्धिमत्ता (SI) के प्रमुख तत्त्व

- **सामाजिक जागरूकता (Social Awareness):** समूह के भीतर सामाजिक संकेतों, संवेगों के प्रति संवेदनशील होने और समूह के भीतर के संबंधों को समझने से बेहतर परस्पर व्यवहार और समूह प्रक्रियाओं की समझ विकसित होती है।
  - **उदाहरण:** एक सामाजिक रूप से जागरूक व्यक्ति सहकर्मियों के बीच तनाव को भांप सकता है और शांतिपूर्ण समाधान के लिए मध्यस्थता का प्रयास कर सकता है।
- **सामाजिक गतिकी को समझना (Understanding Social Dynamics):** सामाजिक बुद्धिमत्ता (SI) में समाज के भीतर सामाजिक भूमिकाओं, नियमों और अलिखित मानदंडों को समझना और प्रभावी ढंग से उनका पालन करना शामिल है।
  - **उदाहरण:** स्वतंत्रता से पहले भारत में महिलाओं से रखी गई सामाजिक अपेक्षाओं को समझते हुए, गांधीजी ने उन्हें सशक्त बनाने और स्वतंत्रता संग्राम में शामिल करने के लिए रणनीति तैयार की।
- **संप्रेषण और वार्तालाप (Communication and Conversation):** सामाजिक रूप से बुद्धिमान लोग विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के साथ स्पष्ट और आकर्षक बातचीत करने में माहिर होते हैं। उनमें चातुर्य होता है और वे विभिन्न स्थितियों में उपयुक्त भाषा का चयन करते हैं।
  - **उदाहरण:** स्वामी विवेकानंद का शिकागो में दिया गया भाषण उनकी सामाजिक बुद्धिमत्ता (SI) और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को दर्शाता है जिसमें उन्होंने श्रोताओं को "अमेरिका के बहनों और भाइयों" कहकर संबोधित किया।
- **विवाद समाधान:** प्रभावी सामाजिक बुद्धिमत्ता (SI) में विवाद को रचनात्मक रूप से हल करने की क्षमता शामिल है। सामाजिक रूप से कुशल व्यक्ति असहमति में मध्यस्थता कर सकते हैं और ऐसे समाधान खोज सकते हैं जो सभी की चिंताओं को संबोधित करते हैं।
  - **उदाहरण:** एक टीम लीडर जो खुली बातचीत को सुगम बनाता है और समझौते को प्रोत्साहित करता है, वह विवाद समाधान का कौशल प्रदर्शित करता है।

- **भावनात्मक विनियमन:** सामाजिक परिस्थितियों में अपने संवेगों को प्रबंधित करना सामाजिक बुद्धिमत्ता (SI) के लिए महत्त्वपूर्ण है। इससे स्पष्ट बातचीत संभव होती है और उन भावनात्मक आवेगों को रोका जा सकता है जो रिश्तों को नुकसान पहुँचा सकते हैं।
  - **उदाहरण:** जो व्यक्ति तीखी बहस के दौरान शांत रहता है और अपने विचारों को तर्कसंगत ढंग से व्यक्त करता है, वह भावनात्मक नियंत्रण प्रदर्शित करता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार, भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) पारस्परिक और सामाजिक संबंधों में व्यक्ति के लिए सकारात्मक परिणामों को बढ़ावा देती है। यह संबंधों को मजबूत करती है, समानुभूति को बढ़ावा देती है और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाती है। यह सिविल सेवकों के लिए एक अधिक जुड़ी हुई और नैतिक दुनिया के निर्माण के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करती है।

प्रमुख शब्दावलियाँ

व्यक्तिपरक अनुभव, शारीरिक अनामिता, व्यवहारिक अनुक्रिया, बुद्धिमत्ता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, संवेगों के साथ तर्क, आत्म-बोध, आत्म-नियमन, समानुभूति, सामाजिक कौशल, विवाद समाधान, भूमिका स्पष्टता, उच्च आत्म सम्मान, अनुकूलनशीलता, मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य, सांस्कृतिक अंतराल, आत्म-मूल्यांकन, विघटनकारी संवेगों का प्रबंधन, अनुभवजन्य शिक्षा, अधिगम हस्तांतरण, सामाजिक बुद्धिमत्ता, पेशेवर बुद्धिमत्ता, बुद्धि लब्धि।

विगत वर्षों के प्रश्न

- "सफलता, चरित्र, खुशी और जीवन-भर की उपलब्धियों के लिए वास्तव में जो मायने रखता है, वह निश्चित रूप से भावनात्मक कौशलों का एक समूह है - आपका ई. क्यू. - न कि विशुद्ध रूप से संज्ञानात्मक क्षमताएँ जो पारंपरिक आई. क्यू. परीक्षणों से मापी जाती है।" क्या आप इस मत से सहमत हैं? अपने उत्तर के समर्थन में तर्क दीजिए। **(2023)**
- उस नैतिकता अथवा नैतिक आदर्श, जिसको आप अंगीकार करते है, से समझौता किए बिना क्या भावात्मक बुद्धि अंतरात्मा के संकट की स्थिति से उबरने में सहायता करती है? आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। **(2021)**
- भावनात्मक बुद्धि के मुख्य घटक क्या हैं? क्या उन्हे सीखा जा सकता है? विवेचना कीजिए। **(2020)**
- भावनात्मक बुद्धि आपके अपने संवेदों से आपके विरूद्ध कार्य करने के बजाय आपके लिए कार्य करवाने का सामर्थ्य है। क्या आप इस विचार से सहमत हैं? विवेचना कीजिए। **(2019)**
- प्रशासनिक पद्धतियों में भावनात्मक बुद्धि का आप किस तरह प्रयोग करेंगे? **(2017)**
- क्रोध एक हानिकारक नकारात्मक संवेग है। यह व्यक्तिगत जीवन एवं कार्य जीवन दोनों के लिए हानिकर है।
  - चर्चा कीजिए कि यह किस प्रकार नकारात्मक संवेगों और अवांछनीय व्यवहारों को पैदा कर देता है।
  - इसे कैसे व्यवस्थित एवं नियंत्रित किया जा सकता हैं? **(2016)**
- "केवल कानून का अनुपालन ही काफी नहीं है, लोक सेवक में, अपने कर्तव्यों के प्रभावी पालन करने के लिए, नैतिक मुद्दों पर एक सुविकसित संवेदन-शक्ति का होना भी आवश्यक है।" क्या आप सहमत हैं? दो उदाहरणों की सहायता से स्पष्ट कीजिए,

  (i) जहाँ कृत्य नैतिकतः सही है, परंतु वैध रूप से नहीं है तथा

  (ii) कृत्य वैध रूप से सही है, परंतु नैतिकतः सही नहीं है। **(2015)**
- 'भावात्मक प्रज्ञता' क्या होता है और यह लोगों में किस प्रकार विकसित किया जा सकता है? किसी व्यक्ति विशेष को नैतिक निर्णय लेने में यह कैसे सहायक होता है? **(2013)**

8 विश्व के नैतिक विचारक और दार्शनिक

परिचय

फिलॉसफी शब्द ग्रीक शब्द "**फिलोसोफिया**" से लिया गया है जिसका अर्थ है **ज्ञान के प्रति प्रेम**। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जो प्रकृति और जिस समाज में वह रहता है उसमें कारण-कार्य संबंधों को समझना चाहता है। जो व्यक्ति अपनी जिज्ञासा के माध्यम से **ज्ञान की खोज करता है उसे दार्शनिक कहा जाता है**।

पाश्चात्य दर्शन और पाश्चात्य विचारक

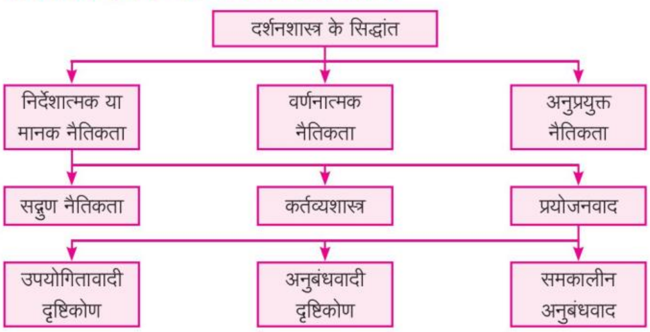

नैतिकता के संदर्भ में पाश्चात्य दर्शन एवं विचारकों का वर्गीकरण

निर्देशात्मक/मानकीय नैतिकता (Normative Ethics)

- **निर्देशात्मक सिद्धांत: इसमें नैतिक मानकों** का निर्धारण शामिल है जो **सही** और **गलत आचरण को नियंत्रित करते हैं**। एक तरह से, यह **उचित व्यवहार के आदर्श लिटमस टेस्ट की खोज है।**
- **निर्देशात्मक मानक:** यह मानवीय कृत्यों को नैतिक मानने के लिए निर्देशात्मक मानक निर्धारित करता है। इनका समर्थन यूनानी दार्शनिकों ने किया है और उनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण शाखाएँ निम्नलिखित हैं:

सद्गुण नैतिकता (Virtue Ethics)

- ये ऐसे सिद्धांत हैं जो **चारित्रिक गुणों, मन और ईमानदारी की भावना पर ध्यान केंद्रित करते हैं**। इनका समर्थन मुख्य रूप से **सुकरात, अरस्तू और प्लेटो ने किया था।**
- **सद्गुण नैतिकता विश्लेषणात्मक महत्त्व को नियम-आधारित निर्णय लेने (कर्तव्यवादी नैतिकता) से दूर ले जाती है** या किसी कार्रवाई के परिणामों (जैसे उपयोगितावाद में) से **व्यक्तियों की नैतिकता** और **मानव चरित्र की नैतिकता की ओर ले जाती है।**
  - **उदाहरण**- एक प्रयोजनवादी (Teleologist) का तर्क होगा कि दान देने से समाज में अधिकतम कल्याण होता है, और एक कर्तव्यवादी (deontologist) का तर्क होगा कि दूसरों की मदद करना हमारा कर्तव्य है, जबकि एक **सदगुण नैतिकतावादी इस तथ्य की ओर संकेत करेगा कि दूसरों की मदद करना वांछनीय सद्गुणों को प्रदर्शित करता है, जैसे कि दानशील या परोपकारी होना।**
- सद्गुण नैतिकता, कर्तव्य आधारित नैतिकता की तुलना में किसी कार्य के लिए बेहतर प्रेरणा प्रदान करती है।
- केवल कर्तव्य की भावना से किसी का जीवन बचाने में करुणा और दयालुता जैसी **बेहतर अभिप्रेरणा का अभाव दिखता है**, जिसकी उम्मीद केवल उसी व्यक्ति से की जा सकती है जिसने अपने अंदर इन गुणों को विकसित किया है।
- यह भी ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि कर्तव्य-आधारित नैतिकता किसी न किसी तरह से नैतिक जीवन के कुछ आवश्यक पहलुओं की उपेक्षा करती है, जैसे कि एक अच्छा व्यक्ति बनकर सद्गुणी जीवन जीने पर जोर देना।

मुद्दे

- **नैतिक सिद्धांतों और नैतिकता का अभाव:** इसमें नैतिक सिद्धांतों का अभाव है और विशिष्ट सिद्धांतों के बिना नैतिकता हमें किसी कार्य का नैतिक विकल्प चुनने में मार्गदर्शन नहीं कर सकती है। **उदाहरण** - जब कोई व्यक्ति पैसे चुराता है, तो उस व्यक्ति के साथ नैतिक रूप से सही व्यवहार क्या होगा?
- **नैतिक रूप से सही कार्य निर्धारित करने में कठिनाई:** सद्गुण नैतिकता में नैतिक निर्णय की कमी होती है। एक व्यक्ति सद्गुणी हो सकता है लेकिन फिर भी वह सही कार्य और गलत कार्य में अंतर करने में सक्षम नहीं हो सकता है, खासकर यदि वह किसी विशेष क्षेत्र का जानकार नहीं है। **उदाहरण** - एक **सद्गुणी व्यक्ति होने के बावजूद**, सारा की वित्तीय क्षेत्र में **विशेषज्ञता की कमी के कारण उसने निवेश के संबंध में खराब निर्णय लिए**, जिससे सद्गुण नैतिकता में ज्ञान और नैतिक निर्णय के महत्त्व का पता चलता है।
- **सद्गुण नैतिकता में नैतिक निर्णय का अभाव:** ऐसी स्थितियाँ हो सकती हैं जिनमें सद्गुणों का एक दूसरे के साथ द्वन्द्व हो सकता है। **उदाहरण** - यदि किसी व्यक्ति के सामने यह दुविधा आती है कि उसके मित्र पर मुकदमा चलाया जा रहा है और वह इसका गवाह है।

सुकरात

- सुकरात का जन्म **470 ईसा पूर्व में एथेंस में हुआ था** और वे उस समय की प्रमुख हस्तियों और अधिकारियों के साथ अपने संवादों और वाद -विवादों के लिए लोकप्रिय हैं। इस तकनीक को **सुकराती पद्धति** (द्वंद्वात्मक पद्धति / **डायलेक्टिक्स) कहा जाता है।**

सुकरात का दर्शन (Socrates Philosophy):

- **जाँच और अन्वेषण (Scrutiny and Exploration): सुकरात के** शब्दों में, **"एक अपरीक्षित जीवन जीने लायक नहीं है, व्यक्ति को तथ्यों पर सवाल उठाना चाहिए, उन्हें स्वीकार करना चाहिए और अस्वीकार करना चाहिए।"** इस सिद्धांत के द्वारा, उन्होंने एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का निर्माण किया जिसने यूरोप में वैज्ञानिक क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया।
  - **उदाहरण - सोशल मैसेजिंग साइट्स के ज़रिए फ़र्जी संदेशों के हालिया चलन से** अक्सर भारत में समुदायों के बीच टकराव पैदा होता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि तथ्यों की जाँच नहीं की जाती।
- **साहस (Courage):** यह **अपने मन की बात कहने की स्वतंत्रता, सच बोलने की क्षमता** और निष्पक्षता **को दर्शाता है।**
  - **उदाहरण** - दुनिया के अधिकांश देश **चीनी आक्रामकता में विश्वास करते हैं, लेकिन वे चीन पर वित्तीय निर्भरता** के कारण बोलने में विफल रहते हैं ।
- **प्रसन्नता की नैतिकता (Ethics of Happiness):** सुकरात के अनुसार, **ज्ञान एकमात्र सद्गुण है** और **अज्ञानता एकमात्र पाप है**। उन्होंने ज्ञान को महत्त्व दिया जो नैतिक जीवन की ओर ले जा सकता है।
  - **उदाहरण –वी.जी. सिद्धार्थ (कैफे कॉफी डे के मालिक)** की मृत्यु से पता चलता है कि प्रसन्नता का स्रोत पैसा नहीं है बल्कि सच्चा ज्ञान है।
- **परस्पर विरोधी वचन (Conflicting Promise):** परस्पर विरोधी वचनों के मामले में व्यक्ति को ऐसे वचन का पालन करना चाहिए जिसका नैतिक मूल्य अधिक हो।
  - **उदाहरण** - भारत द्वारा 2018-20 के बजट में दोहरे अंकों की वृद्धि का वादा किया था और भारत के संविधान में भी सामाजिक प्रकृति का वादा किया गया। परन्तु महामारी के दौरान सरकार ने अपने आर्थिक लक्ष्यों से अधिक लोगों के कल्याण को प्राथमिकता दी।
- **आदर्श जीवन (Ideal Life): एक आदर्श व्यक्ति को आत्म-विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, विशेष रूप से अच्छाई, सद्गुण, न्याय, सत्यनिष्ठा और मित्रता** के प्रयास पर। **प्रेम, मित्रता, साहस, सत्य** जैसे सदगुणों को महत्त्व देने से व्यक्ति अपने आदर्श मूल्यों के कारण दूसरों की तुलना में कहीं अधिक आगे तक जाता है।
  - **उदाहरण** - दयालुता, ईमानदारी और सत्यनिष्ठा जैसे गुणों को विकसित करने के प्रति सारा की प्रतिबद्धता उसे सार्थक रिश्तों और व्यक्तिगत विकास से भरा एक पूर्ण जीवन जीने की ओर ले जाती है।
- **व्यक्तिगत स्तर (Individual-level):** सच्चा ज्ञान नैतिक जीवन का आधार है इसलिए व्यक्ति को अंधविश्वास, सामंती मानसिकता, फर्जी समाचार और गलत सूचना से दूर रहना चाहिए।
  - **उदाहरण- खतना** जैसी प्रथाएँ और **धार्मिक समूहों द्वारा कोरोना वायरस फैलाए जाने के बारे में फर्जी खबरें** नैतिक जीवन की दिशा में हमारी यात्रा में बाधा डालती हैं।
- **सामाजिक स्तर (Societal Level):** सुकरात का दर्शन **समालोचनात्मक चिंतन** और **सामाजिक मानदंडों पर सवाल उठाने को प्रोत्साहित करता है** और समाज की बेहतरी के लिए बौद्धिक विमर्श को बढ़ावा देता है।
  - **उदाहरण- महात्मा गांधी के सिद्धांत,** जैसे **अहिंसक प्रतिरोध** और **अन्यायपूर्ण सत्ता पर सवाल उठाना,** भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक मार्गदर्शक शक्ति बन गए।
- **शासन स्तर (Governance Level):** सुकरात का दर्शन पूरे समाज के लाभ के लिए शासन में **बुद्धिमत्ता**, **आत्म-परीक्षण** और **नैतिक अखंडता के महत्त्व पर जोर देता है।**
  - **उदाहरण** - जब हमारी सरकार **राजकोषीय उत्तरदायित्व की** तुलना में मुफ्त भोजन की **पीएम-गरीब कल्याण योजना का पक्ष लेती है**, तो वह नैतिक रूप से उच्च वादे को महत्त्व देती है।

प्लेटो

वह एक यूनानी दार्शनिक और सुकरात के शिष्य तथा अरस्तू के शिक्षक थे।

प्लेटो का दर्शन:

- **स्वयं का न्याय (Justice of Self):** प्रत्येक मनुष्य में नीचे वर्णित **तीन घटक होते हैं** और उन्हें अन्य घटकों की अपेक्षा ज्ञान को प्राथमिकता देनी चाहिए।
  - **क्षुधा**: सहज आवश्यकताओं के आधार पर कार्य करना। ये सहज आवश्यकताएँ हैं भोजन, नींद, वस्त्र आदि।
  - **आत्मा**: अपने सम्मान के अनुसार कार्य करना।
  - **ज्ञान (विवेक)**: समालोचनात्मक चिंतन की शक्ति के आधार पर कार्य करना।
- **समाज का न्याय (Justice of Society):** प्रत्येक समाज को कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए, समाज के प्रत्येक घटक को अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। जैसे:
  - **कारीगर**: वस्तुएँ और सेवाएँ प्रदान करता है।
  - **सैनिक**: समाज की रक्षा करता है।
  - **संरक्षक**: समाज के शासक
- **प्लेटो की कृति 'रिपब्लिक':** यह उन **दार्शनिकों** और उनकी संतानों द्वारा शासित एक आदर्श राज्य (Utopia) था, जिन्होंने वंशानुगत रूप से शासन किया था। गणतंत्र **के पास न तो निजी संपत्ति थी और न ही निजी परिवार**। बच्चों का पालन-पोषण समुदाय और संस्कृति द्वारा किया गया और एथलेटिक्स सिखाया गया। साहित्य, नाटक और संगीत पर सख्त सेंसरशिप थी।
- **सामंजस्यपूर्ण कार्यप्रणाली** : अंश को पूर्णता के लिए काम करना चाहिए और पूर्णता को अंशों को लाभ पहुँचाना चाहिए (Part should work for the whole and whole must benefit the parts)।

अरस्तू

वह एक यूनानी दार्शनिक और **प्लेटो के शिष्य भी थे** ।

अरस्तू का दर्शन:

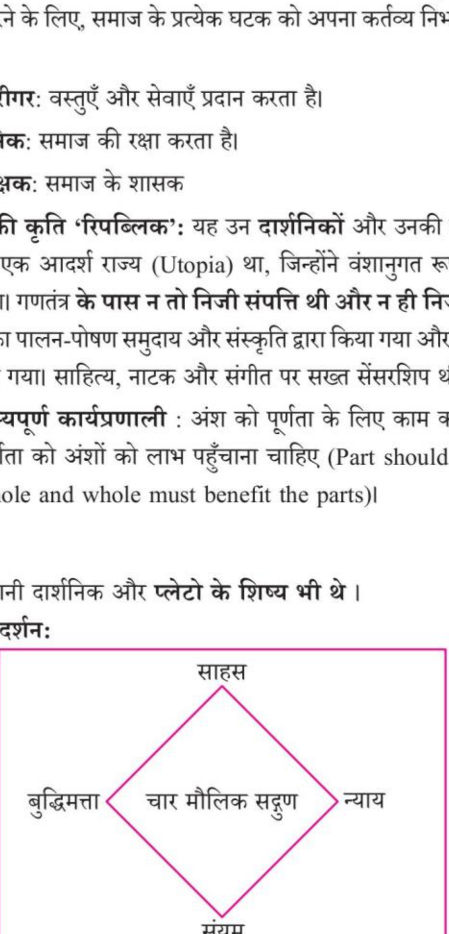

- **यूडेमोनिया (Eudemonia):** इसका अर्थ है खुशी। यूडेमोनिया का अर्थ है हर तरह से अपने लिए सर्वोत्तम संभव परिस्थितियाँ प्राप्त करना - **न केवल खुशी, बल्कि सद्गुण, नैतिकता और सार्थक जीवन भी।**
  - **उदाहरण** - यदि आप माता-पिता हैं, तो आपको अपने बच्चों के पालन-पोषण में निपुण होना चाहिए; यदि आप डॉक्टर हैं, तो आपको लोगों के इलाज में निपुण होना चाहिए और यदि आप सिविल सेवक हैं, तो आपको समाज के कल्याण के लिए काम करना चाहिए।
- **नैतिक प्राणी (Ethical Being): उन्होंने सिगमंड फ्रायड और यहाँ तक कि कौटिल्य** के विचारों के विपरीत मनुष्य को **सामाजिक, और राजनीतिक के साथ ही नैतिक प्राणी के रूप में भी** माना।
  - **उदाहरण-** हमें चरित्र निर्माण पर ध्यान देना चाहिए, जैसा कि प्रधानमंत्री ने हाल ही में सिविल सेवा दिवस पर कहा था, " **शीलम् परम भूषणम्** " **(चरित्र सर्वोच्च गुण है)।**
- **स्वर्णिम माध्य का सिद्धांत (The Doctrine of GOLDEN Mean): प्रत्येक नैतिक सद्गुण दो अतिवादी दृष्टिकोणों के बीच की अवस्था है।** उन्होंने कायरता और निष्क्रियता जैसे अतिवादी दृष्टिकोणों से बचने और स्वर्णिम मध्य मार्ग के रूप में 'साहस' को चुनने पर जोर दिया।
  - **उदाहरण** - हमें अपनी बात को मनवाने के लिए संविधान के विरुद्ध जाकर उग्र विरोध प्रदर्शन नहीं करना चाहिए और दूसरी ओर शोषण की स्थिति में चुप भी नहीं रहना चाहिए। **कानूनी संवैधानिक लड़ाई** एक अनुकूल **मध्य मार्ग है** ।
- **सद्गुण पर जोर:** चरित्र ही नैतिकता निर्धारित करता है, न कि कार्य, उद्देश्य और परिणाम। वास्तविक त्रुटियों में लोगों को आम तौर पर उनके सच्चे इरादे के कारण माफ कर दिया जाता है और इस प्रकार कार्य नैतिक हो जाता है।

कर्तव्यशास्त्र (Dentology)

कर्तव्यशास्त्र का मूल आधार बताता है कि **हम परिणामों की परवाह किए बिना कतिपय नियमों, सिद्धांतों और मूल्यों के अनुसार कार्य करने के लिए बाध्य हैं।** यह साध्य की बजाय साधन पर जोर देता है। कांट वह दार्शनिक हैं जिन्होंने कर्तव्यशास्त्र का समर्थन किया।

इमैनुएल कांट

कांट का दर्शन:

- **नैतिक तर्कवाद (Moral Rationalism):** नैतिक तर्कवाद ने आचरण की नैतिकता को मापने के लिए साध्य (उद्देश्यों) को बैरोमीटर के रूप में मानने के दृष्टिकोण को खारिज कर दिया। उनके अनुसार, **प्रयोजनों से प्रेरित कार्य ही** किसी भी आचरण को नैतिक बनाते हैं। अर्थात् सद्भावना (Goodwill) नैतिक आचरण के लिए एकमात्र योग्यता है।
  - **उदाहरण- उच्चतम न्यायालय ने भारतीय दंड संहिता की धारा 144** के मामले में इसके महत्त्व को बरकरार रखा, हालाँकि इसे सार्वभौमिक मूल्यों के विरुद्ध माना जाता है, लेकिन यह **आकस्मिक स्थितियों में लोक व्यवस्था बनाए रखने में मदद करता है** ।
- **निष्काम कर्म:** इसके अनुसार कर्म, स्वयं में अंतिम लक्ष्य होना चाहिए। (कर्तव्य के लिए कर्तव्य)
  - **उदाहरण - दान** एक **महान कार्य है**, लेकिन जब लोग इसे मान्यता प्राप्त करने के लिए करते हैं तो उस कार्य को नैतिक नहीं कहा जा सकता क्योंकि साधन और साध्य का संबंध बन जाता है।
- **निरपेक्ष कर्तव्यादेश (Categorical Imperative):** कुछ कार्य व्यक्तिगत इच्छाओं से होते हैं जैसे घर या कार खरीदने के लिए कड़ी मेहनत करना। लेकिन निरपेक्ष कर्तव्यादेश किसी व्यक्ति को माता-पिता की देखभाल जैसी व्यक्तिगत इच्छा के बावजूद किसी प्रयोजन के लिए काम करने या कुछ करने के लिए प्रेरित करते हैं।
- **चार निरपेक्ष कर्तव्यादेश निम्नलिखित हैं:**
  - दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार न करना, जो आप नहीं चाहते कि दूसरे आपके साथ करें।
  - ऐसे सिद्धांत के अनुसार कार्य करना, जिसे सार्वभौमिक नियम (Universal Law) के रूप में स्थापित किया जा सके।
  - मनुष्य को किसी साध्य के साधन के रूप में उपयोग न करें। (मनुष्य ही साध्य है)
  - मानवीय कार्यों से समाज को लाभ होना चाहिए।

प्रयोजनवादी दृष्टिकोण (Teleological Approach)

"टेलोस (Telos)" एक प्राचीन यूनानी शब्द है **जिसका अर्थ साध्य, पूर्ति, समापन, लक्ष्य आदि होता है। प्रयोजनवाद** (टेलीओलॉजी) एक दर्शन है जिसके अनुसार **व्यक्ति के कार्य के परिणाम ही आचरण के सही या गलत होने के अंतिम निर्धारक होते हैं।**

कर्तव्यवादी और प्रयोजनवादी सिद्धांतों के बीच अंतर:

कर्तव्य-आधारित नैतिकता	प्रयोजन-परक नैतिकता (परिणामोन्मुख)
• नैतिक कर्तव्यों पर ध्यान देती है, परिणामों पर नहीं।	• कार्यों के परिणामों पर ध्यान देती है।
• परिणामों की अपेक्षा इरादों को प्राथमिकता देती है।	• इरादों की अपेक्षा परिणामों को प्राथमिकता देती है
• नैतिक कर्तव्य नैतिक मूल्यों से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।	• नैतिक मूल्य कर्तव्यों से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।
• व्यक्ति के इरादे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।	• व्यक्ति के इरादों का कोई महत्त्व नहीं है।
• कार्यों के अच्छे होने की अपेक्षा उनके औचित्य को प्राथमिकता दी जाती है।	• कार्यों की अच्छाई ही उनके औचित्य को निर्धारित करती है।
• व्यक्ति की नैतिक स्थिति पर जोर देती है।	• कार्य की नैतिक स्थिति पर जोर देती है।
• नैतिक कर्तव्यों का नकारात्मक सूत्रीकरण होता है।	• नैतिक कर्तव्यों का सकारात्मक सूत्रीकरण होता है।
• व्यक्तिगत हितों का कोई महत्त्व नहीं होता है।	• व्यक्तिगत एवं दूसरों के हितों पर समान ध्यान दिया जाता है।
• कार्य स्वाभाविक रूप से नैतिक या अनैतिक होते हैं।	• कार्यों का मूल्यांकन परिणामों के आधार पर किया जाता है।

कर्तव्यवादी और प्रयोजनवादी सिद्धांतों पर आधारित उदाहरण

- मान लीजिए कि कोई व्यक्ति सड़क किनारे सो रहे कुत्ते को लात मारता है। कुत्ता भौंकता है और भाग जाता है। कुछ ही देर बाद, एक कार इतनी तेज गति से सड़क पर आती है कि अगर कुत्ता अभी भी वहीं पड़ा होता तो निश्चित रूप से उसकी मौत हो जाती।

- **कर्तव्यवादी दृष्टिकोण** के अनुसार उक्त आदमी का कार्य बुरा था, क्योंकि कुत्तों को लात मारना क्रूरता है, लेकिन **प्रयोजनवादी दृष्टिकोण के अनुसार**, उसका कार्य अच्छा था, क्योंकि इससे कुत्ते की जान बच गई।

निष्कर्ष:

आपराधिक न्याय प्रणाली में कर्तव्यवादी दृष्टिकोण लागू किया जाता है, जो यह सुनिश्चित करता है कि सजा अपराध के **आनुपातिक और उचित थी।** जबकि, न्यायालयों द्वारा किसी भी **कानून, उसके उद्देश्य, दिशा या डिजाइन** की **व्याख्या** के लिए **प्रयोजनवादी दृष्टिकोण का उपयोग किया जाता है।**

उपयोगितावाद (UTILITARIANISM)

उपयोगितावाद उस **कार्य को बढ़ावा देता है जो अधिकतम लोगों को अधिकतम खुशी प्रदान करता है।** इस विचारधारा में दो प्रमुख दार्शनिकों ने योगदान दिया है।

जेरेमी बेंथम

जेरेमी बेंथम का जन्म लंदन में हुआ था। वह उपयोगितावाद के सबसे शुरुआती और प्रमुख प्रतिपादक हैं और उन्हें **उपयोगितावाद का** संस्थापक भी कहा जाता है ।

बेंथम के सिद्धांत:

- **सुख और दुःख सिद्धांत:** मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य अधिकतम सुख और न्यूनतम दुःख प्राप्त करना है।
  - **उदाहरण** - उपयोगितावाद **स्वतंत्रता, विकल्प चुनने की स्वतंत्रता** और **लोकतंत्र जैसे मूल्यों को बढ़ावा देता है।** इस प्रकार हम भारत में **प्रवासन और प्रतिभा पलायन देखते हैं** जहाँ अधिकतम व्यक्ति बेंथम के सुख और दुःख सिद्धांत की ओर आकर्षित होते हैं।
- **नैतिक स्वार्थ: हमेशा अपने भलाई को बढ़ावा देना नैतिक** है। जो एक व्यक्ति के लिए अच्छा है वह समाज के लिए भी अच्छा है।
  - **उदाहरण** - पश्चिम में **प्रोटेस्टेंट, भारत में सिंधी** और **अग्रवाल** जैसे कुछ संप्रदाय हैं जो नैतिक अहंवाद में विश्वास करते हैं, इसलिए ये समुदाय उद्यमिता को चुनते हैं।

जॉन स्टुअर्ट मिल

जॉन स्टुअर्ट मिल का जन्म लंदन में हुआ था और उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी में सिविल सेवक के रूप में भी काम किया था।

मिल का दर्शन:

- **सामाजिक उपयोगितावाद (Social Utilitarianism):** यह उपयोगितावाद का समर्थन करता है लेकिन इस तरह से कि किसी व्यक्ति के कार्य से बड़े पैमाने पर समाज को नुकसान नहीं पहुँचना चाहिए। अर्थात्- किसी व्यक्ति की खुशी से समाज को नाराजगी नहीं होनी चाहिए।
  - **उदाहरण** - पश्चिम में **"मैं की संस्कृति (I-culture)"** का प्रचलन है, लेकिन पूर्व में **"हम की संस्कृति (We-culture)" का प्रचलन है। इसी अंतर के आधार पर चीन ने संयुक्त राष्ट्र में** नैतिक परोपकारिता का समर्थन करते हुए पूर्व और पश्चिम के लिए **"मानवाधिकार"** की अलग-अलग परिभाषा की माँग की थी।
- **नैतिक परोपकारितावाद (Ethical Altruism):** इसमें **व्यक्ति का अहं संतुष्ट होता है,** लेकिन इस पर **दूसरों को प्रभावित न करने की शर्त** लागू **होती है।**
  - **उदाहरण-** व्यक्तिगत प्रसिद्धि की इच्छा के बिना, अपनी संपत्ति का एक हिस्सा धर्मार्थ कार्य के लिए दान करना, नैतिक परोपकारिता का उदाहरण है।"
- **उच्च स्तरीय और निम्न स्तरीय सुख (Higher and Lower Pleasure):** मिल ने उच्च स्तरीय और निम्न स्तरीय सुख के बीच अंतर किया। **बुद्धि आधारित सुखों को उच्च स्तरीय सुख कहा जाता है** और **ऐन्द्रिक सुखों से जुड़े सुखों को निम्न स्तरीय सुख कहा जाता है।**
  - **उदाहरण** - नींद या मनोरंजन की अपेक्षा कड़ी मेहनत को चुनना अधिक सुखदायक माना जा सकता है।
- **बेंथम के उपयोगितावाद से एक उन्नयन (An Upgrade from Bentham's Utilitarianism):** बेंथम के अनुसार, यदि कोई कार्य अधिकतम लोगों का अधिकतम कल्याण करता है तो वह नैतिक है। उन्होंने इसे **मात्रात्मक उपयोगितावाद कहा (quantitative utilitarianism)।** हालाँकि मिल इस विचार से आगे बढ़े और **गुणात्मक उपयोगितावाद प्रस्तुत किया** जो बौद्धिक सुख अर्थात आनंद पर केंद्रित है और ऐसे कार्य को नैतिक मानता है। इस भेद को नियम **उपयोगितावाद (Rule Utilitarianism) भी कहा जाता है।**
  - **उदाहरण - शासन** में, **नियम उपयोगितावाद निर्णय लेने में मार्गदर्शन करता है** क्योंकि नीतियों को नागरिकों को गुणात्मक कल्याण और बौद्धिक पूर्ति को प्राथमिकता देने के लिए डिज़ाइन किया जाता है, जिसका लक्ष्य समग्र खुशी और सामाजिक प्रगति को अधिकतम करना है।
- **स्वतंत्रता के विचार (Ideas of Liberty):** वह **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बारे में मुखर थे** और उनका मानना था कि लोगों को अपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए जब तक कि उनके कार्यों से किसी और को नुकसान न पहुँचे।
  - **उदाहरण** - हिंसा भड़काने के उद्देश्य से नफरत फैलाने वाले भाषणों के प्रसार ने राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा पैदा कर दिया है।

अनुबंधवाद (CONTRACTARIANISM)

अनुबंधवाद के सिद्धांत के अनुसार, **आचरण को तब नैतिक माना जाता है जब कोई व्यक्ति किसी समय में दो या अधिक लोगों द्वारा किए गए अनुबंध या समझौते का पालन करता है।** जब लोगों और राज्य के बीच ऐसा अनुबंध होता है तो इसे **सामाजिक अनुबंध कहा जाता है,** जहाँ राज्य कुछ कर्तव्यों के साथ लोगों पर शासन करता है और लोगों के भी राज्य के प्रति कुछ दायित्व होते हैं। इस सिद्धांत का समर्थन तीन दार्शनिकों ने किया है।

थॉमस हॉब्स

थॉमस हॉब्स का दर्शन

- **मानव स्वभाव (Human Nature):** मनुष्य स्वभाव से स्वार्थी, क्रूर, हत्यारा और आत्मरक्षा करने वाला होता है। इसलिए वह शांति और स्थिरता बनाए नहीं रख सकता; इसलिए लोग एक राज्य या सरकार बनाने के लिए अनुबंध के माध्यम से एक साथ आते हैं।
  - **उदाहरण** - भारत में वर्तमान में 11 करोड़ रुपये मूल्य की **गैर-निष्पादित परिसंपत्तियाँ (NPA) हैं। अनुबंधवाद** के अनुसार, इस कृत्य को अनैतिक माना जा सकता है क्योंकि लोगों द्वारा अनुबंध का उल्लंघन किया गया है।

- **प्रकृति की स्थिति युद्ध की स्थिति है (State of Nature is a State of War):** उनका यह भी मानना था कि मनुष्य अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए दुर्लभ संसाधनों के लिए भीषण संघर्ष करेगा।
  - **उदाहरण** - भारत सरकार **नेत्र (NETRA) नामक एक ऑनलाइन निगरानी तंत्र का उपयोग करती है।** यह आंतरिक सुरक्षा के लिए सभी गतिविधियों पर नज़र रखता है। **यह पूर्ण अधिकारों की अनुपस्थिति को दर्शाता है।**
- **लेवियाथन राज्य (Leviathan State):** वह निम्नलिखित प्रावधानों के साथ एक वृहद शक्तिसम्पन्न राज्य की माँग करते हैं,
  - शासन करने की पूर्ण शक्ति।
  - लोगों को राज्य के विरुद्ध विद्रोह करने का कोई अधिकार नहीं है।
  - लोगों के पास पूर्ण/निरपेक्ष अधिकार नहीं हैं।
  - राज्य को नागरिक शिक्षा पर जोर देना चाहिए और नागरिकों में आज्ञाकारिता पैदा करनी चाहिए।
    - उदाहरण - उत्तर कोरिया में किम जोंग-उन का शासन आधुनिक लेवियाथन राज्य (एक वृहद शक्तिसम्पन्न राज्य) का निकटतम उदाहरण माना जा सकता है।

जॉन लॉक (John Locke)

जॉन लॉक का दर्शन

- **स्वतंत्रता (Liberty):** लॉक, स्वतंत्रता और सहमति से शासन करने के बहुत बड़े समर्थक थे। उन्होंने **स्वयं के बारे में** और **दूसरों के बारे में कार्यों के बीच अंतर किया, जिसे यह तय करने का मानदंड होना चाहिए कि हस्तक्षेप करना है या नहीं। उन्होंने जीवन-स्वतंत्रता-संपत्ति (LIFE-LIBERTY-PROPERTY) को** हर व्यक्ति के **"तीन निरपेक्ष प्राकृतिक अधिकारों" के रूप में** माना। लॉक के अनुसार, सरकार की प्राथमिक भूमिका इन तीनों अधिकारों की रक्षा करना है, सरकार की वैधता उन लोगों की सहमति से उत्पन्न होती है जिन पर वह शासन करती है। लॉक के विचारों ने 'व्यक्तिगत स्वायत्तता के सिद्धांतों' और 'व्यक्तिगत मामलों में राज्य के हस्तक्षेप की सीमाओं' की नींव रखी।
  - **उदाहरण** - हमारे संविधान निर्माताओं ने शुरू में जॉन लॉक के दर्शन में विश्वास किया था क्योंकि उन्होंने संविधान के अनुच्छेद 19(1)(f) और अनुच्छेद 31 के तहत **संपत्ति के अधिकार को शामिल किया और अनुच्छेद 21 में जीवन और स्वतंत्रता के अधिकार को बरकरार रखा।**
- **पितृसत्ता और महिलाओं के संबंध में (On Patriarchy and Women):** उन्होंने महिलाओं के अधिकारों का भी समर्थन किया और उनके लिए समान अवसरों की माँग की।
  - **उदाहरण - भारत में श्रम सुधार,** जिनका उद्देश्य लिंग आधारित भेदभाव को समाप्त करना, कार्यबल में महिलाओं के लिए समान वेतन और अवसर सुनिश्चित करना है।
- **संपत्ति के संबंध में (On Property):** लॉक का कहना है कि **संपत्ति पर मनुष्य का प्राकृतिक अधिकार है,** और मनुष्य अपने आराम के लिए प्रकृति का अपने अनुसार उपयोग कर सकता है।
  - **उदाहरण** - लॉक के अनुसार यदि संपत्ति का अधिकार एक प्राकृतिक अधिकार है तो किसानों की औसत भूमि जोत का प्रतिशत **2 हेक्टेयर से कम क्यों है** ?
- **सहिष्णुता (Tolerance):** लॉक अल्पसंख्यक अधिकारों तथा एक ऐसे विषम समाज के समर्थक थे जहाँ विभिन्न संस्कृतियों के लोग सह-अस्तित्व में रह सकें।
  - **उदाहरण - सभी के लिए समान अवसरों का** समर्थन करना, चाहे उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो।

रूसो

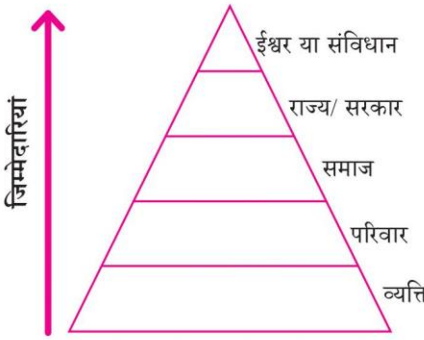

रूसो का दर्शन

- **मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है, लेकिन वह सदा जंजीरों में जकड़ा रहता है:** एक आदमी सोचता है कि वह दूसरों का स्वामी है, लेकिन वह दूसरों से अधिक गुलाम बना रहता है।
  - **उदाहरण** - एक बच्चा स्वतंत्र पैदा होता है लेकिन वह अपने परिवार (उसके भरण-पोषण और निरंतरता में योगदान), स्कूल (निर्धारित पाठ्यक्रम का पालन करना), सरकार (देश के कानून का पालन करना), अंतर्राष्ट्रीय कानून (आव्रजन, वीजा और नागरिकता) और ऊपर जंजीरों को दर्शाने वाले क्रम में उनके प्रति जिम्मेदार होता है।
- **सामान्य इच्छा (General Will):** किसी भी लोकतंत्र में जनता सर्वोच्च हैं और संप्रभुता जनता में निहित होती है।
  - **उदाहरण-** अपने सत्तावादी शासन के कारण अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति **श्री ट्रम्प की** चुनाव में हार दर्शाती है कि किसी भी लोकतंत्र में जनता सर्वोपरि है।
- **संपत्ति:** रूसो ने निजी संपत्ति के विचार को खारिज कर दिया और इस बात का समर्थन किया कि संपत्ति को केवल बुनियादी जरूरत ही पूरी करनी चाहिए। इससे **समाजवाद** के प्रति उनके झुकाव का पता चलता है।
  - **उदाहरण** - भारत में भूमि सुधारों के तहत चकबंदी का कार्यान्वयन यह सुनिश्चित करना था कि निजी संपत्ति संचय सीमित होना चाहिए, और भूमि का पुनर्वितरण यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाना चाहिए कि सभी को उनकी बुनियादी जरूरतों के लिए पर्याप्त भूमि मिल सके।
- **शिक्षा:** उन्होंने कहा कि शिक्षा औपचारिक शिक्षा अर्थात् पुस्तकों के बजाय प्रकृति के माध्यम से प्राप्त की जानी चाहिए।
  - **उदाहरण- रबीन्द्रनाथ टैगोर का शांतिनिकेतन,** जिसका विचार बच्चों को प्रकृति के निकट संपर्क में रहकर बड़े होने के लिए एक स्वतंत्र और भयमुक्त वातावरण प्रदान करना है।

समकालीन अनुबंधवाद

जॉन रॉल्स को **समकालीन अनुबंधवाद का जनक कहा जाता है** और वह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सबसे प्रभावशाली अमेरिकी दार्शनिक हैं।

जॉन रॉल्स

जॉन रॉल्स का दर्शन:

- **समानता (Equality):** प्रत्येक अमीर और गरीब को समान अधिकार मिलने चाहिए जो स्वतंत्रता, वोट देने का अधिकार और सरकारी पद धारण करने का अधिकार जैसे बुनियादी अधिकार हैं। अधिकांश देशों में इन्हें राजनीतिक अधिकार कहा जाता है।
  - **उदाहरण- व्यक्ति को समानता के सिद्धांत** के अनुसार दूसरों के राजनीतिक अधिकारों का सम्मान करना चाहिए। लेकिन हमने मीडिया में देखा है कि कई विरोध प्रदर्शनों के दौरान पत्रकार व्यक्ति के विरोध करने के अधिकार पर सवाल उठाते हैं।
- **विभेदक समानता (Differential Equality):** चूँकि कुछ लोग अमीर (लाभ में) और कुछ गरीब (नुकसान में) हैं, इसलिए स्थिति में अंतर के कारण लोगों को अलग-अलग अधिकार प्राप्त होते हैं,
  - **उदाहरण-** कुछ समाज इन्हें **आरक्षण कहते हैं** जबकि अन्य इन्हें **सकारात्मक भेदभाव कहते हैं।**
- **न्याय (Justice):** यह तथ्यों पर विचार करके और बिना किसी पूर्वाग्रह, जिसे "**अज्ञानता का पर्दा (Veil of Ignorance)**" भी कहा जाता है , के निर्णय लेने में उपयोग किया जाने वाला मानक है ।
  - **इसे मूल स्थिति (Original Position)** भी कहा जाता है ।
  - यह समाज की शुरुआत से पहले की एक **काल्पनिक स्थिति है जब लोग उन सिद्धांतों को तय करते हैं जिन पर समाज का निर्माण होता है।**
  - सिद्धांत **मुख्य रूप से उन लोगों द्वारा निर्धारित किए जाते हैं जो उस सामाजिक स्थिति से अनजान होते हैं जिसमें वे होते हैं** या जिसमें वे होंगे, अर्थात् लोग अमीर, गरीब, मजबूत, कमजोर, बहुसंख्यक, अल्पसंख्यक आदि होने के बारे में अनजान हैं।
  - यह **न्यायसंगत और उचित सिद्धांतों का विकास** सुनिश्चित करता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति सबसे खराब स्थिति पर भी विचार करके मूल्य में योगदान देता है।
    - **उदाहरण - शून्य बजटिंग** जैसी अवधारणाएँ; इसमें हम **अज्ञानता के परदे के अल्पविकसित रूप का उपयोग करते हैं।** हम बिना किसी पूर्वाग्रह के अगले वर्ष के लिए कार्यक्रमों और नीतियों को मंज़ूरी देने के लिए उनके परिणामों पर विचार करते हैं।

वर्णनात्मक नैतिकता

- वर्णनात्मक नैतिकता **सही या गलत** के संबंध में **लोगों की वास्तविक मान्यताओं और व्यवहारों की जाँच करती है,** जो विभिन्न समाजों में और अलग-अलग समय में भिन्न हो सकती है, इसलिए इसे **तुलनात्मक नैतिकता के रूप में भी जाना जाता है ।**
- **लॉरेंस कोहलबर्ग ने 'हेंज डिलेमा प्रयोग' (Heinz Dilemma experiment)** किया, जिसमें व्यक्तियों के निर्णयों के पीछे के नैतिक तर्क पर ध्यान केंद्रित किया गया, **न कि चुने गए विकल्पों पर, जिससे उनके तर्क पर सामाजिक मानदंडों के प्रभाव का** पता चला।
  - **उदाहरण के लिए,** भारत में, **भगवान हनुमान की पूजा को** एक **आध्यात्मिक** अनुभव माना जाता है लेकिन पश्चिम में वे इसे बंदर पूजा कहते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे **रामायण** जैसे ग्रंथों में पशु के महत्त्व के बारे में सोचने में असमर्थ हैं।

व्यावहारिक/अनुप्रयुक्त नैतिकता

- व्यावहारिक/अनुप्रयुक्त नैतिकता, नैतिकता की एक शाखा है जो **वास्तविक जीवन की स्थितियों में नैतिक सिद्धांतों के अनुप्रयोग से संबंधित है** और लोगों को नैतिक आचरण करने के लिए मार्गदर्शन करती है। इसका उपयोग आमतौर पर तब किया जाता है **जब कोई व्यक्ति नैतिक दुविधा में होता है या सार्वजनिक और निजी जीवन के विशिष्ट मुद्दों के संबंध में दुविधा में होता है।**
- **व्यावहारिक नैतिकता की कुछ प्रसिद्ध शाखाएँ इस प्रकार हैं:**
  - **पर्यावरण नैतिकता (Environment Ethics)** : जीवन की गुणवत्ता बनाम प्रकृति का दोहन करके आर्थिक विकास।
  - **मीडिया नैतिकता (Media Ethics):** चरित्र हनन बनाम नागरिकों को अपराध के बारे में जानकारी देना।
  - **चिकित्सा नैतिकता (Medical Ethics):** दवाओं पर पेटेंट बनाम मानव जाति के लिए जीने का अधिकार।
  - **तकनीकी नैतिकता (Technological Ethics):** डार्कनेट, डीप फेक, बड़े पैमाने पर ट्रोलिंग आदि का उपयोग।

भारतीय दर्शन

हिंदू दर्शन के प्रमुख सम्प्रदाय

सांख्य दर्शन

- इसे **सांख्य गणन संख्या भी कहा जाता है।**
- यह **"द्वैतवाद** (Dualism)**"** के दर्शन का प्रचार करता है। यह पदार्थ (**प्रकृति**) और आत्मा (**पुरुष**) के अलग-अलग अस्तित्व में विश्वास करता है। आत्मा लौकिक शरीरों में निवास करती है और अंत में सूक्ष्म पदार्थ या ब्रह्मांडीय ऊर्जा में विलीन हो जाती है।
- **अनुप्रयोग:** यह सिद्धांत अंतःकरण या आत्मा पर प्रकाश डालता है जो किसी के नैतिक आचरण का मार्गदर्शन करता है।

योग दर्शन

- योग का अर्थ है **जोड़।**
- यह उन मूल्यों से संबंधित है जो किसी व्यक्ति की **मानसिक और शारीरिक क्षमताओं में मदद करते हैं।**
- इसमें निम्नलिखित चरणों पर विचार करते हुए **अष्टांग योग का सुझाव दिया गया है:**
  - **यम** = अहिंसा का पालन, और सत्य बोलना।
  - **नियम** = अनुशासन
  - **आसन** = शारीरिक स्वास्थ्य के लिए विभिन्न व्यायाम
  - **प्राणायाम** = श्वास नियंत्रण
  - **प्रत्याहार** = इन्द्रियों पर नियंत्रण
  - **धारणा** = जागरूकता

- **ध्यान** = एकाग्र ध्यान
- **समाधि** = आत्मा का संसार से मुक्त होना

- **अनुप्रयोग : योग, स्वयं के और सद्गुणों के विकास में मदद करता है। क्योंकि यह आत्म-जागरूकता प्रदान करता है और अनुशासन को बढ़ावा देता है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2024** की विषयवस्तु है, **'स्वयं एवं समाज हेतु योग' (Yoga for Self and Society)**, जिसमें व्यक्तिगत कल्याण और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने में योग की भूमिका पर बल दिया गया। यह व्यक्तिगत और सामूहिक स्वास्थ्य के अंतर्संबंध को रेखांकित करता है तथा योग को व्यक्तिगत विकास और सामाजिक बेहतरी के साधन के रूप में बढ़ावा देता है।

न्याय दर्शन

- न्याय का अर्थ है **नियम**।
- यह दर्शन **"तर्क और ज्ञानमीमांसा" पर जोर देता है।** यह **अनुमान के माध्यम से ज्ञान प्राप्ति** और **आत्मा की मुक्ति की ओर ले जाने वाले प्रामाणिक ज्ञान को बढ़ावा देता है।**
- **अनुप्रयोग:** यह प्रामाणिक ज्ञान या विवेक को कायम रखता है जिसे सद्गुण नैतिकता के समर्थक दार्शनिकों द्वारा भी प्रतिपादित किया गया था। **उदाहरण के लिए, बुद्ध को "प्रबुद्ध व्यक्ति"** माना जाता है, ऐसा इसलिए है क्योंकि कहा जाता है कि वह **दु:ख** का **कारण** अर्थात् **इच्छा को समझते थे।** इस प्रकार उन्होंने तर्क स्थापित करने और न्याय सिद्धांतों को कायम रखने के लिए अपनी इच्छा पर विजय प्राप्त की।

मीमांसा दर्शन

- मीमांसा का अर्थ है **समालोचनात्मक चिंतन (critical reflection)।**
- यह हिंदू दर्शन का सबसे प्रारंभिक सम्प्रदाय है जो वेदों की व्याख्या करता है और दार्शनिक औचित्य भी प्रदान करता है। इस सिद्धांत के अनुसार, **व्यक्ति कर्म-कांड (अनुष्ठानवाद) के माध्यम से मोक्ष प्राप्त कर सकता है।**
- **अनुप्रयोग:** आधुनिक समय का कर्मकांड इसी विचारधारा से अपना औचित्य प्राप्त करते हैं। इसका श्रेय हम **उपभोक्तावाद और भौतिकवाद** को भी दे सकते हैं।

वेदान्त दर्शन

- वेदांत शब्द का अर्थ **निष्कर्ष, विशेष रूप से 'वेदों का अंत' है।**
- इस सम्प्रदाय के अनुसार, **वेद ज्ञान के प्रामाणिक स्रोत** हैं और कोई भी **प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त कर सकता है।**
- इसने मोक्ष प्राप्त करने के लिए कर्मकांड और **बलि के बजाय, मोक्ष के लिए ज्ञान और भक्ति** के मार्ग पर जोर दिया।
- **विवेकानन्द द्वारा वेदांत दर्शन की व्याख्या**
  - **नैतिकता:** यह एक **आचार संहिता है** जिसके अनुसार मनुष्य को अच्छा बनना चाहिए क्योंकि उसकी आत्मा शुद्ध है। **इसलिए आत्मा की आंतरिक शुद्धता पर जोर दिया गया।**
  - **धर्म:** धर्म ने शाश्वत परम अर्थात् **आत्मा को परमात्मा में विलीन करने का मार्ग प्रस्तुत किया।**
  - **शिक्षा:** उन्होंने व्यक्ति के **चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा की वकालत की और वह आधुनिक विज्ञान की विधियों और परिणामों से पूरी तरह सहमत थे।**

- **अनुप्रयोग:** आधुनिक शिक्षा प्रणाली मौद्रिक लाभ कमाने की ओर झुकी हुई है लेकिन वेदों में सही मायने में जीवन, स्वास्थ्य, मनोरंजन और आर्थिक सिद्धांतों का समग्र ज्ञान था।

रामायण और महाभारत का सार

चरित्र	नैतिक शिक्षा
राम	• **शासन:** परिवार से अधिक जनता को प्राथमिकता देना। • **मित्रता :** हनुमान जी के साथ मित्रवत व्यवहार। • **विवाह:** अपनी पत्नी के प्रति वफादारी प्रदर्शित करना। • **सामाजिक अनुबंधवाद:** जनता/प्रजा के साथ संबंधों को महत्त्व देना।
दशरथ और कैकेयी	• **भावनात्मक बुद्धि:** चरम संवेगों से प्रभावित हुए बिना निर्णय लेना। • **सामाजिक प्रभाव:** सकारात्मक और नकारात्मक सामाजिक प्रभावों के महत्त्व पर प्रकाश डालना।
रावण	• **लालच:** सत्ता की अत्यधिक इच्छा और नैतिक निर्णय की कमी के परिणामों का चित्रण। • **ज्ञान और बुद्धि:** नैतिक बौद्धिकता के महत्त्व पर जोर देना।
भीष्म	• **धर्म:** अपने कर्तव्य और न्यायपरायणता का पालन करना।
अर्जुन और कृष्ण	• **सकारात्मक सोच:** हर परिस्थिति में समाधान और सकारात्मकता खोजना। • **अनुबंधवाद:** अपने वचन को निभाने और दायित्वों को पूरा करने के महत्त्व को समझना। • **उद्देश्यपरक नैतिकता:** कार्यों के परिणामों पर विचार करके उनकी नैतिक प्रकृति का निर्धारण करना।
शबरी	• **समर्पण और धैर्य:** अटूट समर्पण और धैर्य का प्रदर्शन करना। • **प्रेम, संतुष्टि और खुशी:** भगवान राम की सेवा में शाश्वत खुशी और संतुष्टि पाना। • **समानता और सम्मान:** शबरी के प्रति भगवान राम का समान व्यवहार और सम्मान।
जटायु	• **जिम्मेदारी:** सीमाओं को जानते हुए भी अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करना।

रामायण से शिक्षाएँ

- **सत्य की विजय:** रामायण की मूल शिक्षा यह है कि **बुराई चाहे कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, वह हमेशा अच्छाई से पराजित होगी।** विजय सत्य की ही होती है। व्यक्ति को हमेशा **नेक दिल और अच्छे मूल्यों वाला होना चाहिए।**
- **एकता जीवन में किसी भी कठिनाई को दूर कर सकती है:** जब ज्वार (समस्या) आकाश से ऊँचा लगता है तब एकजुटता जहाज को चलाने की शक्ति (समाधान) देती है।

- **अपने कर्तव्य के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्धता**: राम सीता के पति होने के अलावा अयोध्या के राजा भी थे और राजा का कर्तव्य अपनी प्रजा को खुश रखना है। इसलिए, **लोगों द्वारा सीता की पवित्रता पर सवाल उठाने के बाद उन्हें अपनी पत्नी का त्याग करना पड़ा**। एक पति के रूप में वह अपनी पत्नी के प्रति कर्तव्यबद्ध थे। लेकिन एक राजा के रूप में, उन्हें अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं से पहले अपनी प्रजा की इच्छाओं के बारे में सोचना पड़ा।
- **न्यायपरायणता के मार्ग का चुनाव**: रावण के छोटे भाई **विभीषण** ने राम के खिलाफ युद्ध में अपने भाई का समर्थन नहीं करने का फैसला किया। वह जानता था कि उसके भाई ने एक स्त्री का अपहरण करके पाप किया है।
- **विनम्र रहना, चाहे आप कितने भी शक्तिशाली क्यों न हो: भगवान हनुमान के** पास अकेले ही रावण की सेना से लड़ने की शक्ति थी। लेकिन उन्होंने भगवान राम की दिव्यता के सामने आत्मसमर्पण करने का फैसला किया और उन्हें जरूरी काम करने दिया।
- **सभी के साथ समान व्यवहार करना: भगवान राम ने सभी के साथ समान व्यवहार किया** और इस तरह उन्होंने सभी का प्रेम और सम्मान अर्जित किया। जब **शबरी** (ऋषि की पुत्री) ने **उन्हें पहले से ही चखे हुए बेर के फल दिए तो उन्होंने बिना कुछ सोचे-समझे उन्हें खा लिया।** वह हमेशा लोगों के प्रति दयालु और विनम्र रहे। हमें यहाँ इस गुण पर ध्यान देना चाहिए। हमें **हमेशा सभी के साथ समानता का व्यवहार करना चाहिए और हैसियत, लिंग, उम्र या जाति के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए।**
- **हमेशा अच्छी संगति रखना** : ऐसा कहा जाता है कि आपकी संगति आपके व्यक्तित्व का निर्माण करती है। रामायण में भी **अच्छी संगति की प्रासंगिकता पर जोर दिया गया है**। दशरथ की तीसरी पत्नी **रानी कैकेयी** अपने बेटे से भी ज्यादा राम को प्यार करती थीं, लेकिन उनकी दासी **मंथरा ने उनके विचारों को नकारात्मकता से भर दिया**, जिसके परिणामस्वरूप **कैकेयी ने राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास माँग लिया**। एक नकारात्मक व्यक्ति आपके अंदर की सारी अच्छाइयों को खत्म कर सकता है, इसलिए हमें हमेशा एक अच्छे व्यक्ति के साथ रहना चाहिए ताकि हम समय के साथ बेहतर बन सकें।

भगवद्गीता का सार

- **सुख और कर्म** : परिणामों को,अपने कर्मों का उद्देश्य न बनने देना, और इसलिए, आप अपने कर्तव्य को करने में आसक्त नहीं होंगे। भगवद्गीता लक्ष्य की तुलना में प्रतिबद्धता के साथ कर्तव्य पर अधिक जोर देती है।
    - **उदाहरण** - कुछ सिविल सेवक सेवा में आने के बाद सार्वजनिक प्रतिबद्धता पर ध्यान देने के बजाय **पुरस्कार, पदोन्नति और वेतन की दौड़ में शामिल हो जाते हैं।**
- **भावनात्मक बुद्धिमत्ता:** प्रबुद्ध ऋषिगण उस व्यक्ति को बुद्धिमान कहते हैं जिसके सभी कार्य फल की चिंता से मुक्त होते हैं।
    - **उदाहरण-** हाल ही में **सुशांत सिंह राजपूत की मृत्यु ने समाज के लिए संवेगों को प्रबंधित करने** के महत्त्व को दर्शाया।
- **एकाग्रता:** हम बाधाओं के कारण नहीं बल्कि छोटे लक्ष्य के लिए स्पष्ट रास्ते के कारण अपने बड़े लक्ष्य से दूर हो जाते हैं। **सोशल मीडिया** और **भौतिकवाद** के रूप में आधुनिक **समय की विकर्षणताएँ अस्थायी आनंद तो** प्रदान करती हैं लेकिन हमें अपने स्थायी लक्ष्य से पूरी तरह से भटका देती हैं।
- **नि:स्वार्थता:** एक उपहार तब शुद्ध होता है, जब वह बदले में कुछ भी उम्मीद किए बिना, सही समय पर सही व्यक्ति को दिल से दिया जाता है।
    - **उदाहरण** - प्रभावशाली लोगों द्वारा मीडिया की उपस्थिति में भारी दान देने और गैर सरकारी संगठनों की स्थापना की आधुनिक संस्कृति कोई नि:स्वार्थ कार्य नहीं है।
- **सत्य की हमेशा जीत होती है:** भगवान हमेशा सब पर नजर रखता है और सत्य को कभी छुपाया नहीं जा सकता।
    - **उदाहरण- त्वचा का रंग एक जैविक परिघटना है जबकि नस्ल एक सामाजिक परिघटना है।** लेकिन पश्चिमी शासकों ने इस सच्चाई पर पर्दा डालने की कोशिश की लेकिन **रंगभेद के खिलाफ दक्षिण अफ्रीका में गांधी के आंदोलन ने** अंत में नस्ल को महज एक सामाजिक रचना साबित कर दिया।

भारतीय दार्शनिक

बुद्ध

- **गौतम बुद्ध** 6-5वीं शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान प्राचीन भारत में एक **तपस्वी, धार्मिक गुरु** और **उपदेशक थे**। उनकी शिक्षाओं ने बौद्ध दर्शन और परंपराओं के साथ-साथ एक धर्म के रूप में बौद्ध धर्म की नींव रखी।
- **बौद्ध नैतिकता, न तो मनुष्य द्वारा अपने उपयोगितावादी उद्देश्य के लिए आविष्कृत मनमाने मानक** हैं और न ही इन्हें मनमाने ढंग से थोपा गया है।
- **मानव निर्मित कानून** और **सामाजिक रीति-रिवाज** बौद्ध नैतिकता का आधार नहीं हैं। इसकी नींव बदलते सामाजिक रीति-रिवाजों पर नहीं बल्कि **प्रकृति के अपरिवर्तनीय नियमों पर आधारित है।**

बौद्ध धर्म के अनुसार जीवन के लिए तीन आवश्यक बातें	आष्टांगिक मार्ग
• **बुद्धि (प्रज्ञा):** यह सम्यक दृष्टि से आती है, यह सही इरादे की ओर ले जाती है। • **नैतिक आचरण (शील):** सम्यक दृष्टि और इरादे नैतिक आचरण – सम्यक वाणी, सम्यक कर्म, सम्यक आजीविका और सम्यक व्यायाम के मार्गदर्शक हैं। • **एकाग्रता (समाधि):** इसका ध्यान सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि के लिए 'आत्म-क्रिया' पर है। जब ज्ञान, नैतिकता और एकाग्रता जीवन का एक तरीका बन जाते हैं; तो व्यक्ति को आत्मज्ञान प्राप्त होता है।	• **सम्यक दृष्टि (प्रज्ञा):** चार आर्य सत्य में विश्वास करना • **सम्यक संकल्प:** मानसिक और नैतिक विकास की प्रतिज्ञा करना • **सम्यक वाक (वाणी):** हानिकारक बातें और झूठ न बोलना • **सम्यक कर्म (आचरण):** हानिकारक कर्म न करना • **सम्यक आजीविका:** कोई भी स्पष्टतः या अस्पष्टतः हानिकारक व्यापार न करना • **सम्यक प्रयास (व्यायाम):** अपने आप सुधरने की कोशिश करना • **सम्यक स्मृति:** स्पष्ट ज्ञान से देखने की मानसिक योग्यता पाने की कोशिश करना • **सम्यक समाधि:** निर्वाण पाना और अहंकार का खोना

- **बौद्ध धर्म में नैतिकता** : बौद्ध नैतिकता **किसी कार्य को अच्छे या बुरे का निर्धारण उस इरादे या प्रेरणा के आधार पर करती है जिससे वह उत्पन्न हुआ है।**

- **कुशल और अकुशल कर्म:** जिन कार्यों का आधार लालच, घृणा या स्वार्थ होता है, वे बुरे माने जाते हैं - उन्हें **अकुशल कर्म (Akusala Kamma) कहा जाता है**। जो कार्य उदारता, प्रेम और ज्ञान के गुणों पर आधारित होते हैं वे सराहनीय और अच्छे होते हैं - उन्हें **कुशल कर्म (Kusala Kamma) कहा जाता है**। जैसे - पंचशील का पालन करना कुशल कर्म है।

चार आर्य सत्य

1. **दुःख का अस्तित्व**: हम चाहे कितना भी संघर्ष कर लें, हमें परम शुभ या संतुष्टि नहीं प्राप्त होती है। चारों ओर दुःख ही दुःख है। इसलिए दुःख ही हमारे अस्तित्व का वास्तविक सत्य है।
   तीव्र इच्छा : तृष्णा, तीव्र इच्छाएँ और वास्तविकता के बारे में अज्ञानता ही दुःख का कारण है।
2. **दुःख के कारण**: यदि इच्छा समाप्त हो जाएगी, तो दुःख का अंत हो जाएगा। जब सभी इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं, तो इस अवस्था को बौद्ध धर्म में "निर्वाण" कहा जाता है।
3. **दुःख निरोध का मार्ग**: दुःख के निवारण का मार्ग संभव है, तृष्णा का अशेष प्रयाण निरोध मार्ग है .
4. **दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा (अष्टांगिक मार्ग/ माध्यम मार्ग):** तृष्णा का अशेष प्रयाण **अष्टांगिक मार्ग** अपनाने से संभव है। यह सांसारिक सुख और कष्टदायक तपस्या के बीच एक मध्य मार्ग पर जोर देता है। इसके आठ अंग हैं- सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वचन, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि।
   पंचशील (पाँच नियम): बौद्ध धर्म बौद्धों को आपसी विश्वास और सम्मान के साथ सभ्य समुदायों में एक साथ रहने के लिए स्वेच्छा से पाँच नियमों को अपनाने के लिए कहता है। ये हैं - **अहिंसा (हिंसा न करना), अस्तेय (चोरी न करना), सत्य (झूठ न बोलना), यौन दुराचार न करना और नशा न करना।**

जैन

- जैन ग्रन्थों के अनुसार समय समय पर धर्म तीर्थ के प्रवर्तन के लिए तीर्थंकरों का जन्म होता है, जो सभी जीवों को आत्मिक सुख प्राप्ति का उपाय बताते है। भगवान महावीर, जैन धर्म के चौंबीसवें (24वें) तीर्थंकर थे।
- उनके अनुसार, दुनिया की सभी आत्मा एक-सी हैं इसलिए ***हम दूसरों के प्रति वही विचार एवं व्यवहार रखें जो हमें स्वयं को पसन्द हो।***
- जैन धर्म में नैतिकता का संप्रत्यय प्रमुखतः 'आचरण सम्बन्धी सिद्धांतों' से सम्बद्धता रखता है। जैन नैतिकता का प्रमुख उद्देश्य , ***'जीवन की गुणवत्ता' का उत्थान*** है। जैन नैतिकता में दो प्रमुख सिद्धांत, ***'पाँच महाव्रत' और 'त्रिरत्न'*** हैं।

पंच महाव्रत

- जैन धर्म पाँच नैतिक कर्तव्यों की शिक्षा देता है, जिन्हें वह **पाँच महाव्रत** कहता है। अर्थात यह अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के सिद्धांतों पर आधारित है।
- ये नैतिक सिद्धांत जैन अनुयायियों के **आचरण और विश्वदृष्टि का मार्गदर्शन** करते हैं।
  - **अहिंसा:** अहिंसा जैन नैतिकता का केंद्र है, जो विचार, भाषण और कर्म में अहिंसा का समर्थन करती है। शाकाहार, पर्यावरणीय चेतना और शांतिपूर्ण संघर्ष समाधान को प्रभावित करती है। यह जैन धर्म में सर्वोच्च नैतिक कर्तव्य है, और यह न केवल किसी के कार्यों पर लागू होता है, बल्कि यह माँग करता है कि व्यक्ति अपने भाषण और विचारों में अहिंसक हो।
  - **सत्य:** भाषण और विचार में सत्यता को एक मौलिक गुण के रूप में माना जाता है। अर्थात न तो झूठ बोलें, न ही ऐसा बोलें जो सच न हो, और दूसरों को प्रोत्साहित न करें या किसी ऐसे व्यक्ति का अनुमोदन न करें जो झूठ बोलता है।यह व्यक्तिगत, व्यावसायिक और सामाजिक संबंधों में ईमानदारी को बढ़ावा देता है।
  - **अस्तेय:** अस्तेय में वह लेने से परहेज करना शामिल है जो सही तरीके से अर्जित या दिया नहीं गया है। निष्पक्ष आर्थिक व्यवहार और दूसरों के संपत्ति अधिकारों के प्रति सम्मान को प्रोत्साहित करता है।
  - **ब्रह्मचर्य:** आध्यात्मिक शुद्धता के लिए विचार, वचन और कर्म में ब्रह्मचर्य या शुद्धता का समर्थन किया जाता है। आम लोगों के लिए, व्रत का अर्थ है शुद्धता, अपने साथी के प्रति वफ़ादारी। व्यक्तिगत आचरण और संबंधों का मार्गदर्शन करता है, आत्म-नियंत्रण पर जोर देता है।
  - **अपरिग्रह (गैर-स्वामित्व):** अपरिग्रह भौतिक संपत्ति और इच्छाओं से अलगाव सिखाता है। अतिसूक्ष्मवाद, नैतिक उपभोग और परोपकार को बढ़ावा देता है।

त्रिरत्न

- **सम्यक दर्शन:** यह जैन धर्म के सिद्धांतों में विश्वास पर जोर देता है, जिसमें कर्म, पुनर्जन्म और मुक्ति (मोक्ष) का मार्ग शामिल है।आध्यात्मिक विकास और नैतिक आचरण के लिए जैन नैतिक मूल्यों के पालन को प्रोत्साहित करता है।
- **सम्यक ज्ञान:**जैन धर्मग्रंथों और शिक्षाओं के अध्ययन, चिंतन और समझ के माध्यम से प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त करना। यह व्यक्तियों को उनके कार्यों के परिणामों को समझने के आधार पर सूचित नैतिक विकल्प बनाने के लिए मार्गदर्शन करता है।
- **सम्यक चरित्र:** अहिंसा (अहिंसा), सत्य (सत्य), अस्तेय (चोरी न करना), ब्रह्मचर्य (पवित्रता), और अपरिग्रह (गैर-अधिकारिता) के जैन सिद्धांतों के साथ जुड़े विचार, भाषण और कार्रवाई में नैतिक व्यवहार का अभ्यास करना। नैतिक रूप से ईमानदार जीवन जीने और समाज में सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है।
- त्रिरत्न (तीन रत्न) जैन नैतिक दर्शन की आधारशिला के रूप में कार्य करते हैं, जो अनुयायियों को विश्वास, ज्ञान और सदाचार के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान और नैतिक जीवन जीने की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं।

बौद्ध और जैन नैतिकता के बीच समानताएँ और भिन्नताएँ

पहलू	बौद्ध नैतिकता	जैन नैतिकता
अहिंसा (Non-Violence)	सभी प्राणियों के प्रति करुणा और अहिंसा को प्रमुखता देती है।	मुख्य सिद्धांत; अहिंसा का पालन कठोरता से किया जाता है।
सत्य (Truthfulness)	वचन और कर्म में सत्यता को महत्त्व दिया जाता है।	महत्त्वपूर्ण गुण; ईमानदारी और पारदर्शिता को बढ़ावा दिया जाता है।
अस्तेय (Non-Stealing)	चोरी और बेईमानी का विरोध	सामग्री और बौद्धिक संपत्ति (समकालीन संदर्भों में जैसे NFT) तक विस्तृत है।

पहलू	बौद्ध नैतिकता	जैन नैतिकता
अपरिग्रह (Non-Possessiveness)	सामग्री इच्छाओं से मुक्ति को प्रोत्साहित करता है।	न्यूनतम आवश्यकताओं और आसक्ति से मुक्ति को प्रोत्साहित करता है।
अनासक्ति के प्रति दृष्टिकोण	मध्यमार्ग पर और आसक्ति कम करने पर ध्यान केंद्रित करता है।	नैतिकता के माध्यम से व्यक्तिगत पवित्रता और चारित्रिक संवृद्धि को बढ़ावा देता है।
कर्म की अवधारणा	कर्म को 'कार्य - कारण' सिद्धांत से संचालित माना जाता है जो पुनर्जन्म पर प्रभाव डालता है।	कर्म को सूक्ष्म कणों के संचय और पुनर्जन्म पर प्रभाव डालने वाले माना जाता है।
रीति और देवताओं पर दृष्टिकोण	विभिन्न रीतियों की अनुमति और बुद्ध की पूजा के लिए श्रद्धा।	रीतियों की न्यूनता; देवताओं की पूजा को ज्यादा महत्त्व नहीं दिया जाता है।
मुक्ति का लक्ष्य	**निर्वाण:** बुद्धि और ध्यान के माध्यम से दुःख का समाप्ति।	**मोक्ष:** शुद्धता के माध्यम से पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्ति।

कौटिल्य

- **संपत्ति का विज्ञान (Science of Wealth): कौटिल्य ने अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र** में संपत्ति के विज्ञान की व्याख्या की, जिसमें उन्होंने **राष्ट्र की राजनीतिक अर्थव्यवस्था की व्याख्या की है।**
- **शासन (Governance):**
  - **राजा की ख़ुशी उसकी प्रजा की ख़ुशी में निहित है।** उसका ध्यान **कल्याणकारी राज्य पर होता है।**
  - "**यथा राजा तथा प्रजा**" कहावत राजा की ईमानदारी, दक्षता और जवाबदेही के महत्त्व पर प्रकाश डालती है।
  - **राजऋषि की अवधारणा:** एक आदर्श नेता **में राजा और ऋषि के गुणों का संयोजन होता** है। वह **एक राजा की तरह ओजस्वी, सक्रिय और निर्णय लेने की क्षमता रखता है।** साथ ही उसे एक ऋषि की तरह **बुद्धिमान बनकर संसार के आध्यात्मिक** और उच्च स्तर से जुड़ने में सक्षम होना चाहिए और दर्शन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उसमें प्रकृति का आह्वान करने, आत्म-संयम और आत्मा, बुद्धि और सहज ज्ञान, उत्साह जैसे गुण होने चाहिए।
  - उन्होंने इस बात का समर्थन किया कि **विज्ञान शक्ति का एक बड़ा स्रोत है।** उनका यह भी मानना था कि **'शक्ति ही सामर्थ्य है** और **यह वह ताकत है जो मन को बदल देती है।'**
  - युद्ध जैसी स्थिति में, **कौटिल्य** और **मैकियावेली दोनों** एक समान तर्क प्रस्तुत करते हैं। दोनों प्रचार करते हैं कि एक राजा को युद्ध कला में निपुण होना चाहिए। कौटिल्य ने **तीन प्रकार के युद्ध प्रस्तावित किये हैं** :
    - **खुला युद्ध (Open War):** राज्यों के बीच लड़ा जाने वाला युद्ध।
    - **गुप्त युद्ध (Concealed War):** यह गुरिल्ला युद्ध की तर्ज पर लड़ा जाता है।
    - **मूक युद्ध (Silent War):** यह राज्य के अंदर ही लगातार लड़ा जाता है ताकि राजा की शक्ति क्षीण न हो जाए।
  - उन्होंने कहा कि सरकार में **भ्रष्टाचार** स्वाभाविक है क्योंकि स्वार्थी होना मानव स्वभाव है। भ्रष्टाचार पर नियंत्रण करना होगा।
- **अंतरराष्ट्रीय नैतिकता**
  - कौटिल्य के अनुसार सभी राष्ट्र-राज्यों द्वारा विदेशनीति और कूटनीति का पालन तभी तक किया जाता है जब तक उनके स्वार्थों और हितों की पूर्ति होती है।
  - अंतरराष्ट्रीय राजनीति के संदर्भ में कौटिल्य और वेबर के विचारों में साम्यता दिखती है कि, ***"अंतरराष्ट्रीय राजनीति में कोई नैतिकता नहीं है।"***
  - कौटिल्य ने आपराधिक न्याय और युद्ध न्याय के सिद्धांतों की भी व्याख्या की, उनके अनुसार युद्ध में पराजित लोगों के प्रति दया दिखाना चाहिए।

तिरुवल्लुवर (THIRUVALLUVAR)

- **सत्यता** : एक झूठ को भी सच माना जा सकता है यदि वह झूठ हानिरहित हो और निर्विवाद लाभ पहुँचाता हो।
- **ईश्वर और धर्म:** ईश्वर और भाग्य न भी चाहें तो भी आपके सच्चे प्रयास ही सफल होंगे।
- **क्षमाशीलता :** प्रतिशोध क्षणिक आनंद देगा लेकिन धैर्य और क्षमा जीवन भर आनंद देगी।
- **सम्यक वाणी:** आग के घाव भी आसानी से ठीक हो जाते हैं लेकिन गंदे शब्दों के घाव कभी ठीक नहीं होते।
- **राष्ट्र-राज्य (Nation-State):** एक राष्ट्र को पाँच प्रमुख तत्त्वों पर काम करना चाहिए: स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था, रक्षा, कृषि और खुशी।
- **अनुप्रयोग** : तिरुवल्लुवर का दर्शन लोगों, समुदायों और राष्ट्र-राज्यों के बीच प्रतिशोध के आधुनिक प्रयासों के लिए मार्गदर्शक बन जाता है। नास्तिकों को अधिक सफलता मिलना, **गांधीजी की लोगों को उनकी अज्ञानता के लिए क्षमा करने की क्षमता और बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग जैसे उदाहरण तिरुवल्लुवर की नीति पर आधारित हैं।**

स्वामी विवेकानंद

- **तर्कवाद (Rationalism)** : स्वामी विवेकानंद भारत में **तर्कवादी आंदोलन के नेतृत्वकर्ता और वेदांत दर्शन** के अनुयायी थे। वे सुखी जीवन के लिए पश्चिमी और भारतीय दर्शन के मिश्रण के समर्थक के थे।
- **शिक्षा** : लोगों को जागृत करने के लिए उन्होंने **राम-कृष्ण मिशन और बाद में राम-कृष्ण मठ की स्थापना की।** उन्होंने अंध आध्यात्मिक विश्वासों की निंदा की और धर्म में तर्कसंगतता की खोज की।
- **बंधुत्व : विश्व धर्म संसद सम्मेलन** में अपने प्रतिष्ठित भाषण के माध्यम से उन्होंने भारत और विश्व के लोगों के बीच बंधुत्व विकसित किया।
- **अनुप्रयोग** : बंधुत्व के बारे में उनके विचार आज अधिक प्रासंगिक हैं क्योंकि दुनिया एक वैश्विक गाँव बन गई है और विभिन्न पृष्ठभूमि के लोग एक दूसरे के करीब आ गए हैं, जिसके कारण नस्लीय और सांप्रदायिक संघर्ष हो रहे हैं जैसा कि हाल ही में **फ्रांस में चार्ली हेब्दो मामले** और **अमेरिका** में **जॉर्ज फ्लॉयड मामले में देखा गया।**

मोहनदास करमचंद गांधी

महात्मा गांधी की महत्त्वपूर्ण शिक्षाएँ

- **शक्ति के दो प्रकार**: प्रेम पर आधारित शक्ति, दंड के भय पर आधारित शक्ति की तुलना में अधिक प्रभावी और स्थायी होती है। **प्रेम और सहिष्णुता में** अशांति और उथल-पुथल के बीच भी **संघर्षों को सुलझाने और शांति** स्थापित करने की क्षमता है। **शत्रुओं के साथ रचनात्मक बातचीत से शांतिपूर्ण समाधान** निकल सकते हैं, क्योंकि हर युद्ध अंततः **शांति समझौते के साथ समाप्त होता है।**
- **सिविल सेवकों के लिए :** समाज की सेवा करते समय **उच्च सहिष्णुता सूचकांक** होना चाहिए। यह **निर्णय लेने में समावेशिता, वस्तुनिष्ठता और तटस्थता लाता है।**
  - **उदाहरण- LGBTQ+ समुदाय** के लिए स्वीकृति उन्हें सरकार की कल्याण योजना का विस्तार करके विकास की मुख्यधारा में लाती है।
- **आंख के बदले आंख पूरी दुनिया को अंधा बना देगी:** पूरे इतिहास में जिद ने अक्सर मानवीय संघर्षों को बढ़ावा दिया है, लेकिन बेहतर भविष्य अपने विरोधियों को समझने, कूटनीति का उपयोग करने और विवादों को सुलझाने के लिए करुणा दिखाने की हमारी क्षमता पर निर्भर करता है।
- **हमें वह बदलाव करना चाहिए जो हम दुनिया में देखना चाहते हैं:** महात्मा गांधी ने अपने वकालत के सफल पेशे का त्याग करके, सरल जीवन अपनाकर और नमक मार्च का नेतृत्व करके अपने आदर्शों का उदाहरण दिया, जिससे लाखों लोगों को अंग्रेजों को नुकसान पहुँचाए बिना आजादी के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया।

ट्रस्टीशिप (न्यासिता)

- धनवान लोगों को जन कल्याण की देखभाल करने वाले ट्रस्ट के ट्रस्टी के रूप में कार्य करना चाहिए।
- **ट्रस्टीशिप (न्यासिता) का विचार** यह स्पष्ट करता है कि **धन और संसाधन, चाहे इनका "मालिक" कोई भी हो, को समाज** और उसके सभी लोगों की बेहतरी में मदद करनी चाहिए।
- यह ऐसा करने का दायित्व उन लोगों पर डालता है जिनके पास धन है। यह **उनके अहिंसा के दर्शन की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है** अर्थात् अमीरों को बाहरी दबाव से मजबूर होकर नहीं बल्कि अपनी इच्छा से ऐसा करना चाहिए।
- यह विचार इस **मानव स्वभाव में विश्वास रखता है**, कि यदि आप उन पर भरोसा करते हैं तो अंततः लोग सही काम करेंगे।
- **समतावादी समाज के** निर्माण के लिए इस दृष्टिकोण की प्रभावशीलता पर बहुत संदेह है। लेकिन दीर्घावधि में, हम जिस दुनिया में रहते हैं, उसकी वास्तविकता में यह दृष्टिकोण अधिक स्थायी रूप से प्रभावी होगा।

ट्रस्टीशिप के विचार की प्रासंगिकता

- **व्याप्त असमानता**: हाल ही में, **ऑक्सफैम की रिपोर्ट "इनइक्वेलिटी किल्स (Inequality Kills)"** शीर्षक से जारी की गई, इस रिपोर्ट के अनुसार कोविड महामारी के कारण वैश्विक स्तर पर और भारत में आय असमानता और अधिक बढ़ गई है। इस असमानता के कारण हर चार सेकंड में कम से कम एक व्यक्ति की मृत्यु होती है।
- **पर्यावरण का क्षरण**: **ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन** वैश्विक जलवायु को प्रभावित कर रहा है, तथा विभिन्न विनाशकारी आपदाओं और बीमारियों का कारण बन रहा है।
- **प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन**: खनिज, तेल, गैस और कोयला गैर-नवीकरणीय संसाधन हैं। सामग्री और ऊर्जा स्रोतों के रूप में उनके उपयोग से पृथ्वी के भंडार में कमी आती है।

ट्रस्टीशिप, 21वीं सदी की विभिन्न चुनौतियों का समाधान प्रदान करती है

- **संधारणीय उपभोग (Sustainable consumption):** दूसरों को नुकसान पहुँचाए बिना जरूरत के अनुसार उपभोग करना।
- **श्रम की गरिमा (Dignity of labour):** जीवन-यापन के लिए उचित न्यूनतम मजदूरी और मानवीय कार्य-स्थितियाँ सुनिश्चित करना।
- **धन का न्यायसंगत वितरण (Equitable distribution of wealth):** वंचितों के सामाजिक कल्याण का ध्यान रखना अमीरों की नैतिक जिम्मेदारी है।
- **मानव जीवन का संवर्धन (Enrichment of human life):** ट्रस्टीशिप के गांधीवादी विचार का मूल मानव जीवन का विकास, उत्थान और संवर्धन है, न कि मानवीय और सामाजिक मूल्यों के प्रति अल्प सम्मान के साथ उच्च जीवन स्तर प्राप्त करना।

सर्वोदय

"व्यक्ति का कल्याण सभी के कल्याण में निहित है। समावेशी विकास के पीछे यही मूल विचार है।"

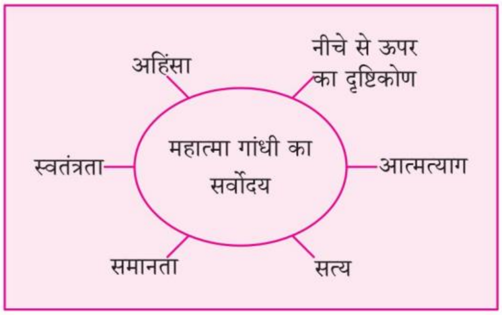

- सर्वोदय की अवधारणा सभी के उत्थान और सभी की प्रगति के इर्द-गिर्द घूमती है। यह एक व्यापक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, नैतिक और आध्यात्मिक दर्शन है। यह नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर बहुत जोर देता है। इसका उद्देश्य नए सामाजिक और आर्थिक मूल्यों का निर्माण करना है। उनके दर्शन को निम्नलिखित में देखा जा सकता है:
  - **आत्म-निर्भर ग्रामीण नेटवर्क** का विकास जहाँ उत्पादन का मुख्य उद्देश्य स्वयं के लिए उपभोग होता है।
  - रक्त संबंधियों से परे पारिवारिक संबंधों को बढ़ावा देना।
  - सभी को समान रूप से प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए और **स्वतंत्रता** के मूल्य को बढ़ावा देना चाहिए।
  - **सभी लोग प्रेम, बंधुत्व, सत्य, अहिंसा और आत्म-त्याग की भावना से ओतप्रोत होंगे।** समाज अहिंसा के आधार पर कार्य करेगा।
  - कोई दलगत प्रणाली और बहुमत का शासन नहीं होगा तथा समाज बहुसंख्यकों के अत्याचार की **बुराई से मुक्त होगा।**

- राजनीति, सत्ता का साधन नहीं बल्कि सेवा का साधन होगी।
- व्यक्ति को इससे बहुत कम लाभ होगा। प्रत्येक गुण का विकास एक-दूसरे पर निर्भर करता है। यदि सभी गुणों में थोड़ा-थोड़ा सुधार किया जाए, तो व्यक्ति को अधिक लाभ होगा।

- **गांधीजी ने सर्वोदय की अवधारणा को आगे बढ़ाया, जो तीन बुनियादी सिद्धांतों पर आधारित थी:**
  - सभी की कल्याण में ही व्यक्ति का कल्याण निहित है।
  - एक वकील का काम, नाई के काम के समान ही मूल्यवान है, क्योंकि सभी को अपने काम से आजीविका कमाने का समान अधिकार है।
  - श्रमिक का जीवन, अर्थात् किसान और हस्तशिल्पकार का जीवन ही जीने योग्य जीवन है।

सत्याग्रह

सत्याग्रह: सत्याग्रह का उद्गम उपनिषदों, तथा बुद्ध, महावीर और लियो टॉल्स्टॉय और **जॉन रस्किन** सहित कई अन्य महान लोगों की शिक्षाओं में पाया जा सकता है।

- गांधीजी ने उचित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अनुचित साधनों को अस्वीकार करते हुए **शुद्ध साधनों और साध्य के महत्त्व पर बल दिया।**
- उनकी **अहिंसक कार्रवाई की विधि** 'सत्याग्रह' में **दूसरों को नुकसान पहुँचाए बिना अन्याय के खिलाफ आत्म-बल का प्रयोग करना शामिल था। इसके लिए सत्य, आत्म-त्याग, शांति और अहिंसा** के निरंतर अनुसरण की आवश्यकता थी।
- सत्याग्रह संघर्ष समाधान से कहीं आगे तक जाता है, यह व्यक्तियों के बीच संबंधों की गुणवत्ता पर जोर देता है और इसके लिए दृढ़ इच्छाशक्ति एवं दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है।

सत्याग्रह के स्तम्भ (नैतिक पहलू) - सत्याग्रह के तीन स्तम्भ

- शांति के लिए गांधीवादी प्रयास अहिंसा की नींव पर टिके हुए हैं।
- महात्मा गांधी ने संघर्ष समाधान के लिए सत्याग्रह [सत्य पर जोर या सत्य के लिए उत्साह] की विधि का इस्तेमाल किया जिसके **तीन स्तंभ हैं** :
  - **सत - जिसका तात्पर्य खुलापन, ईमानदारी और निष्पक्षता है:**
- प्रत्येक व्यक्ति की राय और मान्यताएँ सत्य का हिस्सा दर्शाती हैं;
- सत्य को और अधिक देखने के लिए हमें अपनी सच्चाइयों को सहयोगपूर्वक साझा करना चाहिए; इसका तात्पर्य संवाद करने की इच्छा और ऐसा करने के दृढ़ संकल्प से है।
  - **अहिंसा - दूसरों को चोट पहुँचाने से इनकार:**
- अहिंसा बात-चीत के प्रति हमारी प्रतिबद्धता और सत्य के हमारे अंशों को साझा करने से निर्धारित होती है।
- हिंसा बात-चीत के माध्यमों को बंद कर देती है; अहिंसा की अवधारणा अधिकांश प्रमुख धर्मों में दिखाई देती है, जो बताती है कि यद्यपि अधिकांश लोग इसका पालन नहीं करते हैं, फिर भी इसे एक आदर्श के रूप में सम्मान दिया जाता है;
- अहिंसा हमारी चिंता की अभिव्यक्ति है कि हमारी अपनी और दूसरों की मानवता प्रकट हो और उसका सम्मान किया जाए; और अहिंसा का पालन करने के लिए हमें अपने विरोधियों से सच्चा प्रेम करना सीखना चाहिए।
  - **तपस्या-आत्म-त्याग की इच्छा:**
- एक सत्याग्रही को अपने द्वारा शुरू किए गए संघर्ष के लिए किसी भी प्रकार का त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए, न कि अपने प्रतिद्वंद्वी पर ऐसा त्याग या कष्ट थोपना चाहिए।
- सत्याग्रही को सदैव विरोधियों को प्रतिष्ठा बचाने वाला रास्ता उपलब्ध कराना चाहिए।
- इसका लक्ष्य सत्य और न्याय के व्यापक क्षितिज की खोज करना है, न कि प्रतिद्वंद्वी पर विजय प्राप्त करना।

गांधीजी द्वारा सत्याग्रह का प्रयोग

- सत्याग्रह को किसी भी तरह के उत्पीड़न का विरोध करने के लिए आत्मिक शक्ति का हथियार भी माना गया है। गांधी जी जहाँ सत्याग्रह को जीवन जीने का एक तरीका मानते थे, वहीं भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान सत्याग्रह को राज्य की सत्ता का विरोध करने और लोगों के सामान्य कल्याण के लिए विभिन्न चीजों को हासिल करने के लिए एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया गया था।
- सविनय **अवज्ञा आंदोलन, जो दांडी में नमक कानून** तोड़ने के साथ शुरू हुआ था, और **भारत छोड़ो आंदोलन ऐसे** उत्कृष्ट उदाहरण थे जब गांधीजी और उनके सहयोगियों ने सत्याग्रह को आत्मिक शक्ति के हथियार के रूप में इस्तेमाल किया।

वर्तमान में सत्याग्रह की प्रासंगिकता

- **औद्योगिक प्रतिष्ठान में विवाद हेतु** : विवादों और संघर्षों के शांतिपूर्ण समाधान के लिए सत्याग्रह अन्य तरीकों की तुलना में एक व्यवहार्य विकल्प होगा।
- **रूस-यूक्रेन युद्ध के समान युद्ध जैसी परिस्थितियों का समाधान** : सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों का यथासंभव छोटे से छोटे तरीके से प्रयोग निश्चित रूप से शांति और सद्भाव लाने में एक बड़ा योगदान देगा।
- **भ्रष्टाचार और भौतिकवाद की दौड़ को कम करना:** वर्तमान सामाजिक-आर्थिक राजनीतिक व्यवस्था में, व्यक्ति को धन, विलासिता और शक्ति के प्रभाव से दूर करने की सख्त आवश्यकता है।
- जहाँ भी लक्ष्य समृद्धि, कल्याण और विकास हो, वहाँ सत्य और अहिंसा की उपयोगिता सदैव प्रासंगिक रहेगी, क्योंकि **सत्य और अहिंसा के बिना शांति नहीं हो सकती और शांति के बिना विकास नहीं हो सकता।**

राजनीति पर गांधी के विचार

- वह **"धार्मिक राजनीति" के खिलाफ थे** जो **भ्रष्टाचार, संप्रदायवाद** और **सांप्रदायिकता पर आधारित है**। उन्होंने यह भी कहा, **"राजनीति सत्ता का साधन नहीं बल्कि सेवा का साधन होनी चाहिए।"**
- गांधीजी का मुख्य उद्देश्य आक्रोश, घृणा और अवपीड़न को खत्म करके **आधुनिक राजनीति को भीतर से सभ्य बनाना था।**
- उनकी अहिंसा की राजनीति सामूहिक शक्ति को इस तरह से संगठित करने की एक विधि थी जो अनुकरणीय और अभिनव तरीके से अपनी नैतिक शिक्षा प्रदान करती है।
- गांधीजी ने हमेशा राजनीति को नैतिकता या धर्म से लिया और राजनीति को केवल तर्क का नहीं बल्कि दिल का कार्य माना।
- उन्होंने एक समर्पित और प्रतिबद्ध राजनीतिक लोकाचार का समर्थन किया, जो राजनीति में "गलत काम" की आवश्यकता को स्वीकार नहीं करता था।

गांधी जी की ग्यारह प्रतिज्ञाएँ

- स्वदेशी
- शरीर श्रम
- सत्य
- ब्रह्मचर्य
- अपरिग्रह
- अभय
- अस्पृश्यता निवारण
- अहिंसा
- अस्तेय
- सर्वधर्म समभाव
- अस्वाद

गांधी जी के अनुसार सात पाप

- **"यंग इंडिया"** में इन सात पापों का उल्लेख किया था।

पाप का प्रकार	हाल के उदाहरण
सिद्धांत विहीन राजनीति	• कर्नाटक में दलबदल के हालिया मामले। • लोकसभा के 543 सांसदों में से 251 के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज हैं।
परिश्रम रहित धनोपार्जन	• क्रिप्टोकरेंसी की बढ़ती कीमतों ने अनेक लोगों को अत्यधिक संपन्न कर दिया है। • बैंकों में मौजूदा 11 लाख करोड़ रुपये का NPA भी लोगों की भ्रष्ट और चालाकी भरी मानसिकता को दर्शाता है।
विवेक रहित सुख	• किशोरों पर वैवाहिक बलात्कार का ज्वलंत मुद्दा। • विकास के बहाने पर्यावरण का विनाश करना।
चरित्र विहीन ज्ञान	• राष्ट्रीय बुनियादी ढाँचे को बाधित करने के लिए साइबरस्पेस का उपयोग जैसा कि 2021 के मुंबई ब्लैकआउट में देखा गया। • अल्ट्रासाउंड परीक्षणों का उपयोग करके कन्या भ्रूण हत्या के कारण "महिलाओं की घटती संख्या" के हालिया मामले।
मानवता विहीन विज्ञान	• हाल ही में इजराइल और गाजा पट्टी के बीच मिसाइलों की बमबारी हुई है। • कैंसर के सबूत के बावजूद सरकारें जहरीले पेय पदार्थों और सिगार पर प्रतिबंध नहीं लगा रही हैं। • 1945 में जापान पर परमाणु हथियारों का प्रयोग मानवता पर विज्ञान का हमला है।
सदाचार रहित व्यापार	• हाल ही में निजता के मुद्दे पर गूगल और फेसबुक का अमेरिकी सीनेट के साथ झगड़ा हुआ था। • बॉलीवुड गानों और फिल्मों में सिर्फ अपनी सामग्री का विपणन करने के लिए महिलाओं के शरीर को लेकर लैंगिक भेदभाव देखने को मिलता है।
त्याग रहित धर्म (मानवसेवा = माधव सेवा)	• सभी धर्मों में धार्मिक कट्टरवाद सांप्रदायिक तनाव का कारण बन रहा है जैसा कि हाल ही में फ्रांस में देखा गया है। • भक्ति की अपेक्षा कर्मकाण्डवाद का विकास।

- **अनुप्रयोग** : गांधी के सात पाप आज के संदर्भ में परिवार, समाज से लेकर जीवन के हर क्षेत्र में और यहाँ तक कि सरकारी स्तर पर भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।

अमर्त्य सेन

- **क्षमता दृष्टिकोण (The Capability Approach)**: सरकार और व्यक्ति को मौद्रिक शर्तों के संकीर्ण आधार पर मापने के बजाय कल्याण के लिए कौशल, मूल्यों और नैतिकता के विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- **सामाजिक कल्याण (Social Welfare): सरकार को व्यक्तिगत अधिकारों,** सामूहिक वृद्धि और विकास के लिए अल्पसंख्यकों की आकांक्षाओं की समस्या का समाधान करना चाहिए।
- **मानव विकास (Human Development):** उन्होंने **महालनोबिस मॉडल के विरुद्ध तर्क दिया** कि सरकारों को आर्थिक कारकों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, खाद्य वितरण प्रणाली और अन्य सामाजिक सुधारों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- **अनुप्रयोग (Application): उनके विचारों को संकलित किया गया है तथा** संयुक्त राष्ट्र द्वारा सकल घरेलू उत्पाद और GNP जैसे आर्थिक विकास मापदंडों के पूरक के रूप में मानव **विकास सूचकांक तैयार किया गया है।**

रबीन्द्रनाथ टैगोर

- **रबीन्द्रनाथ टैगोर का** जन्म 7 मई, 1861 को कलकत्ता में हुआ था। वे **बंगाली कवि, उपन्यासकार और चित्रकार थे और** उन्होंने पश्चिम में भारतीय संस्कृति को पेश करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **टैगोर के शिक्षा संबंधी विचार:**
  - टैगोर ने **पूर्व और पश्चिम के विचारों के एक नए मिश्रण की कल्पना की।** उन्होंने भारतीय दर्शन के अध्यात्मवाद और पश्चिमी लोगों के प्रगतिशील दृष्टिकोण एक साथ मिश्रण किया।
  - **टैगोर एक प्रकृतिवादी थे**; प्रकृति विद्यार्थियों के लिए सर्वोत्तम शिक्षक है। प्रकृति विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ प्रदान करेगी। **विद्यार्थी पर कुछ भी सीखने के लिए कोई बाहरी दबाव नहीं डाला जाना चाहिए।** यह प्रकृति ही है जो उसके व्यवहार और चरित्र को आकार देगी।
  - टैगोर ने भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में पहली बार **छात्रों के लिए पुस्तक-केंद्रित शिक्षा को अस्वीकार करके एक नया मील का पत्थर स्थापित किया।**
  - टैगोर के अनुसार **शिक्षण व्यावहारिक एवं वास्तविक होना चाहिए न कि कृत्रिम** एवं सैद्धांतिक। शिक्षा को निश्चित रूप से एक शिक्षार्थी के भीतर रचनात्मक कौशल को बढ़ाना चाहिए।
  - टैगोर हमारे देश की ग्रामीण गरीबी से अवगत थे। अत: **वे शिक्षा के माध्यम से गरीबी मिटाना चाहते थे।** उनके अनुसार, छात्रों को विभिन्न शिल्पों में दिया गया व्यावहारिक प्रशिक्षण उन्हें अपने क्षेत्र में कुशल कारीगर बनाएगा।

रबीन्द्रनाथ टैगोर के जीवन से सीख और उनकी प्रासंगिकता

- **एकात्मकता और समानता का सिद्धांत (Maxim of Oneness and Equality):** इसका अर्थ है सभी प्राणी परस्पर सम्बद्ध हैं और पृष्ठभूमि या स्थिति में अंतर की परवाह किए बिना सभी के साथ सम्मान और गरिमा के साथ व्यवहार करना चाहिए।
- **करुणा का सिद्धांत (Maxim of Compassion):** टैगोर ने मानवीय पीड़ा को कम करने के लिए संवेदनापूर्ण प्रतिक्रियाओं की वकालत करते हुए अपने कार्यों और लेखों में करुणा का उदाहरण दिया।

- **मानवता का सिद्धांत (Maxim of Humanity):** वह व्यक्तियों को अपनी मानवता को पूरी तरह से अपनाने और समाज की भलाई के लिए नैतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
- **शांति का महत्त्व (Value of Peace):** उन्होंने हिंसा या अवपीड़न का सहारा लेने के बजाय बातचीत, समझ और पारस्परिक सम्मान के माध्यम से संघर्षों को हल करने के महत्त्व पर जोर दिया।

कबीर

- **संत कबीर दास का जन्म उत्तर प्रदेश** के वाराणसी शहर में हुआ था। वह **15वीं शताब्दी के रहस्यवादी कवि, संत और समाज सुधारक तथा भक्ति आंदोलन** के एक महान प्रणेता थे।
- **कबीर की सहिष्णुता:** संत कबीर ने भारत के समुदायों, मुख्य रूप से हिन्दुओं और मुसलमानों को एकजुट करने की कोशिश की, जो प्रमुख समुदाय थे। उन्होंने अनेक रूपक दिए जैसे कि "**हिंदू और मुसलमान दोनों एक ही मिट्टी के बने हैं**"। उनकी शिक्षाएँ समकालीन समय में महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं जब दुनिया भर में धार्मिक तनाव बढ़ रहा है।
- **ज्ञान के बारे में कबीर के विचार:** कबीर ने ज्ञान के विकास पर जोर दिया। वह अपने दोहों के माध्यम से ज्ञान प्रदान करते हैं, जैसे "**अगर मैं सच कहता हूँ तो लोग मुझे मारने के लिए दौड़ पड़ते हैं, लेकिन अगर मैं झूठ बोलता हूँ तो वे मुझ पर भरोसा करते हैं**"। यह स्वयं को सच्चा ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता का प्रतीक है। आधुनिक समय में भी यह सच है क्योंकि लोग कड़वी सच्चाई से आहत हो जाते हैं लेकिन अपने विचारों के अनुरूप झूठ और औसत दर्जे के तंत्र को स्वीकार करने के लिए तैयार रहते हैं।
- **जाति व्यवस्था और कुरीतियों के विरोधी** : कबीर जाति व्यवस्था के बहुत बड़े विरोधी थे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ईश्वर ने सभी को समान बनाया है। उन्होंने अपने अनुयायियों को छुआछूत, ऊँच-नीच की भावना आदि जैसी अमानवीय प्रथाओं को छोड़ने की सलाह दी। उन्होंने पत्थर की मूर्तियों की पूजा, यहाँ तक कि विभिन्न देवी-देवताओं की पूजा का भी विरोध किया और वे धर्म में अनुष्ठानों और समारोहों के खिलाफ थे।

वर्तमान में कबीर की प्रासंगिकता

- कबीर **पाखंड के सख्त खिलाफ थे और उन्हें लोगों का दोहरा मापदंड** पसंद नहीं था। उन्होंने हमेशा लोगों को दूसरे जीवों के प्रति **दयालु** होने और सच्चा प्रेम करने का उपदेश दिया। जो आजकल दिखाई नहीं पड़ता है।
- उन्होंने अच्छे लोगों की संगति की आवश्यकता पर जोर दिया जो मूल्यों और सिद्धांतों पर कायम रहते हैं और इस बात पर जोर दिया कि **प्रेम ही एकमात्र ऐसा माध्यम है जो पूरी मानव जाति को** भाईचारे के अटूट बंधन में बांध सकता है। उन्होंने सभी को नफरत छोड़ने और प्रेम करने की सलाह दी। आज की दुनिया अत्यधिक भौतिकवाद से ग्रसित है।
- दुनिया में व्याप्त गहरी आर्थिक असमानताएँ दुनिया भर में असंतोष को जन्म दे रही हैं। **कबीर के करुणामय नैतिकता के सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं।**
- भ्रष्टाचार भारत में एक विकट समस्या है जो राष्ट्र की जड़ों को खोखला कर रही है। कबीर ने ईमानदारी से जीवन जीने पर जोर दिया, इसे यदि सही अर्थों में समझा जाए तो यह व्यक्तिगत दृष्टिकोण को बदलने का एक तरीका प्रदान करेगा।
- सांप्रदायिकता भारतीय सामाजिक संदर्भ में एक छिपी हुई बुराई है, कबीर की आवश्यक समन्वयवाद और सार्वभौमिकता की अवधारणा इस मुद्दे को कुछ हद तक हल करने में मदद कर सकती है।

मदर टेरेसा

मदर टेरेसा का जन्म 1910 में स्कोप्जे (पूर्व यूगोस्लाविया) में हुआ था, उन्होंने 1928 में सिस्टर्स ऑफ लोरेटो (Sisters of Loreto) में शामिल होने पर 'टेरेसा' नाम अपनाया था। उन्होंने अपना जीवन गरीबों की सेवा में समर्पित कर दिया और एक स्वतंत्र नन बन गईं, उन्होंने कलकत्ता में बेघर बच्चों के लिए एक स्कूल की स्थापना की और मिशनरीज ऑफ चैरिटी की स्थापना की।

उनके जीवन से मुख्य सबक

- **महान उद्देश्यों को आगे बढ़ाना:** मदर टेरेसा ने छह दशक गरीबों की सहायता में बिताए, चुनौतियों के बावजूद दृढ़ता और आस्था का प्रदर्शन किया।
- **स्थानीय स्तर पर शुरुआत करना:** बदलाव की शुरुआत घर और समुदाय से होती है, मौद्रिक दान की बजाय दिल से किए गए योगदान पर जोर देना चाहिए।
- **प्रेम और सकारात्मकता का प्रसार:** उनके स्थायी गुणों में एक गर्मजोशी भरी मुस्कान और असीम प्रेम शामिल था, जो दूसरों को करुणा अपनाने के लिए प्रेरित करता था।

आदि शंकराचार्य

आदि शंकराचार्य, जिन्हें शंकर के नाम से भी जाना जाता है, 8वीं शताब्दी में भारत के एक प्रसिद्ध दार्शनिक थे। हिंदू धर्म को आकार देने के लिए उन्हें अत्यंत सम्मान के साथ देखा जाता है। शंकर ने **अद्वैत वेदांत दर्शन** की स्थापना की, जो बताता है कि वास्तविकता एक ही है और हमारे आंतरिक स्व और ब्रह्मांड के बीच कोई वास्तविक अंतर नहीं है।

मुख्य शिक्षाएं

- **ज्ञान की खोज:** अस्तित्व की सच्ची प्रकृति को समझने के साधन के रूप में ज्ञान की खोज। यह नैतिक जीवन के आवश्यक घटकों के रूप में बौद्धिक जिज्ञासा और आजीवन सीखने के महत्त्व पर प्रकाश डालता है।
- **अद्वैत का पालन (अद्वैत वेदांत):** इसका अर्थ है कि परम सत्य अद्वैत है, जो भेदभाव और विभाजन से परे है। यह सिद्धांत एकता और परस्पर जुड़ाव की भावना को बढ़ावा देता है, सभी प्राणियों के प्रति करुणा, सहानुभूति और सम्मान को बढ़ावा देता है।
- **विविधता के प्रति सम्मान:** विभिन्न धर्मों के प्रति खुलेपन और सहिष्णुता का यह दृष्टिकोण समाज में आपसी समझ, सद्भाव और सह-अस्तित्व को बढ़ावा देता है।
- **त्याग और वैराग्य:** उन्होंने एक सरल और संयमित जीवन जीकर भौतिक सम्पत्ति और क्षणिक सुख की अपेक्षा आंतरिक संतोष और आध्यात्मिक पूर्णता के महत्त्व पर जोर दिया। यह नैतिक सिद्धांत व्यक्तियों को आंतरिक शांति, स्थिरता और बंधन से मुक्ति पाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

रामानुजाचार्य

रामानुजाचार्य का जन्म 1017 में तमिलनाडु के श्रीपेरंबदूर में हुआ था। वह एक प्रतिष्ठित दार्शनिक और समाज सुधारक थे। वे **विशिष्टाद्वैत के लिए प्रसिद्ध हैं,** यह दर्शन ब्रह्म को सर्वोच्च वास्तविकता के रूप में महत्त्व देता है, लेकिन बहुलता की विशेषता रखता है।

मुख्य शिक्षाएं

- **भक्ति और आस्था:** उन्होंने लोगों को ईश्वर में आस्था और भरोसा रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उनका मानना था कि भक्ति के माध्यम से व्यक्ति आंतरिक शांति और जीवन की चुनौतियों पर विजय पाने की शक्ति पा सकता है।

- **सेवा और त्याग:** वे निःस्वार्थ सेवा और जन कल्याण के लिए व्यक्तिगत इच्छाओं का त्याग करने के महत्त्व में विश्वास करते थे। उन्होंने बताया कि जरूरतमंदों की मदद करने से संतुष्टि और खुशी मिलती है।
- **एकता और सद्भाव:** उन्होंने सहिष्णुता और विविध दृष्टिकोणों की स्वीकृति की वकालत की। उनका मानना था कि विविधता को अपनाने से समुदाय समृद्ध होते हैं और परस्पर सम्मान बढ़ता है।

प्रशासक

ई. श्रीधरन

ई. श्रीधरन को भारत का मेट्रो मैन भी कहा जाता है, उन्होंने भारत में सार्वजनिक परिवहन को पुनर्परिभाषित करने की दिशा में काम किया।

- **दृढ़ता (Perseverance): गेज के चयन को लेकर रेल मंत्री के साथ उनके मतभेदों के बावजूद वे कोंकण रेलवे को** उच्चतम गुणवत्ता के साथ विकसित करने में सफल रहे। उन्होंने अपनी मेहनत और दृढ़ता से मंत्री को राजी कर लिया।
- **साम्यता (Equity)**: **दिल्ली मेट्रो** उनके सफल उपक्रमों में से एक है जहाँ उन्होंने सभी के लिए सस्ती यात्रा सुनिश्चित की।
- **कार्य संस्कृति की नैतिकता (Ethics of work culture):** उनका कहना है कि **"कार्य में नैतिकता एक अनिवार्यता है, विकल्प नहीं"**। उन्होंने कार्य वातावरण के प्रमुख सिद्धांत के रूप में समय की पाबंदी, पेशेवर अंदाज और दक्षता को बरकरार रखा।

टी.एन. शेषन

टी.एन. शेषन तमिलनाडु कैडर के एक IAS अधिकारी थे जिन्होंने भारत में निर्वाचन प्रणाली पर अपने प्राधिकार की मुहर लगाई।

- **नेतृत्व**: उन्होंने गलत मतदाता सूची, बूथ कैप्चरिंग, चुनाव प्रचार आदि से लेकर कई चुनावी कदाचारों की पहचान की। फिर उन्होंने सभी पहलुओं पर सख्ती से कार्रवाई की और आने वाले अधिकारियों के लिए मील के पत्थर निर्धारित किए।
- **अनुशासन**: वह कानून का कड़ाई से पालन करने के लिए जाने जाते थे। उन्होंने, अपने सहयोगी स्टाफ और राजनेताओं को नियमों का पालन करना सुनिश्चित किया। उदाहरण के लिए, 1994 में उन्होंने प्रधानमंत्री को निर्वाचन संबंधी कदाचार के लिए दो मौजूदा कैबिनेट मंत्रियों को हटाने की सलाह दी। उनके दृष्टिकोण को अक्सर **शून्य विलंब और शून्य कमी वाला दृष्टिकोण कहा जाता था।**
- **नवोन्मेषी: उन्होंने चुनावों के दौरान आदर्श आचार संहिता** का कार्यान्वयन सफलतापूर्वक शुरू किया जो आज भारत में चुनावों का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है।

डॉ. टी. अरुण, IAS

- **नवोन्मेषी, टेक्नोक्रेट:** डॉ. टी. अरुण ने एक ऐप बनाया जिसका उपयोग **पुडुचेरी में तालाबों, झीलों और नहरों के 206 किलोमीटर के खंड सहित 198 जल निकायों का पुनरुद्धार करने के लिए किया गया है। 'नीर पाधिवु (Neer Padhivu)'** ऐप तालाबों की जियोटैगिंग, विशिष्ट पहचान संख्या, GIS, अक्षांश और देशांतर निर्देशांक के साथ जल निकायों को डिजिटलीकरण में मदद करता है।
- **पर्यावरणविद:** यह ऐप रिमोट सेंसिंग सैटेलाइट के ज़रिए भूजल स्तर, मिट्टी की नमी और आकार की स्थिति को अपडेट करता है। इस ऐप ने न केवल पुनरुद्धार प्रक्रिया को कारगर बनाने में मदद की है, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया है कि लोग जल निकायों को गंदा न करें या उन पर अतिक्रमण न करें।

टी. भूबालन, IAS

- **करुणा**: महामारी के दौरान बाल विवाह की घटनाओं में तीव्र वृद्धि से निपटने के लिए उन्हें बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाने और बागलकोट जिले से एक वर्ष में 176 बच्चों को कम उम्र में विवाहित होने से बचाने के लिए जाना जाता है।
- **नेतृत्व**: भूबालन ने इस मुद्दे की गंभीरता को समझते हुए, सरकारी अधिकारियों और स्कूल शिक्षकों को शामिल करके एक टास्क फोर्स का गठन किया।

एस.सीराम संबाशिव

- **करुणा:** एस.सीरामसंबाशिव ने आश्रय गृहों की स्थापना और संचालन के लिए उदयम चैरिटेबल सोसाइटी की स्थापना की। उनका एक लक्ष्य विकास के लिए राज्य की **'नम्मुडे कोझिकोड'** परियोजना के तहत सड़क पर रहने वालों को आश्रय गृह प्रदान करना था। इस पहल के माध्यम से, पिछले 18 महीनों में करीब 1,500 बेघर लोगों को सड़कों से हटाकर विभिन्न आश्रय गृहों में स्थानांतरित किया गया।
- **कर्तव्यपरायणता, सेवा के प्रति समर्पण, करुणा**: इसके अतिरिक्त, जिला प्रशासन ने बेघरों को उनके परिवारों से मिलाने, उन्हें कौशल प्रशिक्षण और रोजगार के अवसर देने की जिम्मेदारी भी ली।
- **नवोन्मेषी**: जिन लोगों के पास आई.डी. कार्ड नहीं थे उन्हें नए कार्ड दिए गए और एक साक्षरता कार्यक्रम, **'ज्ञानोदयम'** और प्रमाणन परीक्षा भी आयोजित की गई ताकि उन्हें स्थिर आय अर्जित करने में मदद मिल सके।

शालिनी अग्रवाल

- **नवोन्मेषी विचार: शालिनी अग्रवाल वडोदरा में पानी की गंभीर कमी की समस्या से निपटने के लिए स्कूलों में वर्षा जल संचयन स्थापित करने** का एक सरल समाधान लेकर आईं; जिससे हर साल 10 करोड़ लीटर पानी बचाकर लाखों छात्रों को मदद मिली।
- **वर्षा काल निधि** 2020 में शुरू की गई थी और इस पहल के माध्यम से, वर्षा जल को छत से एकत्र किया जाता है और पाइप के माध्यम से जमीन में एक चैम्बर की ओर भेजा जाता है। फिर चैम्बर पानी को फिल्टर करता है और यह रिसकर बोरवेल में चला जाता है, जिससे प्रत्यक्ष भूजल पुनर्भरण सुनिश्चित होता है।
- **नेतृत्व**: "वडोदरा में विभिन्न कार्यशालाएँ, प्रतियोगिताएँ और कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें बच्चे ब्रांड एंबेसडर बने और लोगों को संरक्षण के महत्त्व के बारे में जागरूक किया गया।

डॉ. आदर्श सिंह

- **आयोजक, नवोन्मेषी विचार:** डॉ. आदर्श सिंह ने लॉकडाउन का उपयोग **जिले में विलुप्त हो रही एक नदी को पुनर्जीवित करने के लिए किया, जिसमें उन लोगों को रोजगार दिया गया,** जिन्होंने कोविड-19 महामारी के कारण अपनी आजीविका खो दी थी।
- **विवेक:** ऐसे समय में जब लोग अपनी नौकरियाँ खो रहे थे और वेतन में भारी कटौती से प्रभावित हो रहे थे, **डॉ. आदर्श ने** उस समय का उपयोग **रोजगार सृजन** और पर्यावरण संकट से निपटने के लिए किया।

- **नेतृत्व:** उन्होंने ग्रामीणों को जागरूक करने, अतिक्रमण हटाने, नदी के किनारे कचरा फेंकने और खुले में शौच करने से रोकने जैसे उपाय किए। जिला प्राधिकारियों ने भी लोगों को खुले में शौच न करने और नदी में कचरा न फेंकने के बारे में जागरूक किया।

अनुपम शर्मा

- **पर्यावरण हितैषी:** अनुपम शर्मा ने पर्यावरण के हित में काम करते हुए एक ओर करीब 5,000 किलो प्लास्टिक कचरा जमा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, वहीं दूसरी ओर मैहर के तीन गाँवों में **5000 किलो प्लास्टिक कचरे का उपयोग करके रोजगार के स्थायी अवसर पैदा किए गए।**
- **विवेक:** बायोगैस **संयंत्र मां शारदा देवी मंदिर प्रबंधन समिति के वृद्धाश्रम** की कुछ जरूरतों को पूरा करने में मदद करता है जहाँ बायोगैस संयंत्र निवासियों के लिए सुबह और शाम की चाय तैयार करने के लिए पर्याप्त गैस आपूर्ति उत्पन्न करने में मदद करता है और परिसर में उत्पन्न होने वाले गीले कचरे को कम करने में भी मदद करता है।
- **नेतृत्व:** इसका उद्देश्य ग्रामीणों के लिए **रोजगार के अवसर पैदा करने में मदद करना था** और साथ ही उत्पन्न प्लास्टिक कचरे का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करना था।

दामोदर गौतम सवांग

- **टेक्नोक्रेट, नवोन्वेषी: भारत के सर्वश्रेष्ठ DGP** के रूप में चुने गए, उन्होंने आंध्र पुलिस में कई तकनीकी सुधार पेश किए हैं जिससे **प्राथमिकी(FIR), शिकायतें और SOS अनुरोध दर्ज करना आसान और तेज़ हो गया है।**
- **पारदर्शिता, जवाबदेही**: उन्होंने जो तकनीकी परिवर्तन पेश किए, उनसे विभागों में पारदर्शिता और जवाबदेही लाने में मदद मिली। उनके द्वारा शुरू की गई नई फ़ाइल प्रबंधन प्रणाली ने जाँच में तेज़ी लाने और 85 प्रतिशत मामलों को पूरा करने में मदद की।
- **जन-केंद्रित, उपयोगकर्ता अनुकूल**: एपी पुलिस सेवा (AP Police Seva) नामक एक मोबाइल एप्लिकेशन लॉन्च किया गया, जिससे पाँच महीने के भीतर **2,64,000 FIR डाउनलोड किए गए।**
- **समावेशी:** इसके अतिरिक्त, **महिलाओं के लिए दिशा मोबाइल ऐप** भी लॉन्च किया गया, जिसे पाँच महीनों के भीतर 12.57 लाख बार डाउनलोड किया गया।

डॉ. संग्राम सिंह पाटिल

- **करुणा:** पुलिस अधीक्षक **डॉ. संग्राम सिंह पाटिल** द्वारा शुरू की गई पहल ने गोटी कोया आदिवासी समुदाय के 5000 से अधिक सदस्यों को **स्वास्थ्य देखभाल तक बेहतर पहुँच प्राप्त करने में मदद की है।**
- **प्रभावी संसाधन प्रबंधन**: डॉ. संग्राम ने 2019 से जिले की लगभग **100 बस्तियों के 5,000 से अधिक आदिवासियों को पोषण की कमी, हीमोग्लोबिन, त्वचा** और अन्य संबंधित बीमारियों सहित विभिन्न शिकायतों का समाधान करने में मदद की है। इस अधिकारी की मदद से आदिवासी समुदाय के लोगों तक **7 लाख रुपये की मेडिकल मदद पहुँच चुकी है।**

अरुणा सुंदरराजन

- **अरुणा सुंदरराजन:** केरल कैडर की इस IAS अधिकारी को फोर्ब्स पत्रिका ने **'एक बिजनेसवुमेन की तरह सोचने वाली IAS अधिकारी'** के रूप में वर्णित किया था। IT सचिव के रूप में उन्होंने केरल में ई-गवर्नेंस के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने **कुडुम्बश्री परियोजना का** भी नेतृत्व किया, जो आज महिला सशक्तीकरण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो कामकाजी वर्ग की महिलाओं के लिए स्थायी रोजगार की संभावनाएँ पैदा कर रही है।

स्मिता सभरवाल

- **स्मिता सभरवाल को 'पीपुल्स ऑफिसर (People's Officer)'** के नाम से भी जाना जाता है। वह मुख्यमंत्री कार्यालय में नियुक्त होने वाली भारत की पहली महिला IAS अधिकारी हैं।
- उन्होंने वारंगल में नगर आयुक्त के रूप में कार्य करते हुए **"फंड योर सिटी (Fund your City)"** योजना शुरू की, जहाँ सार्वजनिक-निजी भागीदारी से बड़ी संख्या में **फुट ओवर ब्रिज, ट्रैफिक जंक्शन, पार्क, बस-स्टॉप जैसी सार्वजनिक सुविधाओं का निर्माण किया गया।**

डी. सुब्बा राव

1972 बैच के IAS अधिकारी सुब्बाराव भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के 22वें गवर्नर थे।

- भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर के रूप में, उन्होंने **वित्तीय समावेशन, वित्तीय साक्षरता के लिए सुधार किए और ग्रामीण आउटरीच कार्यक्रमों का आयोजन किया।**
- उन्होंने **रॉबर्ट मुंडेल और मार्कस फ्लेमिंग के 'असंभव त्रय (Impossible Trinity)' के विपरीत सेंट्रल बैंकरों के नए त्रय (New Trilemma of Central Bankers) पर एक सिद्धांत भी प्रतिपादित किया, जिसे 'पवित्र त्रय (Holy Trinity)' कहा जाता है।**
- वह स्टीफन हॉकिंग की प्रसिद्ध पुस्तक 'ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' की समीक्षा करने वाले पहले व्यक्ति थे।

निष्कर्ष

किसी व्यक्ति की मूल्य प्रणाली में नैतिक सिद्धांतों का वास्तविक परिवर्तन तब होता है जब वह दार्शनिकों के सिद्धांतों और विचारों को आत्मसात करता है। व्यक्ति को नैतिकता को अपने जीवन का तरीका बनाने का प्रयास करना चाहिए और **समम बोनम (Summum Bonum)** या **परमार्थ (Chief Good) का लक्ष्य रखना चाहिए।**

प्रशासन एवं नेतृत्व

- **प्रशासन को** सहमत लक्ष्यों को कुशलतापूर्वक पूरा करने के लिए दूसरों के साथ और उनके माध्यम से काम करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है। यह मुख्य रूप से मौजूदा उपकरणों और संरचनाओं का उपयोग करके वस्तुनिष्ठ प्रक्रियाओं, दिशानिर्देशों, नीतियों आदि के कार्यान्वयन से संबंधित है।
- **नेतृत्व का** संबंध मानव और भौतिक संसाधनों के निर्देशन और नियंत्रण से है ताकि मूल्य निर्माण किया जा सके और समकालीन समय और प्रौद्योगिकी के अनुसार संरचनाएँ विकसित की जा सकें और इस प्रकार परिभाषित लक्ष्यों और उद्देश्यों से बेहतर प्रदर्शन किया जा सके।
    - **उदाहरण-** एक प्रशासक ने सड़क निर्माण के लिए सरकार द्वारा धनराशि जारी करने का इंतजार किया होता, जबकि आर्मस्ट्रांग पेम (नेता) ने क्राउडफंडिंग के माध्यम से 100 किमी लंबी सड़क का निर्माण किया।

प्रशासक, प्रबंधक और नेता

- **प्रशासक** वह व्यक्ति होता है जो संगठन का रणनीतिक दृष्टिकोण तैयार करने के लिए जिम्मेदार होता है। एक प्रशासक संगठनात्मक संरचना तैयार करता है और दीर्घकालिक योजनाओं पर ध्यान केंद्रित करता है।
- **प्रबंधक** वह व्यक्ति होता है जो प्रशासक के दृष्टिकोण को संचालन योजनाओं में बदलने और तैयार संगठनात्मक संरचना में काम करने वाले कर्मियों को निर्देशित करने, पर्यवेक्षण करने के लिए जिम्मेदार होता है।
- **नेता** वह व्यक्ति होता है जो दूसरों का मार्गदर्शन करता है और उन्हें प्रेरित करता है जिसमें कभी-कभी प्रबंधक भी शामिल हो सकते हैं। वे दूरदर्शिता उन्मुख होते हैं और टीम को सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

प्रबंधक और नेता के बीच अंतर

मापदंड	प्रबंधक	नेता
दृष्टिकोण	• निष्क्रिय दृष्टिकोण जो घोषित उद्देश्य तक सीमित होता है।	• महत्त्वाकांक्षी दृष्टिकोण; वे नई संरचना या प्रक्रियाएँ आरंभ करते हैं
नियुक्ति	• वे आम तौर पर नियुक्त किए जाते हैं	• उन्हें नियुक्त किया जा सकता है या वे किसी समूह के भीतर से उभर सकते हैं।
लक्ष्य के प्रति दृष्टिकोण	• लक्ष्यों के प्रति अवैयक्तिक, एकदिशात्मक दृष्टिकोण।	• व्यक्तिगत भागीदारी, लक्ष्यों के प्रति समग्र दृष्टिकोण।
जन प्रबंधन	• लोगों के साथ भावनात्मक जुड़ाव कम होता है, परस्पर व्यवहार लोगों को सौंपी गई विशिष्ट भूमिकाओं तक ही सीमित होता है।	• लोगों के साथ उच्च भावनात्मक जुड़ाव होता है; कई बार, कई लोग सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रतिस्पर्धी और प्रेरणादायक भावनाएँ उत्पन्न करते हैं।

निष्कर्ष

विचारकों और दार्शनिकों ने अपने सिद्धांतों और दर्शन के माध्यम से एक मजबूत नैतिक और बौद्धिक आधार प्रदान किया है, जिससे तर्कसंगत मूल्यों को निकाला जा सके और उनका योगदान विशेष रूप से शासन के क्षेत्र में और सामान्य रूप से समाज में अधिक नैतिक दृष्टिकोण लाने की दिशा में अग्रणी रहा है।

प्रमुख शब्दावलियाँ

मानक नैतिकता; सदाचार नैतिकता; माईयूटिक्स; यूडेमोनिया; शीलम् परम भूषणम्; निःस्वार्थ कर्म (निष्काम कर्म); निरपेक्ष कर्तव्यादेश; कर्तव्यवाद/ उद्देश्यवाद; नैतिक अहंवाद; गुणात्मक/ मात्रात्मक उपयोगितावाद; मैं की संस्कृति (I-Culture), हम की संस्कृति (We-Culture); अनुबंधवाद; लिव्यातान राज्य; अज्ञानता का पर्दा; क्षमता दृष्टिकोण;

विगत वर्षों के प्रश्न

- गुरु नानक की प्रमुख शिक्षाएँ क्या थीं? समकालीन दुनिया में उनकी प्रासंगिकता की व्याख्या कीजिए। **(2023)**
- "दयालुता के सबसे सरल कार्य प्रार्थना में एक हजार बार झुकने वाले सिरों से कहीं अधिक शक्तिशाली हैं।" - महात्मा गांधी **(2023)**
- "लोगों को जागरूक करने के लिए महिलाओं को जागृत होना चाहिए। जैसे ही वह आगे बढ़ती हैं, परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आगे बढ़ता है, देश आगे बढ़ता है।" - जवाहरलाल नेहरू **(2023)**
- "किसी से घृणा मत कीजिए, क्योंकि जो घृणा आपसे उत्पन्न होगी, वह निश्चित ही एक अंतराल के बाद आप तक लौट आएगी। यदि आप प्रेम करेंगे, तो वह प्रेम चक्र को पूरा करता हुआ आप तक वापस आएगा।" - स्वामी विवेकानन्द **(2023)**
- "किसी की भर्त्सना नही कीजिए : अगर आप मदद का हाथ आगे बढ़ सकते हैं, तो ऐसा कीजिए। यदि नही तो आप हाथ जोड़िए, अपने बंधुओ को आशीर्वचन दीजिए और उन्हे अपने मार्ग पर जाने दीजिए।" – स्वामी विवेकानंद **(2020)**
- "स्वयं को खोजने का सर्वोत्तम मार्ग यह है की अपने आप को अन्य की सेवा में खो दें।" – महात्मा गांधी **(2020)**
- "नैतिकता की एक व्यवस्था जो की सापेक्ष भावनात्मक मूल्यों पर आधारित है केवल एक भ्रांति है, एक अत्यंत अशिष्ट अवधारणा जिसमें कुछ भी युक्तिसंगत नही है और न ही सत्य।" – सुकरात **(2020)**
- आपके लिए इस उद्धरण का क्या अर्थ है? "एक अपरीक्षित जीवन जीने लायक योग्य नहीं है"। - सुकरात **(2019)**
- आपके लिए इस उद्धरण का क्या अर्थ है? "व्यक्ति और कुछ नहीं केवल अपने विचारों का उत्पाद होता है। वह जो सोचता है वही बन जाता है।" – एम.के. गांधी **(2019)**
- आपके लिए इस उद्धरण का क्या अर्थ है? "जहाँ ह्रदय में शुचिता है, वहाँ चरित्र में सुन्दरता है। जब चरित्र में सौन्दर्य है, तब घर में समरसता है। जब घर में समरसता है, तब राष्ट्र में सुव्यवस्था है। जब राष्ट्र में सुव्यवस्था है, तब विश्व में शांति है।" - ए.पी.जे. अब्दुल कलाम **(2019)**
- "नियुक्ति के लिए व्यक्तियों की खोज करते समय आप तीन गुणों को खोजते है: सत्यनिष्ठा, बुद्धिमत्ता और ऊर्जा। यदि उनमें पहला गुण नही है, तो अन्य दो गुण आपको समाप्त कर देंगे।" - वारेन बफेट। **(2018)**
- वर्तमान संदर्भ में निम्नलिखित में से प्रत्येक उद्धरण का आपके विचार से क्या अभिप्राय है?
  - "किसी भी बात को स्वीकार करने या अस्वीकार करने का निर्धारण करने में सही नियम यह नहीं है कि उसमें कोई बुराई है या नहीं; बल्कि यह है की उसमें अच्छाई से अधिक बुराई है। ऐसे बहुत कम विषय होते है जो पूरी तरह बुरे या अच्छे होते हैं। लगभग सभी विषय, विशेषकर सरकारी नीति से संबंधित, अच्छाई और बुराई दोनों के अविच्छेदनीय योग होते हैं, ताकि इन दोनों के बीच प्रधानता के बारे में हमारे सर्वोत्तम निर्णय की आवश्यकता हमेशा बनी रहती है।" – अब्राहम लिंकन
  - "क्रोध और असहिष्णुता सही समझ के शत्रु हैं।" – महात्मा गांधी
  - "असत्य भी सत्य का स्थान ले लेता है यदि उसका परिणाम निष्कलंक सार्वजनिक कल्याण हो।"-तिरुक्कुरल **(2018)**

- "बड़ी महत्त्वाकांक्षा महान चरित्र का भावावेश (जुनून) है। जो इससे संपन्न है वे या तो बहुत अच्छे अथवा बहुत बुरे कार्य कर सकते हैं। ये सब कुछ उन सिद्धांतों पर आधारित है जिनसे वे निर्देशित होते हैं।"- नेपोलियन बोनापार्ट।

  उदाहरण देते हुए उन शासकों का उल्लेख कीजिए जिन्होंने
  - समाज व देश का अहित किया है,
  - समाज व देश के विकास के लिए कार्य किया है। **(2017)**
- "मेरा दृढ़ विश्वास है की यदि किसी राष्ट्र को भ्रष्टाचार मुक्त और सुंदर मनों वाला बनाना है, तो उसमें समाज के तीन प्रमुख लोग अंतर ला सकते है। वे हैं पिता, माता एवं शिक्षक।" -ए. पी. जे. अब्दुल कलाम **(2017)**
- नैतिक विचारकों/दार्शनिकों के दो अवतरण दिए गए हैं। प्रकाश डालिए कि इनमें से प्रत्येक के, वर्तमान संदर्भ में, आपके लिए क्या मायने हैं:
  - "कमज़ोर कभी माफ़ नहीं कर सकते; क्षमाशीलता तो ताकतवर का ही सहज गुण है।"
  - "हम बच्चे को आसानी से माफ़ कर सकते हैं, जो अंधेरे से डरता है; जीवन की वास्तविक विडम्बना तो तब है जब मनुष्य प्रकाश से डरने लगते हैं।" **(2015)**
- तीन महान नैतिक विचारकों/दार्शनिकों के अवतरण नीचे दिए गए हैं। आपके लिए प्रत्येक अवतरण का वर्तमान संदर्भ में क्या महत्त्व है, स्पष्ट कीजिए।
  - "पृथ्वी पर हर एक की आवश्यकता पूर्ति के लिए काफी है पर किसी के लालच के लिए कुछ नहीं।" - *महात्मा गाँधी।*
  - "लगभग सभी लोग विपत्ति का सामना कर सकते हैं, पर यदि किसी के चरित्र का परीक्षण करना है, तो उसे शक्ति/अधिकार दे दो।" - *अब्राहम लिंकन*
  - "शत्रुओं पर विजय पाने वाले की अपेक्षा मैं अपनी इच्छाओं का दमन करने वाले को अधिक साहसी मानता हूँ।" - *अरस्तू* **(2013)**

9 लोक प्रशासन में नैतिकता

लोक प्रशासन में लोक/सिविल सेवा मूल्य और नैतिकता: *स्थिति और समस्याएँ; सरकारी और निजी संस्थानों में नैतिक चिंताएँ और दुविधाएँ; नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में कानून, नियम, विनियम और विवेक; जवाबदेही और नैतिक शासन; शासन में नैतिकता और नैतिक मूल्यों को मजबूत करना; अंतरराष्ट्रीय संबंधों और वित्तपोषण में नैतिक मुद्दे; कॉर्पोरेट गवर्नेंस।*

- लोक प्रशासन में वे सभी गतिविधियाँ शामिल होती हैं, जिनका उद्देश्य **लोक नीति को तैयार करना या लागू करना है।**
- इसमें **सैन्य और नागरिक दोनों मामले शामिल होते हैं,** जैसे कि न्यायालयों का संचालन और कानून प्रवर्तन, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, सार्वजनिक अवसंरचना विकास, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक सुरक्षा आदि सहित विभिन्न विशेषीकृत सरकारी क्षेत्र।

लोक प्रशासन की बुनियादी विशेषताएँ

- **नीतियों का क्रियान्वयन:** यह नीतियों के निर्माण और क्रियान्वयन दोनों से संबंधित होता है।
- **लोगों के जीवन में सुधार करना:** इसका मुख्य उद्देश्य विनियामक निरीक्षण प्रदान करना और जनता को सेवायें प्रदान करना है, जिसका लक्ष्य जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।
- **सामूहिक इच्छा:** इसका मुख्य फोकस राज्य के उद्देश्यों, लोगों की सामूहिक इच्छा, सार्वजनिक हितों और कानूनों के पालन पर होता है।
- **तटस्थ प्रणाली:** इसका तात्पर्य एक राजनीतिक ढाँचे के भीतर कार्य करने वाली **राजनीतिक रूप से तटस्थ लोक प्रशासन प्रणाली से है।**
- **सार्वजनिक क्षेत्र पर जोर:** यह निजी प्रशासन से काफी भिन्न है, क्योंकि यह विशेष रूप से लक्ष्यों और विधियों के संदर्भ में जनता पर अधिक जोर देता है।

लोक प्रशासन बनाम निजी प्रशासन

- प्रशासन **सार्वजनिक और निजी दोनों संस्थानिक व्यवस्थाओं में होता है।** जहाँ एक तरफ, लोक प्रशासन का संबंध सरकारी प्रशासन से होता है, वहीं दूसरी तरफ निजी प्रशासन का संबंध निजी व्यावसायिक संगठनों के प्रशासन से होता है।

लोक प्रशासन	निजी प्रशासन
• शासन पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। • करदाताओं द्वारा वित्तपोषित • जनहित महत्त्वपूर्ण होता है। • पदानुक्रमित संगठनात्मक संरचना • विनियमों का अनुपालन • जनता के प्रति जवाबदेही • राजनीतिक कारकों से प्रभावित होता है • धीमी निर्णय-प्रक्रिया • साम्यता और सामाजिक कल्याण पर जोर • अधिक पारदर्शिता और सार्वजनिक जाँच	• लाभ पर ध्यान केंद्रित किया जाता है • शेयरधारकों द्वारा वित्तपोषित • हितधारकों का हित महत्त्वपूर्ण होता है। • लचीली संगठनात्मक संरचना • स्व-विनियमन • शेयरधारकों के प्रति जवाबदेही • बाजार प्रतिस्पर्धा से प्रभावित होता है • त्वरित निर्णय-प्रक्रिया • लाभप्रदता पर जोर • कम सार्वजनिक जाँच

लोक प्रशासन में नैतिकता की आवश्यकता

भारत में लोक प्रशासन मुख्यतः राजनीतिक, कानूनी और वित्तीय क्षेत्रों तक ही केंद्रित रहा है, लेकिन इसका **नैतिक आयाम भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण है,** जिसे निम्नलिखित बिन्दुओं से समझा जा सकता है:

- **सार्वजनिक संसाधनों का उपयोग:** भारत में भ्रष्टाचार के बिना संसाधनों का कुशल और प्रभावी उपयोग संसाधन की कमी के कारण महत्त्वपूर्ण है, और नैतिकता लोक प्रशासक को उसके कार्यों के प्रति जवाबदेह बनाती है।
- **सामाजिक न्याय: हमारे संविधान के अनुच्छेद 38** और राज्य के अन्य नीति निर्देशक तत्त्वों (DPSPs) के तहत परिकल्पित सामाजिक न्याय के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए नैतिक लोक प्रशासन महत्त्वपूर्ण है। यह समाज के **सुभेद्य वर्गों के लिए समानता और समता सुनिश्चित करता है।**
- **सामाजिक पूँजी:** नैतिक लोक प्रशासन लोगों की नजरों में विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है और सिविल सोसायटी का सहयोग सुनिश्चित करता है और इस प्रकार देश की सामाजिक पूँजी का निर्माण करता है।
- **सर्वोदय/अंत्योदय:** नैतिक लोक प्रशासन समाज के गरीबों और सुभेद्य वर्गों के प्रति सहानुभूति, करुणा उत्पन्न करता है जिससे सामाजिक समस्याओं की बेहतर समझ विकसित होती है और इस प्रकार उनका समाधान खोजा जाता है।
  - **उदाहरण-** आईएएस अधिकारी एस. शंकरन द्वारा बंधुआ श्रम उन्मूलन अधिनियम का क्रियान्वयन।
  - **उदाहरण - मनरेगा** ग्रामीण उत्पादकता को बढ़ाते हुए रोजगार के समान अवसर सुनिश्चित करता है।
- **दुविधा का समाधान:** लोक प्रशासन प्रतिदिन जटिल होता जा रहा है और यह लोक प्रशासकों के लिए बार-बार दुविधाएँ पैदा करता है। नैतिकता यह सुनिश्चित करती है कि जनता के कल्याण को प्राथमिकता दी जाए तथा नैतिक और मूल्य संबंधी द्वन्द्वों और दुविधाओं का समाधान किया जाए।
- **निर्णय प्रक्रिया:** लोक प्रशासक महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते हैं और जब वे निर्णय **वस्तुनिष्ठता, निष्पक्षता, न्याय पर आधारित होते हैं और व्यक्तिगत हित से ऊपर उठकर लिए जाते हैं, तो** वे समाज के लिए अपेक्षित परिणाम देते हैं।

- **जनता का विश्वास:** नैतिक लोक प्रशासन **लोगों में** लोक सेवाओं की दक्षता, निष्पक्षता, और ईमानदारी के प्रति विश्वास और भरोसा पैदा करता है।

भारतीय प्रशासन में नैतिकता विकसित करने के प्रावधान

- **केंद्रीय सेवा आचरण नियमावली, 1964:** ये नियम सिविल सेवकों के लिए **'क्या करें' और 'क्या न करें' का प्रावधान करते हैं ताकि वे** अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते समय **पूर्ण सत्यनिष्ठा, कर्तव्य के प्रति समर्पण और राजनीतिक तटस्थता बनाए रख सकें।**
- **अखिल भारतीय सेवा आचरण नियम, 1968:** इन नियमों में प्रावधान है कि आईएएस, आईपीएस और आईएफओएस अधिकारियों को **उच्च नैतिक मानकों, सत्यनिष्ठा और ईमानदारी, राजनीतिक तटस्थता बनाए रखनी चाहिए, उत्तरदायित्व** और **पारदर्शिता** के साथ कर्तव्यों के निर्वहन में योग्यता, न्यायसंगतता और **निष्पक्षता के सिद्धांत को बढ़ावा देना चाहिए।**
- **आचार संहिता, 1997: यह भारत में बेहतर शासन** के उद्देश्य से लोक सेवकों के लिए आचार संहिता शुरू करने की पहली पहल थी। हालाँकि, इसे लोक सेवकों के लिए जारी नहीं किया गया।

भारतीय प्रशासन में नैतिक मुद्दे

- **विवेकाधीन शक्तियों का दुरुपयोग:** व्यक्तिगत लाभ के लिए विवेकाधीन शक्तियों का दुरुपयोग किया जाता है और प्रशासन में पक्षपात किया जाता है तथा जन कल्याण की बड़े पैमाने पर उपेक्षा की जाती है।
- **भ्रष्टाचार**: रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार को अनिवार्य कार्य निष्पादन के लिए पुरस्कार के रूप में देखा जाता है और सरकारी विभागों के पहियों को चिकना करने वाली आवश्यक बुराई माना जाता है।
  - **उदाहरण: भ्रष्टाचार बोध सूचकांक, 2023 में भारत को 93वाँ स्थान** दिया गया है।
- **नियमों और विनियमों को अनुचित महत्त्व:** भारतीय प्रशासन नियमों और विनियमों के अनुपालन को अनावश्यक महत्त्व देता है, जिससे अत्यधिक **लालफीताशाही** देखने को मिलती है तथा न्याय, निष्पक्षता आदि की उपेक्षा की जाती है और प्रशासन में जिम्मेदारी के बजाय जवाबदेही पर अधिक ध्यान दिया जाता है।
  - **उदाहरण**: ओडिशा में उत्कल ग्रामीण बैंक के बैंक प्रबंधक ने जन धन खाते से पैसे निकालने के लिए 100 वर्षीय महिला के भौतिक सत्यापन पर जोर दिया।
- **लापरवाही**: एक लोक अधिकारी या तो अपनी पेशेवर जिम्मेदारियों का पालन नहीं करता है या उन्हें लापरवाही से करता है, जिससे राज्य या समुदाय को नुकसान होता है। ऐसा अधिकतर अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति व्यक्ति की रुचि की कमी के कारण होता है।
  - **उदाहरण**: पंजाब में जहरीली शराब से जुड़ी त्रासदी - जहरीली शराब के सेवन से 103 लोगों की मौत हो गई, इस संबंध में कर्तव्य में लापरवाही के कारण 13 अधिकारियों को निलंबित कर दिया गया।
- **पुरस्कार और दंड का पक्षपाती तंत्र:** प्रशासन में योग्यता की उपेक्षा करते हुए **पक्षपात** और **राजनीतिक साँठगाँठ** द्वारा पुरस्कार और दंड का निर्धारण किया जाता है।

भारतीय प्रशासन में नैतिक मुद्दों के संबंध में दूसरे प्रशासनिक सुधार आयोग (एआरसी) की टिप्पणियाँ:

- विशेषकर नौकरशाही के अत्याधुनिक स्तरों पर भ्रष्टाचार चिंता का विषय है।
- नागरिकों की शिकायतों के निवारण के प्रति लोक सेवकों में प्रतिबद्धता की स्पष्ट कमी है।
- लालफीताशाही और अनावश्यक जटिल प्रक्रियाएँ नागरिकों की कठिनाई बढ़ाती हैं।
- सरकारी कर्मचारियों को शायद ही कभी जवाबदेह ठहराया जाता है और उच्च अधिकारियों से की गई शिकायतें आमतौर पर अनसुनी कर दी जाती हैं।
- कई लोक पदाधिकारियों का रवैया अहंकार और उदासीनता वाला है।
- अधिकारियों के बार-बार स्थानांतरण से उनकी प्रभावशीलता कम हो जाती है और उनकी जवाबदेही भी कम हो जाती है।
- राजनेताओं और नौकरशाहों के बीच सांठगांठ।

- **संचार का अभाव:** भारतीय प्रशासन की विशेषता है कि यहाँ संचार गोपनीय होता है और जनता के साथ सीमित संपर्क होता है। संगठनों के भीतर **कठोर पदानुक्रम संचार को और बाधित करता है।**
- **अत्यधिक सुरक्षा:** संविधान का **अनुच्छेद 311** लोक सेवकों को अत्यधिक सुरक्षा प्रदान करता है, इससे जवाबदेही का क्रियान्वयन कम हो जाता है।
- **गोपनीयता: आरटीआई अधिनियम, 2005** के बावजूद भारतीय प्रशासन में गोपनीयता बहुत अधिक है और यहाँ तक कि आरटीआई अधिनियम के तहत माँगी गई जानकारी भी आधिकारिक गोपनीयता के संदर्भ में देने से इनकार कर दिया जाता है।
- **लॉबिंग:** विभिन्न दबाव समूह बहुत बड़ी राजनीतिक पूँजी का उपयोग करते हैं और वे अपने हितों के लिए लॉबिंग करते हैं। कभी-कभी ये माँगें लंबे समय में लाभकारी नहीं हो सकती हैं, लेकिन राजनीतिक दबाव के कारण सरकार/ प्रशासकों को उनकी माँगों को पूरा करना पड़ता है।
  - **उदाहरण** - विभिन्न राजनीतिक दलों ने ऋण माफी की माँग मान ली है।

नैतिक दुविधा: मूल्यों के टकराव को समझना

- मूल्यों का टकराव तब उत्पन्न होता है जब निर्णय लेने के परिदृश्य में भिन्न-भिन्न मान्यतायें और दृष्टिकोण एक-दूसरे से टकराते हैं, जिससे व्यक्तियों के भीतर या समूहों के बीच आंतरिक असंगतियाँ पैदा होती हैं।
- मूल्यों के टकराव की व्यक्तिपरक प्रकृति को देखते हुए, जो वस्तुनिष्ठ तथ्यों के बजाय व्यक्तिगत मान्यताओं पर आधारित होते हैं, उसे हल करना एक बड़ी चुनौती होती है।

मूल्यों के टकराव के कारण:

- **नीतिगत निर्णय लेना (Policy Decision Making):** नीतिगत मुद्दों के लिए निर्णय लेने की आवश्यकता होती है जो शायद ही कभी मूल्य-तटस्थ होते हैं, जिससे पेशेवर विकल्पों का चयन अक्सर व्यक्तिगत मूल्यों के आधार पर होता है।
- **अनुकूलन बनाम मानक (Adaptation vs. Standards):** परिवर्तनों के प्रति अनुकूलन करने और मौजूदा मानकों को बनाए रखने के बीच तनाव मूल्यों के टकराव को बढ़ावा देता है।
- **जनता की अपेक्षाएँ बनाम दक्षता (Public Expectations vs. Efficiency):** बजट बाधाओं के भीतर कुशल और प्रभावी सेवाएँ प्रदान

करने की आवश्यकता और जनता की बढ़ती अपेक्षाओं के बीच संतुलन करने में मूल्यों का टकराव होता है।

- **सेवा वितरण मॉडल (Service Delivery Models):** सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) को अपनाना, गैर सरकारी संगठनों के साथ जुड़ाव और विशेषज्ञों के साथ परामर्श से अलग-अलग परिचालन मूल्यों के कारण टकराव होता है।
- **सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्य (Cultural and Religious Values):** धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में विविधता पेशेवर एवं संगठनात्मक मूल्यों के साथ टकराव पैदा कर सकती है।

मूल्यों के सामान्य टकराव के उदाहरण:

- **निष्ठा बनाम ईमानदारी (Loyalty vs. Honesty):** वरिष्ठों या संगठन के प्रति निष्ठा और ईमानदारी की आवश्यकता के बीच संतुलन बनाना।
- **हस्तक्षेप-रहित अर्थव्यवस्था बनाम जवाबदेही (Laissez-faire Economy vs. Accountability):** मुक्त बाजार सिद्धांतों और विनियामक निरीक्षण की आवश्यकता के बीच संतुलन बनाना।
- **व्यक्तिगत उत्तरदायित्व बनाम सामूहिक उत्तरदायित्व (Individual Responsibility vs. Collective Responsibility):** सामूहिक दायित्वों के मुकाबले व्यक्तिगत जवाबदेही का मूल्यांकन करना।
- **पारदर्शिता बनाम गोपनीयता (Transparency vs. Privacy):** खुलेपन की आवश्यकता और गोपनीयता के अधिकार के बीच संतुलन करना।
- **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बनाम सुरक्षा (Freedom of Speech vs. Security):** अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सुरक्षा चिंताओं के बीच तनाव का प्रबंधन करना।

सरकारी और निजी संस्थाओं में नैतिक दुविधा

- नैतिक दुविधा ऐसे दो संभावित नैतिक कर्तव्यादेशों के बीच निर्णय लेने की चुनौती है, जिनमें से कोई भी पूरी तरह से अनैतिक नहीं है।
  - **उदाहरण** - किसी सिविल सेवक के पास एक **बूढ़ा व्यक्ति आता है**, जो **सार्वजनिक वितरण प्रणाली** के तहत **पात्र है**, लेकिन उसके **पास आवश्यक दस्तावेज नहीं हैं**। यह एक ऐसी स्थिति है जो सिविल सेवक को **नैतिक दुविधा में डाल देती है** ।
  - **उदाहरण- सशस्त्र बल विशेष शक्ति अधिनियम** (AFSPA) (सार्वजनिक सुरक्षा बनाम मानवाधिकार)

सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं में नैतिक चुनौतियाँ और दुविधाएँ

- **सीमित संसाधन बनाम सार्वजनिक आवश्यकतायें:** उदाहरण के लिए, एक नगर परिषद को यह निर्णय लेना होगा कि सार्वजनिक परिवहन अवसंरचना में सुधार के लिए धन आवंटित किया जाए या स्वास्थ्य अवसंरचना में निवेश किया जाए।
- **राजनीतिक हस्तक्षेप: उदाहरण के लिए,** पर्यावरण विनियमन के लिए जिम्मेदार एक सरकारी एजेंसी पर, पर्यावरण संगठनों और प्रभावित समुदायों द्वारा उठाई गई चिंताओं के बावजूद औद्योगिक निवेश को आकर्षित करने के लिए प्रदूषण मानकों को शिथिल करने हेतु राजनीतिक नेताओं से दबाव पड़ता है।
- **प्रशासनिक विवेकाधिकार:** यह व्यक्तिगत प्राथमिकताओं या संबद्धताओं से प्रभावित व्यक्तिपरक निर्णय लेने की ओर ले जा सकता है। **उदाहरण के लिए,** एक लोक अधिकारी डेवलपर्स के साथ व्यक्तिगत संबंधों के प्रभाव में किसी विवादास्पद विकास परियोजना के लिए निर्माण की अनुमति दे देता है।
- **सार्वजनिक हित बनाम व्यक्तिगत लाभ: उदाहरण के लिए,** शहरी नियोजन में शामिल एक सरकारी अधिकारी को एक ऐसी आकर्षक रियल एस्टेट विकास परियोजना, जो एक व्यक्तिगत रिश्तेदार को लाभ पहुँचाती हुँ, को मंजूरी देने और सामुदायिक जरूरतों को पूरा करने के लिए किफायती आवास पहल का समर्थन करने के बीच द्वन्द्व का सामना करना पड़ता है।

लोक सेवा में हितों के टकराव की भूलभुलैया से निपटना

हितों का टकराव सार्वजनिक जीवन में उत्पन्न होने वाली वह स्थिति है, जब आधिकारिक कर्तव्य, सार्वजनिक हित और व्यक्तिगत हित एक दूसरे से ऊपर प्राथमिकता ले रहे होते हैं।

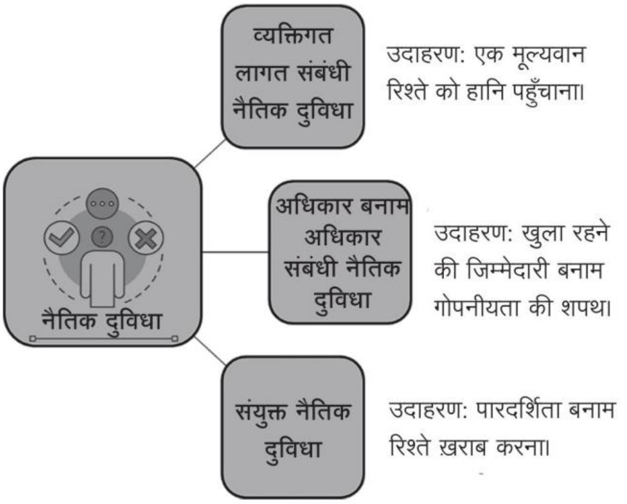

  - **उदाहरण - अरुण जेटली ने वोडाफोन मामले को** नहीं संभाला क्योंकि इससे पहले वे वोडाफोन के सलाहकार थे और इसमें उनके हितों का टकराव शामिल था।

हितों के टकराव के स्रोत:

- **वित्तीय हित (Financial Interest):** इसमें सार्वजनिक कर्तव्य पर व्यक्तिगत वित्तीय लाभ को प्राथमिकता देना शामिल है, जिससे अक्सर अपने मौद्रिक लाभों के कारण निजी नौकरियों को प्राथमिकता दी जाती है।
- **पेशेवर हित (Professional Interest):** जब पेशेवर दायित्व व्यक्तिगत मान्यताओं या हितों के साथ टकराते हैं, तो दुविधाएँ उत्पन्न होती हैं, जैसे इच्छामृत्यु के मामले या न्यायिक निर्णयों में मृत्युदंड।
- **व्यक्तिगत हित (Personal Interest):** इसमें पारिवारिक, पेशेवर और पूर्वाग्रहपूर्ण हित शामिल हैं, जहाँ व्यक्तिगत मूल्य निर्णय और कार्यों को निर्देशित करते हैं, जो संभावित रूप से सार्वजनिक कर्तव्यों के साथ टकराते हैं।

'हितों के टकराव/हित-संघर्ष' के रूप:

- **निजी हित को ध्यान में रखकर निर्णय लेना (Self-Dealing):** यह तब होता है जब सरकार में बैठे व्यक्ति निजी व्यवसाय भी चलाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप ऐसे निर्णय लिए जाते हैं जो जनता के कल्याण पर व्यक्तिगत लाभ को प्राथमिकता देते हैं।

- **रिवॉल्विंग डोर पॉलिटिक्स (Revolving Door Politics):** इसमें राजनीतिज्ञ और सिविल सेवक विनियामक भूमिकाओं और उद्योग पदों के बीच संक्रमण (Transitioning) करते हैं, अक्सर व्यक्तिगत लाभ के लिए कानूनों और विनियमों को आकार देते हैं, घोटाले और कानूनी उल्लंघन करते हैं।
- **पारिवारिक हित (Family Interests):** इसमें रिश्तेदारों को नौकरी पर रखना या परिवार के स्वामित्व वाली कंपनियों के साथ व्यापार करना शामिल है, जिसमें भाई-भतीजावाद को बढ़ावा दिया जाता है और विश्वास का दुरुपयोग किया जाता है।
- **पक्षपात (Favouritism):** यह विभिन्न रूपों में प्रकट होता है जैसे कि ग्राहकवाद क्रोनीवाद, तथा भाई-भतीजावाद, जहाँ शक्ति का प्रयोग योग्यता के स्थान पर व्यक्तिगत संबंधों को वरीयता देने के लिए किया जाता है, जिससे निष्पक्षता और समानता के सिद्धांत कमजोर होते हैं।

हितों के टकराव की सामान्य स्थितियाँ:

- **व्यावसायिक प्रतिबद्धता बनाम लोक कल्याण।**
  - **उदाहरण:** एक लोक सेवक द्वारा दस्तावेजी सबूतों के अभाव में किसी निराश्रित व्यक्ति को सरकार द्वारा प्रदत्त अधिकार (Government Entitlements) देने से मना करना।
  - **उदाहरण:** नगर निगम आयुक्त के रूप में आपको झुग्गी-झोपड़ियों के अतिक्रमण आदेश को लागू कराना है, लेकिन इससे झुग्गी-झोपड़ियों के लोगों की आजीविका या घर का सवाल भी उठता है।
- **व्यक्तिगत मूल्यों और लोक प्रशासन के मूल्यों के** बीच टकराव।
  - **उदाहरण:** एक लोक सेवक निजता के अधिकार के प्रति उच्च सम्मान के कारण आधार के उपयोग के खिलाफ हो सकता है, लेकिन सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के लिए उसे इसका उपयोग करना पड़ सकता है।
- **पेशेवर नैतिकता और वरिष्ठों की अनुचित माँग के** बीच टकराव।
  - **उदाहरण:** एक लोक सेवक ऋण माफी के खिलाफ हो सकता है लेकिन वरिष्ठों के आदेश के कारण उसे आदेश का पालन करना होगा।

शासन में नैतिक दुविधा का समाधान

निम्नलिखित प्रमुख पहलुओं को ध्यान में रखकर नैतिक दुविधा का समाधान किया जा सकता है:

- **विधि का शासन और वैधता (The Rule of Law and Legality):** राजनीति और समाज में विधि का शासन आवश्यक है और अधिकार का प्रयोग करते समय वैधता के सिद्धांतों का पालन करना महत्त्वपूर्ण है। कानून न्यूनतम नैतिक मानक निर्धारित करता है और नैतिक दुविधाओं के दौरान निर्णय लेने में सहायता करता है।
- **जन हित को प्राथमिकता देना (Giving Priority to the Public Interest):** लोक अधिकारियों को निर्णय लेते समय या कार्रवाई करते समय अपने स्वयं के हित पर जनता के कल्याण को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- **निष्पक्षता (Impartiality):** नैतिक दुविधाओं का सामना करने पर लोक सेवकों को निष्पक्ष रहना चाहिए और एक तटस्थ रेफरी के समान पक्षपात के बिना निर्णय लेना चाहिए।

नैतिक दुविधा के समाधान के मूलभूत सिद्धांत

- भारतीय संविधान के प्रावधान
- प्रशासन की लोकतांत्रिक जवाबदेही
- विधि का शासन और वैधता का सिद्धांत
- व्यावसायिक/पेशेवर सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता और तटस्थता
- सर्वजन हिताय/ व्यापक जन कल्याण
- समाज के प्रति अनुक्रियाशीलता

- **संपूर्ण मूल्यांकन (Thorough Assessment):** सभी उपलब्ध विकल्पों पर विचार करके और अधिकांश लोगों का अधिकतम कल्याण करने वाले निर्णय का चयन करके नैतिक दुविधाओं का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
- **संलयन (Fusion):** व्यक्तिगत, संगठनात्मक और सामाजिक लक्ष्यों को एकीकृत करने से नैतिक दुविधाओं को कम करने में मदद मिलती है, क्योंकि उपयुक्त विकल्प इन सभी उद्देश्यों के अनुरूप हो सकता है।

एक प्रशासक के लिए नैतिक सिद्धांत

- कोई हानि न पहुँचाने का सिद्धांत
- निष्ठा का सिद्धांत
  - समझौता
  - अनुबंध
- वैधानिकता का सिद्धांत
- गोपनीयता का सिद्धांत
- ईमानदारी का सिद्धांत
- स्वायत्तता का सिद्धांत

निजी संस्थाओं में नैतिक चिंताएँ

- व्यावसायिक नैतिकता (Business Ethics) **व्यवसाय आचरण के सभी पहलुओं पर लागू होती है और व्यक्तियों तथा पूरे संगठन के आचरण** के लिए प्रासंगिक होती है। हालाँकि बुनियादी बातें समान रहती हैं, लेकिन यह संगठन स्तर पर अलग-अलग होती है। किसी संगठन के व्यक्ति स्वयं को द्वन्द्व की स्थिति में पा सकते हैं।
  - **उदाहरण:** एक ईमानदार विक्रेता को दोषपूर्ण चिकित्सा उत्पाद बेचना पड़ सकता है जो रोगी के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है।

निजी संगठन में कई नैतिक चिंताएँ उत्पन्न होती हैं, जैसे:

- बाजार में नए प्रवेश करने वालों को विस्थापित करने के लिए या अधिक लाभ कमाने के लिए निजी व्यावसायिक उद्यमों द्वारा **गुट बना लेना और बाजार में हेरफेर करना।**
  - **उदाहरण - एपीएमसी में आढ़तियों** द्वारा कीमतों में हेरफेर, कर चोरी, अंदरूनी व्यापार **(Insider Trading)** आदि।

- जब कंपनियाँ अच्छी वित्तीय स्थिति दिखाने और बाजार में अच्छी क्रेडिट रेटिंग बनाए रखने के लिए अपने व्यावसायिक खातों में हेरफेर करती हैं और इसे ऑडिट प्रक्रियाओं द्वारा जनता के सामने नहीं लाया जाता है तो **ऑडिट प्रक्रिया की सत्यनिष्ठा पर** सवाल उठता है।
  - **उदाहरण - यस बैंक घोटाला** जिसने विचलन को उजागर करने में निदेशकों की असमर्थता को उजागर किया।
- बाज़ार में अत्यधिक प्रतिस्पर्धा अक्सर लोगों को **इनसाइडर ट्रेडिंग (Insider Trading) और शेयर की कीमतों में हेरफेर करने जैसी अनैतिक गतिविधियों के लिए मजबूर करती है।** यह तब भी होता है जब व्यक्तिगत हितों को संगठनात्मक और शेयरधारकों के हितों पर प्राथमिकता दी जाती है।
- **अधिकतम लाभ बनाम नैतिक आचरण (Profit Maximization vs. Ethical Practices):** उदाहरण के लिए, बहुराष्ट्रीय कंपनियों को लाभ बढ़ाने के लिए कमजोर श्रम कानूनों वाले देश में उत्पादन को आउटसोर्स करने पर विचार करते समय दुविधा का सामना करना पड़ता है, लेकिन इससे श्रमिकों को कार्य की शोषणकारी स्थितियों का भी सामना करना पड़ सकता है।
- **कर्मचारियों के प्रति व्यवहार और कल्याण (Employee Treatment and Welfare):** उदाहरण के लिए, एक प्रौद्योगिकी स्टार्टअप अधिक घंटों तक काम करने और उच्च उत्पादकता की संस्कृति को बनाए रखने या कार्य और जीवन के बीच संतुलन को बढ़ावा देने वाली नीतियों को प्राथमिकता देने के बीच दुविधा में पड़ जाता है।
- **प्रतिस्पर्धा और उचित पद्धतियाँ (Competition and Fair Practices)**: उदाहरण के लिए, जब संगठनों को बाजार में हिस्सेदारी हासिल करने के लिए प्रतिस्पर्धा-रोधी व्यवहार या अनैतिक विपणन रणनीति अपनाने के लिए दबाव का सामना करना पड़ता है तो नैतिक दुविधायें उत्पन्न हो सकती हैं।
- **उत्पाद सुरक्षा और उपभोक्ता अधिकार (Product Safety and Consumer Rights):** उदाहरण के लिए, एक फार्मास्युटिकल कंपनी को यह तय करना होगा कि संभावित लाभ कमाने के लिए एक नई दवा को बाजार में लाया जाए या भविष्य के दुष्प्रभावों से बचने के लिए सुरक्षा परीक्षण पूरा किया जाए।

नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में कानून, नियम, विनियम और विवेक

- कानून आमतौर पर नैतिक ढाँचे पर आधारित होते हैं और उनका उद्देश्य समाज में व्यक्तियों के अनैतिक व्यवहार को नियंत्रित करते हुए सामाजिक व्यवस्था स्थापित करना होता है।
- नियम विस्तृत फ्रेमवर्क होते हैं जिन्हें आमतौर पर व्यक्तियों या संगठनों के व्यवहार को निर्देशित करने के लिए प्रक्रियाओं को सरल और सुविधाजनक बनाने के उद्देश्य से तैयार किया जाता है।
  - **उदाहरण: सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000** एक कानून है और **सूचना प्रौद्योगिकी मध्यवर्ती दिशानिर्देश नियम, 2021** कानून को प्रभावी बनाने के लिए बनाए गए हैं।

कानून, नियम और अंतःकरण के बीच अंतर:

कानून और नियम अतिव्यापी शब्दों (Overlapping Terms) की तरह लग सकते हैं, लेकिन कुछ भिन्नतायें हैं जिनके आधार पर दोनों के बीच अंतर किया जा सकता है:

पहलू	कानून	नियम	अंत:करण
स्रोत	**विधायी निकायों** या सरकारों द्वारा बनाए जाते हैं।	संगठनों, **संस्थानों या समुदायों द्वारा बनाए जाते हैं।**	**व्यक्तिगत अनुभवों**, सांस्कृतिक मानदंडों और नैतिक शिक्षाओं द्वारा आकार दिया जाता है।
दायरा	**व्यापक**, समग्र समाज पर लागू होते हैं।	किसी संदर्भ, संगठन या समूह के लिए **विशिष्ट होते हैं।**	**व्यक्तिगत और व्यक्तिपरक**, अलग-अलग व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न होता है।
उद्देश्य	**सामाजिक व्यवस्था और न्याय** (जैसे, आपराधिक कानून) बनाए रखने के लिए।	**सुचारू कामकाज** सुनिश्चित करने के लिए (उदाहरण के लिए, सिविल सेवा आचरण नियम, 1964)।	**व्यक्तिगत नैतिक विकल्पों का मार्गदर्शन करने** के लिए (उदाहरण के लिए, व्हिसिलब्लोइंग पर निर्णय)।
प्रवर्तनीयता	कानूनी प्रणालियों द्वारा लागू किए जाते हैं, अनुपालन न किए जाने पर **दंड** का प्रावधान होता है।	संगठनों या सामाजिक मानदंडों द्वारा लागू होते हैं, अक्सर **कानूनी दंड का** प्रावधान नहीं होता है।	**स्व-प्रवर्तित**, व्यक्तिगत नैतिक निर्णयों द्वारा निर्देशित होता है।
लचीलापन	**कठोर होते हैं**, जिसमें व्यक्तिगत व्याख्या के लिए बहुत कम गुंजाइश होती है।	संदर्भ या स्थिति के आधार पर इनमें **कुछ लचीलापन** हो सकता है।	व्यक्तिगत मान्यताओं और परिस्थितियों के प्रति **अत्यधिक लचीला और अनुकूलनीय।**
टकरावों का समाधान	कानूनी प्रक्रियाएँ और **न्यायिक प्रणालियाँ** टकरावों को संभालती हैं।	**संगठनात्मक प्रक्रियाएँ या सामाजिक मध्यस्थता** नियमों के टकरावों संबोधित करती हैं।	व्यक्तिगत चिंतन और **नैतिक तर्क** टकरावों का समाधान करते हैं।
मार्गदर्शन	व्यवहार के लिए **स्पष्ट, वस्तुनिष्ठ मानक** प्रदान करते हैं ।	**विशिष्ट परिदृश्यों** या वातावरणों के लिए दिशानिर्देश प्रदान करते हैं।	प्रायः नैतिक रूप से अस्पष्ट स्थितियों में **व्यक्तिपरक और व्यक्तिगत मार्गदर्शन** प्रदान करता है।

पहलू	कानून	नियम	अंत:करण
उदाहरण	**यातायात कानून** जनता की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए **तेज़ गति से गाड़ी चलाने पर रोक लगाते हैं।**	पेशेवर अंदाज बनाए रखने के लिए **कार्यस्थल पर ड्रेस कोड के नियम।**	व्यक्तिगत नैतिक मान्यताओं के आधार पर **युद्ध का विरोध।**
लोक सेवकों पर प्रभाव	पेशेवर कार्यों में कानूनी अनुपालन सुनिश्चित करतें हैं (जैसे, 1861 में पारित **भारतीय सिविल सेवा अधिनियम का पालन**)।	संस्थागत मानदंडों के अनुसार व्यवहार को नियंत्रित करते हैं (उदाहरण के लिए, **अखिल भारतीय सेवा (आचरण) नियम**, 1968)।	कर्तव्यों में नैतिक निर्णय लेने को प्रभावित करता है (जैसे, **संवेदनशील जानकारी को संभालना**)।

कानून, नियम और विनियम नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत कैसे हैं

- **विवेकाधीन शक्तियों का विनियमन:** लोक सेवकों के पास शासन के लिए विवेकाधीन शक्तियाँ होती हैं और उनका उपयोग व्यक्तिगत लाभ के लिए किया जा सकता है। कानून, नियम और विनियम उस शक्ति के उपयोग के लिए स्पष्ट रूप से 'क्या करें और क्या न करें' निर्धारित करके उस शक्ति को विनियमित करते हैं।
  - **उदाहरण: केन्द्रीय सिविल सेवा आचरण नियम, 1964 में** सिविल सेवकों को विवेकाधीन शक्तियों के दुरुपयोग को रोकने के लिए क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, इसकी जानकारी दी गई है।
- **सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना:** कानून, नियम और विनियम आधुनिक मानवाधिकारों, जैसे समानता, स्वतंत्रता आदि प्रदान करके सामाजिक न्याय को बढ़ावा देते हैं।
  - **उदाहरण**: सिविल अधिकार संरक्षण अधिनियम, 1955 (Protection of Civil Rights Act 1955) अस्पृश्यता पर प्रतिबंध लगाता है ।
- **कार्रवाई और निष्क्रियता पर नियंत्रण:** कानून, नियम और विनियम सकारात्मक और नकारात्मक सहायकों के रूप में कार्य करते हैं तथा कार्रवाई को प्रोत्साहित या प्रतिबंधित करते हैं।
  - **उदाहरण: भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम** भ्रष्टाचार को रोकता है और महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम **सामाजिक लेखा परीक्षा (Social Audit) को सक्षम बनाता है।**
- **मानवाधिकार संरक्षण:** कानून, नियम और विनियम जरूरतमंदों के प्रति सहानुभूति को प्रोत्साहित करते हैं और इस प्रकार मानवाधिकार संरक्षण को बढ़ावा देते हैं।
  - **उदाहरण: मोटर यान संशोधन अधिनियम, 2019 नेक व्यक्तियों (Good Samaritans)** के लिए प्रावधान करता है और उन्हें सिविल या आपराधिक कार्रवाई से बचाता है।

नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में कानूनों, नियमों और विनियमों की सीमाएँ

- **प्रवर्तन की कमी:** कानूनों, नियमों और विनियमों के प्रवर्तन के लिए सरकारी मशीनरी की आवश्यकता होती है, जिसकी कमी से व्यक्तियों या संगठनों द्वारा अनैतिक व्यवहार हो सकता है।
  - **उदाहरण** - समाज में अपराध रोकने के लिए कानून तो हैं, लेकिन फिर भी समाज में अपराध हो रहे हैं।
- **टाल-मटोल की प्रवृत्ति:** अनुपालन न करने की प्रवृत्ति के कारण कानूनों, नियमों और विनियमों का अधिनियमन व्यक्तियों या संगठनों के नैतिक व्यवहार में रूपांतरित नहीं हो सकता है।
  - **उदाहरण - आयकर अधिनियम** की कमजोरियों का पता लगाकर कर चोरी करना।
  - **उदाहरण** - लोग अपने वाहन को पैदल से ले जाकर मोटर यान संशोधन अधिनियम के तहत जुर्माने से बचते हैं।

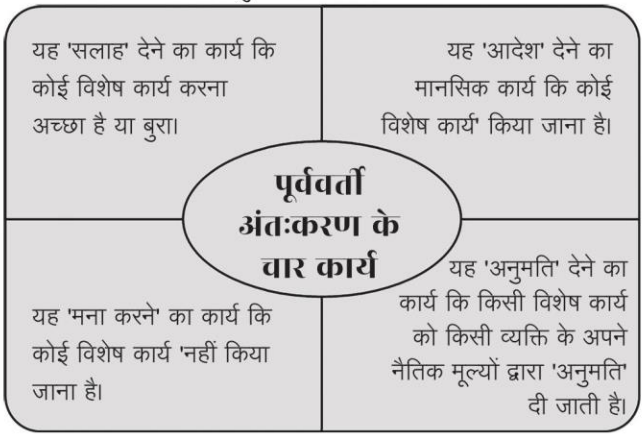

- **नकारात्मक धारणा:** कुछ कानूनों, नियमों और विनियमों के बारे में उन लोगों के बीच नकारात्मक धारणा हो सकती है जो उनके तहत कार्य करने के लिए बाध्य हैं।
  - **उदाहरण - कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व को** कुछ कंपनियों द्वारा अतिरिक्त कर के रूप में देखा जाता है।
- **सामाजिक परिपक्वता का अभाव:** कानून, नियम और विनियमन भले ही अच्छे इरादे वाले हों, लेकिन हो सकता है कि समाज उन्हें स्वीकार करने के लिए पर्याप्त परिपक्व न हो।
  - **उदाहरण** - मुस्लिम समाज के कुछ वर्गों द्वारा **ट्रिपल तलाक कानून का विरोध,** हिन्दू समाज के कुछ वर्गों द्वारा **सबरीमाला मामले** पर उच्चतम न्यायालय के निर्णय का विरोध।
- **सांस्कृतिक कुरीतियाँ:** कानून, नियम और विनियम हमेशा सामाजिक कुरीतियों से सुरक्षा प्रदान नहीं कर सकते।
  - **उदाहरण** - महिलाओं की सुरक्षा के लिए कानूनी प्रावधानों के बावजूद, भारत में अभी भी दहेज के मामले देखे जाते हैं।

निष्कर्ष

इसलिए कानून, नियम और विनियम नैतिकता के लिए बाहरी स्रोत हैं। हालाँकि, एक नैतिक समाज एक नैतिक विवेक द्वारा बनाया जा सकता है।

अंतःकरण (CONSCIENCE)

अंत:करण किसी व्यक्ति की अपने आचरण के नैतिक या आचारिक पहलुओं के प्रति जागरूकता है, साथ ही गलत के बजाय सही को प्राथमिकता देने की इच्छा

भी है। अंतःकरण मनुष्य के भीतर कार्य करता है और मनुष्य के कार्यों की नैतिकता की जाँच करता है

पूर्ववर्ती अंतःकरण और अनुवर्ती अंतःकरण

- **पूर्ववर्ती अंतःकरण:** पूर्ववर्ती अंतःकरण वह है जो भविष्य के कार्यों के लिए मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है, उन्हें करने या उनसे बचने के लिए प्रेरित करता है।
  - **उदाहरण** - एक व्यक्ति संभावित पश्चाताप के कारण **लाल सिग्नल पर रुक जाता है।** नीतिशास्त्र में, पूर्ववर्ती अंतःकरण जो हमारे भविष्य के कार्यों के लिए मार्गदर्शक है, अधिक महत्त्वपूर्ण है।
- **अनुवर्ती अंतःकरण:** अनुवर्ती अंतःकरण वह है जो हमारे पिछले कार्यों के न्यायाधीश के रूप में कार्य करता है और हमारे आत्म-अनुमोदन या पिछले कार्यों के पश्चाताप के स्रोत के रूप में कार्य करता है।
  - **उदाहरण** - एक व्यक्ति लाल सिग्नल पार कर जाता है और फिर दोषी महसूस करता है।

नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में अंतःकरण

अंतःकरण नैतिकता से जुड़ा हुआ है और व्यावहारिक स्थितियों से निपटने के दौरान काम आता है। यह निम्नलिखित तरीके से नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में कार्य करता है:

- **नैतिक दुविधा का समाधान:** अंतःकरण हमारे आचारिक और नैतिक सिद्धांतों के आधार पर सही निर्णय लेने में मदद करता है और इस प्रकार नैतिक दुविधाओं को हल करने में मदद करता है।
- **हितों के टकराव से बचना:** अंतःकरण **हमें अपने अंतर्निहित नैतिक मूल्यों की याद दिलाता है** और **हितों के टकराव से बचने में हमारी मदद करता है।**
  - **उदाहरण: पेशेवर अंदाज** के लिए जाना जाने वाला व्यक्ति अपने रिश्तेदारों के साथ हितों के टकराव का सामना करने पर पेशेवर मूल्यों को प्राथमिकता देगा।
- **अपराध बोध:** यदि कोई व्यक्ति कुछ गलत करता है तो उसे अपने अंतःकरण से पीड़ा या अपराध बोध की अनुभूति होती है।
  - **उदाहरण:** कलिंग युद्ध के बाद अशोक द्वारा पश्चाताप करना और शांति एवं सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए धम्म नीति का पालन करना।
- **अनैतिक कार्य के विरुद्ध प्रतिकारक व्यवहार:** एक व्यक्ति ऐसी स्थिति में कम प्रेरणा और भागीदारी दिखा सकता है जो उसकी अंतरात्मा के विरुद्ध है और इस प्रकार वह नैतिक रूप से सही मार्ग अपनाने के लिए इच्छुक होगा।
  - **उदाहरण:** एक पुलिस अधिकारी के पास शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन पर लाठीचार्ज करने की प्रेरणा की कमी हो सकती है, यदि यह उसकी अंतरात्मा के विरुद्ध हो।

विभिन्न स्तरों पर अंतःकरण का अनुप्रयोग

- **राजनीतिक स्तर:** अंतःकरण भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद का मुकाबला करके, संवैधानिक सिद्धांतों को प्राथमिकता देकर और सामाजिक कल्याण पर जोर देकर काम करता है।
- **प्रशासनिक स्तर:** अंतःकरण अधिकारियों को न्याय एवं सत्यनिष्ठा के अनुसरण और वरिष्ठों की आज्ञाकारिता के बीच संतुलन करने में मार्गदर्शन करता है। यह राष्ट्र की सेवा करने और ईमानदारी के उच्च मानकों को बनाए रखने पर जोर देता है।
- **नागरिक स्तर:** अंतःकरण नागरिक सहभागिता और पर्यावरण प्रबंधन को बढ़ावा देकर काम करता है। यह अलोकतांत्रिक विचारधाराओं के विरोध और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भागीदारी को प्रोत्साहित करता है। **उदाहरण**- अनुच्छेद 51 - भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को बनाए रखना और उसकी रक्षा करना।
- **सामाजिक स्तर**: अंतःकरण सार्वजनिक चर्चा, सामाजिक मानदंडों और कानूनों एवं नीतियों के विकास को प्रभावित करता है तथा समाज के नैतिक ढाँचे को आकार देता है। **उदाहरण** - भारतीय समाज में वसुधैव कुटुंबकम (विश्व एक परिवार है) की चेतना।

अंतःकरण का संकट

- अंतःकरण का संकट वह स्थिति होती है जब अंतःकरण **किसी विशिष्ट स्थिति में किसी व्यक्ति को नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करने में विफल हो जाता है।** व्यक्ति अपनी नैतिक समझ से इस बारे में मार्गदर्शन प्राप्त करने की क्षमता खो देता है कि क्या सही है और क्या गलत है।
  - **उदाहरण** - यदि कोई पुलिस अधिकारी शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन पर निगरानी रख रहा है और अचानक उसे विरोध की प्रकृति की परवाह किए बिना सख्त कदम उठाने के लिए कहा जाता है। इससे स्थिति अस्पष्ट हो जाती है और अधिकारी को अंतःकरण के संकट का सामना करना पड़ता है क्योंकि उसकी नैतिक समझ सही और गलत कार्यों के बारे में उसका मार्गदर्शन नहीं कर पाती है।
- **सामाजिक दबाव का प्रभाव:** सामाजिक या पेशेवर दबाव अंतःकरण पर हावी हो सकता है।
  - **उदाहरण** - सामाजिक दबाव में लोग अपने बच्चों के लिए अंतरजातीय/अंतरधार्मिक विवाह के लिए सहमत नहीं होते, भले ही वे सहमत होना चाहें।
- **आचार-विचार/संस्कृतियों का प्रभाव:** अंतःकरण स्थान और समय के आचार-विचार/संस्कृतियों पर भी निर्भर करता है।
  - **उदाहरण** - यदि किसी व्यक्ति का पालन-पोषण पितृसत्तात्मक परिवेश में हुआ है तो महिलाओं के प्रति उसके व्यवहार के बारे में उसका अंतःकरण नैतिक मार्गदर्शन प्रदान नहीं करेगा।
- **अंतःकरण का गलत प्रशिक्षण:** अंतःकरण अच्छी आदतों से विकसित होता है लेकिन गलत आदतों का पालन करने से अंतःकरण को गलत प्रशिक्षण मिलता है और यह हमें नैतिक मार्गदर्शन प्रदान नहीं करता है।
  - **उदाहरण -** एक व्यक्ति जो हमेशा झूठ बोलता है, वह सच बोलने के लिए अपने अंतःकरण द्वारा निर्देशित नहीं होगा।

जवाबदेही और नैतिक शासन

जवाबदेही

लोक अधिकारियों को जवाबदेह ठहराने की अवधारणा में एक ऐसी प्रक्रिया शामिल है जिसके माध्यम से उनके कार्यों और विकल्पों की बारीकी से जाँच की जाती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे अपनी जिम्मेदारियों, दायित्वों और नौकरी के कर्तव्यों को पूरा करते हैं।

जवाबदेही में दो मुख्य पहलू शामिल हैं

- **उत्तरदायित्व (Answerability):** इसका तात्पर्य **सरकार**, उसकी एजेंसियों और लोक अधिकारियों की अपने निर्णयों और कार्यों के बारे में जानकारी का खुलासा करने तथा उनके बारे में जनता और जवाबदेही की देखरेख करने वाली संस्थाओं को औचित्य प्रदान करने की जिम्मेदारी से है।

- **प्रवर्तन (Enforcement):** यह पहलू यह सुझाव देता है कि जनता या उत्तरदायी संस्था के पास अनुचित तरीके से काम करने वाले पक्ष के खिलाफ कार्रवाई करने या स्थापित नियमों का उल्लंघन करने वाले व्यवहार को सुधारने का अधिकार है। इसके परिणामस्वरूप, अलग-अलग जवाबदेह संस्थाएँ इनमें से किसी एक या दोनों चरणों के लिए जिम्मेदार हो सकती हैं।

जवाबदेही की आवश्यकता

- **उत्तरदायित्व (Answerability):** यह लोक सेवाओं को अपने दायित्वों की अवहेलना करने से रोकता है क्योंकि उन्हें अपने कृत्यों और कुकृत्यों के लिए उत्तरदायी ठहराया जाता है।
- **लोक सेवाओं के प्रति वैधता (Legitimacy to Public Services):** जवाबदेही सेवा के प्रति निष्ठा को बढ़ावा देती है क्योंकि इसमें कार्रवाइयों की सावधानीपूर्वक गणना की जाती है तथा मनमाने और गलत तरीके से की गई कार्रवाइयों और नीतियों पर नियंत्रण रखा जाता है।
- **हितों के टकराव से बचाव (Avoids Conflict of Interests):** जवाबदेही निर्धारित करने से व्यक्ति का कार्य क्षेत्र स्पष्ट रूप से निर्धारित हो जाता है, जहाँ उसे कार्य करना अपेक्षित है।
- **न्याय और समानता (Justice & Equality):** जवाबदेही न्याय, समानता और समतावाद को बढ़ावा देती है क्योंकि लोक सेवकों को इन संवैधानिक आदर्शों को महसूस करना आवश्यक है और साथ ही, वे अपने कार्यों के लिए जवाबदेह होते हैं।
- **जन हित (Public Interest):** लोक सेवा का पहली और अंतिम लाभार्थी जनता है, क्योंकि लोक सेवाओं को जनता के हित में कार्य करना आवश्यक है और वे अपने कार्यों के लिए जवाबदेह होती हैं।

जवाबदेही सुनिश्चित करने के तरीके

- लोक अधिकारियों से उनके आधिकारिक कर्तव्यों के निर्वहन के बारे में सवाल करने के लिए हितधारकों का क्षमता-निर्माण।
  - **उदाहरण - मनरेगा** के तहत **सामाजिक लेखा परीक्षा** की अवधारणा। साथ ही भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम जैसे कानूनों का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
- आरटीआई **के प्रभावी कार्यान्वयन के माध्यम से,** विशेष रूप से **सक्रिय प्रकटीकरण के** माध्यम से **पारदर्शिता को बढ़ावा देने से** लोक अधिकारी कानून और संविधान की भावना के अनुसार कार्य करने के लिए अधिक सावधान रहेंगे।
- भारत में विधि के शासन को बनाए रखने के लिए न्यायपालिका की स्वतंत्रता और प्रभावी भूमिका महत्त्वपूर्ण है, इस प्रकार प्रक्रिया ज्ञापन (Memorandum of Procedure), ई-कोर्ट जैसे विभिन्न कदमों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- लोकतंत्र में जवाबदेही की अंतिम अभिव्यक्ति समय-समय पर होने वाले चुनावों के माध्यम से होती है जो कि सरकार को दंडित करने और पुरस्कृत करने का एक साधन है, इसलिए चुनाव जवाबदेही के अंतिम साधन के रूप में कार्य करते हैं। चुनावी **सुधार और लोगों की लोकतांत्रिक परिपक्वता** जवाबदेही का अंतिम आधार है।

जवाबदेही के प्रकार

- **क्षैतिज जवाबदेही (Horizontal Accountability):** यह राज्य संस्थाओं की अन्य सार्वजनिक एजेंसियों और सरकार की शाखाओं द्वारा किए जाने वाले शोषण की जाँच करने की क्षमता है।
  - **बाह्य (कार्यपालिका से बाहर)-** संसद, न्यायपालिका, लोकपाल, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक, केंद्रीय सतर्कता आयोग
  - **आंतरिक (कार्यपालिका के भीतर- वरिष्ठ अधिकारी):** पुरस्कार और दंड, अनुशासनात्मक प्रक्रियाएँ, कार्यनिष्पादन प्रबंधन प्रणाली, आंतरिक लेखा परीक्षा, शिकायत निवारण तंत्र।
- **ऊर्ध्वाधर जवाबदेही (Vertical Accountability):** ये वे साधन होते हैं जिनके माध्यम से नागरिकों, जनसंचार माध्यमों और सिविल सोसायटी द्वारा नौकरशाहों पर सुशासन के मानकों को लागू किया जाता है। संसद भी ऊर्ध्वाधर जवाबदेही के लिए एक महत्त्वपूर्ण मंच है।
- **राजनीतिक जवाबदेही (Political Accountability):** इसका तात्पर्य उस जवाबदेही से है जो व्यक्तिगत मंत्रिस्तरीय जिम्मेदारी के रूप में स्थापित की जाती है।
- **सामाजिक जवाबदेही (Social Accountability):** यह समाज द्वारा संचालित क्षैतिज जवाबदेही है जो नागरिक सहभागिता पर निर्भर करती है तथा आम नागरिक और सिविल सोसायटी संगठन अधिकारियों को जवाबदेह ठहराने के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाग लेते हैं।

जवाबदेही को बढ़ावा देने वाली संस्थाएँ और तंत्र

राज्य के बाहर: ऊर्ध्वाधर	राज्य के भीतर: क्षैतिज
• चुनावों के माध्यम से जनता द्वारा • आरटीआई अधिनियम के माध्यम से नागरिक • नागरिक निरीक्षण समितियाँ • सिविल सोसायटी/ निगरानी निकाय • मीडिया • सेवा वितरण सर्वेक्षण • नागरिक चार्टर • सत्यनिष्ठा समझौते • नागरिक रिपोर्ट कार्ड • व्हिसल ब्लोअर अधिनियम के माध्यम से	• बाह्य (कार्यपालिका के बाहर) - संसद, न्यायपालिका, लोकायुक्त, सीएजी, सीवीसी • आंतरिक (कार्यपालिका के भीतर) • वरिष्ठ अधिकारी • पुरस्कार/दंड • अनुशासनात्मक प्रक्रियाएँ • कार्यनिष्पादन प्रबंधन प्रणाली • सीबीआई/पुलिस/सतर्कता • आंतरिक लेखा परीक्षा • शिकायत निवारण तंत्र (भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, शासकीय गुप्त वार्ता अधिनियम) • ई-गवर्नेंस तंत्र [Pragati, NeGP आदि]

शासन में जवाबदेही का महत्त्व

- **लोकतांत्रिक शासन:** जवाबदेही देश में लोकतांत्रिक शासन सुनिश्चित करती है जहाँ अधिकारी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लोगों के प्रति जिम्मेदार होते हैं, न कि केवल अपने वरिष्ठ अधिकारियों के प्रति।
- **जनता का विश्वास:** जवाबदेही सुनिश्चित करती है कि अधिकारी अपने किसी भी गलत काम के लिए जवाबदेह हों। इससे सरकारी कार्य निष्पादन में जनता का विश्वास, भरोसा, सहयोग और समन्वय बढ़ता है।
- **स्पष्टता:** जवाबदेही के लिए किए जाने वाले कार्यों का स्पष्ट विवरण, कार्य के लिए समय-सीमा और उपलब्ध वित्तीय और अन्य संसाधन भी आवश्यक हैं, जिनके प्रति अधिकारी को जवाबदेह ठहराया जाता है। इससे शासन में सुधार होता है।

- **प्रशासनिक अनियमिततायें:** जवाबदेही प्रशासनिक अनियमितताओं और सरकारी नीतियों एवं कार्यक्रमों के अनुचित कार्यान्वयन को रोकती है और इस प्रकार शासन को बेहतर बनाने में मदद करती है।
- **सुधारात्मक उपाय:** जवाबदेही यह सुनिश्चित करती है कि अधिकारियों को किसी भी गलत कार्य के लिए उत्तरदायी ठहराया जाए और सुधारात्मक कार्रवाई की जा सके।
- **पारदर्शिता:** जवाबदेही यह सुनिश्चित करती है कि अधिकारी अधिक पारदर्शिता से निर्णय लें ताकि पूर्ण जवाबदेही को कम किया जा सके। यह नागरिकों को शासन में हितधारक बनाती है।
- **फीडबैक तंत्र:** जवाबदेही एक फीडबैक तंत्र भी विकसित करती है जो यह सुनिश्चित करता है कि लाभार्थियों का फीडबैक निर्णय लेने वालों तक पहुँचे।

ज़िम्मेदारी (Responsibility)

- इसका अर्थ है **स्वयं के प्रति जवाबदेही**, अर्थात जब **जवाबदेही अंदर की ओर मुड़ जाती है**। यह एक **नैतिक अवधारणा है**, जिसमें व्यक्ति अपने सभी कार्यों के लिए स्वयं को जवाबदेह महसूस करता है, भले ही वह किसी कानून के अंतर्गत न आता हो।
- यह जवाबदेही से अधिक स्थायी होती है, क्योंकि यह नैतिक तर्क पर आधारित होती है और व्यक्ति हमेशा सही कार्य करेगा, भले ही उसके कार्य पर नजर रखने वाला कोई न हो, क्योंकि वह स्वयं को अपने प्रति जवाबदेह मानता है। यहाँ व्यक्ति अपने कार्यों और निर्णयों का स्वामित्व लेता है।

जवाबदेही और जिम्मेदारी के बीच अंतर

- जिम्मेदारी से तात्पर्य कुछ कर्तव्यों के प्रभारी होने से है, जिन्हें एक निश्चित पद/पदवी पर होने के कारण निष्पादित करने की अपेक्षा की जाती है। जवाबदेही इससे एक कदम आगे है। इसमें उत्तरदायित्व (Answerability) शामिल है, अर्थात् कर्तव्य के निर्वहन से प्राप्त परिणामों के लिए उत्तरदायी होना। इसलिए कार्य पूरा होने के बाद ही किसी व्यक्ति की जवाबदेही तय की जा सकती है।
  - **उदाहरण:** सरकार की **किफायती किराया आवास योजना** (Affordable Rental Housing Scheme) प्रवासी श्रमिकों के लिए कम लागत पर आवास सुनिश्चित करती है।
- नैतिक शासन एक सतत प्रक्रिया है, जो प्रशासन से शुरू होकर सभी नागरिकों तक विस्तृत है। लोग पारदर्शिता और अटूट नैतिकता के साथ उन लोगों का विश्वास जीतने की कोशिश करते हैं जिनके साथ वे साझेदारी करते हैं, स्थायी सेवा संबंध बनाते हैं और लंबे समय तक व्यापार को मजबूत करते हैं।

अंतरराष्ट्रीय संबंध और वित्तपोषण से जुड़े नैतिक मुद्दे

अंतरराष्ट्रीय नैतिकता (International Ethics) **का तात्पर्य** सार्वभौमिक मानकों और मूल्यों के एक समूह से है जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रों के व्यवहार और कार्यों को निर्देशित और विनियमित करती है। **उदाहरण के लिए**, अधिकांश देश मौलिक सिद्धांतों के एक समूह के रूप में बुनियादी मानवाधिकारों को बनाए रखते हैं और उनकी रक्षा करते हैं।

अंतरराष्ट्रीय नैतिकता का महत्त्व

अंतरराष्ट्रीय नैतिकता के महत्त्व को अंतरराष्ट्रीय संबंधों में इसकी विभिन्न भूमिकाओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

- **मानवीय नैतिकता (Humanitarian Ethics):** नैतिकता यह गारंटी देती है कि विज्ञान, रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में प्रगति तथा इन क्षेत्रों में विभिन्न देशों के बीच सहयोग **मानवाधिकारों** में बाधा नहीं डालता हो। **उदाहरण के लिए, मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था (Missile Technology Control Regime, MTCR), ऑस्ट्रेलिया समूह (Australia Group) और परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (Nuclear Suppliers Group)** जैसे संगठनों के माध्यम से हथियारों के अंतिम उपयोग पर प्रतिबंध लगाने वाले देश।
- **जिम्मेदारी (Responsibility)**: नैतिकता यह सुनिश्चित करती है कि समृद्ध और विकसित देश कम विकसित देशों की प्रगति में योगदान दें, जिससे वे इन देशों में मानव विकास के लिए भी जवाबदेह बन सकें। **उदाहरण - पेरिस जलवायु परिवर्तन समझौता** और जलवायु परिवर्तन को कम करने में **साझा लेकिन विभेदित जिम्मेदारियों (Common But Differential Responsibilities) की अवधारणा।**
- **शांति और सद्भाव (Peace and Harmony):** नैतिकता यह सुनिश्चित करती है कि वैश्विक मामलों का संचालन इस तरह से किया जाए जिससे **राष्ट्रों के बीच शांति, सद्भाव और समानता को बढ़ावा मिले। संयुक्त राष्ट्र** की स्थापना **विश्व में शांति बनाए रखने** के प्रयास का एक उदाहरण है।
- **करुणा (Compassion):** नैतिकता अंतरराष्ट्रीय संबंधों में **करुणा** को बढ़ावा देती है**,** जिससे देश चुनौतीपूर्ण समय में एक-दूसरे के साथ एकजुटता से खड़े होने के लिए प्रेरित होते हैं। उदाहरण के लिए, अनेक देश गरीब देशों को **कोविड-19 के टीके** उपलब्ध कराने के लिए कोवैक्स **कार्यक्रम (COVAX Programme) के माध्यम से सहयोग कर रहे हैं।**
- **नस्लवाद (Racism):** नैतिकता देशों को अपनी नीतियों से नस्लवाद को खत्म करने की दिशा में काम करने के लिए मजबूर करती है। इसका **एक उदाहरण अंतरराष्ट्रीय दबाव है जिसके कारण दक्षिण अफ्रीका ने** रंगभेद **को समाप्त कर दिया।**
- **वैधता (Legitimacy)**: नैतिकता देशों को **वैधता प्रदान करती है**, लेकिन यह उनके कार्यों के आधार पर वैधता को रद्द भी कर सकती है। उदाहरण के लिए, **अफ़गानिस्तान में तालिबान मानवाधिकारों के उल्लंघन** के कारण अंतरराष्ट्रीय वैधता से वंचित है।
- **वैश्विक समस्याओं का समाधान (Solutions to Global Problems):** नैतिकता देशों को केवल अपने हितों के लिए अल्पकालिक लक्ष्यों का पीछा करने के बजाय वैश्विक समस्याओं को हल करने में सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित करती है। **आतंकवाद से निपटने** में विभिन्न **देशों के बीच सहयोग** इसका एक उदाहरण **है।**

अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नैतिक चिंताएँ

- **जिम्मेदारी और समानता का अभाव:** यद्यपि जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक घटना है और विकसित देश जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार हैं, लेकिन जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विकासशील और अल्प विकसित देशों पर पड़ेगा।
  - **उदाहरण:** विकसित देश जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं हैं और वे **'साझा लेकिन विभेदित जिम्मेदारी' के विरुद्ध हैं।**
- **आतंकवाद:** आतंकवाद विशेषकर सोशल मीडिया के युग में मानवता के लिए एक चुनौती है, लेकिन दुनिया भर के देश आतंकवाद की एक बुनियादी परिभाषा पर सहमत नहीं हो पाए हैं।

- भारत द्वारा प्रस्तावित **आतंकवाद-रोधी व्यापक कन्वेंशन 1996 से संयुक्त राष्ट्र** में **लंबित** है।

- **नस्लवाद:** यद्यपि वैश्विक संस्थाएँ नस्लवाद को समाप्त करने के लिए काम कर रही हैं, फिर भी यह अभी भी प्रचलित है।
    - उदाहरण: अमेरिका में जॉर्ज फ्लॉयड मामला, मेगन मार्केल का बच्चों का मामला
    - **तीसरी दुनिया (Third World) के प्रति उदासीनता:** कठिन समय में देश वैश्विक हित के बजाय अपने स्वार्थ को देखते हैं।
    - **उदाहरण: रूस का यूक्रेन पर हमला** और **चीन का अपने रणनीतिक हित** के लिए ताइवान के प्रति आक्रामक दृष्टिकोण आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान उत्पन्न कर रहा है। इसके परिणामस्वरूप, कच्चे तेल जैसी वस्तुओं की कीमत में वृद्धि हो रही है।
- **जवाबदेही का अभाव:** वैश्विक संगठन शक्तिशाली देशों की जवाबदेही सुनिश्चित करने में सक्षम नहीं हैं।
    - **उदाहरण:** चीनी विस्तारवाद और उसके द्वारा दक्षिण चीन सागर विवाद पर स्थायी मध्यस्थता न्यायालय के फैसले का पालन करने से इनकार करना।
- **स्वार्थ:** देश प्रायः वैश्विक समुदाय के लिए नहीं, बल्कि अपने संकीर्ण स्वार्थों के लिए काम करना चाहते हैं।
    - **उदाहरण:** कच्चे तेल के उच्च बाजार मूल्य के लिए **ओपेक देशों** द्वारा कच्चे तेल का नियंत्रित उत्पादन करना, **कोविड-19 टीकों** के लिए **पेटेंट छूट पर आम सहमति न बन पाना।**

अंतरराष्ट्रीय वित्तपोषण से जुड़े नैतिक मुद्दे

अंतरराष्ट्रीय वित्तपोषण से तात्पर्य विकास, सुरक्षा और अन्य उद्देश्यों के लिए धनी और उन्नत देशों द्वारा गरीब देशों को दी जाने वाली सहायता से है। हालाँकि, इस सहायता से निम्नलिखित नैतिक मुद्दे उत्पन्न होते हैं:

- **राष्ट्रों की संप्रभुता को नष्ट करना:** प्राप्तकर्ता देशों को धन देते समय दाता एजेंसियाँ कई शर्तें रखती हैं, जिनके बारे में निर्णय देश की जनता और सरकारों द्वारा सर्वोत्तम रूप से किया जाता है।
    - **उदाहरण: 1991 के वित्तीय संकट** के दौरान **भारत** को दिए गए ऋण पर आईएमएफ की शर्तें।
- **मजबूरी का फायदा उठाना:** देश प्रायः अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए प्राप्तकर्ता देशों की मजबूरी का फायदा उठाते हैं।
    - **उदाहरण: चीन की ऋण-जाल कूटनीति (debt-trap diplomacy)** गरीब देशों की बुनियादी ढाँचे संबंधी आवश्यकताओं का गलत फायदा उठाती है।
- **गैर सरकारी संगठनों को वित्तपोषण:** देश अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए गैर सरकारी संगठनों को वित्तपोषण प्रदान करते हैं।
    - **उदाहरण:** ग्रीनपीस द्वारा भारत में परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन।
- **क्लिनिकल परीक्षण:** दवाइयाँ बनाने वाले देश प्रायः गरीब देशों में क्लिनिकल परीक्षण करते हैं और इसके लिए प्राप्तकर्ता देशों को धन मुहैया कराते हैं, जो मानवाधिकारों का उल्लंघन है।
- **नव-उपनिवेशवाद:** देश अपनी बाजार-रणनीति और वित्तपोषण का उपयोग प्राप्तकर्ता देशों में नव-उपनिवेशवाद को बढ़ावा देने के लिए करते हैं, जिसमें कारखानों की स्थापना और उन पर निर्भरता पैदा करना शामिल है।
    - **उदाहरण:** बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर **पश्चिमी संस्कृति को बढ़ावा देने का आरोप लगाया जाता है।**
- **आतंकवाद का वित्तपोषण:** कई बार, आतंकवाद के वित्तपोषण के लिए अंतरराष्ट्रीय वित्तपोषण का उपयोग किया गया है तथा मेजबान देश में काले धन का भी प्रयोग किया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय नैतिक मुद्दों से निपटने के लिए वैश्विक प्रयास

मुद्दे और वैश्विक प्रयास (Issues and Global Efforts)
जलवायु परिवर्तन संबंधी मुद्दे:
अंतरराष्ट्रीय समानता संबंधी चिंताएँ (International Equity Concerns): जलवायु परिवर्तन के लिए सबसे कम जिम्मेदार और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से लड़ने की सबसे कम आर्थिक क्षमता वाले देश उससे सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। उदाहरण के लिए मार्शल द्वीप समूह।
साझा लेकिन विभेदित जिम्मेदारियों का मुद्दा (Issue of Common but Differentiated Responsibilities): वर्तमान और भावी पीढ़ियों के साथ-साथ विकसित और विकासशील देशों की जिम्मेदारियों को परिभाषित करने और उनमें अंतर करने में समस्यायें हैं।
जलवायु संशयवादी (Climate Sceptics) जलवायु परिवर्तन को वास्तविक नहीं मानते।
वैश्विक प्रयास (Global Efforts)
जलवायु परिवर्तन के संबंध में मजबूत कार्रवाई के प्रति प्रतिबद्धता, जिसमें विवेकपूर्ण उपभोग और अपशिष्ट में कमी पर आधारित टिकाऊ जीवन शैली को बढ़ावा देना शामिल है।
अपनाए गए वित्तीय उपकरण जैसे - प्रदूषक-भुगतान सिद्धांत, कार्बन कर, ऊर्जा बचत प्रमाणपत्र, ग्रीन बांड आदि।
मिशन इनोवेशन: यह वैश्विक स्वच्छ ऊर्जा नवाचार को गति देने के लिए 22 देशों और यूरोपीय संघ की एक वैश्विक पहल है। इसमें भाग लेने वाले देशों ने 5 वर्षों में अपनी सरकारों के स्वच्छ ऊर्जा अनुसंधान एवं विकास निवेश को दोगुना करने की प्रतिबद्धता जताई है।
आर्थिक विकास को ग्रीन-हाउस गैसों के उत्सर्जन से अलग करना।
ग्लासगो जलवायु शिखर सम्मेलन और प्रमुख देशों ने कार्बन न्यूट्रल बनने के अपने लक्ष्य का खुलासा किया। **उदाहरण के लिए,** भारत 2070 तक कार्बन न्यूट्रल बन जाएगा।
स्वच्छ विकास तंत्र (Clean Development Mechanism, CDM): यह क्योटो प्रोटोकॉल के तहत ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाने के लिए एक बाजार तंत्र को संदर्भित करता है। यह क्योटो प्रोटोकॉल के तहत उत्सर्जन में कमी लाने का लक्ष्य निर्धारित करने वाले औद्योगिक/विकसित देश को उन विकासशील देशों में से किसी में भी उत्सर्जन में कमी लाने वाली परियोजना को लागू करने और उत्सर्जन में प्रमाणित कमी (Certified Emission Reduction, CER) के व्यापार योग्य क्रेडिट अर्जित करने की अनुमति देता है, जिनमें से प्रत्येक क्रेडिट एक टन कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) के समतुल्य होता है।
ग्लासगो शिखर सम्मेलन में **जलवायु वित्त और जलवायु वित्त वितरण योजना (Climate finance and Climate Finance Delivery Plan)** के लिए प्रस्ताव रखा गया।
नवीकरणीय ऊर्जा के स्रोतों पर ध्यान केन्द्रित करना तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना करना, जैसे- अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA)।

मुद्दे और वैश्विक प्रयास (Issues and Global Efforts)
अधिक कार्बन सिंक बनाने के लिए हरित आवरण को बढ़ाना।
आईपीआर (बौद्धिक संपदा अधिकार) (**Intellectual Property Rights**):
• विकसित देश बौद्धिक संपदा अधिकारों के प्रतिबंधात्मक प्रावधानों के माध्यम से गरीब देशों को नई प्रौद्योगिकियों (यहाँ तक कि जीवन रक्षक दवाओं) तक पहुँच से वंचित कर रहे हैं।
• यह निर्धारित करना आवश्यक है कि क्या किसी देश के लिए वाणिज्यिक आधार पर अपने बौद्धिक संपदा अधिकारों की रक्षा करना न्यायोचित है, या उसे मानवता के व्यापक हित के लिए प्रौद्योगिकी साझा करनी चाहिए।
वैश्विक प्रयास
• बौद्धिक संपदा अधिकारों के प्रवर्तन के संबंध में विश्व व्यापार संगठन द्वारा निर्धारित दिशानिर्देश।
• आपातकालीन स्थिति में अनिवार्य लाइसेंसिंग प्रावधानों को रद्द करना।

निष्कर्ष

अंतरराष्ट्रीय नैतिकता सार्वभौमिक मूल्यों का एक समुच्चय है जो राष्ट्र-राज्यों (Nation-States) के कार्यों और व्यवहारों को नियंत्रित करता है। अंतरराष्ट्रीय संबंधों में, राज्य को एक अभिकर्ता (Actor) कहा जाता है। इसलिए, सभी निर्णय देश के राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने और उन्हें आगे बढ़ाने वाले होने चाहिए (मैकियावेलियन नैतिकता) लेकिन इसे नैतिक रूप से भी देखा जाना चाहिए।

कॉर्पोरेट गवर्नेंस

- कैडबरी समिति (**Cadbury Committee**) के अनुसार, **कॉर्पोरेट गवर्नेंस** वह **प्रणाली है जिसके द्वारा कंपनियों को निर्देशित और नियंत्रित किया जाता है।**
- यह प्रणालियों, प्रक्रियाओं और सिद्धांतों का एक समूह है जो यह सुनिश्चित करता है कि किसी कंपनी का संचालन सभी हितधारकों के सर्वोत्तम हित में हो। यह कॉर्पोरेट निष्पक्षता, पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने के बारे में है।

कॉर्पोरेट गवर्नेंस का महत्त्व

अच्छे कॉर्पोरेट गवर्नेंस से न केवल कंपनी को बल्कि उसके आसपास के वातावरण को भी निम्नलिखित तरीके से लाभ होता है:

- **कॉर्पोरेट सततता (Corporate Sustainability):** सभी हितधारकों के सर्वोत्तम हित में चलने वाले कॉर्पोरेट संगठन में विश्वास और भरोसा होता है और वे **दीर्घकालिक सततता** प्रदान करते हैं।
- **प्रीमियम (Premium)**: दुनिया भर में सुशासित कम्पनियाँ उन कम्पनियों, की तुलना में 10 से 40 प्रतिशत अधिक प्रीमियम कमाती हैं, जो सुशासित नहीं हैं।
- **भाई-भतीजावाद पर अंकुश लगाना (Curbing Nepotism):** अच्छी कॉर्पोरेट प्रथायें **भाई-भतीजावाद और पक्षपात पर अंकुश लगाती हैं** तथा नियुक्तियों में योग्यता को महत्त्व देती हैं।
- **विदेशी निवेश (Foreign Investment):** पारदर्शिता और सुदृढ़ व्यावसायिक सिद्धांतों पर आधारित अच्छे कॉर्पोरेट व्यवहार विदेशी निवेश को आकर्षित करते हैं, जो अब और अधिक उदार हो गया है।

कार्पोरेट गवर्नेंस के चार स्तंभ

निष्पक्षता	शेयरधारकों के अधिकारों का संरक्षण, समान व्यवहार और उल्लंघनों का निवारण।
स्वतंत्रता	हितों के टकराव से बचना या उन्हें कम करना, स्वतंत्र निदेशक और सलाहकार।
जवाबदेही	प्रबंधन बोर्ड के प्रति जवाबदेह होता है और बोर्ड शेयरधारकों के प्रति जवाबदेह होता है।
पारदर्शिता	सभी प्रमुख मामलों में समय पर सटीक प्रकटीकरण।

- **भ्रष्टाचार के प्रति सुभेद्यता (Vulnerable to Corruption):** प्रायः किसी कंपनी में घोटाले और धोखाधड़ी की संभावना अधिक होती है, जहाँ निदेशकों और वरिष्ठ प्रबंधकों को औपचारिक शासन संहिता का अनुपालन नहीं करना पड़ता है।
- **कमजोर कॉर्पोरेट कानून (Weak Corporate Laws):** एक अच्छा फर्म-स्तरीय शासन प्रायः किसी देश के कॉर्पोरेट कानूनों या ऐसे कानूनों के प्रवर्तन में कमजोरियों की भरपाई करता है, क्योंकि ऐसे संगठन सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, ईमानदारी, पारदर्शिता आदि जैसे मूल्यों को बनाए रखते हैं।
- **आंतरिक जाँच और संतुलन (Internal Checks and Balances):** अच्छी कॉर्पोरेट संस्थाएँ **कुप्रबंधन, हितों के टकराव** और **कंपनी के संसाधनों** के **दुरुपयोग को रोकने के लिए बेहतर आंतरिक जाँच और संतुलन की व्यवस्था करती हैं।**

भारत में कॉर्पोरेट गवर्नेंस से जुड़े मुद्दे

- **प्रमोटर** के **नेतृत्व वाला बोर्ड (Promoter-Led Board):** यह देखा गया है कि बोर्ड की अध्यक्षता प्रमोटरों द्वारा की जाती है और इससे बोर्ड, प्रमोटर-अध्यक्ष की इच्छा और आदेश के अनुसार कार्य करता है।
  - **उदाहरण: जेट एयरवेज** के मामले में नरेश गोयल।
- **क्रोनी कैपिटलिज्म (Crony Capitalism):** यह भी एक ऐसा मुद्दा है जहाँ करीबी लोगों को पारस्परिक रूप से लाभप्रद व्यवहार प्राप्त होता है।
  - **उदाहरण:** 2010 के दशक के प्रारंभ में कोयला घोटाले में कैप्टिव कोयला ब्लॉक आवंटन।
- **मिलीभगत (Collusion):** कंपनियाँ कभी-कभी निवेशकों, विनियामकों, बोर्ड और अन्य हितधारकों को गुमराह करने के लिए लेखा परीक्षकों के साथ मिलीभगत करती हैं।
  - **उदाहरण: सत्यम घोटाला, डीएचएफएल मामला** आदि।
- **निगरानी का अभाव (Lack of Oversight):** यद्यपि वैधानिक परिवर्तन किए गए हैं, लेकिन प्रवर्तन तंत्र ने इन परिवर्तनों का पालन नहीं किया है, जिसके कारण निगरानी में कमी आई है।
- **पक्षपात (Favouritism)**: प्रायः ऋण देने वाली संस्थाएँ अपने करीबी लोगों को ऋण देने में पक्षपात करती हैं, जबकि सत्यनिष्ठा जैसे पेशेवर मूल्यों की अनदेखी करती हैं।
  - **उदाहरण:** आईसीआईसीआई बैंक, चंदा कोचर मामला।

- **भारी जोखिम (Huge Risks):** कुछ मामलों में, कंपनियों के मालिकों ने अपनी निजी क्षमता में भारी जोखिम उठाया और भुगतान करने में असमर्थ रहे।
    - **उदाहरण: कैफे कॉफी डे के मामले** में वी. सिद्धार्थ।
- **स्वतंत्रता का अभाव (Lack of Independence):** स्वतंत्र निदेशकों को उनके काम में स्वतंत्रता नहीं दी जाती है तथा बोर्ड के अन्य सदस्यों द्वारा उन पर विशेष निर्णयों के लिए दबाव डाला जाता है। **उदाहरण:** टाटा-मिस्त्री मामला।

भारत में नैतिक कॉर्पोरेट गवर्नेंस सुनिश्चित करने के लिए मौजूदा उपाय

- **कंपनी अधिनियम, 2013 (Companies Act, 2013):** यह भारत में कंपनियों के निगमन, गठन और कामकाज को नियंत्रित करता है। यह भारत में सभी सूचीबद्ध और गैर-सूचीबद्ध कंपनियों को नियंत्रित करने के लिए व्यापक प्रावधान करता है। यह शेयरधारकों को सशक्त बनाता है और कॉर्पोरेट गवर्नेंस के लिए उच्च मूल्यों पर प्रकाश डालता है।
- **प्रतिभूति संविदा (विनियमन) अधिनियम, 1956 (The Securities Contracts (Regulation) Act, 1956):** इस अधिनियम का उद्देश्य व्यावसायिक लेन-देन को विनियमित करके प्रतिभूतियों में अवांछनीय लेनदेन को रोकना है।
- **भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (Competition Commission of India):** प्रतिस्पर्धा संस्कृति को बढ़ावा देने और बनाए रखने तथा व्यवसायों को निष्पक्ष, प्रतिस्पर्धी और नवोन्मेषी बनने के लिए प्रेरित करने के लिए सीसीआई की स्थापना की गई थी। इसका उद्देश्य बाजार के कामकाज में एकाधिकारवादी प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाना है।
- **राष्ट्रीय कंपनी विधि अधिकरण (National Company Law Tribunal): यह कंपनी अधिनियम, 2013** के तहत स्थापित किया गया है जो सिविल प्रकृति के कॉर्पोरेट विवादों को देखता है। यह दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता (Insolvency and Bankruptcy Code) के तहत न्याय निर्णयन प्राधिकरण भी है।
- **लेखांकन मानक (Accounting Standards):** इन्हें भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट्स संस्थान द्वारा वित्तीय रिपोर्टिंग में आवश्यक संरचना लाने के लिए जारी किया जाता है तथा इनके द्वारा लेखांकन नीतियों, नकदी प्रवाह के विवरणों, निर्माण संविदाओं, ऋण लागत का प्रकटीकरण, संबंधित-पक्षकार प्रकटीकरण आदि अनिवार्य किया जाता है।
- **भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के दिशानिर्देश:** सेबी विनियामक प्राधिकरण होने के नाते सूचीबद्ध कंपनियों पर क्षेत्राधिकार रखता है, तथा निवेशकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कंपनियों के लिए विनियम, नियम और दिशानिर्देश जारी करता है।
- **सचिवीय मानक (Secretarial Standards):** इन्हें भारतीय कंपनी सचिव संस्थान (आईसीएसआई) द्वारा जारी किया जाता है, जो एक स्वायत्त निकाय है, जो नए कंपनी अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार सचिवीय मानक जारी करता है।

भारत में कॉर्पोरेट गवर्नेंस से संबंधित समितियाँ

कुमार मंगलम बिड़ला समिति की रिपोर्ट (2000)

- रिपोर्ट में 3 करोड़ या उससे अधिक चुकता शेयर पूँजी वाली **सूचीबद्ध कंपनियों** के लिए कुछ **अनिवार्य सिफारिशें की गई।**
- इन **सिफारिशों** में निम्नलिखित शामिल हैं:
    - **निदेशक मंडल में** कार्यकारी **और गैर-कार्यकारी निदेशकों का उचित मिश्रण** होना **चाहिए** ।
    - **लेखापरीक्षा समिति में तीन स्वतंत्र निदेशक** शामिल होने चाहिए ।
    - **पारिश्रमिक समिति** की स्थापना।
    - बोर्ड **को प्रति वर्ष न्यूनतम चार बैठकें** आयोजित करनी चाहिए।
    - शेयरधारकों को निवेश के संबंध में जानकारी उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

नारायण मूर्ति समिति की सिफारिशें (2002)

- समिति ने **लेखापरीक्षा समिति की जिम्मेदारियों, वित्तीय प्रकटीकरण की गुणवत्ता** और बोर्डों द्वारा वार्षिक रिपोर्टों में व्यावसायिक जोखिमों का आकलन और प्रकटीकरण करने की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया।
- प्रमुख अनिवार्य **सिफारिशों में निम्नलिखित** शामिल हैं:
    - लेखापरीक्षा समितियों की जिम्मेदारियों को मजबूत करना, जिसमें कम से कम एक सदस्य को वित्तीय ज्ञान होना तथा दूसरे सदस्य को लेखांकन या संबंधित **वित्तीय प्रबंधन में दक्षता होना आवश्यक है।**
    - **वित्तीय प्रकटीकरण की गुणवत्ता** में सुधार करना, विशेष रूप से संबंधित पक्षकार लेनदेन से संबंधित वित्तीय प्रकटीकरण में।

नरेश चंद्र समिति की सिफारिशें (2002)

- समिति ने नवंबर, 2002 में कॉर्पोरेट गवर्नेंस और लेखापरीक्षा पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।
- **समिति ने निम्नलिखित सिफारिशें कीं:**
    - कुछ **गैर-लेखापरीक्षा सेवाओं,** जैसे **मूल्य निर्धारण सेवाओं** और **आंतरिक लेखापरीक्षा को लेखापरीक्षा ग्राहकों के लिए प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।**
    - **लेखा परीक्षकों और लेखापरीक्षा भागीदारों का अनिवार्य रूप से रोटेशन** होना चाहिए तथा टीम के कम से कम पचास प्रतिशत सदस्यों का प्रत्येक पाँच वर्ष में रोटेशन होना चाहिए।
    - लेखापरीक्षा फर्मों को लेखापरीक्षा कार्य की शर्तों पर सहमति देने से पहले **लेखापरीक्षा समिति या निदेशक मंडल** को **स्वतंत्रता का वार्षिक प्रमाणन (Annual Certification of Independence) प्रदान करना चाहिए।**

उदय कोटक समिति की सिफारिशें

- समिति ने शीर्ष 500 सूचीबद्ध कंपनियों में कॉर्पोरेट गवर्नेंस के लिए कई **सिफारिशें कीं, जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं:**
    - **अध्यक्ष और सीईओ/एमडी की भूमिकाओं का पृथक्करण।**
    - किसी व्यक्ति के लिए **अधिकतम आठ निदेशक पदों की सीमा लागू करना।**
    - **सूचीबद्ध कंपनियों के बोर्ड के सदस्यों में से कम से कम आधे सदस्य स्वतंत्र निदेशक** होने चाहिए।
    - **स्वतंत्र निदेशकों के लिए न्यूनतम योग्यता** अनिवार्य करना तथा उनके प्रासंगिक कौशल का प्रकटीकरण करना।

- **सेबी** (भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड) को **व्हिसल-ब्लोअर्स को संरक्षण प्रदान करने के लिए शक्तियाँ प्रदान करना**।
- यह सुझाव दिया गया कि सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों को नोडल मंत्रालयों के बजाय सूचीबद्ध विनियमों द्वारा नियंत्रित किया जाना चाहिए।
- प्रकटीकरण शर्तों को बढ़ाना, जैसे कि निधि के उपयोग, लेखा परीक्षक की साख, लेखा परीक्षा शुल्क आदि का पूर्ण प्रकटीकरण।

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व

सतत विकास के लिए विश्व व्यापार परिषद (**World Business Council for Sustainable Development**) के अनुसार, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व व्यवसाय द्वारा नैतिक रूप से व्यवहार करने और कार्यबल और उनके परिवारों के साथ-साथ स्थानीय समुदाय और समाज के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करते हुए आर्थिक विकास में योगदान करने की निरंतर प्रतिबद्धता है।

कंपनी अधिनियम, 2013 के तहत कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रावधान

- **कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 135,** जिसमें सीएसआर संबंधी प्रावधान हैं, निम्नलिखित कंपनियों पर लागू होती है:
  - **500 करोड़ रुपये** या **उससे अधिक की** निवल संपत्ति हो, या
  - **पाँच करोड़ रुपये या उससे अधिक का** निवल लाभ हो।
  - इस अधिनियम के तहत कम्पनियों को **पिछले तीन वर्षों के अपने औसत निवल लाभ** का **कम से कम 2%** सीएसआर गतिविधियों पर खर्च करना अनिवार्य है।

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का महत्त्व

- **उपभोक्ताओं का विश्वास (Consumers' Trust)** - कई उपभोक्ता सक्रिय रूप से उन कंपनियों की तलाश करते हैं जो धर्मार्थ कार्यों का समर्थन करती हैं। इसलिए, सीएसआर ग्राहकों को आकर्षित करता है।
- **सार्वजनिक छवि (Public Image):** सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत आने वाली कम्पनियों की ब्रांड वैल्यू और सार्वजनिक छवि अच्छी होती है।
  - **उदाहरण:** टाटा समूह की कंपनियाँ।
- **कम्पनियों को लाइसेंस:** सीएसआर कम्पनियों को स्थानीय समुदायों का विश्वास हासिल करने का अवसर प्रदान करता है तथा यह सुनिश्चित करता है कि संसाधन स्थानीय समुदायों के विकास के लिए भी आवंटित किए जायें।
- **लाभप्रदता (Profitability)**: सीएसआर गतिविधियाँ कंपनी की लाभप्रदता बढ़ाती हैं क्योंकि नैतिक आचरण ग्राहकों के क्रय निर्णयों पर प्रभाव डालता है।
- **नैतिक अपील (Moral Appeal):** यह कंपनियों से गांधीजी के **ट्रस्टीशिप सिद्धांत** की तर्ज पर अच्छे नागरिक बनने की अपील करता है।
- **प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त (Competitive Advantage):** जो व्यवसाय यह दर्शाते हैं कि वे अपने प्रतिस्पर्धियों की तुलना में सामाजिक रूप से अधिक जिम्मेदार हैं, वे आगे रहते हैं।
- **कर्मचारियों का मनोबल बढ़ना (Morale Boost for Employees):** सीएसआर प्रथाओं का कर्मचारियों के मनोबल पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, क्योंकि इससे कंपनी की समानुभूति पर उनका विश्वास मजबूत होता है।

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व से संबंधित मुद्दे

- **व्यय का विषम पैटर्न (Skewed Pattern of Expenditure):** कई सीएसआर प्रयास मुख्य रूप से कंपनी के परिचालन परिप्रेक्ष्य और कार्यान्वयन की आसानी से प्रेरित होते हैं।
- **अतिरिक्त कॉर्पोरेट कर के रूप में देखा जाता है (Viewed as Additional Corporate Tax):** सीएसआर **दायित्व को अक्सर 2% कर के रूप में देखा जाता है,** हालाँकि इसे सरकार को देने के बजाय कंपनियों द्वारा खर्च किया जाता है।
- **खराब क्रियान्वयन (Poor Implementation):** सीएसआर के क्रियान्वयन में रणनीतिक सोच और नवाचार बहुत कम दिखाई पड़ता है। सीएसआर का बड़ा लक्ष्य समझ में नहीं आता, कंपनियाँ इसे केवल एक धर्मार्थ प्रयास के रूप में देखती हैं।
- **सुदृढ़ नीति का अभाव (Lack of Robust Policy):** दीर्घकालिक सुदृढ़ सीएसआर नीति का अभाव है, जिसके कारण सीएसआर व्यय को निश्चित दिशा नहीं दी जाती है।
- **गतिविधियों का दोहराव (Duplication of Activities):** विभिन्न कॉर्पोरेट घरानों द्वारा गतिविधियों के दोहराव के परिणामस्वरूप सहयोगात्मक दृष्टिकोण के बजाय प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।

आगे की राह

- इंजेती श्रीनिवास समिति की सिफारिशें:
  - **सीएसआर व्यय को कर कटौती योग्य** बनाया जाए।
  - **कंपनियों को खर्च न किए गए धन को तीन से पाँच साल तक आगे बढ़ाने की अनुमति देना।**
  - **कंपनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची 7 को सतत विकास लक्ष्यों** के अनुरूप बनाना।
  - स्थानीय क्षेत्र की प्राथमिकताओं और राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के बीच संतुलन करना।
  - **5 करोड़** या **उससे अधिक** के **सीएसआर दायित्व** के लिए **प्रभाव आकलन अध्ययन** शुरू करना।
  - **एमसीए पोर्टल** पर कार्यान्वयन एजेंसियों का **पंजीकरण।**
  - योगदानकर्ताओं, लाभार्थियों और एजेंसियों को जोड़ने के लिए **सीएसआर एक्सचेंज पोर्टल** विकसित करना।
  - **सामाजिक लाभ बांड में सीएसआर की** अनुमति देना।
  - **सामाजिक प्रभाव वाली कंपनियों को** बढ़ावा देना।

समाचारों में नैतिक मुद्दे

भारत में शराबखोरी (Alcoholism In India)

संदर्भ:

- जिन राज्यों में शराब पर प्रतिबंध है, वहाँ हाल के वर्षों में जहरीली शराब पीने से होने वाली मौतें एक गंभीर समस्या बन गई हैं।
- इसके साथ ही, देश में शराब की कुल खपत भी बढ़ गई है, जिससे सामाजिक प्रगति की दिशा पर सवाल उठ रहे हैं।

नैतिक चिंताएँ

- राज्य और व्यक्ति के बीच संबंधों में यह नैतिक दुविधा उत्पन्न होती है कि क्या मौलिक अधिकारों द्वारा गारंटीकृत व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वायत्तता के संरक्षण को प्राथमिकता दी जाए या **सार्वजनिक स्वास्थ्य मामलों में हस्तक्षेप करके राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों (डीपीएसपी) के तहत संवैधानिक जिम्मेदारियों को पूरा किया जाए।**
    - शराब का सेवन विभिन्न दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याओं, सामाजिक हिंसा और सड़क दुर्घटनाओं में वृद्धि से जुड़ा हुआ है।
- इसका एक पहलू राज्य सरकार के लिए शराब व्यवसाय से अर्जित राजस्व और **कमजोर, असुरक्षित और सुभेद्य व्यक्तियों की सुरक्षा के उसके कर्तव्य के बीच संतुलन से संबंधित है।**
- एक और नैतिक दुविधा उन उत्पादों के विपणन में उत्पन्न होती है, जिनका लाभ अधिकतम करने के लिए व्यक्तियों और परिवारों पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है, जबकि समझदारी से शराब पीने को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक जिम्मेदारी का पालन किया जाना चाहिए।
- शराब उद्योग में नौकरियाँ बचाना एक चुनौती है, साथ ही निषेध उपायों के परिणामस्वरूप अवैध शराब कारोबार की वृद्धि को भी रोकना है।
- रिश्तों और परिवारों की रक्षा के लिए सामाजिक मानदंडों या सामाजिक दबाव के उपयोग या व्यक्तियों को कुछ सीमाओं के भीतर व्यक्तिगत विवेक का प्रयोग करने की अनुमति देने के संबंध में नैतिक दुविधायें उत्पन्न होती हैं।
- विभिन्न समाजों में शराब के सेवन के बारे में अलग-अलग विचार हैं, कुछ लोग इसे सामाजिक-धार्मिक अनुष्ठानों का हिस्सा मानते हैं, जबकि अन्य इससे परहेज करने की वकालत करते हैं।

आगे की राह

- ये नैतिक दुविधायें सोच-समझकर निर्णय लेने और परस्पर विरोधी हितों, जैसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता, सार्वजनिक स्वास्थ्य, सामाजिक जिम्मेदारी और आर्थिक प्रतिफलों के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता पर प्रकाश डालती हैं।
- इसके लिए व्यापक सामाजिक प्रभाव पर विचार करने तथा ऐसे समाधानों के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है जो नैतिक सिद्धांतों और कानूनी ढाँचे को कायम रखते हुए व्यक्तियों के कल्याण और हितों को प्राथमिकता दें।

विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन

- **जलवायु परिवर्तन और इसके परिणामों के मुख्य कारण** मानव द्वारा किए गए परिवर्तन और आर्थिक लाभ के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अतिदोहन हैं।
- यह इस अंतर्निहित धारणा का परिणाम है कि हालाँकि **पर्यावरणीय नियमों को** आर्थिक समृद्धि को सीमित करने वाला माना जाता है, लेकिन विकास नीतियाँ वास्तव में इसे प्रोत्साहित करती हैं।
- इसलिए, सतत विकास का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है।

पर्यावरण की सततता को प्रभावित करने वाले विकासात्मक कारक

- प्राकृतिक आपदाओं से होने वाली वाली मौतें, जो रोकी जा सकती हैं, का एक मुख्य कारण पर्यावरणीय मानकों की उपेक्षा है।
- किसी क्षेत्र में प्राकृतिक आपदाओं के जोखिम को वैज्ञानिक रूप से निर्धारित करने का कोई भी प्रयास कभी भी सही भावना से नहीं किया जाता है।
- अप्रतिबंधित उत्खनन और ढलानों से पहाड़ियों की बेतरतीब कटाई से मृदा अपरदन की संभावना बढ़ जाती है, जिससे भूस्खलन का खतरा बढ़ जाता है।
- जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ कम विकास और पर्यावरणीय क्षरण के बीच संतुलन प्रायः बिगड़ जाता है।
- इसके अतिरिक्त गरीबी बड़े परिवार रखने के लिए मजबूत प्रेरणा पैदा करती है और पलायन को प्रोत्साहित करती है, जो शहरी स्थानों को पर्यावरणीय दृष्टिकोण से अस्थिर बना देता है।

आगे की राह

- **एजेंडा 21, सतत विकास के लिए यूएनसीईडी की रूपरेखा है जो दोनों पक्षों के लिए लाभकारी नीतियों** को अपनाने पर जोर देती है, ये नीतियाँ पर्यावरण संरक्षण, आर्थिक दक्षता और गरीबी उन्मूलन के बीच तालमेल का लाभ उठाती हैं। **इस दृष्टिकोण को क्रियान्वित करने के लिए निम्नलिखित कार्य किए जा सकते हैं:**
- विवेकपूर्ण आर्थिक नीतियाँ पर्यावरणीय स्थिरता प्राप्त करने में सहायक हो सकती हैं। **उदाहरण के लिए** कीमत सब्सिडी को युक्तिसंगत बनाना, संपत्ति अधिकारों की स्पष्टता और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को आसान बनाना।
- सब्सिडी को युक्तिसंगत बनाकर आप पैसा बचा सकते हैं, उत्पादकता बढ़ा सकते हैं और प्रदूषण को काफी हद तक कम कर सकते हैं।
- बड़े पारिस्थितिकी तंत्रों के बारे में स्वदेशी ज्ञान और समझ क्षेत्रों और राष्ट्रों के लिए उपयोगी हो सकती है।
- वैश्विक निर्णय-प्रक्रिया में जैव-विविधता के मुद्दों को एकीकृत करने का महत्त्व जैव-विविधता और पर्यावरणीय सततता के बीच संबंधों द्वारा उजागर होता है।

मानवता का मुख्य लक्ष्य और सबसे बड़ा संघर्ष विकास ही है। हालाँकि, पिछली सदी में हुए अभूतपूर्व आर्थिक और सामाजिक विकास के बावजूद गरीबी, भुखमरी और पर्यावरण क्षरण अभी भी दुनिया भर में मौजूद है। इसलिए, विकास के उद्देश्यों को पर्यावरण कानूनों का उल्लंघन किए बिना पूरा किया जाना चाहिए।

परिवर्तित होती कार्य संस्कृति

देखे गए परिवर्तन

हाल के दिनों में कार्य संस्कृति में महत्त्वपूर्ण बदलाव हुए हैं, जो विभिन्न कारकों से प्रभावित हैं। कार्य संस्कृति में ये बदलाव विभिन्न कारकों से प्रेरित हैं, जिनमें कार्यबल की बदलती ज़रूरतें, तकनीकी प्रगति और कोविड-19 महामारी का प्रभाव शामिल है।

प्रमुख परिवर्तन निम्नलिखित हैं:

- काम करने के अधिक घंटे
- दूरस्थ कार्य (Remote work) में उल्लेखनीय वृद्धि
- स्वचालन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) को तेजी से अपनाना
- प्रौद्योगिकी-आधारित निगरानी
- कर्मचारी कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य पर फोकस
- दूरस्थ सहयोग और डिजिटल उपकरणों की ओर बदलाव
- आवश्यकता आधारित पारस्परिक संप्रेषण

परिणाम

उपर्युक्त परिवर्तनों ने नई परिघटनाओं और प्रवृत्तियों को जन्म दिया है। यहाँ कुछ प्रमुख बदलाव दिए गए हैं:-

- **हसल कल्चर (Hustle Culture):** स्टार्टअप कल्चर के प्रभाव ने समग्र कार्य संस्कृति पर एक बड़ा प्रभाव डाला है, जिसके परिणामस्वरूप हसल कल्चर का उदय हुआ है। यह संस्कृति कर्मचारियों, श्रमिकों या मजदूरों को मानक घंटों से अधिक काम करने के लिए प्रोत्साहित करती है। काम उनके दिमाग में हमेशा बना रहता है, यहाँ तक कि उनके खाली समय या छुट्टियों के दौरान भी।
- **चुपचाप नौकरी छोड़ना (Quiet Quitting):** काम और घर के बीच की सीमाओं के अस्पष्ट होने और काम के घंटों के बढ़ने से चुपचाप नौकरी छोड़ने की अवधारणा को बढ़ावा मिला है। इसका तात्पर्य उन कर्मचारियों से है जो अपनी नौकरी में केवल न्यूनतम काम करते हैं, जैसे कि अपनी शिफ्ट समाप्त होते ही काम छोड़ देना, अतिरिक्त काम के लिए अतिरिक्त मुआवजे की माँग करना और काम व जीवन के बीच स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित करना।
- **चुपचाप नौकरी से निकालना (Quiet Firing):** चुपचाप नौकरी से निकालना एक प्रचलित प्रथा रही है, खास तौर पर बड़ी कंपनियों में। इसमें अप्रिय कार्य वातावरण बनाना और फीडबैक या संसाधनों की कमी के माध्यम से कर्मचारियों की उपेक्षा करके उन्हें नौकरी छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करना शामिल है।
- **मूनलाइटिंग (Moonlighting):** दूरस्थ कार्य और तकनीकी प्रगति के संयोजन से मूनलाइटिंग में वृद्धि हुई है, जहाँ व्यक्ति अपने नियोक्ता की जानकारी के बिना, अपनी नियमित पूर्णकालिक नौकरी के अलावा, प्रायः कार्यालय समय के बाद अतिरिक्त काम करते हैं।

नैतिक चिंताएँ

- **कार्य प्रक्रियाओं का तेजी से डिजिटलीकरण** नई नैतिक चुनौतियाँ पेश करता है। इससे व्यक्तियों की सेहत पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में चिंताएँ हैं, जिसमें प्रौद्योगिकी पर निर्भरता और साइबर सुरक्षा खतरों से संबंधित बढ़ती चिंता शामिल है।
- प्रौद्योगिकी की उन्नति और हाइब्रिड कार्य संस्कृति के उदय के कारण कर्मचारियों में **सामुदायिकता की भावना में गिरावट आई है।**
  - इससे **अकेलेपन** जैसी समस्याएँ भी बढ़ गई हैं तथा कार्यस्थल पर व्यक्तियों की सेहत और सामाजिक जुड़ाव से संबंधित नैतिक चिंताएँ भी उत्पन्न हो गई हैं।
- चुपचाप नौकरी छोड़ने, चुपचाप नौकरी से निकाले जाने जैसी प्रथायें **कर्मचारियों और नियोक्ताओं के बीच ईमानदार बातचीत में बाधा डालती हैं**, जिससे अंततः संगठन के भीतर विश्वास खत्म हो जाता है।
  - इससे कार्यस्थल पर पारदर्शिता, निष्पक्षता और आपसी सम्मान से जुड़े नैतिक मुद्दे उठते हैं।
- **लंबे समय तक काम करने से स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है,** जैसे **स्ट्रोक और हृदय रोग का खतरा बढ़ जाना।**
- कार्यस्थल पर **थकान और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं का बढ़ना** एक गंभीर नैतिक मामला है।

आगे की राह

- ये नैतिक मुद्दे एक ऐसी कार्य संस्कृति बनाने के महत्त्व को उजागर करते हैं जो एक सतत और स्वस्थ कार्य वातावरण सुनिश्चित करने के लिए मानवीय संबंध, विश्वास, सेहत और प्रौद्योगिकी के जिम्मेदारीपूर्ण उपयोग को महत्त्व देती हो।
- डिजिटलीकरण के लाभों और निजता, सुरक्षा व प्रौद्योगिकी के उचित उपयोग की आवश्यकता के बीच संतुलन करना एक नैतिक विचार बन जाता है।
- कर्मचारियों की सेहत को प्राथमिकता देने तथा उत्पादकता और उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता है।

विरोध प्रदर्शन की नैतिकता

संदर्भ

- सरकार द्वारा तीनों सेनाओं में भर्ती के लिए अग्निवीर योजना शुरू किए जाने के बाद विभिन्न स्थानों पर विरोध प्रदर्शन हुए। अभ्यर्थी सेवा की अल्प अवधि और पेंशन लाभ न मिलने के अलावा अन्य मुद्दों पर विरोध प्रदर्शन कर रहे थे।
- इससे पहले कई अवसरों पर जन आंदोलनों के कारण सार्वजनिक संपत्ति को बड़े पैमाने पर नुकसान पहुँचा है, जिसकी भरपाई ज्यादातर मामलों में कभी नहीं हो पाई।
  - हरियाणा में जाट आंदोलन, राजस्थान में गूजर आंदोलन, गुजरात में पाटीदार आंदोलन और राष्ट्रीय राजधानी में विभिन्न विरोध प्रदर्शन सार्वजनिक क्षेत्र में नैतिक आचरण के अभाव के उदाहरण हैं।

विधिक और संवैधानिक स्थिति

- भारत के संविधान के अनुच्छेद 19 के तहत विरोध प्रदर्शन का अधिकार दिया गया है। यह भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, शांतिपूर्वक और बिना हथियार के एकत्र होने का अधिकार और संघ और यूनियन बनाने का अधिकार देता है।
- **मजदूर किसान शक्ति संगठन बनाम भारत संघ मामले** में उच्चतम न्यायालय के फैसले के अनुसार:
  - अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शनों और आंदोलनों के माध्यम से एकत्रित होने और प्रदर्शन करने का अधिकार लोकतांत्रिक नैतिकता के आवश्यक तत्त्व हैं।

विरोध प्रदर्शन के अधिकार पर नियंत्रण

- यद्यपि नागरिकों को विरोध प्रदर्शन करने की स्वतंत्रता प्राप्त है तथापि भारत का संविधान इस अधिकार पर उचित प्रतिबंध भी लगाता है।
  - लोकतंत्र एक ऐसी प्रणाली है जिसमें जनता, जनता द्वारा और जनता के लिए शासन करती है तथा शासन में नागरिकों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित होती है।
  - अनुच्छेद 19 के तहत अधिकारों पर प्रतिबंध भारत की संप्रभुता और अखंडता, राज्य की सुरक्षा, अन्य देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों, **लोक व्यवस्था, शालीनता या नैतिकता के हित में** या अदालत की अवमानना, मानहानि, या किसी अपराध के लिए उकसाने से संबंधित मामलों में लगाए जा सकते हैं।
  - **दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 144** मजिस्ट्रेट को आवागमन, हथियार ले जाने और गैरकानूनी तरीके से एकत्र होने पर प्रतिबंध लगाने के लिए निष्पक्ष आदेश जारी करने का अधिकार देती है।

नैतिक पहलू

- नागरिकों का यह **मौलिक कर्तव्य है** कि वे सार्वजनिक या निजी संपत्ति की रक्षा करें तथा उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे विरोध प्रदर्शन के दौरान हिंसा का सहारा न लें।
- समग्र रूप से समाज की **नागरिक भावना को कायम रखना** व्यक्तिगत सदस्यों द्वारा **नैतिक आचरण के पालन पर आधारित है।**
- यह हमारे शांतिपूर्ण अस्तित्व, सभी के कल्याण और अहिंसा के आदर्शों का पालन करने में भी है।

पुलिसिंग में नैतिकता

पुलिसिंग में नैतिकता

- यद्यपि नैतिकता मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं पर लागू होती है, लेकिन पुलिस की भूमिका एक विशिष्ट आचारिक और नैतिक आयाम रखती है, जो अन्य अधिकांश व्यवसायों में नहीं पाया जाता है।
- पुलिस की नैतिकता में **विभिन्न आयाम शामिल हैं** जैसे:
  - **जीवन और स्वतंत्रता की रक्षा** का कार्य ऐसे परिदृश्य सामने लाता है जहाँ पुलिस कर्मियों को एक ही समय में स्वतंत्रता और प्रतिबंधों के बीच संतुलन बनाना पड़ता है।
  - कई बार पुलिस अधिकारियों द्वारा प्रदर्शनकारियों को प्रदर्शन स्थल से शारीरिक रूप से हटा दिया जाता है और इस प्रक्रिया में कई बार वे चोटिल भी हो जाते हैं।
  - निर्णय लेने में जटिलता।
  - पुलिस अधिकारियों को यह निर्णय लेने में नैतिक दुविधा का सामना करना पड़ता है कि आदतन अपराधियों को जमानत दी जाए या उन्हें विचाराधीन कैदी के रूप में जेल में रखा जाए।
  - विधि का शासन कायम रखना और व्यवस्था बनाए रखना भी पुलिस के लिए कठिन परिस्थिति पैदा करता है।
  - भावनात्मक/भावनात्मक बुद्धिमत्ता
  - मानव अधिकारों का संरक्षण
  - पुलिस से अपेक्षा की जाती है कि वह नैतिक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए नैतिक साधनों का प्रयोग करे।
  - पुलिस में राजनीतिक हस्तक्षेप और पुलिस के राजनीतिकरण से कई बार पुलिसिंग में बाधा उत्पन्न होती है और कई बार सत्ता में बैठे लोगों द्वारा पुलिस के संसाधनों का दुरुपयोग होता है।

प्रमुख शब्दावलियाँ

अंतःकरण की आवाज, हितों का टकराव/हित-संघर्ष, नौकरशाही नैतिकता, नैतिक दुविधायें, अंतःकरण का संकट, जवाबदेही, सामाजिक न्याय, सामाजिक पूँजी, जनता का विश्वास, सर्वोदय/अंत्योदय, अंतःकरण, अपराध बोध, सामाजिक परिपक्वता, सांस्कृतिक बुराइयाँ, जवाबदेही, जिम्मेदारी।

पिछले वर्ष के प्रश्न

- सामाजिक पूँजी की व्याख्या कीजिए। यह सुशासन में वृद्धि कैसे करती है ? **(2023)**
- नैतिक निर्णय लेने के सन्दर्भ में जब कानून, नियमों और अधिनियमों की तुलना की जाती है तो क्या अंतरात्मा की आवाज़ अधिक विश्वसनीय मार्गदर्शक है ? चर्चा कीजिए। **(2023)**
- 'संसाधन के अभाव से ग्रस्त' राष्ट्रों की मदद के लिए 'अंतरराष्ट्रीय सहायता' एक स्वीकृत व्यवस्था है। 'समसामयिक अंतरराष्ट्रीय सहायता में नैतिकता' पर टिप्पणी कीजिए । अपने उत्तर को उचित उदाहरणों द्वारा पुष्ट कीजिए। **(2023)**
- भारत में कॉर्पोरेट शासन के संदर्भ में 'नैतिक ईमानदारी' और 'पेशेवर दक्षता' से आप क्या समझते हैं? उपयुक्त उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए। **(2023)**
- 'शक्ति की इच्छा विद्यमान है, लेकिन विवेकशीलता और नैतिक कर्त्तव्य के सिद्धांतों से उसे साधित और निर्देशित किया जा सकता है।' अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के संदर्भ में इस कथन का परीक्षण कीजिए। **(2020)**
- 'अन्तःकरण का संकट' का क्या अभिप्राय है ? सार्वजनिक अधिकारक्षेत्र में यह किस प्रकार अभिव्यक्त होता है? **(2019)**
- लोक प्रशासन में नैतिक दुविधाओं का समाधान करने के प्रक्रम को स्पष्ट कीजिए। **(2018)**
- सार्वजनिक क्षेत्र में हित-संघर्ष तब उत्पन्न होता है, जब निम्नलिखित की एक-दूसरे के ऊपर प्राथमिक रखते हैं :
  (a) पदीय कर्तव्य
  (b) सार्वजनिक हित
  (c) व्यक्तिगत हित
  प्रशासन में इस संघर्ष को कैसे सुलझाया जा सकता है ? उदाहरण सहित वर्णन कीजिए। **(2017)**
- शक्ति, शांति एवं सुरक्षा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के आधार माने जाते हैं। स्पष्ट कीजिए। **(2017)**
- कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व कम्पनियों को अधिक लाभदायक तथा चिरस्थायी बनाता है। विश्लेषण कीजिए। **(2017)**
- "मैक्स वैबर ने कहा था कि जिस प्रकार के नैतिक प्रतिमानों को हम व्यक्तिगत अंतरात्मा के मामलों पर लागू करते हैं, उस प्रकार के नैतिक प्रतिमानों को लोक प्रशासन पर लागू करना समझदारी नहीं है। इस बात को समझ लेना महत्त्वपूर्ण है कि हो सकता है कि राज्य के अधिकारीतंत्र के पास अपनी स्वयं की स्वतंत्र अधिकारीतंत्रीय नैतिकता हो।" इस कथन का समालोचनापूर्वक विश्लेषण कीजिए। **(2016)**
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर, अधिकांश राष्ट्रों के बीच द्विपक्षीय संबंध, अन्य राष्ट्रों के हितों का सम्मान किए बिना स्वयं के राष्ट्रीय हित की प्रोन्नति करने की नीति के द्वारा नियंत्रित होते हैं। इससे राष्ट्रों के बीच द्वंद्व और तनाव उत्पन्न होते हैं। ऐसे तनावों के समाधान में नैतिक विचार किस प्रकार सहायक हो सकते हैं? विशिष्ट उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए। **(2015)**

- लोक सेवकों के समक्ष 'हित संघर्ष (कन्फ्लिक्ट ऑफ इन्टरेस्ट)' के मुद्दों का आ जाना संभव होता है। आप 'हित संघर्ष' पद से क्या समझते हैं और यह लोक सेवकों के द्वारा निर्णयन में किस प्रकार अभिव्यक्त होता है? यदि आपके सामने हित संघर्ष की स्थिति पैदा हो जाय, तो आप उसका हल किस प्रकार निकालेंगे? उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिए। **(2015)**
- लोक-सेवा के सन्दर्भ में 'जवाबदेही' का क्या अर्थ है? लोक सेवकों की व्यक्तिगत और सामूहिक जवाबदेही को सुनिश्चित करने के लिये क्या उपाय अपनाए जा सकते हैं? **(2014)**
- मानव जीवन में नैतिकता किस बात की प्रोन्नति करने की चेष्टा करती है? लोक-प्रशासन में यह और भी अधिक महत्त्वपूर्ण क्यों है? **(2014)**
- 'विवेक का संकट' से क्या अभिप्राय है? अपने जीवन की एक घटना बताइए जब आपका ऐसे संकट से सामना हुआ और आपने उसका समाधान कैसे किया। **(2013)**
- 'अंतःकरण की आवाज़' से आप क्या समझते हैं? आप स्वयं को अंतःकरण की आवाज़ पर ध्यान देने के लिये कैसे तैयार करते हैं? **(2013)**

10 शासन में शुचिता

शासन में शुचिता: लोक सेवा की अवधारणा; शासन और शुचिता का दार्शनिक आधार; सरकार में सूचना साझाकरण और पारदर्शिता, सूचना का अधिकार, नैतिकता संबंधी संहिता, आचार संहिता, नागरिक चार्टर, कार्य संस्कृति, सेवा वितरण की गुणवत्ता, सार्वजनिक धन का उपयोग, भ्रष्टाचार की चुनौतियाँ।

लोक सेवा क्या है?

- इसका तात्पर्य सरकारी संस्थाओं द्वारा जनता को वस्तुओं और सेवाओं के वितरण से है। यह नागरिकों और प्रशासन के बीच इंटरफेस के रूप में काम करती है।
- इसे सरकार के कानूनी और नैतिक दायित्व के सम्मिश्रण के रूप में देखा जाता है।
- इसमें स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, कानून और व्यवस्था बनाए रखना, सार्वजनिक उपयोगी सेवाएँ आदि जैसी सेवाएँ शामिल हैं।
- उपलब्धता, वहनीयता (Affordability) और सुलभता लोक सेवा की सफलता के लिए प्रमुख मानदंड हैं।

शुचिता

- शुचिता का शाब्दिक अर्थ है **"मजबूत नैतिक सिद्धांत;ईमानदारी और शालीनता होने का गुण।"**
- यह भ्रष्ट या बेईमान आचरण से बचने से कहीं बढ़कर है, क्योंकि इसमें **निष्पक्षता, जवाबदेही और पारदर्शिता** जैसे मूल्य निहित हैं।
- इसे **नैतिकता संबंधी संहिता का सख्त पालन माना जाता है।**
- **लोकतंत्र में,** शुचिता कानून के समक्ष समानता के सिद्धांतों तथा नागरिकों के प्रति नेताओं के अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देती है।

शासन में शुचिता

- इसका संबंध **परिणामों की बजाय पद्धतियों, प्रक्रियाओं और प्रणालियों से है।**
- यह **कुशल एवं प्रभावी शासन प्रणाली** तथा सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है।
- शासन में शुचिता सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण आवश्यकताएं हैं:
  - प्रभावी कानून, नियम और विनियम।
  - इन कानूनों का प्रभावी एवं निष्पक्ष कार्यान्वयन।
  - भ्रष्टाचार का अभाव।

शासन और शुचिता का दार्शनिक आधार

- महाभारत, रामायण, अर्थशास्त्र, कुरल, कादंबरी, हितोपदेश आदि **भारतीय धर्मग्रंथ** शुचिता सुनिश्चित करने के लिए दार्शनिक मार्गदर्शन से परिपूर्ण हैं।
- कन्फ्यूशियस, लाओत्से आदि जैसे **चीनी दार्शनिकों** ने भी नैतिक शासन पर सिद्धांत प्रतिपादित किए हैं। पाश्चात्य दर्शन में नैतिकता के तीन प्रमुख संप्रदाय हैं:
  - **अरस्तू** के अनुसार, न्याय, उदारता आदि सद्गुणों से न केवल उन **सद्गुणों** के धारक को लाभ होता है, बल्कि उस समाज को भी लाभ होता है जिससे वह संबंधित है।
  - **इमैनुअल कांट** ने **कर्तव्य की अवधारणा** को नैतिकता का केंद्रीय तत्त्व बताया है। उनके अनुसार, कर्तव्य का ज्ञान व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति का सम्मान करने के लिए प्रेरित करता है।
  - **उपयोगितावादी दृष्टिकोण** अधिकतम लोगों की अधिकतम खुशी (Greatest Happiness of the Greatest Number) पर आधारित है।
- विश्व बैंक द्वारा प्रस्तुत **सुशासन** की अवधारणा प्रशासकों के आचारिक और नैतिक आचरण पर ध्यान केंद्रित करती है।
- **मैक्स वेबर** के अनुसार, कार्यालय की संपत्ति और अधिकारी की निजी संपत्ति के बीच पूर्ण पृथक्करण होना चाहिए।

शासन में शुचिता का उद्देश्य

- सरकारी सेवाओं में उच्चतम स्तर की सत्यनिष्ठा बनाए रखना।
- शासन की जवाबदेही सुनिश्चित करना।
- धोखाधड़ी, कदाचार और भ्रष्टाचार की संभावना से बचना।
- सरकार की निर्णय-प्रक्रिया में जनता का विश्वास बनाए रखना।
- यह शासन की कुशल और प्रभावी प्रणाली तथा सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए एक अनिवार्य और महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है।
- यह संविधान के ध्येय को पूरा करने के लिए आवश्यक है। अर्थात सभी को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक न्याय प्रदान करना। इससे शासन में विश्वासनीयता बढ़ती है।
- इससे भाई-भतीजावाद, पक्षपात, राजनीतिक पक्षपात को दूर करने में मदद मिलती है। जनता शासन में अधिक विश्वास रखती है और इसलिए यह सहभागी शासन को सुगम बनाती है।

शासन में शुचिता से जुड़ी चुनौतियाँ

- **औपनिवेशिक विरासत**: नौकरशाही/कार्यपालिका की कार्यप्रणाली की औपनिवेशिक विरासत से उत्पन्न अनुशासनहीनता की संस्कृति के कारण, सत्ता में बैठे लोग निर्विरोध तरीके से सत्ता का प्रयोग कर सकते हैं।

- **समाज में शक्तियों की ऐतिहासिक और सामाजिक विषमताएँ:** लगभग 90% लोग असंगठित क्षेत्र में काम करते हैं। शेष लोगों में से दो तिहाई लोग संगठित क्षेत्र में काम करते हैं और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से राज्य के कर्मचारी हैं। सत्ता की ऐसी विषमता नैतिक व्यवहार के अनुरूप होने के सामाजिक दबाव को कम करती है।
- **समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार की संस्कृति:** यह इतनी गहराई से व्याप्त है कि भ्रष्टाचार को अब एक सामान्य सामाजिक स्थिति माना जाता है। अवैध धन का लालच, अति केंद्रीकरण (Over Centralisation) भ्रष्टाचार की संस्कृति के कुछ कारण हैं।
- **कानूनों के निष्पक्ष और प्रभावी कार्यान्वयन का अभाव:** कानून का कार्यान्वयन ही जमीनी स्तर पर समस्याओं के समाधान में उसकी प्रभावशीलता की कसौटी होता है।
- **संस्थाओं के कामकाज में पारदर्शिता का अभाव:** संगठन में अपारदर्शी कार्य वातावरण के कारण, संस्थाओं के प्रशासन में शुचिता बनाए रखना कठिन है।

शासन में सिविल सेवाओं का महत्त्व

- पूरे देश में मजबूत बंधनकारी चरित्र और उपस्थिति।
- शासन के विभिन्न स्तरों पर नेतृत्व।
- प्रभावी नीति निर्माण एवं विनियमन।
- सरकारी संस्थाओं के बीच समन्वय।
- निरंतरता, प्रशासन को सातत्य और परिवर्तन प्रदान करती है।
- अत्याधुनिक स्तर पर सेवा प्रदान करना।
- सामाजिक एवं आर्थिक विकास कार्यक्रमों का क्रियान्वयन, कानून एवं व्यवस्था सुनिश्चित करना आदि।

सेवा वितरण की गुणवत्ता में सुधार के लिए लोक प्रशासन में दृष्टिकोण

विकास प्रशासन

ई. वेडनर के अनुसार, यह एक क्रिया-उन्मुख और लक्ष्य-उन्मुख प्रशासनिक व्यवस्था है। इसमें सरकार द्वारा प्रभावित परिवर्तनों, अर्थात् प्रगतिशील सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों पर जोर दिया जाता है। विकास प्रशासन के लिए निम्नलिखित व्यावहारिक मापदंड हैं:

- परिवर्तन-उन्मुखता
- परिणाम-उन्मुखता
- नागरिक सहभागिता-उन्मुखता
- काम के प्रति प्रतिबद्धता

लोक प्रशासन बनाम विकास प्रशासन

पारंपरिक लोक प्रशासन	• यह यथास्थिति उन्मुख होता है। • यह पदानुक्रमिक एवं कठोर होता है। • यह केन्द्रीकरण में विश्वास रखता है। • इसमें जनता की ज्यादा भागीदारी नहीं होती है।
विकास प्रशासन	• यह परिवर्तनोन्मुख होता है। • यह लचीला और गतिशील होता है। • यह विकेन्द्रीकरण में विश्वास रखता है। • यह जनता की भागीदारी पर जोर देता है।

नई लोक सेवा

- इसका गठन 1960 के दशक में संयुक्त राज्य अमेरिका में देखी गई सामाजिक और राजनीतिक अशांति के प्रत्युत्तर में किया गया था, जहाँ पारंपरिक लोक प्रशासन, समस्याओं को हल करने में असमर्थ रहा था।
- **सेवा वितरण में सुधार के लिए सरकार और प्रशासन द्वारा अपनाए जाने वाले सात व्यापक सिद्धांत इस प्रकार हैं:**
  - नागरिकों की सेवा करना, ग्राहकों की नहीं।
  - सार्वजनिक हित पर ध्यान देना।
  - उद्यमशीलता से अधिक नागरिकों को महत्त्व देना।
  - रणनीतिक ढंग से सोचना, लोकतांत्रिक ढंग से कार्य करना।
  - यह समझना कि जवाबदेही आसान नहीं है।
  - दिशा देने के बजाय सेवा करना।
  - उत्पादकता ही नहीं, लोगों को भी महत्त्व देना।

नया लोक प्रबंधन (NPM)

नए लोक प्रबंधन (**NPM**) का फोकस **3E; अर्थात दक्षता, मितव्ययिता और प्रभावशीलता (3Es - Efficiency, Economy and Effectiveness) पर है।**

मुख्य विशेषताएँ

- इसमें कार्यकुशलता, प्रबंधन और कार्यनिष्पादन मूल्यांकन पर जोर दिया जाता है।
- लागत में कटौती।
- प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए संविदा देना।
- इसका प्रबंधन उत्पादन लक्ष्यों, सीमित अवधि की संविदाओं, मौद्रिक प्रोत्साहन और प्रबंधन की स्वतंत्रता पर आधारित होता है।

उद्यमशील सरकार

- **ओसबोर्न और गेबलर (Osborne and Gaebler) ने** उद्यमशील सरकार के लिए **दस सूत्री कार्यक्रम** का सुझाव दिया।
- **उद्यमशील सरकार:**
  - नौकरशाही के हाथों से नियंत्रण हटाकर नागरिकों को सशक्त बनाना।
  - नियमों और विनियमों से नहीं बल्कि मिशन से प्रेरित।
  - कार्यनिष्पादन को निवेश (इनपुट) के माध्यम से नहीं बल्कि परिणामों के माध्यम से मापना।
  - वस्तुओं और सेवाओं के विविध प्रदाताओं के बीच प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना।
  - क्लाइंट्स को ग्राहकों के रूप में पुनः परिभाषित करना और उन्हें विकल्प प्रदान करना।
  - समस्याओं का समाधान करने के बजाय उन्हें रोकना।
  - जोर सिर्फ पैसा खर्च करने पर नहीं बल्कि उसे उचित रूप से खर्च करने पर भी हो।
  - सहभागी प्रबंधन को अपनाना।
  - नौकरशाही तंत्र की अपेक्षा बाजार तंत्र को प्राथमिकता देना।
  - सामुदायिक समस्याओं के समाधान के लिए सार्वजनिक, निजी और स्वैच्छिक क्षेत्रों को प्रोत्साहित करना।

सामाजिक अनुबंध सिद्धांत

- इस सिद्धांत के अनुसार, लोग अपने कुछ अधिकारों को राज्य या प्राधिकारी को सौंप देते हैं ताकि उनके शेष अधिकारों की रक्षा हो सके।
- **स्वशासन** का विचार इसी अवधारणा से निकलता है।
- **विशेषताएँ:** सरकार का आधार 'शक्ति' नहीं बल्कि 'इच्छाशक्ति' है।
  - न्याय या अधिकार या शक्ति का मूल्य समस्त राजनीतिक समाज का आधार है।

शासन में पारदर्शिता	
संक्षिप्त परिचय	• शासन में पारदर्शिता का तात्पर्य सरकारी संस्थाओं या संगठनों की निर्णय लेने की प्रक्रियाओं और कार्यों में खुलेपन, जवाबदेही के व्यवहार और सुलभता से है। इसमें जनता को सरकारी नीतियों, गतिविधियों और व्यय के बारे में स्पष्ट और व्यापक जानकारी प्रदान करना, साथ ही जनता की भागीदारी और निगरानी के अवसर प्रदान करना शामिल है।
लाभ	• इससे धन का सावधानीपूर्वक उपयोग होता है। • निर्णय लेना तर्कसंगत और वस्तुनिष्ठ हो जाता है। • पारदर्शिता नागरिकों को सशक्त बनाती है, सार्वजनिक मामलों में उनकी भागीदारी को बढ़ावा देती है, सहभागी लोकतंत्र को मजबूत करती है और जन-केंद्रित शासन का सूत्रपात करती है। • सूचना की पारदर्शिता को नागरिकों को **'आवाज की शक्ति' का प्रयोग करने हेतु प्रेरित करने के लिए भी महत्त्वपूर्ण माना जाता है**। आवाज की शक्ति को सेवाओं के प्रभावी वितरण को सुनिश्चित करने के लिए अग्रिम पंक्ति के अधिकारियों पर दबाव बनाने की नागरिकों की क्षमता के रूप में परिभाषित किया जाता है। • इससे जनता और प्रशासकों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित होते हैं।
प्रशासन में पारदर्शिता लाने के लिए संस्थागत साधन	• पारदर्शिता केवल कुछ कार्यों को पूरा करने का साधन नहीं है बल्कि यह अपने आप में एक साध्य है। • संसदीय नियंत्रण. • विधायी संरचना। **उदाहरण** - सूचना का अधिकार (RTI) • लोकपाल योजना। **उदाहरण** - लोकपाल और लोकायुक्त • स्वतंत्र न्यायपालिका • ई-गवर्नेंस • स्वतंत्र प्रेस
भारत में पारदर्शिता से संबंधित मुद्दे	• **शासकीय गुप्त बात अधिनियम (Official Secrets Act, OSA)**: ○ अत्यधिक विवेकाधिकार की मौजूदगी प्रत्येक कानूनी मामले को गोपनीय मामले में परिवर्तित कर देती है। ○ शासकीय गुप्त बात अधिनियम (OSA) मोटे तौर पर दो पहलुओं से संबंधित है: ○ जासूसी या गुप्तचरी (Spying or Espionage), और ○ सरकार की गुप्त जानकारी का खुलासा। ○ हालाँकि, शासकीय गुप्त बात अधिनियम गुप्त सूचना को परिभाषित नहीं करता है, लेकिन सरकार किसी दस्तावेज़ को गुप्त के रूप में वर्गीकृत करने के लिए **विभागीय सुरक्षा अनुदेश मैनुअल, 1994** का अनुसरण करती है। • **सूचना का अधिकार (RTI) अधिनियम**: ○ यह कानून एक आम नागरिक को सरकार से सवाल पूछने का अधिकार देता है। यह सहभागी लोकतंत्र का एक साधन है जो सुशासन और सामाजिक-आर्थिक सेवा वितरण में सुधार करता है। • **व्हिसिलब्लोअर संरक्षण अधिनियम (Whistleblower Protection Act)**: ○ यह अधिनियम किसी भी लोक सेवक के विरुद्ध भ्रष्टाचार या शक्ति अथवा विवेकाधिकार के जानबूझकर दुरुपयोग के आरोपों के प्रकटीकरण से संबंधित शिकायतें प्राप्त करने तथा ऐसे प्रकटीकरण के संबंध में पूछताछ करने या जाँच कराने के लिए एक तंत्र स्थापित करता है। ○ यह किसी भी व्यक्ति, जिसमें लोक सेवक भी शामिल है, को सक्षम प्राधिकारी के समक्ष जनहित प्रकट करने की अनुमति देता है, जिसे अभी लागू किया जाना है।
निष्कर्ष	• इसलिए, हम कह सकते हैं कि व्यापक अर्थ में पारदर्शिता का तात्पर्य न केवल सूचना के खुलेपन, सुलभता और विश्वसनीयता के स्तर से है, बल्कि कार्यशैली और नीति निर्माण में सरकार द्वारा इसे दी गई प्राथमिकताओं से भी है।

भारत में शुचिता सुनिश्चित करने के लिए तंत्र

सूचना का अधिकार अधिनियम	
संक्षिप्त परिचय	• **RTI** कानून 2005 में पारित किया गया था, जिसने गोपनीयता के अंधकार से पारदर्शिता के युग की शुरुआत की। यह सूचना प्रदान करने के लिए विस्तृत तंत्र का निर्माण करता है। • इसमें **लोक सूचना अधिकारी (PIO), सहायक PIO, विभागीय अपीलीय प्राधिकारी, राज्य और केंद्रीय सूचना आयोग शामिल हैं।** सूचना प्रदान करने के लिए बाध्य लोक प्राधिकरणों की परिभाषा भी व्यापक है।
समय सीमा	• सामान्यतः, किसी आवेदक को सूचना, आवेदन प्राप्त होने के 30 दिनों के भीतर लोक प्राधिकरण द्वारा उपलब्ध करा दी जाती है। • यदि माँगी गई सूचना किसी व्यक्ति के जीवन या स्वतंत्रता से संबंधित है तो उसे 48 घंटे के भीतर उपलब्ध कराया जाएगा। • यदि आवेदन सहायक लोक सूचना अधिकारी के माध्यम से भेजा जाता है या किसी गलत लोक प्राधिकारी को भेजा जाता है, तो तीस दिन या 48 घंटे की अवधि, जो भी स्थिति हो, में पाँच दिन और जोड़े जाएंगे।
अपीलीय प्राधिकारी	• यह लोक सूचना अधिकारी के निर्णयों के विरुद्ध अपील की सुनवाई करता है। • राज्य सूचना आयोग या केंद्रीय सूचना आयोग (CIC): इनका मुख्य कार्य अपीलीय प्राधिकारी के आदेश के विरुद्ध अपील सुनना है।
दंड	• अधिनियम में निर्धारित समय सीमा में सूचना प्रदान न करने वालों पर दंड लगाने का प्रावधान है।

अधिनियम के क्रियान्वयन में समस्याएं	• **RTI** अधिनियम की धारा 4 के अनुसार प्रत्येक लोक प्राधिकारी को स्वतः संज्ञान लेते हुए सूचना प्रदान करना आवश्यक है।
	• धारा 8 (1) में **RTI** अधिनियम के तहत सूचना देने से उन्मुक्ति का उल्लेख है।
	• **यह देखा गया है कि कई मामलों में** फर्जी **RTI** आवेदन दायर किए गए हैं और प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल सरकारी अधिकारियों को प्रताड़ित करने के लिए किया गया है।
	• **असंगत कानून: भारतीय साक्ष्य अधिनियम** के कुछ प्रावधान **(धारा 123, 124 और 162)** दस्तावेजों के प्रकटीकरण पर रोक लगाते हैं।
	  ○ **परमाणु ऊर्जा अधिनियम, 1912 में** प्रावधान है कि केन्द्र सरकार द्वारा प्रतिबंधित किसी सूचना को प्रकट करना अपराध होगा।
	  ○ **शासकीय गोपनीयता अधिनियम, 1923 में** प्रावधान है कि कोई भी सरकारी अधिकारी किसी दस्तावेज़ को गोपनीय घोषित कर सकता है ताकि उसके प्रकाशन को रोका जा सके।
	• **लंबित मामलों का बोझ:** केन्द्रीय और राज्य सूचना आयोगों में 2.2 लाख से अधिक मामले लंबित हैं, जो कानून के तहत अपील के अंतिम न्यायालय हैं।

हालिया RTI संशोधन	**RTI** अधिनियम में निम्नलिखित संशोधन किए गए हैं:
	• **कार्यकाल (Term):**
	  ○ **पूर्व में:** मुख्य सूचना आयुक्त और अन्य सूचना आयुक्तों का कार्यकाल पाँच वर्ष या 65 वर्ष की आयु प्राप्त करने तक निर्धारित किया गया था।
	  ○ **वर्तमान में:** केंद्र सरकार को कार्यकाल को अधिसूचित करने का अधिकार होगा। इसे तीन वर्ष अधिसूचित किया गया है।
	• **वेतन (Salary):**
	  ○ **पूर्व में:** मुख्य सूचना आयुक्त का वेतन मुख्य निर्वाचन आयुक्त के बराबर था और अन्य सूचना आयुक्तों का वेतन निर्वाचन आयुक्त के बराबर था।
	  ○ **वर्तमान में:** वेतन और भत्ते केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित किये जायेंगे।
	• **नियुक्ति (Appointment):**
	  ○ **वर्तमान में:** नियुक्ति तीन सदस्यीय समिति द्वारा की जाती थी, जिसमें प्रधानमंत्री, लोकसभा में विपक्ष के नेता और प्रधानमंत्री द्वारा नियुक्त एक मंत्री शामिल होते थे। राज्य स्तर पर भी इसी तरह का प्रावधान था।
	  ○ **वर्तमान में:** ये शक्तियाँ केन्द्र सरकार को सौंप दी गई हैं।

RTI और न्यायपालिका	• उच्चतम न्यायालय ने केंद्र सरकार के **RTI**-अनुकूल नियमों को स्वयं हेतु अपना लिया। लेकिन कई उच्च न्यायालयों ने प्रतिकूल नियम बना दिए, जिससे कोई भी सूचना प्राप्त करना लगभग असंभव हो गया। • उच्चतम न्यायालय ने फैसला दिया कि किसी सरकारी कर्मचारी के बारे में कोई भी जानकारी तब तक प्रकट नहीं की जा सकती जब तक कि सूचना माँगने वाला यह साबित न कर दे कि यह जन हित में है। • **सुभाष अग्रवाल मामले में** उच्चतम न्यायालय ने **भारत के मुख्य न्यायाधीश के कार्यालय को** सूचना का अधिकार अधिनियम के तहत एक लोक प्राधिकरण घोषित किया। • न्यायाधीशों की नियुक्ति से संबंधित मुद्दे पर उच्चतम न्यायालय ने कहा कि नियुक्ति के लिए कॉलेजियम द्वारा अनुशंसित न्यायाधीशों के केवल नामों का ही खुलासा किया जा सकता है, कारणों का नहीं। • **RTI** का उपयोग निगरानी के उपकरण के रूप में नहीं किया जा सकता है और पारदर्शिता के साथ-साथ न्यायिक स्वतंत्रता को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

RTI और राजनीतिक दल	• राजनीतिक रणनीति को छोड़कर, वित्त और प्रशासन से संबंधित अन्य मामलों की जानकारी जनता को दी जा सकती है क्योंकि राजनीतिक दल सार्वजनिक संस्थाएँ हैं, जो जनता से धन प्राप्त करती हैं। • इसके अलावा, **RTI** के दायरे से अलग रहना और अन्य संस्थाओं से पारदर्शिता की माँग करना नैतिक रूप से गलत है।
अधिनियम का प्रभाव	• इस अधिनियम से गरीबों और हाशिये पर रह रहे लोगों का जीवन बेहतर हुआ है। • सरकारी सब्सिडी वाले कार्यक्रमों के लाभार्थियों का विवरण सार्वजनिक किया जाता है, जिससे भ्रष्ट आचरण पर रोक लगाने में मदद मिली है। • इसने आदर्श सोसाइटी घोटाला, राष्ट्रमंडल खेल घोटाला जैसे कुछ सबसे बड़े घोटालों को उजागर करने में मदद की है।
आगे की राह	• विशिष्ट प्रावधानों के कार्यान्वयन के लिए विशिष्ट जिम्मेदारियों को स्पष्ट रूप से निर्धारित किया जाना चाहिए। • केन्द्र एवं राज्य स्तर पर जन जागरूकता अभियान चलाना। • प्रशिक्षण संस्थानों में **RTI** पर प्रशिक्षण मॉड्यूल शामिल किया जाना चाहिए। • एक राज्य से दूसरे राज्य में **RTI** दाखिल करने के लिए न्यूनतम नियमों के एक सामान्य सेट पर आम सहमति बनानी चाहिए।
केस स्टडी	• **बांदा जिले (उत्तर प्रदेश) में गाँव के स्कूल शिक्षक की उपस्थिति -** कबीर और परिवर्तन जैसे दिल्ली स्थित संगठनों के स्वयंसेवकों ने स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर शिक्षकों की उपस्थिति का रिकॉर्ड माँगने के लिए **RTI** दायर की। इसके परिणामस्वरूप प्रशासन की ओर से त्वरित कार्रवाई हुई और स्कूल में नियमित अध्यापन शुरू हुआ।

व्हिसल ब्लोइंग (WHISTLE BLOWING)

- यह किसी कर्मचारी द्वारा तब किया जाता है जब उसे पता चलता है कि नैतिक नियमों को जानबूझकर या अनजाने में तोड़ा जा रहा है और कंपनी, उपभोक्ताओं या जनता के लिए खतरा उत्पन्न हो रहा है।
- किसी भी सार्वजनिक या निजी संगठन में गलत कार्यों के बारे में सूचना देने का सबसे अच्छा स्रोत व्हिसल ब्लोअर्स होते हैं।

व्हिसल ब्लोइंग के विरुद्ध तर्क	व्हिसल ब्लोइंग के समर्थन में तर्क
• **संगठनात्मक संस्कृति का उल्लंघन:** जहाँ कई कारणों से गोपनीयता बनाए रखना आवश्यक होता है। • **विश्वास भंग होना:** नियोक्ता और कर्मचारी के बीच। • **अनैतिक:** यदि यह केवल ध्यान आकर्षित करने के लिए किया जाता है। • **संगठन या संस्था के अस्तित्व को खतरा:** उदाहरण के लिए- यदि संवेदनशील डेटा लीक हो जाता है, तो इससे राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा हो सकता है।	• **जवाबदेही में वृद्धि:** लंबे समय तक संगठन में मजबूती बनी रहती है। • **नैतिक:** क्योंकि यह कंपनी, उपभोक्ताओं या जनता के व्यापक हित के लिए है। • **नैतिक प्रतिबद्धता:** यह कानून और समाज के प्रति नैतिक प्रतिबद्धता के लिए किया जाता है। • **भ्रष्टाचार को उजागर करता है:** यह भ्रष्टाचार और गलत आचरण को भी उजागर करता है।

नैतिक संहिता (CODE OF ETHICS)

संक्षिप्त परिचय	• यह किसी संगठन द्वारा अपने कर्मचारियों के आचरण का मार्गदर्शन करने के लिए उन्हें जारी किए गए दिशानिर्देशों का लिखित सेट है। इसमें सामान्य सिद्धांत और मूल्य शामिल होते हैं जिन्हें संगठन प्राप्त करने का प्रयास करता है। • भारत में सिविल सेवकों के लिए कोई नैतिकता संबंधी संहिता निर्धारित नहीं है। • **सामान्यतः इसमें निम्नलिखित मूल्य शामिल होते हैं:** ○ सत्यनिष्ठा ○ निष्पक्षता ○ लोक सेवा के प्रति प्रतिबद्धता ○ जवाबदेही ○ कर्तव्य के प्रति समर्पण ○ अनुकरणीय व्यवहार
नैतिक और आचार संहिता का उद्देश्य	**नैतिक संहिता के तीन मुख्य उद्देश्य हैं, जो निम्नलिखित हैं:** • **संहिताएँ संगठन या पेशा या व्यवसाय के अंतर्गत व्यक्तियों को आश्वस्त करती हैं** कि वे संगठन और पेशे के अंतर्गत अपने सहकर्मियों पर मानकों के एक स्तर को बनाए रखने के लिए भरोसा कर सकते हैं, जिसके बदले में वह व्यक्ति उन्हीं सिद्धांतों का पालन करते हुए आचरण करेगा जिनका अन्य लोग पालन करते हैं। • **संहिताएँ पेशे या संगठन से बाहर के लोगों को आश्वस्त करती हैं** कि वे पेशे या संगठन के कर्मचारियों से कार्यनिष्पादन और नैतिक आचरण की अपेक्षा के संबंध में एक हद तक एकरूपता की उम्मीद कर सकते हैं। • **संहिताएँ इस बात की सूचना के रूप में कार्य करती हैं कि संगठन या पेशे से बाहर के लोग** संहिता से बंधे नहीं हैं और, संभवतः उन्हें नैतिकता से संबंधित निम्न मानकों (lower standards) का पालन करते हुए देखा जा सकता है।

नैतिक संहिता की सीमाएं	नैतिक संहिता कई **सीमाएँ** उत्पन्न कर सकती है, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं; • नैतिकता संहिता हर व्यक्ति को हर परिस्थिति में मार्गदर्शन प्रदान नहीं कर सकती। • दिशानिर्देशों के माध्यम से नैतिक संहिता जनता का विश्वास सुनिश्चित करने में मदद करती है, लेकिन इसे आपराधिक या सिविल संहिता के माध्यम से लागू नहीं किया जा सकता है। • व्यक्तियों की कल्पना तक सीमित है। • लोक सेवा एक ऐसा पेशा है जिसे नियमों के एक अंतर्निहित सेट द्वारा संचालित किया जाना चाहिए जो किसी विशिष्ट संहिता को पढ़ने से नहीं आते हैं।

आचार संहिता (CODE OF CONDUCT)

- यह संगठन के सदस्यों से अपेक्षित व्यवहार को रेखांकित करने वाले नियमों का एक समूह है।
- भारत में, केन्द्र सरकार ने सरकारी कर्मचारियों के लिए आचरण नियम जारी किए हैं, जिन्हें केन्द्रीय सिविल सेवा आचरण नियम, 1964 के नाम से जाना जाता है।
- **कुछ नियम इस प्रकार हैं** :
  - **सर्वोत्तम निर्णय का प्रयोग करना (Using the Best Judgment)**: सिविल सेवकों को नियमों के अनुसार स्वतंत्र रूप से कार्य करना चाहिए और किसी भी बाहरी प्रभाव की परवाह नहीं करनी चाहिए।
  - **लिखित आदेश (Written Orders)**: मौखिक आदेश के बाद लिखित आदेश दिया जाना चाहिए।
  - **सत्यनिष्ठा और समर्पण (Integrity and Devotion)**: एक सिविल सेवक को न केवल रिश्वत लेने से मना करना चाहिए बल्कि बौद्धिक ईमानदारी भी दिखानी चाहिए। समर्पण का मतलब है अपेक्षित गुणवत्ता सीमा के भीतर निर्धारित समय सीमा में काम पूरा करना।
  - **प्रभाव का प्रयोग करने पर प्रतिबंध (Bar on Influence Peddling)**: नियम सिविल सेवकों को अपने परिवार के सदस्यों के लिए नौकरियाँ सुरक्षित करने हेतु अपने प्रभाव का प्रयोग करने से रोकते हैं।
  - **वित्तीय औचित्य (Financial Propriety)** : सिविल सेवकों को चंदा या दान का प्रबंध करने की अनुमति नहीं है। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे अपने निजी वित्त का विवेकपूर्ण ढंग से प्रबंधन करें।
  - **सामाजिक कानूनों और सांस्कृतिक मानदंडों का पालन करना (Observing social laws and cultural norms)**: उदाहरण के लिए, उन्हें न तो दहेज लेना चाहिए और न ही देना चाहिए।

नैतिकता संहिता और आचार संहिता के बीच अंतर

नैतिकता संहिता

- यह अच्छे व्यवहार और शासन के व्यापक मार्गदर्शक सिद्धांतों को शामिल करती है।
- इसका पालन किया जाना अपेक्षित है।
- यह आमतौर पर संस्कृति, शिक्षा या धर्म पर लागू होती है।
- यह निर्णय को प्रभावित करने वाले सिद्धांतों का एक समूह है।
- सामान्यतः, नैतिक मानक गैर-विशिष्ट होते हैं तथा मूल्यों या निर्णय प्रक्रिया का एक सेट प्रदान करने के लिए बनाये जाते हैं।
- यह कर्मचारियों को सबसे उपयुक्त कार्यवाही के बारे में स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम बनाती है।

आचार संहिता

- यह अधिक सटीक है तथा स्वीकार्य और अस्वीकार्य व्यवहारों की एक सूची निर्धारित करती है।
- इसका पालन किया जाना जरूरी है।
- यह आमतौर पर किसी व्यक्ति के आधिकारिक या पेशेवर आचरण पर लागू होती है।
- आचार संहिता दिशानिर्देशों का एक समूह है जो कर्मचारियों के कार्यों को प्रभावित करते हैं।
- आचरण मानक सामान्यतः अपेक्षाओं का एक उचित सेट प्रदान करते हैं कि कौन से कार्य आवश्यक हैं, कौन से स्वीकार्य हैं या कौन से निषिद्ध हैं।
- यह कर्मचारियों को नियमों के अनुसार कार्य करने में सक्षम बनाती है तथा उनके कार्य संहिताओं द्वारा निर्देशित होते हैं।

नैतिक आचरण सुनिश्चित करने पर द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग (2nd ARC) के सुझाव

द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग (2nd ARC) की रिपोर्ट में निम्नलिखित सुझाव दिए गए हैं:

- राज्य द्वारा चुनावों का आंशिक वित्तपोषण।
- दलबदल रोधी कानून को सख्त करना।
- भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के प्रावधानों को सख्त करना।
- भ्रष्ट लोक सेवकों को क्षतिपूर्ति भुगतान के लिए उत्तरदायी बनाना।
- अवैध रूप से अर्जित संपत्ति को जब्त किया जाना।
- शीघ्र सुनवाई (Speedy Trials)।
- राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय स्तर पर लोकपाल का गठन।
- अनुच्छेद 311 को हटाना ताकि दोषी लोक सेवकों के विरुद्ध त्वरित कार्रवाई की जा सके।
- ईमानदार सिविल सेवकों को संरक्षण प्रदान करने के लिए उपाय किए जाने चाहिए।

नागरिक चार्टर

- यह किसी सार्वजनिक संस्था द्वारा अपने ग्राहकों को एक निश्चित स्तर की सेवा प्रदान करने की वचनबद्धता है। यह नागरिकों की दिन-प्रतिदिन की समस्याओं को सुलझाने का साधन है।
- यह नागरिकों को सेवाओं का निष्क्रिय प्राप्तकर्ता मानने के बजाय उन्हें प्रशासन के केंद्र में रखता है।

नागरिक चार्टर के सिद्धांत	नागरिक चार्टर का महत्त्व
• सार्वजनिक एजेंसियों के कार्यनिष्पादन के मानकों का व्यापक प्रचार-प्रसार। • सेवाओं की गुणवत्ता का आश्वासन। • शिष्टाचार और सहायक दृष्टिकोण के साथ सूचना तक पहुँच। • नागरिकों की पसंद एवं उनसे परामर्श। • शिकायतें प्राप्त करने और उनके त्वरित निवारण के लिए सरलीकृत प्रक्रियाएं। • नागरिकों की सहायता से कार्य निष्पादन जाँच का प्रावधान।	• नागरिकों को अब सेवा वितरण मानकों की स्पष्ट समझ है, जिससे जवाबदेही सुनिश्चित करने में मदद मिली है। • इससे भ्रष्टाचार के अवसर कम हो गये हैं। • यह नागरिकों को सेवा प्रदाताओं की मंशा से अवगत कराता है। • यह सेवा वितरण में सुधार के लिए नागरिकों के फीडबैक को शामिल करता है। • यह बेहतर सेवा गुणवत्ता, शिकायत निवारण तंत्र सुनिश्चित करता है।

नागरिक चार्टर से जुड़ी चुनौतियाँ

- कानूनी दर्जे का अभाव इसे शक्तिहीन बनाता है।
- संसाधनों की सीमा, विशेषकर स्थानीय स्तर पर, आपूर्ति पक्ष को प्रभावित करती है।
- नागरिकों में जागरूकता का अभाव।
- समाज की बदलती जरूरतों के अनुसार बदलाव करने में लचीलेपन का अभाव।
- मूल संगठन के अंतर्गत सभी पात्र एक जैसे ही रहते हैं, जिससे स्थानीय मुद्दों की अनदेखी होती है।
- मानकों के मापन हेतु मानदंडों के अभाव में मानक निर्धारित करने में समस्याएं।

आगे की राह

- **सेवा वितरण का सेवोत्तम मॉडल (Sevottam Model of Service Delivery):** यह **तीन कारकों** पर आधारित है, अर्थात नागरिक चार्टर का कार्यान्वयन, शिकायत निवारण प्रणाली का कार्यान्वयन और सेवा वितरण क्षमता।
- बदलते समय और परिदृश्य के साथ **नागरिक चार्टर को अद्यतन करना।**
- **नागरिक केन्द्रितता के लिए सात चरणीय मॉडल (Seven Step Model for Citizen Centricity)** जिसे दूसरे ARC द्वारा सुझाया गया है।

कार्य संस्कृति

- इसे किसी संगठन के भीतर और उसके कर्मचारियों में प्रथाओं, मूल्यों और साझा मान्यताओं का एक समूह माना जाता है। यह तय करता है कि कर्मचारी एक-दूसरे के साथ किस तरह से परस्पर व्यवहार करते हैं और संगठन कैसे काम करता है।
- यह संगठन के इतिहास, परंपराओं, मूल्यों और दृष्टिकोण का परिणाम है।

विशिष्ट कार्य संस्कृति की विशेषताएं:

- साथी कर्मचारियों के प्रति परस्पर सम्मान का भाव।
- विवाद न्यूनतम होते हैं और अंतर्निहित कारण पर विचार करने के बाद उनका समाधान किया जाता है।
- कर्मचारियों के साथ निष्पक्ष व्यवहार।
- किसी कर्मचारी का मूल्यांकन केवल उसके काम से किया जाता है, किसी अन्य से नहीं।
- निर्णय लेने की प्रक्रिया में कर्मचारियों की भागीदारी बढ़ती है।
- कार्यशालाओं, सेमिनारों आदि के माध्यम से कर्मचारियों के मौजूदा कौशल को बढ़ाया जाता है।

कार्य नैतिकता (WORK ETHICS)

यह समर्पण, भागीदारी और ईमानदारी के साथ आधिकारिक जिम्मेदारियों को पूरा करने की प्रतिबद्धता है। इसका तात्पर्य है कि काम की सराहना की जाती है और इसे बोझ के रूप में नहीं लिया जाता है।

नैतिक कार्य की विशेषताएँ

- **मूल्य:** जैसे रक्त शरीर को पोषण देता है, वैसे ही मूल्य संगठन को पोषण देते हैं।
- **प्रभावी नेतृत्व:** नेता अच्छा माहौल बनाते हैं जो संगठन की संस्कृति के अनुकूल होते है।
- **हितधारकों में संतुलन:** ताकि आपसी तनाव का समाधान हो सके।
- **प्रक्रिया की अखंडता-** संगठन की सभी प्रक्रियाएँ जैसे भर्ती, नियुक्ति, पदोन्नति, विपणन, बिक्री आदि उसके मूल्यों के अनुरूप होती हैं।
- **दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य-** नेतृत्व दीर्घकालिक रणनीतिक योजना के लिए समर्पित होता है।

सेवा वितरण (SERVICE DELIVERY)

- सार्वजनिक सेवा वितरण सुशासन का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है क्योंकि यह लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित करता है। बेहतर सार्वजनिक सेवा वितरण के माध्यम से समावेशी और सतत सामाजिक-आर्थिक विकास का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।
- यह हमारे संविधान की उद्देशिका (preamble) में निहित समानता आधारित शासन का लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता करता है।

चुनौतियां

- **ई-गवर्नेंस इंडेक्स:** संयुक्त राष्ट्र ई-गवर्नेंस सर्वेक्षण 2022 में भारत को 105वाँ स्थान मिला।
- **सेवा प्रदाताओं पर ध्यान:** वर्षों से सेवा प्रदाताओं की सुविधा पर ध्यान दिया जाता रहा है, न कि सेवा प्राप्तकर्ताओं पर।
- **जटिल विनियमन:** सेवा वितरण; जटिल विनियमन, जटिल माध्यमों, सूचना का अभाव, कार्यनिष्पादन मानकों का अभाव, जवाबदेही का अभाव, भ्रष्टाचार, अक्षमता आदि से ग्रस्त है।
- **अकुशलताएँ:** जमीनी स्तर पर या अत्याधुनिक स्तर पर।

सुधार हेतु सुझाव

- लोगों को लाभार्थी के रूप में नहीं बल्कि भागीदार के रूप में मानना तथा उन्हें विकल्प देना।
- निर्दिष्ट मानकों जैसे वन-स्टॉप सेवा, सिंगल विंडो, स्वचालित सेवा वितरण आदि के साथ सेवा प्रदान करना।
- लोक सेवकों के लिए दृष्टिकोण, लक्ष्यों और उद्देश्यों की स्पष्टता के आधार पर परिणाम देने हेतु एक स्थिर और अनुकूल वातावरण का निर्माण करना।
- सेवा वितरण में धन का मूल्य और लागत प्रभावशीलता सुनिश्चित करना।

- विकेन्द्रीकरण को बढ़ावा देना तथा ग्रामीण और शहरी स्थानीय निकायों को स्व-संस्थाओं (self-institutions) के जमीनी स्तर के रूप में मजबूत बनाना।

भ्रष्टाचार

"सत्ता भ्रष्ट करती है और पूर्ण सत्ता पूर्णतः भ्रष्ट करती है" - लॉर्ड एक्टन

- यह किसी व्यक्ति के द्वारा; पद, स्थिति या संसाधनों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्तिगत लाभ के लिए उपयोग करना है।

एकाधिकार + विवेकाधिकार – जवाबदेही = भ्रष्टाचार

- यह भौतिक लाभ हो सकता है या अभौतिक भी हो सकता है, जैसे शक्ति या प्रतिष्ठा में उसकी वैध सीमा से अधिक वृद्धि।
- **द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, भ्रष्टाचार के दो पहलू हैं:**
  - संस्था जो अत्यधिक भ्रष्ट है;
  - व्यक्ति जो अत्यधिक भ्रष्ट हैं।
- सार्वजनिक मुनाफाखोरी पर काम करने की जरूरत है और अधिकारियों द्वारा प्रदान की गई सेवाओं को महत्त्व दिए जाने की भी जरूरत है। परस्पर जवाबदेही (Interlocking Accountability) एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा मूल्यांकन आसानी से किया जा सकता है और जवाबदेही सुनिश्चित की जा सकती है।

भ्रष्टाचार के प्रकार	
बलपूर्वक भ्रष्टाचार (Coercive Corruption)	• इसमें नागरिक को सेवा पाने के लिए रिश्वत देने के लिए मजबूर किया जाता है। • जब नागरिक भ्रष्टाचार का विरोध करने का प्रयास करते हैं तो उन्हें बहुत अधिक हानि उठानी पड़ती है। • यह विलंब, उत्पीड़न, अवसर गंवाने, बहुमूल्य समय और वेतन की हानि, तथा कभी-कभी जीवन या अंग की क्षति का संभावित खतरा भी हो सकता है।
मिलीभगत से भ्रष्टाचार (Collusive Corruption)	• रिश्वत देने वाले और लोक सेवक के बीच मिलीभगत होती है। • दोनों को ही समाज की कीमत पर लाभ मिलता है। • उदाहरण के लिए, सार्वजनिक कार्यों के लिए ठेका देने, वस्तुओं और सेवाओं की खरीद, कर्मचारियों की भर्ती आदि में।

भ्रष्टाचार से उत्पन्न चुनौतियाँ:

- भ्रष्टाचार से लाभान्वित लोग यथास्थिति बनाए रखने का प्रयास करते हैं तथा किसी भी सुधार का विरोध करते हैं।
- भ्रष्टाचार **पूँजी प्रवाह** और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को हतोत्साहित करता है।
- इससे **उत्पादकता कम होती है और** औद्योगिक नीतियों की **प्रभावशीलता कम होती** है।
- जिन देशों में भ्रष्टाचार अधिक है, वहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा आदि जैसे सामाजिक निवेश कम होते हैं।
- **आम जनता में असमानता** बढ़ती है। असमानता पर ऑक्सफैम की हालिया रिपोर्ट इसी ओर इशारा करती है।
- भ्रष्टाचार **व्यवसाय करने की आसानी को** कमजोर करता है।
- सार्वजनिक सेवा क्षेत्र में भ्रष्टाचार अच्छे व्यवसाय के संचालन के लिए उच्च जोखिम रखता है। कंपनियों को **किसी भी प्रक्रिया या सौदे को अंतिम रूप देने के लिए अवांछित लालफीताशाही, छोटे-मोटे भ्रष्टाचार, रिश्वत मिलने की संभावना रहती है।**
- भ्रष्टाचार से राजनीतिक व्यवस्था की वैधता खत्म हो जाती है और गैर-राज्य अभिकर्ताओं को खुली छूट मिल जाती है। **उदाहरण- वामपंथी उग्रवाद**

भ्रष्टाचार के कारण

- **संथानम समिति ने** भारत में भ्रष्टाचार के निम्नलिखित कारणों की पहचान की:
  - सरकार विनियामक कार्यों के माध्यम से जितना प्रबंधन कर सकती है, उससे अधिक कार्य अपने ऊपर ले रही है।
  - विभिन्न श्रेणियों के सरकारी कर्मचारियों में निहित शक्तियों के प्रयोग में **विवेक का दायरा।**
  - जनता से संबंधित विभिन्न मामलों से निपटने में **बोझिल प्रक्रियाएँ** जो नागरिकों के लिए उनके दैनिक जीवन में महत्त्वपूर्ण थीं।
- **अन्य कारण**
  - **दंडात्मक कार्रवाई के लिए कमजोर कानूनी ढाँचा:** गलत नीतियों, कमजोर नियामक ढाँचे और मंत्रियों एवं उच्च लोक अधिकारियों के बीच बड़े पैमाने पर अविवेक के कारण।
  - **राजनीतिक भ्रष्टाचार**: किसी निर्वाचन क्षेत्र के विशाल संसदीय क्षेत्रके कारण, जिसमें कई मामलों में दो मिलियन से अधिक मतदाता होते हैं, उम्मीदवार को चुनाव लड़ने के लिए भारी धन खर्च करना पड़ता है।
  - **अति-विनियमन (Over-Regulation):** यह कमजोर राज्य के साथ मिलकर भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है।
  - **नौकरशाही की लालफीताशाही और भ्रष्टाचार को बढ़ावा देना: इसके बारे में रॉबर्ट मर्टन** ने सही कहा है कि **"जब नियम खेल से अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाते है"।**
  - **विशिष्ट वर्ग का उदय और उदारीकरण के बाद भ्रष्टाचार: जैसा कि ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल** ने उजागर किया है कि बड़े व्यवसायियों, राजनीतिज्ञों और नौकरशाहों के बीच गठजोड़ के कारण बड़ा भ्रष्टाचार पनपता है।

भ्रष्टाचार रोकने के तरीके

- **प्रौद्योगिकी का उपयोग:** शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए प्रमुख हितधारकों के बीच बेहतर और निरंतर आदान-प्रदान हेतु ई-गवर्नेंस और सूचना प्रौद्योगिकी उपकरणों का उपयोग।
- **संस्थागत उपायों का प्रभावी कार्यान्वयन:** समाज की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार जवाबदेही तंत्रों, चाहे वे प्रभावी कानून, तंत्र, प्रक्रियाएँ और उपकरण हों, का सख्त और उपयुक्त कार्यान्वयन महत्त्वपूर्ण है।
- **सिविल सेवा बोर्ड:** सरकार सिविल सेवा बोर्ड की स्थापना करके अनुचित राजनीतिक हस्तक्षेप को कम कर सकती है।
- **जनता की शक्ति** : नागरिकों को भी अपने व्यवहार में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है तथा उन्हें अपना काम तेजी से करवाने के लिए अधिकारियों को 'स्पीड मनी' के माध्यम से रिश्वत देने से बचना चाहिए।

- **आचार संहिता और नैतिकता संहिता का सख्ती से पालन:** विभिन्न अधिकारियों के लिए निर्धारित आचार संहिता को एक नैतिकता संहिता द्वारा समर्थित किया जाना चाहिए जिसे अधिकारियों द्वारा आंतरिक रूप से आत्मसात किया जाना चाहिए। इससे यह सुनिश्चित होगा कि लोक अधिकारियों को नैतिक व्यवहार दिखाने के लिए मजबूर करने की कोई आवश्यकता नहीं होगी।
- **देरी को कम करना: "सुशासन" के लिए "अच्छी संस्थाओं"** के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए, देरी को कम करने और समय पर सेवा प्रदान करने की गारंटी देने के लिए हमारी संस्थाओं को पुनः तैयार करना और प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना आवश्यक है।

निष्कर्ष:

यदि भारत में भ्रष्टाचार का स्तर स्कैंडिनेवियाई देशों के बराबर हो जाए तो GDP में 1.5% की वृद्धि होगी और निवेश में 12% की वृद्धि हो जाएगी। यदि विदेशों में जमा सारा काला धन वापस आ जाए तो भारत अपना कर्ज चुका सकता है।

भारत में भ्रष्टाचार कानून

भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988

- इसमें लोक सेवकों द्वारा किए गए भ्रष्टाचार के संबंध में तथा भ्रष्टाचार के कृत्य को बढ़ावा देने में शामिल लोगों के लिए दंड का प्रावधान किया गया है।
- 2018 के संशोधन ने लोक सेवकों द्वारा रिश्वत लेने के साथ-साथ किसी भी व्यक्ति द्वारा रिश्वत देने को भी अपराध घोषित कर दिया।

धन शोधन निवारण अधिनियम, 2002

- धन शोधन (मनी लॉन्ड्रिंग) अवैध स्रोतों से अर्जित धन को वैध दिखाने की प्रक्रिया है।
- यह अधिनियम प्रवर्तन निदेशालय को धन शोधन की जाँच करने का अधिकार देता है।
- इसमें जुर्माने के साथ-साथ कठोर कारावास का भी प्रावधान है।
- इस अधिनियम के तहत बैंकिंग कंपनियों और वित्तीय मध्यवर्ती संस्थाओं को निर्दिष्ट प्रकृति और मूल्य के वित्तीय लेनदेन का रिकॉर्ड बनाए रखने की बाध्यता है।

बेनामी लेनदेन (प्रतिषेध) अधिनियम, 1988

- यह बेनामी लेनदेन (किसी अन्य व्यक्ति के झूठे नाम पर संपत्ति खरीदना, जो उसका भुगतान नहीं करता है) पर प्रतिबंध लगाता है, सिवाय इसके कि जब वह पत्नी या अविवाहित बेटी के नाम पर खरीदी गई हो।
- **बेनामी लेनदेन (प्रतिषेध) संशोधन अधिनियम, 2016**
  - जुर्माने के साथ कारावास की अवधि को सात वर्ष तक बढ़ा दिया गया है।
  - झूठी सूचना देने पर पाँच वर्ष के कारावास और जुर्माने का प्रावधान है।
  - प्रारंभिक जाँच अधिकारी संपत्ति पर कब्जा जारी रखने का आदेश पारित कर सकता है और उसके बाद मामले को न्याय निर्णयन प्राधिकरण को भेज सकता है, जो साक्ष्य की जाँच करेगा और आदेश पारित करेगा।
  - अपीलीय अधिकरण न्याय निर्णयन प्राधिकरण के आदेशों के विरुद्ध अपीलों पर सुनवाई करेगा।
  - उच्च न्यायालय अपीलीय अधिकरण के आदेशों के विरुद्ध अपील सुन सकता है।

भारतीय दंड संहिता, 1860

- **धारा 169 में** अवैध रूप से संपत्ति खरीदने या बोली लगाने पर जुर्माने के साथ दो साल तक के कारावास का प्रावधान है।
- किसी लोक सेवक पर मुकदमा चलाने के लिए राज्य या केंद्र सरकार से पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है।

कंपनी अधिनियम, 2013

- इसमें कॉर्पोरेट गवर्नेंस तथा कॉर्पोरेट क्षेत्र में भ्रष्टाचार और धोखाधड़ी के निवारण का प्रावधान है।
- **'धोखाधड़ी (fraud)'** शब्द को व्यापक परिभाषा दी गई है और यह कंपनी अधिनियम के तहत एक आपराधिक अपराध है।
- विशेष रूप से धोखाधड़ी से जुड़े मामलों के संबंध में, कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय के तहत **गंभीर धोखाधड़ी जाँच कार्यालय (Serious Frauds Investigation Office, SFIO) की स्थापना की गई है**, जो कंपनियों में सफेदपोश अपराधों और अपराधों से निपटने के लिए जिम्मेदार है।
- **SFIO** कंपनी अधिनियम के प्रावधानों के तहत जाँच करता है।

भ्रष्टाचार रोकने के लिए संस्थाएँ

लोकपाल और लोकायुक्त

- **लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम, 2013 में केंद्रीय स्तर पर लोकपाल और राज्य स्तर पर लोकायुक्त** की स्थापना का प्रावधान किया गया है।
- वे कुछ लोक पदाधिकारियों के विरुद्ध भ्रष्टाचार के आरोपों की जाँच करते हैं।
- लोकपाल के क्षेत्राधिकार में प्रधानमंत्री, मंत्री, सांसद, केंद्र सरकार के समूह क, ख, ग और घ के अधिकारी तथा कर्मचारी शामिल हैं।
- इसके पास भ्रष्ट तरीकों से अर्जित संपत्ति या अन्य लाभ को जब्त करने की शक्तियाँ हैं।

लोकपाल से संबंधित मुद्दे

- **न्यायपालिका को पूर्ण रूप से बाहर रखा जाना:** जो न्यायपालिका को जवाबदेह बनाने की संभावनाओं को बाधित करता है।
- **प्रधानमंत्री के खिलाफ जाँच का पूर्ण अधिकार नहीं:** यह अधिनियम परमाणु ऊर्जा आदि जैसे कुछ मामलों में प्रधानमंत्री के खिलाफ जाँच पर रोक लगाता है।
- **व्हिसल ब्लोअर्स को अधिक संरक्षण नहीं:** जो भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान में बाधा के रूप में कार्य करता है।
- **लोकपाल की नियुक्ति में विलंब:** वर्षों से तकनीकी मुद्दों के कारण लोकपाल की नियुक्ति में विलंब होता रहा।

केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC)

- केन्द्रीय सतर्कता आयोग सर्वोच्च सतर्कता संस्था है।
- CVC की स्थापना सरकार द्वारा **1964 में के. संथानम की अध्यक्षता वाली भ्रष्टाचार निवारण समिति** की सिफारिशों पर की गई थी।
- CVC किसी भी मंत्रालय या विभाग से स्वतंत्र है जो केवल संसद के प्रति जवाबदेह है।

- निम्नलिखित संस्थाएं, निकाय या व्यक्ति CVC से संपर्क कर सकते हैं:
  - **केंद्र सरकार**
  - **लोकपाल**
  - **व्हिसल ब्लोअर्स**
- इसे भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 के अंतर्गत कुछ श्रेणियों के लोक सेवकों द्वारा किए गए कथित अपराधों की जाँच करने का अधिकार है।
- इसकी वार्षिक रिपोर्ट में आयोग द्वारा किए गए कार्यों का ब्यौरा दिया जाता है तथा उन प्रणालीगत विफलताओं की ओर इशारा किया जाता है जिनके कारण सरकारी विभागों में भ्रष्टाचार बढ़ता है।

सीमाएँ (Limitations)

- इसे एक सलाहकार निकाय माना जाता है, जिसके पास आपराधिक मामले दर्ज करने का कोई अधिकार नहीं है।
- भ्रष्टाचार के मामलों पर कार्रवाई करने के लिए उसके पास संसाधनों और शक्तियों का अभाव है।

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो

- CBI की स्थापना **1941 में विशेष पुलिस प्रतिष्ठान के रूप में द्वितीय विश्व युद्ध** के दौरान खरीद में भ्रष्टाचार के मामलों की जाँच के लिए की गई थी।
- **संथानम समिति** की सिफारिशों पर **गृह मंत्रालय** के एक संकल्प द्वारा CBI का गठन किया गया था ।
- इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका भ्रष्टाचार को रोकना और प्रशासन में ईमानदारी बनाए रखना है। यह CVC की निगरानी में काम करता है।
- यह संबंधित विभाग के अनुरोध पर या संबंधित विभाग के परामर्श से आर्थिक और राजकोषीय कानूनों के उल्लंघन से जुड़े मामलों की जाँच करता है।
- यह गंभीर प्रकृति के अपराधों की जाँच करता है, जिनका राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रभाव होता है, तथा जो पेशेवर अपराधियों या संगठित गिरोहों द्वारा किए जाते हैं।
- यह विभिन्न राज्य पुलिस बलों और भ्रष्टाचार रोधी एजेंसियों के क्रियाकलापों का समन्वय करता है।
- यह अपराध के आँकड़े रखता है और आपराधिक जानकारी प्रसारित करता है।
- CBI, **इंटरपोल** के साथ पत्राचार के लिए भारत का प्रतिनिधि है।

समस्याएँ

- **स्वतंत्रता का अभाव-** CBI अपने कर्मचारियों के लिए गृह मंत्रालय पर निर्भर है।
- **राजनीतिक हस्तक्षेप-** सरकार के अत्यधिक हस्तक्षेप के कारण उच्चतम न्यायालय ने CBI को पिंजरे में बंद तोता (caged parrot) कहा है।
- **राज्य सरकार पर निर्भरता:** जाँच शुरू करने से पहले CBI को संबंधित राज्य की सहमति की आवश्यकता होती है। हाल ही में पश्चिम बंगाल राज्य ने CBI को दी गई **सामान्य सहमति (general consent)** वापस ले ली है।
- **जवाबदेही का अभाव:** चूँकि CBI , RTI के दायरे से बाहर है।
- **पूर्व सहमति:** संयुक्त सचिव और उससे ऊपर के स्तर के अधिकारियों के खिलाफ जाँच शुरू करने के लिए केंद्र सरकार की पूर्व सहमित लेनी होगी।

शासन में शुचिता कैसे लायी जाये?

- शिकायत निवारण को अनिवार्य बनाना।
- RTI के माध्यम से शासन में जवाबदेही और पारदर्शिता लाना तथा प्रक्रिया का डिजिटलीकरण करना।
- अधिकारियों को मूल्य-आधारित प्रशिक्षण प्रदान करना।
- पंचायती राज संस्थाओं को नागरिक भागीदारी के मंच के रूप में मजबूत बनाना।
- सार्वजानिक-निजी सहभागिता मॉडल के माध्यम से सेवा वितरण में जनता की भागीदारी लाना।
- सामाजिक लेखापरीक्षा को नियमित करना।
- स्वतंत्र जाँच के लिए लोकपाल प्रणाली को मजबूत बनाना।
- नागरिक चार्टर का प्रभावी कार्यान्वयन।
- ई-गवर्नेंस के माध्यम से मानव-से-मानव संपर्क को समाप्त करना।
- ई-गवर्नेंस (E-GOVERNANCE)
- यह सरल, जवाबदेह, त्वरित, अनुक्रियाशील और पारदर्शी शासन का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सरकार की कार्यप्रणाली में **सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का अनुप्रयोग है।**
- यह **निष्क्रिय सूचना देने से लेकर सक्रिय नागरिक भागीदारी तक की यात्रा का प्रतिनिधित्व करता है।**

ई-गवर्नेंस क्यों?

- **सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT)** अनुप्रयोग लोक प्रशासन प्रणालियों की संरचनाओं पर प्रभाव डालते हैं।
- **तकनीकी प्रगति निम्नलिखित के माध्यम से प्रशासनिक प्रणालियों को सुविधाजनक बनाती है:**
  - प्रशासनिक विकास; और
  - प्रभावी सेवा वितरण
- **प्रशासनिक विकास (Administrative Development)**: इस प्रक्रिया को और गति देने के लिए **सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT)** का उपयोग किया जा सकता है और अब इसका उपयोग किया भी जा रहा है। वे निम्नलिखित तरीकों से मदद करती हैं:
  - प्रशासनिक प्रक्रियाओं का स्वचालन
  - कागजी कार्रवाई में कमी
  - सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार
  - पारदर्शिता, जवाबदेही आदि लागू करके प्रशासनिक संस्कृति में परिवर्तन लाना।
  - पदानुक्रम का उन्मूलन
- **प्रभावी सेवा वितरण (Effective Service Delivery): सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT)** लोगों तक सेवाओं को प्रभावी ढंग से पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। **सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) निम्न को** सुनिश्चित करती है:
  - पारदर्शिता
  - आर्थिक विकास
  - रणनीतिक सूचना प्रणाली अर्थात; प्रबंधन को सूचना के सभी पहलुओं को उपलब्ध कराना।
  - सामाजिक विकास

ई-गवर्नेंस से संबंधित मुद्दे

आर्थिक	सामाजिक	तकनीकी
• **लागत:** यह एक महत्त्वपूर्ण कारक है जो डिजिटल पहुँच में बाधा के रूप में कार्य करता है। • **धोखाधड़ी वाले लेनदेन:** सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि धोखाधड़ी वाले लेनदेन न हों और साथ ही अत्यधिक जाँच के बोझ से भी बचना होगा। • **वित्तपोषण:** यह ई-गवर्नेंस पहलों में सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। ई-गवर्नेंस पहलों में शामिल परियोजनाओं को या तो सरकारी क्षेत्र या निजी क्षेत्र के माध्यम से वित्तपोषित किया जाना चाहिए।	• **डिजिटल डिवाइड:** यह उन लोगों के बीच हो सकता है जिनके पास डिजिटल सुविधाओं तक पहुँच है और जिनके पास इसकी कमी है। • **परिवर्तन का प्रतिरोध:** नागरिकों के कुछ समूहों में से सरकारी कर्मचारी और लोक नीति प्रशासक परिवर्तन का प्रतिरोध कर सकते हैं। • **परिवर्तन का प्रबंधन:** EDI, इंटरनेट और अन्य **सूचना और संचार** आधारित प्रौद्योगिकियों सहित इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से सरकारी सेवाओं की डिलीवरी के लिए निर्णय और वितरण प्रक्रियाओं में प्रक्रियात्मक और कानूनी परिवर्तन की आवश्यकता होगी। इसके लिए मूलभूत परिवर्तन की आवश्यकता है जैसे कि कर्मचारियों को अधिक अधिकार सौंपे जाने चाहिए; निर्णय लेने के स्तरों को अलग-अलग करने से निर्णय लेने वाली मशीनरी को पुनः डिजाइन करना और उचित आकार निर्धारित करना।	• **निजता (Privacy)**: चूँकि नागरिक अपनी गोपनीय जानकारी सरकार को सौंपते हैं, इसलिए उनकी निजता को तीसरे पक्ष के हाथों में जाने से बचाना होगा, जो इसका दुरुपयोग कर सकते हैं। • **ई-गवर्नेंस प्रणाली से छेड़छाड़ :** जैसे ही प्रणाली से समझौता किया जाता है और विशेषाधिकारों का हनन किया जाता है, ई-गवर्नेंस तंत्र की वर्गीकृत जानकारी अवैध समायोजन के प्रति अतिसंवेदनशील हो जाती है। • **अंतर-संचालनीयता (Interoperability)**: एकीकृत सेवा वितरण साइटों के लिए डिजाइन संबंधी एक प्रमुख मुद्दा यह है कि वेब-आधारित फॉर्म में डेटा को कैसे प्राप्त किया जाए तथा उसे एक एजेंसी के सिस्टम में कैसे स्थानांतरित किया जाए, ताकि उस जानकारी को एक सामान्य फॉर्मेट में संसाधित और साझा किया जा सके। • **खंडन करना (Repudiation)**: यहाँ तक कि हमलावर ई-गवर्नेंस लेनदेन के दौरान भी खंडनकारी हमला कर सकता है, जो उपयोगकर्ता की अपने द्वारा निष्पादित लेनदेन का खंडन करने की क्षमता है। • **ई-गवर्नेंस सूचना का प्रकटीकरण:** ई-गवर्नेंस प्रणाली के उल्लंघन की स्थिति में, अवांछनीय सूचना का प्रकटीकरण बहुत आसानी से हो सकता है। • **सेवा प्रदान करने से इनकार करना : इस तकनीक में, एक हमलावर ई-गवर्नेंस सर्वर को अपने** सभी संसाधनों का उपयोग करने के अनेक अनुरोध एक साथ भेजकर सेवा प्रदान करने से इनकार करने (Denial of Service, DoS) संबंधी हमला कर सकता है, जिससे तंत्र क्रैश हो जाता है। • **साइबर अपराध:** विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उन्नति से साइबर अपराध की दर बढ़ जाती है। यह ई-गवर्नेंस पद्धति के तहत सरकार और उसके नागरिकों के बीच किए जाने वाले लेन-देन के लिए एक खतरा है।

भारत में ई-गवर्नेंस पहल का उदाहरण

डिजिटल इंडिया पहलें (Digital India Initiatives): यह भारत को ज्ञान आधारित परिवर्तन के लिए तैयार करने का एक व्यापक कार्यक्रम है। **दी गई पहलों में से कुछ पहलें इस प्रकार हैं:**

- **कृषि:** ई-नाम (e-NAM)- अखिल भारतीय कृषि मंडियों को डिजिटल रूप से जोड़ने के लिए।
- **महिलाएँ**: महिला सशक्तीकरण के लिए नारी पोर्टल (Naari Portal)
- **बच्चे:** बाल श्रम उन्मूलन के लिए पेंसिल पोर्टल (Pencil Portal)
- **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी**: विज्ञान में महिलाओं को बढ़ावा देने के लिए किरण (Kiran Portal)
- **जनता**: सूचना का अधिकार
- **निर्वाचन**: मतदाताओं को चुनाव में भाग लेने के लिए शिक्षित करने हेतु स्वीप ऐप (SVEEP app)
- **इंटरनेट**: ग्रामीण क्षेत्रों में ब्रॉडबैंड क्रांति लाने के लिए एनएफओएन (NFON)।
- **मोबाइल सेवा (Mobile Seva)**: यह लोगों को मोबाइल फोन और टैब के माध्यम से सरकारी सेवाएँ प्रदान करती है।

निष्कर्ष:

शासन में शुचिता एक कुशल और प्रभावी शासन प्रणाली और सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए एक आवश्यक और महत्त्वपूर्ण शर्त है। शासन में शुचिता सुनिश्चित करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण शर्त यह है कि भ्रष्टाचार नहीं होना चाहिए और भ्रष्टाचार से निपटना केवल शासन संरचना तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यवस्था के अंदर और बाहर शामिल प्रत्येक हितधारक से संबंधित है।

समाचारों में नैतिक मुद्दे

मीडिया नैतिकता

प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया और दुनिया भर में इसी प्रकार के अन्य संगठनों पर आचार संहिता बनाकर मीडिया मानकों को बढ़ावा देने की जिम्मेदारी है। यह सराहनीय है कि हमारे कानून निर्माताओं ने काउंसिल को आचार संहिता बनाने की जिम्मेदारी नहीं सौंपी है।

नैतिक महत्त्व:

- लोकतंत्र का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व प्रेस की स्वतंत्रता है। इसके द्वारा जनता की राय एकत्रित की जाती है और उसे आकार भी प्रदान किया जाता है। संसदीय लोकतंत्र केवल मीडिया की निगरानी में ही फल-फूल सकता है।
- ऐसे समय में जब भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक स्तर पर अधिक एकीकृत हो रही है, मीडिया परिवेश में व्यापक परिवर्तन हो रहा है, तथा भारतीय प्रेस भी अंतरराष्ट्रीय हो रहा है, तब लोगों के हितों और देश की रक्षा करने में प्रेस का दायित्व काफी बढ़ गया है।

- आज के मीडिया ने समाज में लोकप्रियता हासिल कर ली है और शासन व्यवस्था के चौथे स्तंभ के रूप में अपनी भूमिका को काफी बढ़ा लिया है।
- इन मानकों में यह सुनिश्चित करना शामिल है कि समाचार सटीक हो, रिपोर्टिंग में वस्तुनिष्ठता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए संयमित और सामाजिक रूप से स्वीकार्य भाषा का प्रयोग किया जाए, तथा इस बात पर विचार किया जाए कि समाचार समाज, लोगों और संस्थाओं को किस प्रकार प्रभावित करेगा।
- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को समाज के दायित्वों और नैतिक मानकों द्वारा विनियमित और सीमित किया जाना चाहिए, भले ही यह निर्विवाद रूप से एक मौलिक अधिकार है।
- मूलतः, पत्रकारिता नैतिकता (journalistic ethics) स्वैच्छिक आत्म-नियंत्रण है जिसका पत्रकारों को जनता का विश्वास बनाए रखने और उसे आगे बढ़ाने, अपनी विश्वसनीयता बनाए रखने तथा जनता के विश्वास को धोखा देने से बचने के लिए प्रयोग करना चाहिए।
- सत्यनिष्ठा और निष्पक्षता; प्रकाशन से पहले किसी भी आलोचनात्मक रिपोर्टिंग के विषय से परामर्श करने का दायित्व; तथ्यात्मक त्रुटियों को सुधारने का दायित्व; तस्वीरों को न बदलने या गलत ढंग से प्रस्तुत न करने का दायित्व।

निष्कर्ष

प्रसिद्ध पत्रकार महात्मा गांधी ने कहा था, "पत्रकारिता का एकमात्र लक्ष्य सेवा होना चाहिए। समाचार-पत्र एक शक्तिशाली बल है, लेकिन जिस तरह एक अनियंत्रित बाढ़ पूरे ग्रामीण इलाके को जलमग्न कर देती है और फसलों को नष्ट कर देती है, उसी तरह एक अनियंत्रित कलम भी केवल नुकसान ही पहुँचाती है। यदि नियंत्रण बाहरी है तो इसका सबूत अधिक मजबूत है।

वैश्विक शासन की नैतिकता

अर्थव्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था को एक सुशासन मॉडल द्वारा अदृश्य रूप से समर्थन दिया जाता है। अब समय आ गया है कि दुनिया शासन के अपने पुराने मॉडलों से गवर्नेंस 4.0 (Governance 4.0) की ओर बढ़े, जिसे विश्व आर्थिक मंच के दावोस शिखर सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया था और जो समावेशी, दीर्घकालिक रणनीतिक सोच पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

नैतिक वैश्विक शासन का महत्त्व

- **गवर्नेंस 4.0 में दीर्घकालिक रणनीतिक योजना के लिए रणनीतियाँ:** गवर्नेंस 4.0 के अंतर्गत दीर्घकालिक रणनीतिक सोच को वर्तमान अल्पकालिक प्रबंधन का स्थान लेना चाहिए।
- **पर्यावरणीय पहलू:** जलवायु परिवर्तन से निपटने, मानव गतिविधि के कारण जैव विविधता की हानि और पर्यावरणीय क्षति को रोकने तथा मजबूरन पलायन जैसे मुद्दों से निपटने के लिए की जाने वाली कार्रवाइयों को महामारी, सामाजिक आर्थिक संकट और लोगों के मानसिक स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के साथ जोड़ा जाना चाहिए।
- **कंपनियों को जिम्मेदारी लेनी होगी:** पिछली टॉप-डाउन रणनीति (Top-Down Strategy) और टनल विजन (Tunnel Vision) के स्थान पर नए मॉडल का उपयोग करना होगा। हम जिस जटिल, परस्पर जुड़े हुए और असतत वातावरण में रहते हैं उसमें समाज के प्रत्येक हितधारक के कर्तव्यों को बदलना होगा।
- **बदलती प्राथमिकताएँ:** अब समय आ गया है कि अर्थशास्त्र और अल्पकालिक वित्तीय चिंताओं की सीमित समझ पर ज़ोर देना बंद किया जाए। शासन की कोई भी नई प्रणाली इस विचार पर आधारित होनी चाहिए कि समाज और प्रकृति पहले आते हैं।
- **नये नेता:** पर्यावरण, सामाजिक और शासन संबंधी मानदंडों का समर्थन करने वाले व्यवसाय कार्यपालक तथा कुछ राजनीतिक नेता, शासन के नये युग की शुरुआत करने के इच्छुक नेताओं में से हैं।
  - जलवायु परिवर्तन से निपटने और सामाजिक अन्याय को दूर करने के लिए विशिष्ट कार्रवाई की हिमायत करने वाले ऐसे अग्रणी नेताओं द्वारा अपने संकीर्ण हितों से ऊपर उठकर कार्य करने के लिए उनकी सराहना की जानी चाहिए।
  - आज के समय में अनुक्रियाशील और जवाबदेह शासन के सर्वोत्तम संकेतक यह आकलन करते हैं कि एक नेता शेयरधारक जिम्मेदारी की तुलना में हितधारक कर्तव्य को कितना अधिक स्वीकार करता है।
- इस प्रकार, वैश्विक मुद्दों के समाधान के लिए नेताओं को एक नया, समावेशी शासन प्रतिमान अपनाना आवश्यक होगा।

प्रमुख शब्दावलियाँ

निष्पक्षता, जवाबदेही और पारदर्शिता, सुशासन, भाई-भतीजावाद, पक्षपात, राजनीतिक पक्षपात, सहभागी शासन, भ्रष्टाचार की संस्कृति, सेवा वितरण, प्रभावी नीति निर्माण, विकास प्रशासन, 3E - अर्थात दक्षता, अर्थव्यवस्था और प्रभावशीलता, उद्यमी सरकार, शासकीय गुप्त बात अधिनियम (OSA), व्हिसलब्लोअर संरक्षण अधिनियम, भारतीय साक्ष्य अधिनियम, नैतिक प्रतिबद्धता, समर्पण, आचार संहिता और नैतिकता संहिता, नागरिक चार्टर, बलपूर्वक भ्रष्टाचार और मिलीभगत वाला भ्रष्टाचार, ई-गवर्नेंस।

विगत वर्षों के प्रश्न

- भ्रष्टाचार समाज में मूलभूत मूल्यों की विफलता की अभिव्यक्ति है।" आपकी राय में, समाज में मूलभूत मूल्यों के उत्थान के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं? **(2023)**
- कार्य वातावरण के संदर्भ में, उपयुक्त उदाहरणों के साथ 'अवपीड़न और अनुचित प्रभाव (Coercion and Undue Influence)' के बीच अंतर बताएं। **(2023)**
- प्रभावी शासन प्रणाली और सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए शुचिता आवश्यक है। चर्चा करें। **(2023)**
- 'सार्वजनिक जीवन में शुचिता' पर एक टिप्पणी लिखें। **(2022)**
- 'सुशासन' से आप क्या समझते हैं? राज्य द्वारा ई-शासन के मामले में उठाई गई हालिया पहलों ने लाभार्थियों को कहाँ तक सहायता पहुँचाई है? उपयुक्त उदाहरणों के साथ विवेचन कीजिए। **(2022)**
- एक विचार यह है कि शासकीय गुप्त बात अधिनियम सूचना के अधिकार अधिनियम के कार्यान्वयन में बाधा है। क्या आप इस विचार से सहमत हैं? चर्चा करें। **(2019)**
- नागरिक चार्टर आंदोलन के मूल सिद्धांतों की व्याख्या करें और इसके महत्त्व पर प्रकाश डालें। **(2019)**

- "सूचना का अधिकार अधिनियम केवल नागरिकों के सशक्तीकरण के बारे में नहीं है, यह अनिवार्य रूप से जवाबदेही की अवधारणा को पुनर्परिभाषित करता है। चर्चा करें। **(2018)**
- अनुशासन का मतलब आम तौर पर आदेश और अधीनता का पालन करना होता है। हालाँकि, यह संगठन के लिए प्रतिकूल हो सकता है। **(2017)**
- आज हम पाते हैं कि आचार संहिता निर्धारित करने, सतर्कता प्रकोष्ठ/आयोग स्थापित करने, आरटीआई, सक्रिय मीडिया और कानूनी तंत्र को मजबूत करने जैसे विभिन्न उपायों के बावजूद भ्रष्ट आचरण नियंत्रण में नहीं आ रहे हैं।
    - इन उपायों की प्रभावशीलता का औचित्य सहित मूल्यांकन करें।
    - इस खतरे से निपटने के लिए अधिक प्रभावी रणनीति सुझाएँ। **(2015)**
- हाल ही में हुए कुछ घटनाक्रम जैसे कि आरटीआई अधिनियम, मीडिया और न्यायिक सक्रियता आदि सरकार के कामकाज में अधिक पारदर्शिता और जवाबदेही लाने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। हालाँकि, यह भी देखा जा रहा है कि कई बार इन तंत्रों का दुरुपयोग भी किया जाता है। एक और नकारात्मक प्रभाव यह है कि अधिकारी अब तुरंत निर्णय लेने से डरते हैं। इस स्थिति का विस्तार से विश्लेषण करें और सुझाव दें कि इस द्वंद्व को कैसे हल किया जा सकता है। सुझाव दें कि इन नकारात्मक प्रभावों को कैसे कम किया जा सकता है। **(2015)**

11 समसामयिक मुद्दों का नैतिक दृष्टिकोण

ओपिनियन पोल (अभिमत सर्वेक्षण) और नैतिक मुद्दे

संदर्भ

हाल ही में सम्पन्न लोकसभा चुनावों के लिए किए गए ओपिनियन पोल की प्रामाणिकता और पारदर्शिता का मुद्दा।

ओपिनियन पोल (OPINION POLL)

- **ओपिनियन पोल (अभिमत सर्वेक्षण)** एक चुनाव-पूर्व सर्वेक्षण है, जो चुनाव-संबंधी विभिन्न मुद्दों पर **मतदाताओं के विचार एकत्र करने के लिए किया जाता है।**
- दूसरी ओर, **एग्जिट पोल (Exit Poll)** लोगों द्वारा मतदान करने के तुरंत बाद आयोजित किया जाता है, और यह राजनीतिक दलों और उनके उम्मीदवारों के लिए समर्थन का आकलन करता है। चूँकि यह अभ्यास एक रस्म बन गया है, इसलिए इस तरह के मतदान सर्वेक्षणों को सीधे नैतिकता और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं से जोड़ना आवश्यक है।
- कुछ ओपिनियन पोल **प्रायोजित, प्रेरित और पक्षपातपूर्ण हो सकते हैं।** साथ ही, लगभग सभी सर्वेक्षण **अपारदर्शी होते हैं,** जो उनकी कार्यप्रणाली के बारे में बहुत कम जानकारी देते हैं।
- ऐसी खामियों के कारण कई "सर्वेक्षण", "अनुचित प्रभाव" डाल सकने वाले **दुष्प्रचार के समतुल्य होते हैं।** चुनाव की पूर्व संध्या पर इस तरह के आँकड़ों को जारी करना अनैतिक है क्योंकि यह मतदाता के मन को प्रभावित कर सकता है।

ओपिनियन पोल से जुड़े नैतिक मुद्दे

- **हितों का टकराव (Conflicts of Interest):** निहित स्वार्थ द्वारा कराए गए या पक्षपातपूर्ण एजेंडे के साथ किए गए सर्वेक्षण; पारदर्शिता, निष्पक्षता और सत्यनिष्ठा के बारे में नैतिक चिंताएँ पैदा करते हैं।
- **अनुचित प्रभाव (Undue Influence)** : ओपिनियन पोल चुनावी प्रक्रिया की पवित्रता और अखंडता को सीधे प्रभावित करते हैं। वे चुनावी व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं और चुनाव परिणामों को विकृत कर सकते हैं।
- **दुष्प्रचार (Disinformation)** : लगभग सभी पोल पारदर्शी नहीं होते हैं, जो कार्यप्रणाली के बारे में बहुत कम जानकारी देते हैं। ऐसी खामियों के कारण कई "पोल" दुष्प्रचार के बराबर होते हैं, जो "अनुचित प्रभाव" डाल सकते हैं, जो **भारतीय दंड संहिता (IPC) की धारा 171(C)** के तहत एक **"चुनावी अपराध" है।** यह **लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम** की **धारा 123(2)** के तहत एक "**भ्रष्ट व्यवहार**" है।
- **संदेहास्पद मामला (Suspicious Affair):** किसी सर्वेक्षण द्वारा कुछ चुनावों के बारे में सही अनुमान लगाना उसकी विश्वसनीयता या मजबूती का प्रमाण नहीं है।
- **अनुरूपता प्रभाव (Bandwagon Effect)** : अनुरूपता प्रभाव के अनुसार मतदाता "अंधानुकरण करते हैं", जिसका अर्थ है कि यदि कोई पार्टी इन सर्वेक्षणों में जीतती हुई दिख रही है, तो पार्टी को मतदाताओं से अतिरिक्त समर्थन मिलेगा, और इसके विपरीत यदि पार्टी इन सर्वेक्षणों में हार रही है तो उसे कम समर्थन मिलेगा।
- **छोटे दलों से जुड़ी समस्याएँ (Issues with the Smaller Parties)** : इसका छोटे और नए दलों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, क्योंकि मतदाता दो चीजें देखता है - वह कौन सा राजनीतिक दल पसंद करता है और क्या वह जीतने की स्थिति में है।
- **अस्पष्ट और अतिशयोक्तिपूर्ण दावे (Vague and Excessive Claims):** सर्वेक्षणकर्ता अतिशयोक्तिपूर्ण दावे करके मामले को और बदतर बना देते हैं, जो किसी अस्पष्ट स्थिति को दर्शाता है।
- **विधियों पर कम ध्यान (Less Focus on Methods):** पोलिंग एजेंसियों और मीडिया की ओर से अपने सर्वेक्षणों के बारे में बुनियादी कार्यप्रणाली संबंधी विवरण साझा करने में सामान्य अनिच्छा से समस्या और बढ़ जाती है।
- **प्रतिचयन पूर्वाग्रह (Sampling Bias):** ओपिनियन पोल अक्सर बड़ी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रतिचयन तकनीकों पर निर्भर रहते हैं। हालाँकि, यदि प्रतिदर्श (Sample) जनसंख्या का प्रतिनिधित्व नहीं करता है, तो यह पूर्वाग्रह पैदा कर सकता है और गलत परिणाम दे सकता है। नैतिक चिंताएँ तब उत्पन्न होती हैं जब सर्वेक्षण इस तरह से आयोजित किए जाते हैं कि व्यवस्थित रूप से कुछ समूहों को बाहर रखा जाता है, जिससे उनके परिप्रेक्ष्यों का गलत प्रतिनिधित्व होता है या उन्हें हाशिये पर धकेल दिया जाता है।

आगे की राह

- **आचार संहिता (Code of Conduct):** ओपिनियन पोल के लिए एक आचार संहिता होनी चाहिए। प्रतिचयन संरचना (Sampling Frame), प्रतिदर्श का आकार (Sample Size) और प्रतिदर्श लेने के लिए उपयोग की जाने वाली सटीक तकनीक; प्राप्त प्रतिदर्श का सामाजिक प्रोफ़ाइल प्रकट किया जाना चाहिए।
- **पारदर्शिता (Transparency)**: सर्वेक्षण करने वाले संगठन का स्वामित्व और ट्रैक रिकॉर्ड तथा प्रायोजकों का विवरण सार्वजनिक किया जाना चाहिए।
- **प्रभावी वैकल्पिक विधि (Effective Alternative Method)**: ओपिनियन पोल की वर्तमान पद्धति के विकल्प तलाशने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए, ऐसे विकल्प जो पूरे विश्व में सफलतापूर्वक प्रयोग किए जा चुके हैं।
- **कार्यप्रणाली (Methodology):** सर्वेक्षण में बताए गए अशोधित वोट शेयर और उन्हें वोट अनुमान और सीटों के पूर्वानुमान में कैसे परिवर्तित किया गया।

निष्कर्ष

- ओपिनियन पोल न केवल लोगों के अभिमतों को प्रतिबिंबित करते हैं बल्कि उन्हें प्रभावित करके जीतने की संभावना का माहौल बनाते हैं।
- ऐसे प्रभाव के प्रति मतदाताओं की संवेदनशीलता का विश्लेषण करते हुए, भारत के लोकतंत्र की पवित्रता की रक्षा के लिए इसे विनियमित करने की सख्त आवश्यकता है। एक बार ऐसा तंत्र लागू हो जाने पर, जनता को वास्तविक और फ़र्ज़ी मतदान सर्वेक्षण के बीच अंतर करने में मदद मिलेगी और पारदर्शी प्रथाओं को प्रोत्साहन मिलेगा।

चुनावी फंडिंग और चुनावी बांड की नैतिकता

चुनावी फंडिंग से तात्पर्य चुनाव प्रचार के दौरान राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों द्वारा जुटाई गई और खर्च की गई धनराशि से है।

भारत में चुनावी फंडिंग की व्यवस्था:

- **व्यक्तिगत दान (Individual Donations):** नकद दान के लिए प्रति व्यक्ति 2,000 रुपये की सीमा निर्धारित की गई है।
- **कॉर्पोरेट दान (Corporate Donations)**
- **चुनावी ट्रस्ट (Electoral Trusts)**
- **चुनावी बांड (Electoral Bonds):** 2018 में शुरू किए गए चुनावी बांड को व्यक्ति या कंपनियाँ नामित बैंकों से खरीद सकती हैं और राजनीतिक दलों को दान कर सकती हैं।

भारत में चुनावी फंडिंग प्रथाओं से जुड़े नैतिक मुद्दे?

- **चुनावी बांड के माध्यम से दान देने वाले का नाम अज्ञात रहना:** इससे कई बार राजनीतिक दल और धनी व्यक्तियों के बीच प्रच्छन्न लेन-देन (Quid Pro Quo) की स्थिति पैदा हो जाती है।
- पारदर्शिता की कमी के कारण धन शोधन (मनी लॉन्डरिंग) की संभावना रहती है।
- **कॉर्पोरेट अंशदान में वृद्धि:** इसकी परिणति क्रोनी पूँजीवाद (Crony Capitalism) में होती है।
- **कॉर्पोरेट दान की भूमिका:** कई कंपनियाँ बदले में लाभ अनुकूल नीतियाँ बनाए जाने की उम्मीद में राजनीतिक दलों को दान देती हैं।
- **काले धन का प्रभाव:** एक और बड़ा मुद्दा काले धन का प्रभाव है। कई राजनीतिक दलों को नकद के रूप में दान मिलता है, जिससे धन के स्रोत का पता लगाना मुश्किल हो जाता है।
- **असमान अवसर:** चुनावी बांड राजनीतिक परिदृश्य में विद्यमान असमानताओं को बढ़ाता है, जहाँ धन चुनावी परिणामों को असमान रूप से प्रभावित कर सकता है।
- **लोकतांत्रिक मूल्यों पर प्रभाव** : चुनावी बांड पारदर्शिता, जवाबदेही और समान प्रतिनिधित्व के मूल लोकतांत्रिक मूल्यों को कमजोर करते हैं।

आगे की राह

- **चुनावों का सरकार द्वारा वित्तपोषण:** फ्रांस जैसे विकसित देशों में, चुनावों का वित्तपोषण सार्वजनिक निधियों के माध्यम से किया जाता है। चुनावों का सरकार द्वारा वित्तपोषण का विचार दिनेश गोस्वामी समिति (1990) और अन्य संस्थाओं द्वारा प्रस्तावित किया गया है।
- **चुनावी बांड में पारदर्शिता:** दानकर्ताओं की पहचान का खुलासा करके, दान की जाने वाली धनराशि की मात्रा पर प्रतिबंध लगाकर तथा राजनीतिक दलों को अपने वित्तपोषण के स्रोतों का खुलासा करना जरूरी बनाकर पारदर्शिता लाई जा सकती है।
- **राष्ट्रीय निर्वाचन कोष (National Election Fund):** पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एस. कृष्णमूर्ति ने राष्ट्रीय निर्वाचन कोष की संभावना तलाशने की सिफारिश की है, जिसमें दान एक सहमत सिद्धांत, जैसे कि प्राप्त मतों की संख्या, के आधार पर दिया जाएगा।
- **राजनीतिक दलों को सूचना का अधिकार (RTI) अधिनियम के दायरे में लाना:** इससे काले धन के उपयोग और क्रोनी पूँजीवाद को बढ़ावा देने जैसी समस्याओं का समाधान होगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की नैतिकता पर वैश्विक समझौता

संदर्भ

संयुक्त राष्ट्र ने **कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उचित विकास को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक सामान्य मूल्यों और सिद्धांतों को परिभाषित करने वाला एक ऐतिहासिक संदर्भ अपनाया।**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ARTIFICIAL INTELLIGENCE, AI)

- यह कंप्यूटर विज्ञान की एक शाखा है जो मनुष्य के समान बुद्धिमान कंप्यूटर या मशीनें बनाने से संबंधित है। इसका तात्पर्य मशीनों की सोचने, समझने, सीखने, समस्या सुलझाने और निर्णय लेने जैसी मानवीय बुद्धिमत्ता प्रक्रियाओं को करने की क्षमता से है।
- "मानवता को नष्ट करने के लिए AI को बुरा होने की आवश्यकता नहीं है - यदि AI का कोई लक्ष्य है और मानवता उसके रास्ते में आती है, तो यह बिना सोचे-समझे, बिना किसी बुरी भावना के, मानवता को नष्ट कर देगी।" **एलन मस्क (संवेगहीन AI के बारे में विचार)**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़े 9 नैतिक मुद्दे

- **बेरोजगारी (Unemployment):** नौकरियाँ समाप्त होने के बाद क्या होगा?
- **असमानता (Inequality):** हम मशीनों द्वारा सृजित संपत्ति का वितरण कैसे करेंगे?
- **मानवता (Humanity):** मशीनें हमारे व्यवहार और परस्पर अन्तःक्रियाओं को कैसे प्रभावित करेंगी?
- **बुरे परिणाम (Evil Genies):** हम अप्रत्याशित परिणामों से अपनी रक्षा कैसे करेंगे?
- **कृत्रिम मूर्खता (Artificial Stupidity):** हम गलतियों से अपनी रक्षा कैसे करेंगे?
- **नस्लवादी रोबोट (Racisit Robots):** हम AI में पूर्वाग्रह को कैसे दूर करेंगे?
- **सुरक्षा (Security:** हम AI को अपने दुश्मनों से सुरक्षित कैसे रखेंगे?
- **विलक्षणता (Singularity):** हम किसी जटिल इंटेलीजेंट सिस्टम को अपने नियंत्रण में कैसे बनाए रखेंगे?
- **रोबोट अधिकार (Robot Rights):** हम मनुष्य के प्रति AI के व्यवहार को कैसे परिभाषित करेंगे?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) संबंधी नैतिकता (AI ETHICS)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) संबंधी नैतिकता नैतिक सिद्धांतों और तकनीकों की एक प्रणाली है जिसका उद्देश्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी के विकास और जिम्मेदारीपूर्ण उपयोग के बारे में जानकारी देना है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) से जुड़ी नैतिक चुनौतियाँ

- **व्याख्यात्मकता (Explainability):** जब AI सिस्टम गलत तरीके से काम करते हैं, तो टीमों को कारण जानने के लिए एल्गोरिदम सिस्टम और डेटा प्रक्रियाओं की एक जटिल शृंखला के माध्यम से पता लगाने में सक्षम होना चाहिए। AI का उपयोग करने वाले संगठनों को स्रोत डेटा, परिणामी डेटा, उनके एल्गोरिदम क्या करते हैं और वे ऐसा क्यों कर रहे हैं, इसकी व्याख्या करने में सक्षम होना चाहिए। AI में व्यापक रूप से पता लगाने की क्षमता होनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यदि कोई गडबड़ी होती है, तो उसके कारण का पता लगाया जा सकता है।
- **बेरोज़गारी का जोखिम (Risk of Unemployment)**: श्रम का पदानुक्रम मुख्य रूप से स्वचालन से संबंधित है। रोबोटिक्स और AI कंपनियाँ ऐसी इंटेलिजेंट मशीनें बना रही हैं जो आम तौर पर कम आय वाले श्रमिकों द्वारा किए जाने वाले कार्य करती हैं। उदाहरण के लिए: कैशियर की जगह लेने के लिए सेल्फ-सर्विस कियोस्क, फ़ील्ड वर्कर की जगह लेने के लिए फल चुनने वाले रोबोट आदि।
- **जिम्मेदारी (Responsibility):** समाज अभी भी इस बारे में जिम्मेदारी तय कर रहा है जब AI सिस्टम द्वारा लिए गए निर्णयों के विनाशकारी परिणाम होते हैं, जिसमें पूंजी, स्वास्थ्य या जीवन की हानि शामिल है। AI-आधारित निर्णयों के परिणामों की जिम्मेदारी को एक ऐसी प्रक्रिया द्वारा सुलझाया जाना चाहिए जिसमें वकील, विनियामक और नागरिक शामिल हों।
- **दुरुपयोग (Misuse):** AI एल्गोरिदम का उपयोग उन उद्देश्यों के अलावा अन्य उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है जिनके लिए उन्हें बनाया गया था। इन परिदृश्यों का डिज़ाइन चरण में विश्लेषण किया जाना चाहिए ताकि जोखिमों को कम किया जा सके और ऐसे मामलों में प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के लिए सुरक्षा उपाय किए जा सकें।
- **तकनीक की लत (Tech Addiction)** : तकनीक की लत मानव निर्भरता की नई सीमा है। AI पहले से ही मानव का ध्यान आकर्षित करने और कुछ निश्चित कार्यों को प्रेरित करने में प्रभावी हो चुका है। जब सही तरीके से उपयोग किया जाता है, तो यह समाज को अधिक लाभकारी व्यवहार की ओर ले जाने का अवसर बन सकता है। हालाँकि, गलत हाथों में यह हानिकारक साबित हो सकता है।
- **भेदभाव करने वाले रोबोट (Discriminating Robots) :AI सिस्टम मनुष्यों द्वारा बनाए जाते हैं, जो पक्षपाती और आलोचनात्मक हो सकते हैं। यह ऐसी AI चेहरे की पहचान** और **निगरानी तकनीक (AI facial recognition** and **surveillance technology)** बना सकता है जो अश्वेत और अल्पसंख्यकों के साथ भेदभाव कर सकता है।
- **डेटा गोपनीयता की चिंताएँ (Data Privacy Concerns)**: AI डेटा गोपनीयता की गंभीर चिंताएँ भी प्रस्तुत करता है। डेटा के लिए एल्गोरिदम की कभी न खत्म होने वाली तलाश ने हमारे डिजिटल फुटप्रिंट को हमारी जानकारी या सुविचारित सहमति के बिना एकत्र करने और बेचे जाने के लिए प्रेरित किया है।
- **उदाहरण - कैम्ब्रिज एनालिटिका** का मामला , जिसमें मतदान निर्णयों को बदलने के लिए ऐसे एल्गोरिदम और बिग डेटा का उपयोग किया गया था।
- **AI का मानव के विरुद्ध हो जाना (AI Turning Against Humans)**- यदि AI **स्वयं मानव के विरुद्ध** हो जाए तो यह मानवता के लिए विनाशकारी हो जाएगा।
- **उदाहरण -** यदि किसी AI सिस्टम को दुनिया से कैंसर को खत्म करने के लिए कहा जाए, तो बहुत सारी कम्प्यूटिंग के बाद, यह एक ऐसा फॉर्मूला निकालता है जो वस्तुतः पृथ्वी पर सभी को मारकर कैंसर को खत्म कर देगा।

आगे की राह

- **AI गवर्नेंस के लिए "संपूर्ण समाज"** वाला दृष्टिकोण (**"Whole of Society"** Approach) हमें व्यापक नैतिक सिद्धांतों, संस्कृतियों और आचार संहिताओं को विकसित करने में सक्षम करेगा। AI की वैश्विक पहुँच को देखते हुए, इस तरह का "**संपूर्ण समाज" वाले दृष्टिकोण को "संपूर्ण विश्व" वाले दृष्टिकोण ("Whole of world" approach)** पर आधारित होना चाहिए।
- कार्यपालकों, डेटा वैज्ञानिकों, अग्र-पंक्ति (फ्रंट-लाइन) कर्मचारियों और उपभोक्ताओं के बीच **जागरूकता की आवश्यकता है ताकि वे नीतियों, प्रमुख विचारों और अनैतिक AI और नकली डेटा के संभावित नकारात्मक प्रभावों को समझ सकें।**
- **AI संवर्द्धन और AI गवर्नेंस** के बीच सही संतुलन बनाए रखना।
- कार्यपालकों को **नकली डेटा** और **अनैतिक व्यवहार का स्वचालित रूप से पता लगाने** के लिए AI सिस्टम तैयार करने की आवश्यकता है।
- संगठनों को **खुले, पारदर्शी और विश्वसनीय AI बुनियादी ढाँचे** पर आधारित **रक्षात्मक उपायों** में निवेश करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

- मानवता के लाभ के लिए विश्व को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नियमों की आवश्यकता है।
- 'AI की नैतिकता' पर सिफारिश एक व्यापक समाधान है। नैतिक सुरक्षा के बिना, AI सामाजिक और आर्थिक असमानता को बढ़ाएगा, किसी भी निहित पूर्वाग्रह को अपरिवर्तनीय पैमाने और दर पर बढ़ाएगा और भेदभावपूर्ण परिणाम देगा।

न्यूरालिंक: नैतिक परिप्रेक्ष्य

- न्यूरालिंक ने इस तकनीक के पहले मानव परीक्षण में एक व्यक्ति के मस्तिष्क में एक प्रयोगात्मक मस्तिष्क उपकरण/चिप (जिसे टेलीपैथी कहा गया है) डाला है।
- **मानव प्रयोग:** कंपनी के प्राइम (PRIME) अध्ययन में, जिसे पिछले वर्ष अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन (US Food and Drug Administration) द्वारा अनुमोदित किया गया था, पक्षाघात से पीड़ित लोगों के लिए मस्तिष्क प्रत्यारोपण का परीक्षण किया जा रहा है ताकि वे अपने विचारों से बाह्य उपकरणों को नियंत्रित कर सकें।

न्यूरालिंक प्रौद्योगिकी के बारे में

- न्यूरालिंक एक न्यूरो प्रौद्योगिकी कंपनी है जिसके सह-संस्थापक एलन मस्क हैं और इसका मिशन ब्रेन-कम्प्यूटर इंटरफेस (Brain-Computer Interfaces, BCIs) विकसित करना है।

- BCIs मस्तिष्क की गतिविधि और मस्तिष्क के संकेतों का उपयोग करते हैं, उनका विश्लेषण करते हैं और उन्हें कमांड में परिवर्तित करते हैं, जिससे उपयोगकर्ता बाह्य उपकरणों को नियंत्रित कर सकते हैं।
- तथाकथित ब्रेन-कम्प्यूटर इंटरफेस (BCIs) का प्रारंभिक लक्ष्य लोगों को केवल अपने विचारों का उपयोग करके कम्प्यूटर कर्सर या कीबोर्ड को नियंत्रित करने में मदद करना है।

न्यूरालिंक से जुड़ी नैतिक चिंताएं

- **डेटा स्वामित्व (Data Ownership)**: रिकॉर्ड किए गए डेटा का स्वामित्व और डिवाइस द्वारा डिकोड किए गए इरादे स्पष्ट नहीं हैं। इससे निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठते हैं:
- इस रिकॉर्ड किये गए डेटा का स्वामित्व किसके पास रहेगा?
- क्या न्यूरालिंक के पास डेटा स्वामित्व होगा? यदि हाँ, तो वे तकनीकी रूप से किसी तीसरे पक्ष की ओर से "कार्रवाई करने के इरादे" के इस स्वामित्व के साथ क्या कर सकते हैं?
- **सुरक्षा संबंधी चिंता (Safety Concern)** : शल्य चिकित्सा के दौरान बंदरों की मृत्यु की चिंताजनक रिपोर्टें हैं तथा नैतिक उल्लंघनों के कारण प्रत्यारोपण प्रक्रिया की सुरक्षा के बारे में चिंताएँ उत्पन्न हो गई हैं।
- **परीक्षण पद्धतियों के बारे में चिंताएँ (Concerns Over Testing Practices):** उदाहरण के लिए, रॉयटर्स ने बताया कि 2018 में इसकी शुरुआत के बाद से न्यूरालिंक के परीक्षण के दौरान 1,500 से अधिक जानवरों की मौत हो गई है।
- **सुपर ह्यूमन का निर्माण (Creating Super Humans):** संज्ञानात्मक क्षमताओं को बहाल करने वाली प्रौद्योगिकियाँ मानव क्षमताओं और संज्ञान को बढ़ाने वाले विकास को और अधिक सुविधाजनक बना सकती हैं, जिससे असमानता, भेदभाव, मानवता की हानि, और बढ़ी हुई क्षमताओं के संभावित दुरुपयोग से सामाजिक विघटन या संघर्ष जैसी चिंताएँ पैदा हो सकती हैं।
- उदाहरण के लिए, अमेरिकी रक्षा उन्नत अनुसंधान परियोजना एजेंसी (US Defense Advanced Research Project Agency, DARPA) की ब्रेन (BRAIN) पहल का उद्देश्य सैनिकों की संज्ञानात्मक क्षमताओं को बढ़ाना है।
- **पारदर्शिता के बारे में चिंताएँ (Concerns Over Transparency):** शल्य चिकित्सा द्वारा प्रत्यारोपित चिप के परीक्षणों को गुप्त रखा गया है, तथा पारदर्शिता भी सीमित है।
- वैज्ञानिक समुदाय की जाँच का सामना करने के लिए डेटा की उपलब्धता और पारदर्शिता के संबंध में चिंताएँ उत्पन्न होती हैं।
- **अधिक से अधिक लाभ कमाना बनाम व्यावसायिक नैतिकता (Profit Maximisation vs Business Ethics)**: यह सुनिश्चित करना कि कंपनी परीक्षण में शामिल प्रतिभागियों की भलाई को प्राथमिकता दी जाए और लाभ के लिए उनके डेटा का दुरुपयोग करने से बचे, इस उभरते परिदृश्य में चिंता का विषय बना हुआ है।

आगे की राह

- **सुरक्षा और नैतिक मानकों की माँग:** मानवीय विचार और संज्ञान तक पहुँच के लिए मजबूत उपयोगकर्ता गोपनीयता सुरक्षा की आवश्यकता होती है। उपयोगकर्ता गोपनीयता सुरक्षा के लिए एकीकृत नीति निर्माण महत्त्वपूर्ण है, जो स्पष्ट उपयोगकर्ता अनुमतियों को सुनिश्चित करता है।
- **पारदर्शी डेटा पद्धतियां:** सरकारों को यह निगरानी करनी चाहिए कि निजी संगठन ब्रेन सिग्नल डेटा का उपयोग किस प्रकार करते हैं, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह राष्ट्रीय और वैश्विक उपभोक्ता गोपनीयता और डेटा-संग्रह कानून, जैसे उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम (CPA) और यूरोपीय संघ के सामान्य डेटा संरक्षण विनियमन (General Data Protection Regulation, GDPR) के अनुरूप है।
- **विचार-विमर्श और नैतिक विचारों पर जोर:** अंतरराष्ट्रीय समुदाय द्वारा नीतियों, सुरक्षा उपायों, कानूनी संरचनाओं और नैतिक आयामों का गहन मूल्यांकन महत्त्वपूर्ण है।
- **समानता और पहुँच सुनिश्चित करना:** विविध पृष्ठभूमि के व्यक्तियों के लिए BCI प्रौद्योगिकियों की पहुँच सुनिश्चित करना, ताकि समावेशिता को बढ़ावा मिले और सामाजिक असमानताएँ कम हों।

पत्रकारिता

संदर्भ

- हाल ही में सरकार ने **यूक्रेन-रूस युद्ध** और **दिल्ली के जहांगीरपुरी में हुई हिंसा की टेलीविजन कवरेज पर मीडिया को एक परामर्श पत्र जारी किया है।**
- आपत्ति में कहा गया है कि हाल के दिनों में कई सैटेलाइट टीवी चैनलों ने घटनाओं की कवरेज इस तरह से की है जो **अप्रमाणिक, भ्रामक, सनसनीखेज और सामाजिक रूप से अस्वीकार्य भाषा और टिप्पणियों का उपयोग करते हुए, शालीनता को ठेस पहुँचाते हुए, अश्लील** और **अपमानजनक और सांप्रदायिक रंग लेते हुए प्रतीत होती है।** यह कार्यक्रम संहिता (Programme Code) का उल्लंघन और अधिनियम की धारा 20 की उपधारा (2) के प्रावधानों का उल्लंघन प्रतीत होता है।
- सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने फर्जी खबरें फैलाने के आरोप में भारत और पाकिस्तान के कई यूट्यूब समाचार चैनलों को ब्लॉक कर दिया है।

पत्रकारिता के नैतिक सिद्धांत

- **गांधीवादी सिद्धांत** (सत्य, निष्पक्षता, मानवता) और **उपयोगितावादी सिद्धांत** (नुकसान को कम करना, मानहानि से बचना) पर आधारित
- **सत्य और परिशुद्धता (Truth and Accuracy):** पत्रकार हमेशा 'सत्य' की गारंटी नहीं दे सकते, लेकिन तथ्यों को सही ढंग से प्रस्तुत करना **पत्रकारिता का प्रमुख सिद्धांत है।**
- **स्वतंत्रता (Independence)**: पत्रकारों की स्वतंत्र आवाज़ होनी चाहिए। उन्हें औपचारिक या अनौपचारिक रूप से विशेष राजनीतिक, कॉर्पोरेट या सांस्कृतिक हितों को ध्यान में रखकर कार्य नहीं करना चाहिए। उन्हें दर्शकों को अपनी राजनीतिक संबद्धता, वित्तीय व्यवस्था या अन्य व्यक्तिगत जानकारी बतानी चाहिए जो हितों के टकराव का कारण बन सकती है।
- **न्यायसंगतता और निष्पक्षता (Fairness and Impartiality)**: ज़्यादातर कहानियों में कम से कम दो पक्ष होते हैं। हालाँकि हर लेख में हर पक्ष को प्रस्तुत करने की कोई बाध्यता नहीं है, लेकिन कहानियों को संतुलित होना चाहिए और संदर्भ जोड़ना चाहिए। वस्तुनिष्ठता हमेशा संभव नहीं होती और हमेशा वांछनीय भी नहीं हो सकती।
  - **उदाहरण-** क्रूरता या अमानवीयता में, लेकिन निष्पक्ष रिपोर्टिंग से भरोसा और आत्मविश्वास बढ़ता है।

- **मानवता (Humanity)**: पत्रकारों को किसी को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए। उनकी रिपोर्टिंग या प्रसारण चोट पहुँचाने वाला हो सकता है, लेकिन उन्हें दूसरों के जीवन पर अपने शब्दों और चित्रों के प्रभाव के बारे में पता होना चाहिए।
- **निष्पक्षता (Fairness)**: स्वतंत्र होने के अलावा, पत्रकारों को **अपनी रिपोर्टिंग में निष्पक्षता** और संतुलन दिखाना चाहिए। अधिकांश समाचारों में एक से अधिक पक्ष होते हैं, और पत्रकारों को दोनों पक्ष प्रस्तुत करने चाहिए।
- **निंदात्मक लेख से बचना (Avoiding Libel)** : पत्रकारों के लिए यह कानूनी और नैतिक दोनों तरह से अनिवार्य है। पत्रकार किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाने वाले झूठे बयान नहीं छाप सकते। अधिकांश क्षेत्राधिकारों में, सच्चे बयान निंदात्मक नहीं हो सकते, इसलिए पत्रकार तथ्यों की गहन जाँच करके खुद को बचा सकते हैं।
- **उचित श्रेय (Proper Attribution)**: पत्रकारों को कभी भी साहित्यिक चोरी नहीं करनी चाहिए। यदि वे किसी अन्य मीडिया आउटलेट या पत्रकार से जानकारी लेते हैं, तो इसका श्रेय उन्हें दिया जाना चाहिए।
- **नुकसान कम करना (Harm Minimization):** पत्रकारों को समाचार दिखाते समय **उपयोगितावादी सिद्धांत का पालन करना चाहिए**। हर तथ्य जो प्रकाशित किया जा सकता है, उसे प्रकाशित नहीं किया जाना चाहिए। यदि प्रकटीकरण के परिणामस्वरूप निजी व्यक्तियों, विशेषकर बच्चों को होने वाला नुकसान, उससे होने वाले सार्वजनिक लाभ से अधिक है, तो समाचार आउटलेट कहानी को प्रकाशित न करने का विकल्प चुन सकते हैं।

पत्रकारिता संबंधी नैतिकता का उल्लंघन

- सटीकता की पुष्टि करने का प्रयास किए बिना एकल स्रोत द्वारा लगाए गए आरोपों को प्रकाशित करना।
- पत्रकार को दिए गए उन तथ्यों को छोड़ देना, जो स्पष्ट रूप से पाठक/दर्शक को भिन्न निष्कर्ष पर ले जाएंगे।
- सामान्य कार्यालय समय के बाद टिप्पणी के लिए फोन करना, जबकि पत्रकार के पास पहले ही फोन करने का समय होता।
- पाठकों के निष्कर्षों को प्रभावित करने के लिए उद्धरणों को संपादकीय लेख में उपयोग करना, उदाहरण के लिए, मुख्य पैराग्राफ में किसी संगठन की आलोचना करने वाले उद्धरण डालना।
- विचारधारा में पूर्वाग्रह और TRP बढ़ाने के लिए खबरों को सनसनीखेज बनाने पर ध्यान केंद्रित करना।
- पत्रकारों द्वारा मीडिया ट्रायल। **उदाहरण-** सुशांत सिंह राजपूत मामला।

निष्कर्ष

- जनता के साथ सूचना साझा करने के महत्त्वपूर्ण कार्य में पत्रकारों को मार्गदर्शन देने के लिए अनेक संहिताएँ और कथन हैं।
- नैतिक दिशा-निर्देशों का पालन करने से सूचना में पारदर्शिता और सटीकता आती है। यह लोकतंत्र के चौथे स्तंभ का मुख्य कार्य है।

शरणार्थी संकट

संदर्भ

- हाल ही में **आर्थिक संकट** के कारण श्रीलंका से कुछ लोग शरणार्थी के रूप में तमिलनाडु आये।
- हाल ही में एक घटना में, एक अफगान शरणार्थी ने ट्विटर पर एक अमेरिकी शिविर में परोसे गए भोजन की तस्वीर पोस्ट की, जिसके बाद उसे कुछ लोगों से सहानुभूति के साथ-साथ कड़ी आलोचना भी झेलनी पड़ी।
- **यूक्रेन** के लोग यूरोप के विभिन्न देशों में शरण माँग रहे हैं।

शरणार्थियों के बारे में

- **संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त (UN High Commissioner for Refugees, UNHCR)** के अनुसार, शरणार्थी वह व्यक्ति है जिसे उत्पीड़न, युद्ध या हिंसा के कारण अपने देश से भागने के लिए मजबूर किया गया हो।
- **उदाहरण-** रोहिंग्या अपने ही देश में धार्मिक उत्पीड़न से सुरक्षा और आश्रय की माँग कर रहे हैं।
- शरणार्थी जिन देशों में पहुँचते हैं उन देशों की अर्थव्यवस्था और समाज पर भी असर पड़ता है। शरणार्थियों की बड़ी संख्या मेज़बान देश पर विनाशकारी प्रभाव डाल सकती है।
- वस्तुतः बड़ी संख्या में शरणार्थी उन देशों तक पहुँचने की कोशिश करते हुए अपनी जान गँवा देते हैं जो उन्हें आश्रय देते हैं। उनका इस्तेमाल आतंकवादी संगठनों द्वारा देह व्यापार या दास व्यापार आदि के लिए किया जा सकता है, इस प्रकार उन्हें बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित किए जाने से वैश्विक शांति भंग हो सकती है।
- अक्सर देखा जाता है कि आप्रवासियों का सस्ते श्रम के लिए शोषण किया जाता है। आप्रवासन कभी-कभी एक सामाजिक या राजनीतिक मुद्दा भी बन जाता है; नस्लवाद का इस्तेमाल भावनाओं का अनुचित फायदा उठाने या स्थानीय आबादी की मौजूदा परेशानियों के कारण के रूप में किया जाता है।

शरणार्थियों के अधिकार राज्यों के लिए पक्षपातपूर्ण क्यों बनते जा रहे हैं?

- इस परिदृश्य में मुख्य मुद्दा मेजबान देश की जनता में **समानुभूति की कमी और** जमीनी स्तर पर **सीमित संसाधनों से उत्पन्न हुआ है। ये मुख्य कारण निम्नलिखित तरीकों से प्रकट होते हैं-**
- **अविश्वास एक सामान्य स्थिति बन गया है (Mistrust as a Norm):** शरणार्थियों के प्रति समानुभूति की कमी संस्कृति, स्थिति और शरण के उनके दावे की वास्तविकता के बारे में अविश्वास पैदा करती है। इसका मतलब है कि दावों को खारिज करने की एक सामान्य नीति बन जाती है, और शरण देने को एक विशेष अनुग्रह माना जाता है।
- **आर्थिक प्रतिस्पर्धी के रूप में धारणा (Perception as an Economic Competitor)**: सीमित अवसरों के साथ-साथ शरणार्थी की **'दूसरे देश से आए मुफ़्तखोर' की छवि के** कारण यह धारणा बनती है कि वे अधिकारों के अयोग्य हैं। इसलिए **'अधिकार प्रदान करना'** एक ऐसा उपकार बन जाता है जो सामूहिक सहानुभूति के अधीन होता है।
- **सुरक्षा के लिए खतरा माना जाता है (Viewed as a Security Threat)**: अविश्वास, जागरूकता की कमी और गलत सूचना के कारण डर पैदा होता है और स्थानीय आबादी शरणार्थियों को **सुरक्षा के लिए खतरा मानती है।** इससे अधिकार प्रदान करने की शर्तें अप्रत्यक्ष रूप से बढ़ जाती हैं, जिससे शरण देना राज्यों द्वारा किए गए उपकार के समान हो जाता है।
- **कानूनी प्रवर्तन का मुद्दा अधिकारों की प्रवर्तनीयता को सीमित करता है (Issue of Legal Enforcement Limits Enforceability of**

Rights): अंतरराष्ट्रीय कानूनों की सीमाएँ शरणार्थियों के अधिकारों को मेजबान देश के विवेक और धारणा पर निर्भर बनाती हैं।

- **उदाहरण -** कई यूरोपीय देश अफ्रीकी देशों में युद्ध अपराधों के पीड़ितों की तुलना में LGBTQIA+ शरणार्थियों के प्रति अधिक सहानुभूति रखते हैं।

- **मेजबान देश की सीमित क्षमता (Limited Capacity of the Host)** : शरणार्थियों के सभी अधिकारों की पूर्ति मेजबान देश के संसाधनों की क्षमता पर निर्भर करती है।
  - **उदाहरण -** कई विकासशील देशों में घरेलू आबादी के लिए भी आवास का अधिकार पूरा नहीं किया जा सकता, अतः शरणार्थियों के लिए इसी दावे की गारंटी देना कठिन हो जाता है, इसलिए चयनात्मक प्रक्रिया को अपनाया जाता है।

आगे की राह

- **शरणार्थियों की स्थिति और उनके अधिकारों के बारे में जागरूकता पैदा करना** : स्थिति के बारे में जागरूकता पैदा करने से शरणार्थियों के प्रति समानुभूति पैदा होगी और उनके प्रति भय की व्यापकता कम होगी। इससे **सामाजिक स्वीकृति** और **तेजी से आत्मसातीकरण हो सकता है।**
- **वस्तुनिष्ठ प्रक्रियाओं को अपनाना और अधिकारियों को जवाबदेह बनाना**: शरणार्थियों की चिंता और अनिश्चितता को काफी हद तक कम किया जा सकता है यदि शरण देने की प्रक्रियाओं को वस्तुनिष्ठ बनाया जाए और उन्हें स्पष्ट जानकारी दी जाए। साथ ही, मानदंडों को वस्तुनिष्ठ बनाना अधिकारियों को जवाबदेह बनाने और इस प्रकार **अधिकार-आधारित दृष्टिकोण** की ओर बढ़ने का पहला कदम हो सकता है।
- **प्रभावी परिवर्तन तंत्र बनाना** : शरणार्थी मुद्दे का समाधान इसके सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक निहितार्थों को देखते हुए जटिल बना हुआ है और इसलिए इसमें समय लगता है। इस परिदृश्य में, यह महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि एक प्रभावी परिवर्तन तंत्र बनाया जाए जो शरणार्थियों को कम से कम सीमित अधिकार प्रदान कर सके।
- **शरणार्थी शिविरों की व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना** : शरणार्थी शिविरों की व्यवस्था एक प्रभावी समाधान के रूप में उभरी है, इसलिए इन्हें पर्याप्त रूप से वित्तपोषित और प्रबंधित किया जाना चाहिए।
- **बहुपक्षीय दृष्टिकोण अपनाना:** शरणार्थियों के अधिकारों की पूर्ति के संबंध में राज्यों की क्षमता सीमित है। इस संदर्भ में, यह महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि मेजबान देश, स्रोत देश, शरणार्थियों का समूह और ज़मीनी स्तर पर कार्यरत संस्थाएँ जैसे कि **स्वयं सहायता समूहों, सामाजिक समूह आदि** इन अधिकारों की प्राप्ति के लिए एक साथ प्रतिबद्ध हों।

निष्कर्ष

शरणार्थी संकट के समाधान का सार शरण प्रदान करने की राजनीतिक अर्थव्यवस्था (अर्थात, शरण की आर्थिक लागत और इसके सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ) और शरण की नैतिक अर्थव्यवस्था (शरणार्थियों को सुरक्षा प्रदान करने के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त सिद्धांत से जुड़े मूल्य और प्रभाव तथा मेज़बान देश में मानवतावाद की सीमा) में निहित है। इन दो कारकों का प्रबंधन इस संकट का दीर्घकालिक समाधान प्रस्तुत कर सकता है।

महिलाओं के शारीरिक अधिकार और गर्भपात कानून

संदर्भ

हाल ही में, मार्च 2021 में पारित **"गर्भ का चिकित्सीय समापन (संशोधन) अधिनियम, 2021 (Medical Termination of Pregnancy (Amendment) Act, 2021)"** के तहत सरकार ने नए नियम बनाए हैं।

	गर्भ का चिकित्सीय समापन (MTP) अधिनियम, 1971	**2020 में किए गए संशोधन**
गर्भनिरोधक विफल होने के मामले में	केवल विवाहित महिलाओं के लिए लागू	विवाहित और अविवाहित महिलाओं के लिए लागू
गर्भकाल सीमा	20 सप्ताह	असुरक्षित महिलाओं के लिए 24 सप्ताह
गर्भपात करने से पहले चिकित्सक की राय लेना आवश्यक	12 सप्ताह तक 1 चिकित्सक 20 सप्ताह तक 2 चिकित्सक	20 सप्ताह तक 1 चिकित्सक 24 सप्ताह तक 2 चिकित्सक
महिला की गोपनीयता का उल्लंघन	10000 रुपये तक जुर्माना	जुर्माना और/या कारावास
भ्रूण की असामान्यताओं के मामले में	20 सप्ताह की सीमा	कोई सीमा नहीं
गर्भस्राव कारित करना	कारावास और/या जुर्माना	कारावास और/या जुर्माना
लिंग निर्धारण के बाद गर्भपात कराना	कारावास	कारावास

गर्भपात के बारे में

- गर्भपात, गर्भ का **जानबूझकर** किया गया समापन है, जिसमें भ्रूण या गर्भ को गर्भाशय के बाहर जीवित रहने से पहले ही निकाल दिया जाता है। जो गर्भपात अपने आप होता है, उसे गर्भस्राव (Miscarriage) भी कहा जाता है। जब गर्भ को समाप्त करने के लिए जानबूझकर कदम उठाए जाते हैं, तो इसे **प्रेरित गर्भपात (Induced Abortion)** या कभी-कभी 'प्रेरित गर्भस्राव (Induced Miscarriage)' कहा जाता है।
- गर्भपात पर विचार करने के लिए कानून, परंपरा, सामाजिक और धार्मिक मानदंडों, पारिवारिक संदर्भों, भावनाओं और रिश्तों पर गहन चिंतन की आवश्यकता होती है।

गर्भपात से जुड़े नैतिक मुद्दे

- **जीवन समाप्त करने का कृत्य (An Act of Taking Life)**: चूँकि जीवन गर्भाधान से शुरू होता है, इसलिए गर्भपात हत्या के समान है क्योंकि यह मानव जीवन को समाप्त करने का कृत्य है। यह मानव जीवन की पवित्रता के आम तौर पर स्वीकृत विचार का सीधा उल्लंघन है।
- **चिकित्सा संबंधी जटिलताएँ (Issues of Medical Complication)**: गर्भपात के कारण जीवन में आगे चलकर चिकित्सा संबंधी जटिलताएँ हो सकती हैं। गर्भस्राव और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं की संभावना भी बढ़ जाती है।

- **मनोवैज्ञानिक पीड़ा और तनाव (Psychological Pain and Stress)**: गर्भपात अक्सर तीव्र मनोवैज्ञानिक पीड़ा और तनाव का कारण बनता है।
- **पुत्र को वरीयता दिया जाना (Son Meta Preference)** : लिंग निर्धारण के आधार पर गर्भपात मुख्य रूप से लड़के की वरीयता के कारण होता है।
- **अजन्मे बच्चे को दण्डित करना (Punishing Unborn Child)**: गर्भपात से अजन्मे बच्चे को दण्डित किया जाता है, जिसने कोई अपराध नहीं किया है, बल्कि अपराधी को दण्डित किया जाना चाहिए।
- **शारीरिक अधिकारों का अभाव (Lack of Bodily Rights)** : गर्भपात, गर्भवती महिला की स्वायत्तता और गरिमा से जुड़ा मामला है। यदि गर्भवती महिला, गर्भवती रहना नहीं चाहती है, तो उससे यह अधिकार नहीं छीना जा सकता।
- **आत्मनिर्णय के मुद्दे (Issues of Self Determination)** : हालाँकि गर्भावस्था के प्रति दृष्टिकोण इससे जुड़े हुए हैं कि समाज द्वारा सेक्स, महिलाओं और विशेष रूप से प्रजनन क्षमता वाली महिलाओं को किस तरह से देखा जाता है। गर्भावस्था और जन्म मामूली असुविधाएँ नहीं हैं, जैसे कि सिरदर्द होना। ये जीवन की प्रमुख घटनाएँ हैं, जो वांछित होने पर भी कई महिलाओं के लिए अत्यधिक असुविधा और व्यवधान का कारण बनती हैं।

गर्भपात के पक्ष में तर्क

- **महिलाओं के अधिकार (Right of Women)** : महिला को एक **नैतिक व्यक्ति (moral person) माना जाता है,** उसे जीवन के अधिकार सहित कई अधिकार प्राप्त हैं। इसलिए, गर्भपात को स्वीकार्य माना जाता है क्योंकि भ्रूण को व्यक्ति नहीं माना जाता है। व्यक्ति होने (personhood) के मानदंडों की एक सूची निर्धारित की गई है, जिसमें चेतना, तर्क, गतिविधि, संप्रेषण और आत्म-बोध शामिल है। निस्संदेह भ्रूण इन मानदंडों को पूरा करने में असमर्थ है।
- **भ्रूण पर महिला की प्राथमिकता (Priority of Female over Foetus)**: माँ, जो एक व्यक्ति है, को जीवन का अधिकार है और यह भ्रूण के अधिकार से ऊपर है, इसलिए वह विकल्प चुन सकती है कि भ्रूण शरीर से जुड़ा रहे या नहीं।
- **अनचाहे गर्भ से बचने के लिए (To Avoid Unwarranted Pregnancy)**: गर्भावस्था को विषमलैंगिक संभोग का एक पूर्वानुमानित परिणाम माना जाता है, वह भी तब जब 'बच्चा पैदा करने' का कोई इरादा न हो। इसलिए, जब उसने इसके लिए कोई योजना नहीं बनाई थी, तो उसे गर्भपात के अधिकार से वंचित करना अनुचित है।
- **भ्रूण या माँ के स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे (Health Issues of the Foetus or Mother)** : कभी-कभी, बच्चे को जन्म देना माँ के लिए जानलेवा हो सकता है, इस मामले में भ्रूण का गर्भपात उचित हो सकता है। गर्भावस्था को जारी रखने की तुलना में माँ के लिए अपने मानसिक या शारीरिक स्वास्थ्य को होने वाले खतरे से खुद को बचाने के लिए गर्भपात करवाना अधिक नैतिक हो सकता है।
- **लैंगिक समानता (Gender Equality)**: लैंगिक समानता के लिए गर्भपात का अधिकार महत्त्वपूर्ण है। गर्भपात का अधिकार प्रत्येक महिला के लिए अपनी पूरी क्षमता प्राप्त करने के लिए महत्त्वपूर्ण है। गर्भपात पर प्रतिबंध लगाने से महिलाओं को जोखिम में डाला जाता है क्योंकि इससे उन्हें अवैध तरीकों का उपयोग करने के लिए मजबूर होना पड़ता है जो अधिक हानिकारक हो सकते हैं।

आगे की राह

- गोद लेना गर्भपात का एक व्यवहार्य विकल्प हो सकता है
- स्वतंत्र एवं सुविचारित विकल्प
- महिलाओं के शारीरिक अधिकारों की रक्षा की जानी चाहिए
- आत्मनिर्णय का अधिकार
- महिलाओं की निजता सुरक्षित करना
- बेहतर चिकित्सा सुविधा सुनिश्चित करना

निष्कर्ष

- बच्चा पैदा करना है या नहीं, यह निर्णय एक महिला के जीवन, उसके स्वास्थ्य और गरिमा के लिए महत्त्वपूर्ण है। यह निर्णय उसे खुद ही लेना चाहिए।
- जब उसके लिए सरकार निर्णय लेती है, तो उसके साथ एक वयस्क व्यक्ति के रूप में व्यवहार नहीं किया जाता है जो अपने स्वयं के निर्णयों के लिए उत्तरदायी है। हमें उन महिलाओं को अधिक सहायता प्रदान करने की आवश्यकता है जो गर्भधारण करना चाहती हैं और अपने बच्चों का पालन-पोषण करना चाहती हैं, लेकिन वित्तीय, मनोवैज्ञानिक, स्वास्थ्य या रिश्तों में कड़वाहट के कारणों से ऐसा नहीं कर पाती हैं।
- गर्भपात को अपराध घोषित करने से गर्भपात नहीं रुकता, बल्कि यह गर्भपात को और अधिक असुरक्षित बनाता है।
- सबसे बढ़कर, जीवन का अधिकार हमेशा किसी व्यक्ति के समानता के अधिकार या स्वयं पर नियंत्रण के अधिकार से अधिक महत्त्वपूर्ण होना चाहिए।

वैवाहिक बलात्कार और दांपत्य अधिकार

संदर्भ

- **दिल्ली उच्च न्यायालय ने** हाल ही में कहा कि महिलाओं के यौन स्वायत्तता के अधिकार के साथ कोई समझौता नहीं किया जा सकता तथा बलात्कार के किसी भी कृत्य को दंडित किया जाना चाहिए।
- न्यायालय ने सवाल उठाया कि विवाहित जोड़े को बलात्कार के अपराध से छूट देने का मामला कई सालों तक विधायिका में लंबित क्यों रहा। यह अपवाद **भारतीय दंड संहिता की धारा 375 के व्यापक दायरे के बावजूद बना रहा, जिसमें एक बार भी बनाये गए "अनिच्छुक यौन संबंध (unwilling sex)"** के कृत्य को बलात्कार माना गया है।

वैवाहिक बलात्कार (MARITAL RAPE)

- वैवाहिक बलात्कार को बल, बल प्रयोग की धमकी, या पत्नी की सहमति न होने पर किसी भी अवांछित यौन संबंध या लिंग प्रवेश के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

दांपत्य अधिकार (CONJUGAL RIGHTS)

- दांपत्य अधिकार **विवाह द्वारा बनाए गए अधिकार हैं, अर्थात् पति का पत्नी के साथ या पत्नी का पति के साथ रहने का अधिकार।** -विवाह, तलाक आदि से संबंधित स्वीय विधियों (personal laws) में और जीवनसाथी को भरण-पोषण और गुजारा भत्ता देने की आवश्यकता वाले आपराधिक कानून में, कानून द्वारा इन अधिकारों को मान्यता दी गई है।

नैतिक मुद्दे (ETHICAL ISSUES)

- **मानवीय गरिमा के साथ जीने के अधिकार का उल्लंघन (Violation of the Right to Live with Human Dignity)** : वैवाहिक बलात्कार महिला या पत्नी के मानवीय गरिमा के साथ जीवन जीने के अधिकार का उल्लंघन करता है। मानवीय गरिमा के साथ जीने का अधिकार **भारत के संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन के अधिकार (एक मौलिक अधिकार) का एक हिस्सा है।**
- **यौन निजता के मुद्दे (Issues of Sexual Privacy)**: महाराष्ट्र राज्य बनाम मधुकर नारायण के मामले में, उच्चतम न्यायालय ने माना कि प्रत्येक महिला को अपनी यौन निजता का अधिकार है और किसी भी व्यक्ति को जब भी चाहे उसकी निजता का उल्लंघन करने की छूट नहीं है।
- **शारीरिक आत्मनिर्णय का अधिकार (Right to Bodily Self-Determination)**: हर व्यक्ति को अपने शरीर के बारे में निर्णय लेने का अधिकार है। इसी तरह, एक महिला का यह निर्णय कि उसे सेक्स करना है या नहीं या सहमति देनी है या नहीं, उसके सबसे व्यक्तिगत निर्णयों में से एक है। यह आत्म-अभिव्यक्ति के अधिकार (Right to Self-Expression) के रूप में आता है।
- **समानता के अधिकार का उल्लंघन (Violation of the Right to Equality)** : इसी प्रकार, भारत में भारतीय दंड संहिता की धारा 375 के तहत बलात्कार और वैवाहिक बलात्कार के लिए अलग-अलग व्यवहार तथा भारतीय दंड संहिता की धारा 376 के तहत दोनों के लिए अलग-अलग दंड का प्रावधान, कानून के समक्ष समानता के अधिकार (अनुच्छेद 14) का उल्लंघन है।
- **बलात्कार तलाक का आधार नहीं (Rape Not Ground for Divorce): चूँकि वैवाहिक बलात्कार किसी भी स्वीय विधि (Personal law) और यहाँ तक कि विशेष विवाह अधिनियम, 1954 (Special Marriage Act, 1954)** में भी तलाक का आधार नहीं है, इसलिए इसे पति के खिलाफ तलाक और क्रूरता के आधार के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार, महिलाएँ असहाय रहती हैं और चुपचाप पीड़ित रहती हैं।

वैवाहिक बलात्कार को अपराध घोषित करने के विरुद्ध तर्क

- **विवाह संस्था को अस्थिर करना (Destabilise Marriage as an Institution)**: यह परिवारों में पूर्ण अराजकता पैदा कर सकता है और विवाह संस्था को अस्थिर कर सकता है और इस तरह पारिवारिक मूल्यों को बनाए रखने वाले पारिवारिक मंच को नष्ट कर सकता है और देश को बनाए रखने में मदद करता है। भारतीय समाज का मानना है कि विवाह एक संस्कार है।
- **कानून का दुरुपयोग (Misuse of Law) : यह भारतीय दंड संहिता (IPC)** की **धारा 498 A (पति और ससुराल वालों द्वारा विवाहित महिला को उत्पीड़ित किया जाना)** के बढ़ते दुरुपयोग के समान इस कानून का दुरुपयोग करके पुरुषों को परेशान करने का एक आसान साधन बन सकता है।
- **जागरूकता अधिक महत्त्वपूर्ण है (Awareness is more Important)**: केवल वैवाहिक बलात्कार को अपराध घोषित करने से इसे रोका नहीं जा सकता क्योंकि "नैतिक और सामाजिक जागरूकता" इस तरह के कृत्य को रोकने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- **सबूत का बोझ (Burden of Proof)** : सबूत के बोझ की अवधारणा एक जटिल मुद्दा है। जब वैवाहिक बलात्कार को अपराध माना जाएगा, तो या तो पत्नी पर अपराध साबित करने का बोझ होगा या पति पर खुद को निर्दोष साबित करने का और इसलिए इसे लागू करना बहुत मुश्किल होगा।
- **निजता के खिलाफ़ (Against Privacy)**: कुछ लोगों का तर्क है कि वैवाहिक बलात्कार को अपराध बनाने से राज्य को व्यक्तियों के निजी मामलों में हस्तक्षेप करने का मौक़ा मिल जाएगा। यह भारतीय संविधान में अनुच्छेद 21 के तहत गारंटीकृत जीवन के अधिकार में निहित निजता के अधिकार का उल्लंघन होगा।

निष्कर्ष

वैवाहिक बलात्कार एक जटिल मुद्दा है जिस पर गहन और विस्तृत चर्चा की आवश्यकता है। वैवाहिक बलात्कार को केवल अपराध घोषित करने से मदद ही नहीं मिलेगी। बल्कि मौजूदा कानूनों में मौजूद खामियों को दूर करने और पुराने कानूनों को खत्म करने की आवश्यकता है जो महिलाओं और पूरे समाज के कल्याण के खिलाफ काम करते हैं। सभी हितधारकों के साथ सार्वजनिक परामर्श और चर्चा ही आगे का रास्ता हो सकता है।

औषधीय पारिस्थितिकी तंत्र (फार्मास्युटिकल इकोसिस्टम) की नैतिकता

संदर्भ

- उच्चतम न्यायालय ने दवा कंपनियों द्वारा डॉक्टरों को मुफ्त सेवाएँ देने की प्रथा को **"अनैतिक या अवैध" करार देते हुए कहा कि इससे स्वास्थ्य देखभाल की लागत में वृद्धि होने के कारण आम आदमी प्रभावित होता है।**
- **आयकर विभाग** के अनुसार, **डोलो-650 (Dolo-650)** के निर्माता ने अपने उत्पादों के प्रचार के बदले डॉक्टरों और चिकित्सा पेशेवरों को लगभग 1,000 करोड़ रुपये के मुफ्त उपहार वितरित किए थे।
- इन मुफ्त चीजों को **"डॉक्टरों का कमीशन"** भी कहा जाता है, जो हमेशा से ही व्यवस्था का हिस्सा रही हैं और फार्मा कंपनियों ने अपने ब्रांड की दवा लिखने के लिए चिकित्सा पेशेवरों को नकद या वस्तु के रूप में उपहार दिए हैं।

क्या डॉक्टर फार्मास्युटिकल उद्योगों से मुफ्त सेवाएँ स्वीकार कर सकते हैं?

- **भारतीय चिकित्सा परिषद (वृत्तिक आचरण, शिष्टाचार और नैतिकता) विनियमों** के अनुसार, डॉक्टरों को उपहार, यात्रा सुविधाएं, आतिथ्य, नकद या मौद्रिक अनुदान के रूप में पारिश्रमिक स्वीकार करने की अनुमति नहीं है।
- इन विनियमों के तहत मुफ्त में सामान लेने पर कई तरह के दंड का सामना करना पड़ सकता है, जिसमें **5,000 रुपये तक के प्रोत्साहन के लिए "निंदा" से** लेकर तीन महीने से एक वर्ष की अवधि के लिए भारतीय चिकित्सा रजिस्टर या राज्य चिकित्सा रजिस्टर से नाम हटाना शामिल है।

डॉक्टरों को मुफ्त सुविधाएँ प्रदान करने से जुड़े नैतिक मुद्दे

- **रोगी को गुमराह करना:** डॉक्टर ऐसे ब्रांडों की दवाइयाँ लिखते हैं जो उन्हें उपहार या मुफ्त सेवाएँ देने का प्रस्ताव देते हैं।
- **रोगी के प्रति अनुचित:** इन दवाओं को खरीदने वाले रोगियों को अधिक लागत उठानी पड़ती है।

- **पारदर्शिता का अभाव:** डॉक्टरों और दवा कंपनियों के बीच इस तरह के लेन-देन गुप्त रूप से किए जाते हैं।
- **निर्धारित कानूनों और मानदंडों के विरुद्ध:** मुफ्त सेवाएँ भारतीय चिकित्सा परिषद (वृत्तिक आचरण, शिष्टाचार और नैतिकता) विनियमों का उल्लंघन करती हैं।

फार्मास्युटिकल इकोसिस्टम की नैतिकता/चिकित्सा नैतिकता

- चिकित्सा नैतिकता का संबंध **डॉक्टरों और** अस्पताल का रोगी के साथ-साथ अन्य स्वास्थ्य पेशेवरों और समाज के प्रति दायित्वों से है। यह निम्नलिखित स्तंभों पर आधारित है:
- परोपकार (Beneficence) (अच्छा काम करना)
- अहानिकारकता (Non-maleficence) (किसी को कोई नुकसान न पहुँचाना)
- स्वायत्तता (जहाँ रोगी विकल्प चुनने में सक्षम हों वहाँ उन्हें स्वतंत्र रूप से विकल्प चुनने की स्वतंत्रता देना)
- न्याय (निष्पक्षता सुनिश्चित करना)
- ये चार सिद्धांत किसी विशेष परिस्थिति में की जाने वाली सर्वोत्तम कार्रवाई के विश्लेषण के लिए एक रूपरेखा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

आगे की राह

- यद्यपि ऐसे नियम मौजूद हैं जिनके तहत **भारतीय चिकित्सा परिषद विनियम 2002 में उल्लिखित संहिता का उल्लंघन करने पर डॉक्टरों का लाइसेंस रद्द किया जा सकता है**, लेकिन डॉक्टरों को मिलने वाले लाभों के लिए दवा कंपनियों को जवाबदेह ठहराने के लिए कुछ भी नहीं है।
- दवा कम्पनियों से उपहार, यात्रा सुविधाएं, नकद या अन्य मौद्रिक लाभ आदि प्राप्त करने वाले डॉक्टरों पर मुकदमा चलाया जाता है, लेकिन दवा कम्पनियाँ बेदाग बच निकलती हैं।

युद्ध की नैतिकता (ETHICS OF WAR)

संदर्भ

- **न्यायपूर्ण युद्ध का सिद्धांत (Just War Theory):** युद्ध का नैतिक मूल्यांकन करने का सबसे प्रसिद्ध तरीका 'न्यायपूर्ण युद्ध के सिद्धांत' का उपयोग करना है; यह परंपरा 5वीं शताब्दी में सेंट ऑगस्टीन और 13वीं शताब्दी में सेंट थॉमस से चली आ रही है।
- **न्यायपूर्ण युद्ध का सिद्धांत** युद्ध के कारणों (Jus ad bellum) और युद्ध के संचालन (Jus in bello) पर विचार करता है। युद्ध नैतिक हो सकता है लेकिन साधन अनैतिक हो सकते हैं, उदाहरण के लिए, बारूदी सुरंगों, यातना, रसायनों, ड्रोन आदि का उपयोग करना।
- रूस-यूक्रेन संघर्ष

न्यायपूर्ण युद्ध के सिद्धांत के बारे में

- **न्यायपूर्ण युद्ध का सिद्धांत** युद्ध के नैतिक होने के **सिद्धांतों को** निर्धारित करता है।
- **युद्ध:**
  - वैध प्राधिकारी (आमतौर पर राज्य) द्वारा घोषित किया जाना चाहिए।
  - उचित कारण होना चाहिए।
  - सही इरादे से लड़ा जाना चाहिए।
  - सफलता की प्रबल संभावना होनी चाहिए।
  - अंतिम उपाय होना चाहिए।
  - आनुपातिक होना चाहिए।
- युद्ध में आचरण के **तीन सिद्धांत** हैं :
  - **भेदभाव** (शत्रु लड़ाकों और गैर लड़ाकों के बीच भेद करना)
  - **आनुपातिकता** (नुकसान, लाभ के समानुपातिक होना चाहिए)
  - **कार्रवाई सैन्य दृष्टि से आवश्यक होनी चाहिए।**

युद्ध के परिणाम

- जीवन की हानि और दुःख का कारण।
- संपत्ति का बड़े पैमाने पर विनाश।
- इससे अर्थव्यवस्था और लोगों की आजीविका के स्रोत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- बुनियादी मानव अधिकारों का हनन।

सैन्य नैतिकता का विचार

- सैन्य नैतिकता एक अंतर-विषयक अध्ययन (Interdisciplinary Study) है, जिसमें युद्ध के संचालन, इस बारे में निर्णय कि सैन्य अभियानों में कैसे और कब शामिल होना है, तथा सैन्य सेवा करने वालों और पूर्व सैनिकों के नैतिक मनोविज्ञान और देखभाल से संबंधित मुद्दों के बारे में चिंताएँ शामिल हैं।
- सैन्य नैतिकता उन मूलभूत मूल्यों और नैतिक सिद्धांतों पर केंद्रित है जो सामूहिक रूप से दुनिया भर के देशों के सैन्य बलों में सेवा करने वाले पुरुषों और महिलाओं को नियंत्रित करते हैं, जिन्हें कभी-कभी "सैन्य पेशा" या "हथियारों का पेशा (The Profession of Arms)" कहा जाता है।

आगे की राह

- जिनेवा **कन्वेंशन और उनके अतिरिक्त प्रोटोकॉल** अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून के मूल में हैं, जो अंतरराष्ट्रीय कानून का वह भाग है जो सशस्त्र संघर्ष के संचालन को नियंत्रित करता है और इसके प्रभावों को सीमित करने का प्रयास करता है।
- वे विशेष रूप से उन लोगों की रक्षा करते हैं जो **युद्ध में भाग नहीं लेते हैं (नागरिक, स्वास्थ्य कार्यकर्ता और सहायता कार्यकर्ता)** और जो अब युद्ध में भाग नहीं ले रहे हैं, जैसे घायल, बीमार और जहाज़ से क्षतिग्रस्त सैनिक और युद्धबंदी।
- **मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा (Universal Declaration of Human Rights, UDHR)** मानवाधिकारों के इतिहास में एक मील का पत्थर है। इस घोषणा को 10 दिसंबर, 1948 को पेरिस में **संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा** (महासभा संकल्प 217 A) सभी लोगों और सभी देशों के लिए उपलब्धियों के एक सामान्य मानक के रूप में घोषित किया गया था।
- यह एक ऐसा दस्तावेज है जो **स्वतंत्रता और समानता के लिए एक वैश्विक रोडमैप की तरह काम करता है -** जो हर जगह हर व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा करता है।

युद्ध की नैतिकता (हमास-इज़राइल संघर्ष) : आनुपातिकता और राष्ट्रवाद

रूस-यूक्रेन युद्ध और हमास-इज़राइल संघर्ष के शुरू होने के बाद से, आनुपातिकता के महत्त्व पर काफी बहस चल रही है।

युद्ध में आनुपातिकता एक मिथक के रूप में

- हमास और इजरायल के बीच चल रहे युद्ध में हुए भीषण रक्तपात ने दुनिया भर के लोगों में तीव्र भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न की हैं।
- नॉर्वे के पूर्व प्रधानमंत्री ने कहा कि गाजा में हमास के खिलाफ इजरायल का सैन्य बल का प्रयोग "अनुपातिकता से परे है।"

अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून और आनुपातिकता का सिद्धांत

- **बल प्रयोग पर प्रतिबंध:** यह विशेष रूप से नागरिकों के विरुद्ध बल प्रयोग पर प्रतिबंध लगाता है।
- **युद्ध के संचालन का सिद्धांत:** अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून सशस्त्र संघर्षों (युद्ध के संचालन) पर लागू होते हैं, यह सैन्य अभियानों के कारण नागरिक आबादी और वस्तुओं को होने वाले नुकसान को सीमित करने के लिए आनुपातिकता के सिद्धांत का उपयोग करता है।
- एक बार जब कोई राज्य सशस्त्र बल का प्रयोग करने लगता है, तो सशस्त्र संघर्ष के समय बल के प्रयोग को विनियमित करने और उस पर अंकुश लगाने के लिए युद्ध के संचालन का सिद्धांत लागू हो जाता है।
- इसमें वांछित सैन्य लाभ तथा उससे संबंधित क्षति एवं नागरिकों की मौत के बीच संतुलन स्थापित करना अनिवार्य है।
- **असैन्य उद्देश्यों और सैन्य उद्देश्यों में अंतर करना:** अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून में प्रावधान है कि संघर्ष में शामिल पक्षों को युद्ध के विशिष्ट तरीकों का उपयोग करके असैन्य उद्देश्यों और सैन्य उद्देश्यों के बीच अंतर करना चाहिए।

युद्ध के दौरान आनुपातिकता एक मिथक क्यों है?

- **अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून की स्वैच्छिक प्रकृति**: अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून (IHL) स्वैच्छिक है और संप्रभु राज्यों पर बाध्यकारी नहीं है।
- अंतरराष्ट्रीय कानून का पालन और अनुपालन "सद्भावना" पर निर्भर करता है क्योंकि इसे लागू करने के लिए कोई संस्था नहीं है।
- **जन सहयोग के बिना युद्ध का मिथक:** यह विश्वास कि जन समर्थन के बिना युद्ध हो सकता है, एक गलत धारणा है।
- **राष्ट्रवाद के टकराव के रूप में युद्ध:** युद्धों में मूलतः राष्ट्रवाद या सामूहिक मानवीय इच्छाओं के टकराव शामिल होते हैं, जिसके लिए जनसंख्या को संगठित करना आवश्यक हो जाता है।
- इजरायल की प्रतिक्रिया और हमास की कार्रवाई दोनों ही नागरिकों के समर्थन पर आधारित हैं।
- **युद्ध में बाधाएँ:** वे विभिन्न कारकों से प्रभावित होती हैं जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं:
  - सापेक्ष क्षमताएं, शत्रु की शक्ति का स्तर, प्रयुक्त युक्तियाँ और परिचालन रणनीतियां, युद्ध का क्षेत्र, युद्धरत पक्षों के उद्देश्य तथा शत्रुओं, सहयोगियों और साझेदारों की सापेक्ष स्थिति।

प्रमुख शब्दावलियाँ

संज्ञानात्मक असंगति, मानसिक द्वन्द्व, बलपूर्वक अनुपालन व्यवहार, परस्पर विरोधी मान्यताएं, परोपकार, गोपनीयता, कोई नुकसान न करना, अनुरूपता प्रभाव, उपभोक्ता केंद्रित दृष्टिकोण, डिजिटल शिष्टाचार, संपूर्ण समाज वाला दृष्टिकोण, अधिकतम लोगों का अधिकतम कल्याण, निरपवाद कर्तव्यादेश, अनुकम्पा आधार, प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत, नुकसान को कम करना, निष्काम कर्म, गैर-हानिकारकता, सैन्य नैतिकता, न्यायपूर्ण युद्ध का सिद्धांत, प्रतिबद्धता, सत्यनिष्ठा और समर्पण, आचार संहिता और नैतिकता संहिता, नागरिक चार्टर, बलपूर्वक भ्रष्टाचार और मिलीभगत वाला भ्रष्टाचार, ई-गवर्नेंस।

विगत वर्षों के प्रश्न

- 'संसाधन के अभाव से ग्रस्त' राष्ट्रों की मदद के लिए 'अंतरराष्ट्रीय सहायता' एक स्वीकृत व्यवस्था है। 'समसामयिक अंतरराष्ट्रीय सहायता में नैतिकता' पर टिप्पणी कीजिए। अपने उत्तर को उचित उदाहरणों द्वारा पुष्ट कीजिए। **(2023)**
- ऑनलाइन पद्धति का उपयोग दिन-प्रतिदिन प्रशासन की बैठकों, संस्थानिक अनुमोदन और शिक्षा क्षेत्र में शिक्षण और अधिगम से लेकर स्वास्थ्य क्षेत्र में सक्षम अधिकारी के अनुमोदन से टेलीमेडिसिन तक लोकप्रिय हो रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि लाभार्थियों और व्यवस्था दोनों के लिए इसके बड़े पैमाने पर लाभ और हानियाँ हैं। विशेषतः समाज के कमजोर समुदाय के लिए ऑनलाइन पद्धति के उपयोग में शामिल नैतिक मामलों का वर्णन और विवेचन कीजिए। **(2022)**
- पिछले सात महीनों से रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध जारी है। विभिन्न देशों ने अपने राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए स्वतंत्र स्टैंड लिया है और कार्रवाही की है। हम सभी जानते हैं कि मानव त्रासदी समेत समाज के विभिन्न पहलुओं पर युद्ध का अपना असर रहता है। वे कौन से नैतिक मुद्दे हैं, जिन पर युद्ध शुरू करते समय और अब तक इसकी निरंतरता पर विचार करना महत्त्वपूर्ण है? इस मामले में दी गयी स्थिति में शामिल नैतिक मुद्दों को औचित्यपूर्ण वर्णन कीजिए। **(2022)**
- तर्कसंगत निर्णय लेने के लिए निवेश (इनपुट) के एक विश्वसनीय स्रोत के रूप में डिजिटल प्रौद्योगिकी का प्रभाव एक बहस का मुद्दा है। उपयुक्त उदाहरणों के साथ आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। **(2021)**
- "शरणार्थियों को उस देश में वापस नहीं लौटाया जाना चाहिए जहाँ उन्हें उत्पीड़न अथवा मानवाधिकारों के उल्लंघन का सामना करना पड़ेगा।" खुले समाज और लोकतान्त्रिक होने का दावा करने वाले किसी राष्ट्र के द्वारा नैतिक आयाम के उल्लंघन के संदर्भ में इस कथन का परीक्षण कीजिए। **(2021)**
- "शिक्षा एक निषेधाज्ञा नही है, यह व्यक्ति के समग्र विकास और सामाजिक बदलाव के लिए एक प्रभावी और व्यापक साधन है।" उपरोक्त कथन के आलोक में नई शिक्षा नीति, 2020 (एन.ई. पी. ,2020) का परीक्षण कीजिए। **(2020)**
- 'सामयिक इंटरनेट विस्तारण ने सांस्कृतिक मूल्यों के एक भिन्न समूह को मनासीन किया है, जो प्रायः परंपरागत मूल्यों से संघर्षशील रहते हैं। विवेचना कीजिये। **(2020)**

- हाल में हुई कुछ प्रगतियाँ, जैसे कि सूचना का अधिकार (आर.टी.आइ.) अधिनियम, मीडिया और न्यायिक सक्रियता इत्यादि, सरकार के कार्यों में पहले से अधिक पारदर्शिता और जवाबदेही लाने में सहायक साबित हो रही हैं। फिर भी, यह भी देखा जा रहा है कि कभी-कभार इन साधनों का दुरुपयोग किया जाता है। एक अन्य नकारात्मक प्रभाव यह है कि अधिकारीगण अब शीघ्र निर्णय लेने से डरते हैं। इस स्थिति का विस्तारपूर्व विश्लेषण कीजिए और सुझाइए कि इस द्विभाजन का हल किस प्रकार निकाला जा सकता है। सुझाइए कि इन नकारात्मक प्रभावों को किस प्रकार न्यूनतमीकृत किया जा सकता है। **(2015)**
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, अधिकांश राष्ट्रों के बीच द्विपक्षीय संबंध, अन्य राष्ट्रों के हितों का सम्मान किए बिना स्वयं के राष्ट्रीय हित की प्रोन्नति करने की नीति के द्वारा नियंत्रित होते हैं। इससे राष्ट्रों के बीच द्वंद्व और तनाव उत्पन्न होते हैं। ऐसे तनावों के समाधान में नैतिक विचार किस प्रकार सहायक हो सकते हैं? विशिष्ट उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए। **(2015)**

12 केस स्टडी

केस स्टडी

- केस स्टडी मूलतः वास्तविक जीवन के संदर्भों या काल्पनिक संदर्भों से लिए गए परिदृश्य या स्थितियाँ हैं, जिनमें व्यक्ति को नैतिक दुविधाओं, शासन संबंधी मुद्दों, प्रशासनिक चुनौतियों और नैतिक द्वन्द्वों से गुजरना होता है।
- ये केस स्टडी, समस्याओं को प्रभावी ढंग से और नैतिक रूप से हल करने के लिए व्यक्ति की नैतिक सिद्धांतों, शासन के सिद्धांतों और व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा को लागू करने की क्षमता का परीक्षण करते हैं।
- **उदाहरण के लिए:**
  - **कॉर्पोरेट गवर्नेंस और नैतिक दुविधा:** एक परिदृश्य है जिसमें किसी कर्मचारी को प्रतिद्वंद्वी कंपनी के कर्मचारी द्वारा बोली सम्बन्धी गोपनीय दस्तावेज देने की पेशकश की जाती है तो उसके सामने एक नैतिक दुविधा उत्पन्न हो जाती है कि, क्या उसे इन दस्तावेजों का उपयोग प्रतिस्पर्धात्मक लाभ के लिए करना चाहिए या इस अनैतिक प्रस्ताव को अस्वीकार कर देना चाहिए।
  - **अवैध प्रवासन से निपटना:** एक सिविल सेवा अधिकारी को पता चलता है कि अवैध प्रवासियों को सुरक्षाकर्मियों द्वारा मदद की जा रही है और उच्च अधिकारियों से अपनी रिपोर्ट वापस लेने के दबाव का सामना करना पड़ रहा है, जिससे उसकी सत्यनिष्ठा और कर्तव्य के प्रति प्रतिबद्धता का परीक्षण हो रहा है।

शोधपत्र के केस स्टडी का महत्त्व

- केस स्टडी का महत्त्व न केवल नैतिकता के सैद्धांतिक ज्ञान का आकलन करने की उनकी क्षमता में निहित है, बल्कि इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वे शासन और प्रशासन में इस ज्ञान के व्यावहारिक अनुप्रयोग का आकलन करते हैं।
- वे **उन जटिलताओं और अस्पष्टताओं का अनुकरण करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं** जिनका सामना सिविल सेवक अपने पेशेवर जीवन में करते हैं, जिसके लिए ***विभिन्न हितधारकों, नैतिक मानदंडों, कानूनी ढाँचे और समाज पर निर्णयों के व्यापक प्रभाव*** पर संतुलित विचार करने की आवश्यकता होती है।

केस स्टडी के लिए तैयारी की रणनीतियाँ

- **नैतिक सिद्धांतों को समझना:** केस स्टडी का प्रभावी ढंग से विश्लेषण करने के लिए नैतिक सिद्धांतों की गहन समझ आवश्यक है।
- **पिछले वर्षों के प्रश्नपत्रों का विश्लेषण:** पिछले वर्षों के प्रश्नों की समीक्षा करने से दुविधाओं के प्रकार और अपेक्षित प्रतिक्रियाओं के बारे में जानकारी मिलती है।
- **वास्तविक जीवन के मुद्दों से जुड़ना** : वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों के बारे में जानकारी रखने से समकालीन चुनौतियों पर नैतिक तर्क लागू करने की क्षमता बढ़ती है।

विभिन्न प्रकार के केस स्टडी

- **जेंडर संबंधी मुद्दे (Gender Issues):** इस श्रेणी के केस स्टडी उन व्यक्तियों के प्रति जेंडर/लिंग संबंधी पूर्वाग्रहों और सामाजिक दृष्टिकोण के प्रभाव की जाँच करते हैं, जो पारंपरिक जेंडर/लैंगिक मानदंडों का पालन नहीं करते हैं तथा कार्यस्थल, शिक्षा और अधिकार समर्थन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में उनके प्रभाव की जाँच करते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** एसटीईएम (STEM) क्षेत्रों में महिलाओं के करियर में उन्नति में बाधा डालने वाली प्रणालीगत बाधाओं पर एक केस स्टडी, जिसमें भेदभाव के उदाहरणों का विवरण दिया गया है तथा समावेशी कार्यस्थल वातावरण विकसित करने के लिए रणनीतियाँ प्रस्तावित की गई हैं।
- **कुशासन (Mal-Governance):** यह प्रकार उन घटनाओं के समालोचनात्मक विश्लेषण पर केंद्रित है जहाँ शासन संरचनाएँ और सार्वजनिक संस्थाएँ नैतिक मानकों पर खरी नहीं उतरती हैं, जिसके परिणामस्वरूप हानिकारक सामाजिक परिणाम सामने आते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** फ्लिंट जल संकट की गहन जाँच, जिसमें सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने में सरकारी अधिकारियों की लापरवाही और समुदाय पर इसके दीर्घकालिक स्वास्थ्य दुष्परिणामों का खुलासा हुआ।
- **पर्यावरणीय मुद्दे (Environmental Issues):** पर्यावरणीय केस स्टडी, पर्यावरणीय नीतियों के प्रभाव - या उनकी अनुपस्थिति - उससे पारिस्थितिकी तंत्रों और समुदायों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करते हैं तथा पर्यावरणीय प्रबंधन और नीति-निर्माण में निहित नैतिक विचारों पर बल देते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** अमेज़न में वनों की कटाई के परिणामों का विस्तृत विश्लेषण, जैव विविधता और स्वदेशी आबादी पर इसके प्रभावों का आकलन तथा वैश्विक जलवायु परिवर्तन पर इसके व्यापक प्रभाव का आकलन।
- **समसामयिक मुद्दे (Current Affairs Issues):** यह वर्गीकरण समकालीन वैश्विक संकटों की नैतिक जाँच को शामिल करता है तथा इन मुद्दों के समाधान में राष्ट्रों, संगठनों और व्यक्तियों के नैतिक दायित्वों पर ध्यान केंद्रित करता है।
  - **उदाहरण के लिए,** वैश्विक स्तर पर कोविड-19 टीकों के वितरण में नैतिक दुविधाओं का विश्लेषण, विभिन्न क्षेत्रों में समानता, पहुँच और नीतिगत प्राथमिकता के मुद्दों पर चर्चा।

- **भ्रष्टाचार (Corruption):** भ्रष्टाचार से संबंधित केस स्टडी सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में भ्रष्ट प्रथाओं की उत्पत्ति, अभिव्यक्ति और सामाजिक प्रभावों की जाँच करते हैं तथा नैतिक उल्लंघनों और उनके परिणामों को रेखांकित करते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** फीफा के भीतर व्याप्त भ्रष्टाचार पर एक व्यापक केस स्टडी, जिसमें यह उजागर किया गया है कि किस प्रकार भ्रष्ट आचरण अंतरराष्ट्रीय खेलों की अखंडता से समझौता करता है तथा विभिन्न हितधारकों को प्रभावित करता है।
- **नैतिक दुविधाएँ (Ethical Dilemmas):** नैतिक दुविधाओं संबंधी केस स्टडी जटिल परिदृश्यों का विश्लेषण करते हैं, जहाँ नैतिक सिद्धांतों या मूल्यों में टकराव होता है, जिसके लिए सूक्ष्म नैतिक निर्णय लेने की आवश्यकता होती है।
- **उदाहरण के लिए,** अपने स्रोतों की रक्षा करने और जनता की सुरक्षा सुनिश्चित करने में पत्रकारों के सामने आने वाली नैतिक दुविधा का विश्लेषण, जो गोपनीयता और जन हित के बीच जटिल संतुलन को दर्शाता है।
- **हितों का टकराव (Conflict of Interest):** ये अध्ययन उन स्थितियों की जाँच करते हैं जहाँ व्यक्तिगत हितों के कारण किसी व्यक्ति की व्यावसायिक जिम्मेदारियों या जन कल्याण पर संभावित रूप से जोखिम हो सकता है तथा इससे उत्पन्न होने वाले नैतिक टकरावों पर प्रकाश डाला जाता है।
  - **उदाहरण के लिए,** चिकित्सा अनुसंधान की सत्यनिष्ठा पर दवा कंपनियों के प्रायोजन के प्रभावों का समालोचनात्मक विश्लेषण तथा यह मूल्यांकन कि किस प्रकार ऐसे वित्तीय संबंध पूर्वाग्रह उत्पन्न कर सकते हैं तथा वैज्ञानिक निष्कर्षों की विश्वसनीयता को प्रभावित कर सकते हैं।
- **नेतृत्व के मुद्दे (Issues of Leadership):** इस श्रेणी के केस स्टडी संगठनात्मक संस्कृति, हितधारकों के विश्वास और सामाजिक परिणामों पर नेतृत्व के निर्णयों के प्रभाव पर प्रकाश डालते हैं।
  - **उदाहरण के लिए, XYZ उद्योगों में नेतृत्व संकट पर एक विस्तृत केस स्टडी,** जिसमें शीर्ष अधिकारियों की नैतिक खामियों की जाँच करना जिसके कारण कंपनी का पतन हुआ। यह अध्ययन यह पता लगाएगा कि नेतृत्व द्वारा नैतिक मानकों और हितधारक कल्याण के बजाय व्यक्तिगत लाभ को प्राथमिकता देने के कारण इतिहास में सबसे बड़ी कॉर्पोरेट धोखाधड़ी हुई, जो नैतिक नेतृत्व के महत्त्व पर सबक प्रदान करता है।
- **भावनात्मक बुद्धि के मुद्दे (Issues of Emotional Intelligence):** इससे संबंधित केस स्टडी इस बात का पता लगाते हैं कि उच्च भावनात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति किस प्रकार नैतिक दुविधाओं से निपटते हैं, द्वन्द्वों का प्रबंधन करते हैं तथा समावेशी और सम्मानजनक कार्य वातावरण को बढ़ावा देते हैं, जो समानुभूति, आत्म-बोध और नैतिक आचरण में भावनात्मक नियंत्रण के महत्त्व को रेखांकित करते हैं।
  - **उदाहरण के लिए, एक बहु-सांस्कृतिक टीम में संघर्ष समाधान का विश्लेषण,** यह दर्शाता है कि कैसे एक नेता की भावनात्मक बुद्धि विविध पृष्ठभूमि और मूल्यों वाले टीम के सदस्यों के बीच समझ और सम्मान बढ़ाती है। यह केस स्टडी टीम के सामंजस्य और नैतिक सहयोग को बढ़ाने के लिए भावनात्मक बुद्धि का लाभ उठाने की रणनीतियों का विश्लेषण करेगा, जो एक वैश्विक कार्यबल में नैतिक चुनौतियों के प्रबंधन में भावनात्मक बुद्धि की महत्त्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है।
- **नवाचार के मुद्दे (Issues of Innovation):** इस श्रेणी के केस स्टडी नवाचार और रचनात्मक समस्या-समाधान से जुड़े नैतिक विचारों पर गहराई से विचार करते हैं, खासकर जब ऐसे प्रयास मौजूदा मानदंडों, विनियमों या नैतिक मानकों को चुनौती देते हैं। यहाँ केस स्टडी नवोन्मेषी सफलताओं और नैतिक सीमाओं के बीच तनाव को उजागर करते हैं और यह जाँच करते हैं कि कैसे नवप्रवर्तक (Innovators) नैतिक जिम्मेदारियों से समझौता किए बिना इस परिदृश्य में आगे बढ़ते हैं।
  - **उदाहरण के लिए, CRISPR-Cas9 जैसी जीन संपादन तकनीकों के बारे में नैतिक बहसों का व्यापक विश्लेषण।** यह अध्ययन चिकित्सा और कृषि में क्रांति लाने के लिए ऐसे नवाचारों की क्षमता की जाँच करेगा, साथ ही आनुवंशिक गोपनीयता, सहमति और अनपेक्षित परिणामों की संभावना से संबंधित नैतिक प्रश्नों पर भी चर्चा करेगा। यह नवाचार की खोज और नैतिक विचारों के बीच संतुलन करने के लिए रूपरेखा का प्रस्ताव करेगा और यह सुनिश्चित करेगा कि नई सोच नैतिक सत्यनिष्ठा का त्याग किए बिना मानव कल्याण को आगे बढ़ाती है।

केस स्टडी कैसे पढ़ें?

- **प्रारंभिक अवलोकन:** नैतिक दुविधा को समझने के लिए केस स्टडी को सरसरी तौर पर पढ़ना शुरू कीजिए। इसमें शामिल मुख्य पात्रों और नैतिक चुनौती के संदर्भ पर ध्यान दीजिए।
- **गहन अध्ययन:** इस केस स्टडी को ध्यान से पढ़िए ताकि इसकी बारीकियों को समझा जा सके। जिन नैतिक सिद्धांतों को चुनौती दी जा रही है उन पर और विभिन्न कार्यों के परिणामों पर ध्यान दीजिए।
- **प्रमुख तथ्यों को नोट कीजिए:** इस केस में उल्लिखित महत्त्वपूर्ण तथ्यों, डेटा और किसी भी कानूनी या नैतिक दिशा-निर्देश को हाइलाइट कीजिए।
- **हितधारकों को पहचानिए:** यह निर्धारित कीजिए कि नैतिक मुद्दे से कौन - कौन प्रभावित है।
- **नैतिक सिद्धांत:** इसमें शामिल नैतिक सिद्धांतों की पहचान कीजिए।
- **विकल्पों का विश्लेषण कीजिए:** विभिन्न उपलब्ध उपायों पर विचार कीजिए और उनमें से प्रत्येक का मूल्यांकन कीजिए।
- **सबकों पर चिंतन कीजिए:** यह विचार कीजिए कि केस स्टडी से मिलने वाले मुख्य सबक क्या-क्या हैं और वे शासन, लोक प्रशासन और व्यक्तिगत आचरण पर कैसे लागू होते हैं।
- **समाधान की सिफारिश कीजिए:** इसमें नैतिक रूप से सबसे सही समाधान चुनिए, अपने चयन को नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों के अनुरूप तर्क के साथ उचित ठहराइए।
- **चर्चा में भाग लीजिए:** यदि संभव हो, तो अपने विश्लेषण पर साथियों या सलाहकारों से चर्चा कीजिए।
- **वास्तविक दुनिया के उदाहरणों से सम्बद्धता:** जब भी संभव हो, नैतिक दुविधा को वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों से सम्बद्ध कीजिए।

केस स्टडी के विभिन्न पहलुओं की पहचान करना

नैतिकता के विभिन्न पहलुओं की पहचान करने हेतु, केस स्टडी में केस के बहुमुखी आयामों को समझने के लिए उसका विश्लेषण करना आवश्यक है। यह प्रक्रिया व्यापक विश्लेषण के लिए महत्त्वपूर्ण है और इसके लिए कई प्रमुख तत्त्वों पर ध्यान देने की आवश्यकता है:

- **नैतिक दुविधाएँ और द्वन्द्व (Ethical Dilemmas and Conflicts):** केस स्टडी में मुख्य नैतिक दुविधा या द्वन्द्व को पहचानिए। इसमें संबंधित व्यक्तियों या संस्थाओं द्वारा सामना किए जाने वाले नैतिक प्रश्नों और विकल्पों की पहचान की जाती है।
- **उदाहरण:** एक केस ऐसी स्थिति प्रस्तुत कर सकता है जहाँ एक लोक सेवक को व्यक्तिगत नैतिक मान्यताओं के साथ द्वन्द्व करने वाले आदेशों का पालन करने और उन आदेशों की अवहेलना के संभावित परिणामों के बीच चयन करना होगा।

- **केस स्टडी:** डॉ. अंजलि एक जिला स्वास्थ्य अधिकारी हैं, उनके ग्रामीण क्षेत्र में डेंगू का गंभीर प्रकोप है। प्रकोप को नियंत्रित करने का सबसे प्रभावी तरीका कीटनाशकों का व्यापक छिड़काव करना है। हालाँकि, कीटनाशक के पर्यावरण पर हानिकारक दुष्प्रभाव होने के बारे में जानकारी है और यह संभावित रूप से गैर-लक्षित प्रजातियों को नुकसान पहुँचा सकता है, जिसमें लाभकारी कीट और स्थानीय वनस्पतियाँ शामिल हैं।
- **समाधान:** यहाँ, प्राथमिक नैतिक दुविधा डेंगू के प्रकोप को नियंत्रित करने के लिए कीटनाशकों का उपयोग करने के निर्णय के बारे में है, जो संभावित दीर्घकालिक पर्यावरणीय नुकसान और मानव जीवन की रक्षा करने की तत्काल आवश्यकता के बीच संतुलन करता है। उन्हें निम्नलिखित द्वन्द्वों का सामना करना पड़ता है:
- **सार्वजनिक स्वास्थ्य बनाम पर्यावरण संरक्षण:** पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने के जोखिम पर मानव आबादी के तत्काल स्वास्थ्य और सुरक्षा को प्राथमिकता देना।
- **अल्पकालिक समाधान बनाम दीर्घकालिक परिणाम:** प्रकोप को शीघ्र नियंत्रित करने में कीटनाशकों की प्रभावशीलता बनाम पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता को स्थायी क्षति की संभावना।
- **व्यावसायिक दायित्व बनाम व्यक्तिगत नैतिकता:** एक स्वास्थ्य अधिकारी के रूप में, डॉ. अंजलि के रोग निवारण और सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा करने के कर्तव्य तथा पर्यावरण संरक्षण और हानि कम करने के बारे में उनकी व्यक्तिगत नैतिक मान्यताओं के बीच द्वन्द्व हो सकता है।

- **हितधारक:** नैतिक दुविधाओं के परिणामों से प्रभावित सभी पक्षों को पहचानिए, जिनमें प्रत्यक्ष प्रतिभागी और व्यापक सामाजिक समूह शामिल हैं।
- **उदाहरण:** पर्यावरण नीति से जुड़े मामले में, हितधारकों में स्थानीय समुदाय, निगम, सरकारी एजेंसियाँ और भावी पीढ़ियाँ शामिल हो सकती हैं।
- **दाँव पर लगे मूल्य और सिद्धांत:** उन नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों पर प्रकाश डालिए जो दाँव पर लगे हैं। सामान्य मूल्यों में सत्यनिष्ठा, जवाबदेही, निष्पक्षता और पारदर्शिता शामिल हैं।
- **उदाहरण:** व्हिसलब्लोइंग से जुड़ा मामला ईमानदारी और जवाबदेही बनाम अपने संगठन के प्रति वफादारी के सिद्धांतों के इर्द-गिर्द घूम सकता है।
- **कानूनी और संस्थागत ढाँचे:** किसी भी प्रासंगिक कानूनी या संस्थागत ढांचों की पहचान कीजिए जो केस के नैतिक विचारों को प्रभावित करते हैं।
- **उदाहरण:** भ्रष्टाचार संबंधी केस स्टडी के लिए भ्रष्टाचार रोधी कानूनों और इन कानूनों को लागू करने के लिए संस्थागत ढाँचे के संदर्भ में विश्लेषण की आवश्यकता हो सकती है।
- **सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंड:** केस के नैतिक परिदृश्य को आकार देने में सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंडों की भूमिका पर विचार कीजिए।

- **केस स्टडी:** दो प्रमुख शहरों के बीच परिवहन संपर्क को बेहतर बनाने के लिए एक नई एक्सप्रेस-वे परियोजना प्रस्तावित है। हालाँकि इस परियोजना से यात्रा का समय कम होने और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलने का वादा किया गया है, लेकिन इसके लिए कई छोटे समुदायों को विस्थापित करने और वन भूमि के एक विशाल क्षेत्र को नष्ट करने की आवश्यकता है।
- **समाधान:** यहाँ हितधारकों में परियोजना के कार्यान्वयन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होने वाले अनेक व्यक्ति और समूह शामिल हैं। इन हितधारकों में निम्नलिखित शामिल हैं:
- **स्थानीय समुदाय जिन्हें विस्थापन का सामना करना पड़ रहा है:** वे सीधे तौर पर प्रभावित होते हैं क्योंकि उन्हें अपने घर, जमीन और सामुदायिक संबंध खोने पड़ सकते हैं।
- **सरकारी संस्थाएं:** इसमें स्थानीय, राज्य और राष्ट्रीय सरकारी एजेंसियाँ शामिल हैं जो एक्सप्रेसवे परियोजना की योजना, अनुमोदन, वित्तपोषण और निगरानी में शामिल हैं।
- **पर्यावरण संरक्षण समूह:** प्राकृतिक पर्यावास, जैव विविधता के संरक्षण से संबंधित संगठन और कार्यकर्ता और एक्सप्रेसवे निर्माण के कारण वनों की कटाई और निवास स्थान के विनाश के व्यापक पर्यावरणीय प्रभाव।
- **निर्माण कम्पनियाँ और श्रमिक:** एक्सप्रेस-वे के डिजाइन और निर्माण के लिए अनुबंधित कम्पनियाँ और उनके कर्मचारी, जिनके परियोजना में वित्तीय हित हैं।
- **एक्सप्रेस-वे से जुड़ने वाले शहरों में व्यवसाय:** वे व्यवसाय जो बेहतर परिवहन संपर्क से लाभान्वित हो सकते हैं, क्योंकि उनकी पहुँच में वृद्धि होगी, विस्तार की संभावना होगी तथा नए बाजारों और श्रमिकों तक उनकी पहुँच होगी।
- **दैनिक यात्री और आम जनता:** वे व्यक्ति जो शहरों के बीच यात्रा के लिए एक्सप्रेस-वे का उपयोग करेंगे, उन्हें यात्रा में कम समय लगने और संभावित रूप से बेहतर सुरक्षा का लाभ मिलेगा।
- **भावी पीढ़ियाँ:** भविष्य में वे व्यक्ति जो एक्सप्रेस-वे परियोजना के पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक प्रभावों सहित इसके परिणामों को भुगतेंगे।

- **उदाहरण:** विभिन्न सांस्कृतिक परिवेशों में नैतिक प्रथाओं का विश्लेषण करने वाला एक केस स्टडी यह जाँच कर सकता है कि सामाजिक मानदंड नैतिक निर्णय लेने को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।
- **कार्रवाई के विकल्प:** प्रमुख पात्र के लिए उपलब्ध संभावित कार्रवाई के विकल्पों की रूपरेखा तैयार कीजिए, जिनमें प्रत्येक के नैतिक निहितार्थ भी शामिल हों।
- **उदाहरण:** आर्थिक हितों पर सार्वजनिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने की दुविधा में, केस स्टडी सख्त स्वास्थ्य उपायों से लेकर अधिक उदार नीतियों तक के विकल्प प्रस्तुत कर सकता है।
- **परिणाम:** प्रत्येक कार्यवाही के संभावित परिणामों का आकलन कीजिए, न केवल तात्कालिक परिणामों के संदर्भ में बल्कि दीर्घकालिक प्रभावों के संदर्भ में भी।
- **उदाहरण:** मितव्ययिता उपायों को लागू करने के निर्णय का विश्लेषण सार्वजनिक सेवाओं पर इसके तात्कालिक प्रभाव तथा जनता के विश्वास और सामाजिक कल्याण पर इसके दीर्घकालिक प्रभाव के संदर्भ में किया जा सकता है।
- **समाधान रणनीतियाँ:** दुविधा के समाधान का मार्गदर्शन करने वाले नैतिक ढाँचों और रणनीतियों का पता लगाना।

केस स्टडी

एक सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट कंपनी को अपने व्यापक रूप से इस्तेमाल किए जाने वाले पेमेंट प्रोसेसिंग सिस्टम में एक बड़ी खामी का पता चलता है, जिसका किसी के द्वारा गलत फायदा उठाने पर उपयोगकर्ताओं को वित्तीय नुकसान हो सकता है। इस खामी को ठीक करने के लिए सिस्टम को लंबे समय तक ऑफ़लाइन रखना होगा, जिससे ग्राहकों के लिए सेवाएँ बाधित होंगी और संभावित रूप से कंपनी और उसके ग्राहकों को भारी वित्तीय नुकसान होगा।

समाधान

कार्रवाई के विकल्प:

- **तत्काल शटडाउन और सुधार:** खामी को ठीक करने के लिए सिस्टम को यथाशीघ्र ऑफ़लाइन कर देना सेवा निरंतरता की तुलना में उपयोगकर्ताओं की वित्तीय जानकारी की सुरक्षा को प्राथमिकता देना।
- **मरम्मत का समय निर्धारित करना:** पहले से ही मरम्मत के समय की घोषणा कर देना जिससे क्लाइंट को डाउनटाइम के लिए तैयार होने का समय मिल जाता है। इस अवधि का उपयोग खामी को ठीक करने के लिए करना, जिसका उद्देश्य शटडाउन के लिए कम काम वाले घंटे या दिन चुनकर व्यवधान को कम करना है।
- **खामी को चुपचाप ठीक करना:** संपूर्ण सिस्टम को ऑफ़लाइन किए बिना खामी को चुपचाप ठीक करने का प्रयास करना, संभवतः चरणबद्ध तरीके से या सिस्टम के कम उपयोग के समय में त्रुटि को ठीक करके।
- **अस्थायी समाधान:** एक अस्थायी समाधान लागू करना, जो सिस्टम को ऑफ़लाइन किए बिना उसके दुरुपयोग के जोखिम को कम करता है, जैसे कि अतिरिक्त सुरक्षा उपाय या निगरानी जोड़ना, जबकि बाद में, निर्धारित आउटेज के दौरान स्थायी समाधान की योजना बनाना।

सर्वोत्तम कार्यवाही:

- **मरम्मत का समय निर्धारित करने** का विकल्प कई कारणों से सबसे अच्छा विकल्प प्रतीत होता है:
- **संतुलित दृष्टिकोण:** यह उपयोगकर्ताओं की वित्तीय जानकारी की सुरक्षा और अखंडता सुनिश्चित करने तथा ग्राहक सेवाओं में व्यवधान को न्यूनतम करने के बीच संतुलन प्रदान करता है।
- **पारदर्शिता:** समय से पहले निर्धारित मरम्मत की घोषणा करने से पारदर्शिता और जिम्मेदारी का प्रदर्शन होता है तथा यह दर्शाता है कि कंपनी सुरक्षा और ग्राहक सेवा निरंतरता दोनों को प्राथमिकता देती है, जिससे ग्राहकों में विश्वास पैदा होता है।
- **जोखिम प्रबंधन:** यह दृष्टिकोण कंपनी को नियंत्रित तरीके से खामी को दूर करने की अनुमति देता है, खामी के बारे में सभी को जानकारी मिलने या उसका गलत फायदा उठाए जाने से पहले मरम्मत का समय निर्धारित करके जोखिम को कम किया जा सकता है।
- **परिचालन योजना:** यह बेहतर परिचालन योजना बनाने में सक्षम बनाता है, जिससे कंपनी को आवश्यक संसाधनों और कर्मचारियों को संगठित करने में मदद मिलती है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सुधार कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से लागू किया जाए तथा डाउनटाइम को न्यूनतम किया जाए।

- **उदाहरण:** अधिकतम लोगों के अधिकतम कल्याण का आकलन करने के उपयोगितावादी सिद्धांतों को लागू करना, या परिणामों की परवाह किए बिना कार्यों की नैतिकता पर विचार करने के कर्तव्यवादी नैतिक सिद्धांतों को लागू करना।
- **व्यक्तिगत चिंतन:** व्यक्तिगत नैतिकता और मूल्यों को ध्यान में रखते हुए, इस बात पर व्यक्तिगत चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित करना कि ऐसी ही स्थिति में व्यक्ति क्या करेगा।
- **उदाहरण:** नैतिक नेतृत्व से जुड़े किसी मामले पर विचार करने से यह विचार उत्पन्न हो सकता है कि किसी व्यक्ति के मूल्य नैतिक नेताओं के मूल्यों के साथ किस प्रकार मेल खाते हैं।

केस स्टडी

केस स्टडी-1 : नीति निर्माण में नैतिक मुद्दे

अपनी समृद्ध जैव विविधता और प्राचीन वनों के लिए प्रसिद्ध जनजाति बहुल इलाके में बड़े पैमाने पर खनन परियोजना की योजना बनाई गई है। इस परियोजना से आर्थिक विकास और रोजगार के अवसरों का वादा किया गया है, लेकिन इससे पर्यावरण और उन स्वदेशी समुदायों के लिए एक बड़ा खतरा भी है जो अपने जीवन निर्वाह के लिए भूमि पर निर्भर हैं।

(a) जिला कलेक्टर के रूप में, खनन परियोजना से संबंधित केस स्टडी में नैतिक चुनौतियों और पर्यावरण एवं जनजातीय समुदायों पर इसके संभावित प्रभाव का विश्लेषण कीजिए।

(b) सतत विकास सुनिश्चित करने और स्वदेशी आबादी के अधिकारों की रक्षा के लिए रणनीति प्रस्तावित कीजिए।

उत्तर: यह केस स्टडी एक जनजाति बहुल क्षेत्र में बड़े पैमाने की खनन परियोजना के बारे में है, जो नैतिक चुनौतियों और पर्यावरण तथा स्वदेशी समुदायों पर पड़ने वाले संभावित प्रभावों पर प्रकाश डालता है। इसमें निम्नलिखित **हितधारक** शामिल हैं:

- जिला कलेक्टर एवं जिला प्रशासन
- स्वदेशी समुदाय और जनजातीय नेता
- खनन कंपनियाँ और उद्योग संघ
- पर्यावरण संगठन और संरक्षणवादी
- सरकारी एजेंसियाँ (खान मंत्रालय, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय)
- सिविल सोसायटी समूह और गैर सरकारी संगठन
- शोधकर्ता और वैज्ञानिक
- स्थानीय समुदाय और गैर-स्वदेशी निवासी।

मुख्य भाग

(a) जनजातीय बहुल क्षेत्र में खनन परियोजना पर्यावरण और जनजातीय समुदायों पर इसके संभावित प्रभाव के संबंध में कई नैतिक चुनौतियाँ खड़ी करती है:

1. **पर्यावरणीय नैतिकता:** यह परियोजना क्षेत्र की समृद्ध जैव विविधता और प्राचीन वनों के लिए एक बड़ा खतरा है। नैतिक विचार पर्यावरण की रक्षा करने और भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने की जिम्मेदारी के बारे में हैं।

2. **सामाजिक न्याय:** इस क्षेत्र में रहने वाले स्वदेशी समुदाय अपनी जीविका और सांस्कृतिक प्रथाओं के लिए भूमि पर निर्भर हैं। उनकी जीवन शैली को बाधित करने और उन्हें उनकी पैतृक भूमि से विस्थापित करने से सामाजिक न्याय और स्वदेशी आबादी के अधिकारों की चिंता उत्पन्न होती है।
3. **मानवाधिकार:** स्वदेशी समुदायों को अपनी सांस्कृतिक परंपराओं, रीति-रिवाजों और जीवन के संधारणीय तरीकों को बनाए रखने का अधिकार है। जो परियोजना इन अधिकारों को कमजोर करती है और उनके कल्याण को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है, वह मानवाधिकार उल्लंघन के बारे में नैतिक प्रश्न उठाती है।
4. **निष्पक्षता और समानता:** खनन परियोजना से होने वाले आर्थिक लाभ और रोजगार के अवसरों का वितरण न्यायसंगत नहीं हो सकता है। संसाधन आवंटन और लाभों के वितरण में निष्पक्षता सुनिश्चित करना एक नैतिक कर्तव्यादेश बन जाता है।

(b) सतत विकास सुनिश्चित करने और स्वदेशी आबादी के अधिकारों की रक्षा करने की रणनीतियाँ:

1. **पर्यावरणीय प्रभाव का आकलन:** वनों की कटाई, जैव विविधता की हानि, वायु और जल प्रदूषण तथा पर्यावास विनाश जैसे कारकों पर विचार करते हुए परियोजना के संभावित पर्यावरणीय प्रभाव का व्यापक और स्वतंत्र आकलन करना।
2. **स्वतंत्र, पूर्व और सुविचारित सहमति (Free, Prior, and Informed Consent, FPIC):** खनन परियोजना से प्रभावित स्वदेशी समुदायों से सार्थक परामर्श करना और उनकी स्वतंत्र, पूर्व और सुविचारित सहमति प्राप्त करना। उनके पारंपरिक ज्ञान और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं का सम्मान करना।
3. **टिकाऊ खनन प्रथाएँ:** पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी खनन प्रथाओं को सुनिश्चित करने के लिए सख्त विनियम और निगरानी तंत्र लागू करना। उचित अपशिष्ट प्रबंधन, पुनर्ग्रहण योजनाएँ और जैव विविधता संरक्षण उपायों सहित पर्यावरण मानकों के अनुपालन को लागू करन।
4. **आर्थिक विविधीकरण और आजीविका सहायता:** खनन परियोजना से प्रभावित स्वदेशी समुदायों के लिए वैकल्पिक आर्थिक अवसर और स्थायी आजीविका के स्रोत विकसित करना। इसमें पारिस्थितिकी पर्यटन, टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देना या लघु उद्यमों जैसी पहलें शामिल हो सकती हैं।
5. **क्षमता निर्माण और शिक्षा:** स्वदेशी लोगों को सशक्त बनाने के लिए प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यक्रम प्रदान करना।
6. समुदायों को निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने, टिकाऊ प्रथाओं को अपनाने और अपने अधिकारों एवं हकों को समझने के लिए प्रेरित करना।
7. **सामाजिक और सांस्कृतिक संरक्षण:** स्वदेशी संस्कृतियों, परंपराओं और प्रथागत रीति-रिवाजों के संरक्षण का समर्थन करना। पर्यावरण प्रबंधन रणनीतियों में स्वदेशी ज्ञान के एकीकरण को सुगम बनाएँ और निर्णय लेने वाले मंचों में उनका समावेश सुनिश्चित करना।
8. **निगरानी और जवाबदेही:** पर्यावरण और स्वदेशी समुदायों पर परियोजना के प्रभावों की निरंतर निगरानी के लिए तंत्र स्थापित करना। पर्यावरण नियमों का पालन करने, प्रतिबद्धताओं को पूरा करने और किसी भी नकारात्मक परिणाम को संबोधित करने के लिए खनन कंपनी को जवाबदेह ठहराया जाना।

निष्कर्ष

जिला कलेक्टर इन रणनीतियों को अपनाकर सतत विकास के लिए प्रयास कर सकते हैं जो आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करता है और खनन प्रभावित क्षेत्र में स्वदेशी आबादी के अधिकारों और कल्याण की रक्षा करता है।

केस स्टडी-2

आप एक वैश्विक प्रौद्योगिकी कंपनी के मार्केटिंग मैनेजर हैं। आपकी कंपनी ने एक नया उत्पाद विकसित किया है जिसमें बाजार में क्रांति लाने और पर्याप्त लाभ कमाने की क्षमता है। मार्केटिंग रणनीति के हिस्से के रूप में, आपको उत्पाद को आक्रामक रूप से बढ़ावा देने और यथासंभव अधिक से अधिक प्री-ऑर्डर प्राप्त करने का काम सौंपा गया है। मार्केटिंग अभियान के दौरान, आपको पता चलता है कि उत्पाद में एक बड़ी खामी है जो संभावित रूप से उपयोगकर्ता सुरक्षा को खतरे में डाल सकता है। प्रारंभिक परीक्षण में खामी का पता नहीं चलता है, लेकिन आगे की जाँच करने पर आपको पता चलता है कि यह एक गंभीर जोखिम पैदा करती है। यदि खामी का गलत फायदा उठाया जाता है, तो इससे डेटा उल्लंघन, वित्तीय नुकसान या उपयोगकर्ताओं को शारीरिक नुकसान भी हो सकता है। आप तुरंत इस मुद्दे को अपने वरिष्ठों के ध्यान में लाते हैं, जिसमें उत्पाद विकास टीम भी शामिल है। हालाँकि, वे लॉन्च की समयसीमा को पूरा करने और बिक्री को अधिकतम करने के लिए अत्यधिक दबाव में हैं। वे आपको ग्राहकों या संभावित खरीदारों को खामी बताए बिना मार्केटिंग अभियान जारी रखने का निर्देश देते हैं। आप उपयोगकर्ता सुरक्षा और कंपनी के वित्तीय हितों को प्राथमिकता देने की अपनी नैतिक जिम्मेदारी के बीच फंसे हुए हैं। खामी का खुलासा करने से कंपनी के लिए देरी, प्रतिष्ठा को नुकसान और महत्त्वपूर्ण वित्तीय नुकसान हो सकता है। दूसरी ओर, ग्राहकों से जानकारी छिपाना संभावित रूप से उन्हें नुकसान पहुँचा सकता है और कंपनी की दीर्घकालिक प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचा सकता है।

इस परिदृश्य में:

- टेक्नोलॉजी कंपनी में मार्केटिंग मैनेजर के रूप में आपके पास क्या विकल्प उपलब्ध हैं?
- पहचाने गए प्रत्येक विकल्प का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।
- आप कौन सा विकल्प चुनेंगे और क्यों?
- इस स्थिति में आप किस नैतिक दुविधा का सामना कर रहे हैं?
- उत्पाद की खामी के बारे में जानकारी प्रकट करने या न करने के क्या परिणाम हो सकते हैं?

उत्तर:

प्रस्तावना

इस केस स्टडी में, एक प्रौद्योगिकी कंपनी के मार्केटिंग मैनेजर के रूप में मुझे पर्याप्त लाभ कमाने के लिए एक नए उत्पाद का आक्रामक रूप से प्रचार करने का काम सौंपा गया है। हालाँकि, मार्केटिंग अभियान के दौरान, मुझे उत्पाद में एक महत्त्वपूर्ण खामी का पता चला है जो उपयोगकर्ता सुरक्षा को खतरे में डाल सकता है, जिससे संभावित रूप से डेटा उल्लंघन, वित्तीय नुकसान या शारीरिक नुकसान हो सकता है। केस स्टडी निम्नलिखित **हितधारक** शामिल हैं:

- ग्राहक/उपयोगकर्ता
- मार्केटिंग मैनेजर
- वरिष्ठ/प्रबंधन
- उत्पाद विकास टीम
- कानूनी और अनुपालन टीमें
- विनियामक
- कंपनी की प्रतिष्ठा

मुख्य भाग

(a) **प्रौद्योगिकी कंपनी में मार्केटिंग मैनेजर के रूप में, मेरे पास निम्नलिखित विकल्प उपलब्ध** हैं:

- **निर्देशानुसार मार्केटिंग अभियान को आगे बढ़ाना:** ग्राहकों या संभावित खरीदारों के सामने खामी का खुलासा किए बिना उत्पाद का आक्रामक तरीके से प्रचार जारी रखना।
- **लॉन्च में देरी करने और खामी का खुलासा करने की हिमायत करना:** उत्पाद की खामी को दूर करने और उपयोगकर्ता सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए लॉन्च को स्थगित करने पर जोर देना। ग्राहकों या संभावित खरीदारों के सामने खामी का खुलासा करने का प्रस्ताव देना।
- **कानूनी और अनुपालन टीमों से परामर्श करना:** जानकारी को रोकने या मार्केटिंग अभियान को आगे बढ़ाने के कानूनी दायित्वों और संभावित परिणामों को समझने के लिए कंपनी के कानूनी और अनुपालन विभागों से मार्गदर्शन लेना।
- **बाह्य विनियामकों के समक्ष मुद्दा उठाना:** यदि खामी उपयोगकर्ता की सुरक्षा के लिए बड़ा जोखिम उत्पन्न करती है, तो उचित कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए संबंधित बाह्य विनियामक निकायों को इस मुद्दे की रिपोर्ट करने पर विचार करना।

(b) **प्रत्येक विकल्प का समालोचनात्मक मूल्यांकन:**

विकल्प	पक्ष	विपक्ष
निर्देशानुसार मार्केटिंग अभियान को आगे बढ़ाना	कंपनी के वित्तीय हितों को पूरा करता है, अल्पावधि में संभावित वित्तीय घाटे और प्रतिष्ठा संबंधी क्षति से बचाता है।	यदि अंततः खामी का पता चल जाता है तो इससे उपयोगकर्ता की सुरक्षा को खतरा होता है, कानूनी देनदारियों का जोखिम होता है, दीर्घकालिक प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचता है तथा ग्राहक का विश्वास खत्म हो जाता है।
लॉन्च में देरी करने और खामी का खुलासा करने की हिमायत करना	उपयोगकर्ता की सुरक्षा को प्राथमिकता देता है, नैतिक जिम्मेदारी प्रदर्शित करता है, तथा लंबे समय तक ग्राहक का विश्वास और ब्रांड प्रतिष्ठा बनाए रखता है।	उत्पाद लॉन्च में संभावित देरी, विक्रय के अवसर चूक जाने के कारण वित्तीय नुकसान, अल्पावधि में प्रतिष्ठा को क्षति होती है।
कानूनी और अनुपालन टीमों से परामर्श करना	कानूनी दायित्वों और परिणामों को समझने के लिए कानूनी मार्गदर्शन प्राप्त करता है, विनियमों का अनुपालन सुनिश्चित करता है।	हो सकता है कि स्पष्ट समाधान न मिले, कानूनी दायित्वों और नैतिक विचारों के बीच टकराव की संभावना है।
बाह्य विनियामकों के समक्ष मुद्दा उठाना	उत्पाद की खामी को दूर करने में बाह्य निरीक्षण और संभावित हस्तक्षेप सुनिश्चित करता है, तथा उपयोगकर्ता सुरक्षा को बनाए रखता है।	यदि खामी सार्वजनिक हो जाए तो कंपनी की प्रतिष्ठा को नुकसान हो सकता है, संभावित विनियामक दंड भी हो सकता है।

(c) **नैतिक रूप से जिम्मेदार विकल्प** यह होगा कि लॉन्च में देरी करने और खामी का खुलासा करने की हिमायत की जाए।

- उपयोगकर्ता सुरक्षा को प्राथमिकता देना और लंबे समय तक ग्राहकों का विश्वास बनाए रखना कंपनी की स्थिरता के लिए महत्त्वपूर्ण है।
- कंपनी खामी को दूर करके और ग्राहकों के साथ पारदर्शी होकर संभावित नुकसान को कम कर सकती है, अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रख सकती है, और विश्वास पैदा कर सकती है।

(d) **इस स्थिति में सामने आने वाली नैतिक दुविधाएँ निम्नलिखित हैं:**

- **वित्तीय हितों और उपयोगकर्ता सुरक्षा के बीच संतुलन करना:** उपयोगकर्ता सुरक्षा को प्राथमिकता देने और कंपनी के वित्तीय लक्ष्यों को पूरा करने के बीच द्वन्द्व है। इस दुविधा में उपयोगकर्ताओं को होने वाले संभावित नुकसान और कंपनी को होने वाले संभावित वित्तीय नुकसान और प्रतिष्ठा को होने वाले नुकसान के बीच संतुलन बनाना शामिल है।
- **पारदर्शिता और विश्वास बनाए रखना बनाम निर्धारित समय-सीमा के भीतर लॉन्च करना:** बिक्री को अधिकतम करने और निर्धारित समय-सीमा के भीतर लॉन्च करने का दबाव ग्राहकों के साथ पारदर्शिता बनाए रखने और दीर्घकालिक विश्वास को बनाए रखने की नैतिक अनिवार्यता से टकरा सकता है।

(e) **उत्पाद की खामी के बारे में जानकारी प्रकट करने या न करने के परिणाम** अलग-अलग हो सकते हैं:

- **खामी को प्रकट करना:**
  - संभावित देरी और बिक्री के अवसर गंवाने के कारण अल्पकालिक वित्तीय घाटा।
  - प्रतिष्ठा को भारी नुकसान हो सकता है, लेकिन कंपनी उपयोगकर्ता सुरक्षा के प्रति नैतिक जिम्मेदारी और प्रतिबद्धता प्रदर्शित करती है।
  - लंबे समय तक ग्राहकों का विश्वास और ब्रांड प्रतिष्ठा बनी रहती है।
- **खामी को प्रकट न करना:**
  - आक्रामक मार्केटिंग और बिक्री लक्ष्य को पूरा करने से अल्पकालिक वित्तीय लाभ।
  - यदि अंततः खामी का पता चल जाता है तो कानूनी देनदारियों का सामना करना पड़ सकता है और प्रतिष्ठा को नुकसान हो सकता है।
  - ग्राहकों का विश्वास टूट सकता है, जिससे कंपनी की दीर्घकालिक प्रतिष्ठा और ग्राहक संबंधों को नुकसान पहुँच सकता है।
  - उपयोगकर्ता की सुरक्षा को खतरा हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप डेटा उल्लंघन, वित्तीय नुकसान या शारीरिक क्षति हो सकती है।

निष्कर्ष

उपयोगकर्ताओं को होने वाले संभावित नुकसान, कंपनी की दीर्घकालिक प्रतिष्ठा और विश्वास बनाए रखने के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए, लॉन्च में देरी करने और खामी का खुलासा करने का विकल्प चुनना उचित है। कंपनी उपयोगकर्ता सुरक्षा और पारदर्शिता को प्राथमिकता देकर जोखिमों को कम कर सकती है और अपनी दीर्घकालिक सफलता को बनाए रखते हुए उत्पाद की खामी को दूर करने की दिशा में काम कर सकती है।

केस स्टडी-3

हाल ही में प्राकृतिक आपदा से प्रभावित देश में काम कर रही एक बहुराष्ट्रीय कंपनी राहत प्रयासों में योगदान देने के लिए दबाव का सामना कर रही है। कंपनी के पास महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालने के लिए संसाधन हैं, लेकिन ऐसा करने से योजनागत निवेशों से धन हट जाएगा जबकि वह इसकी दीर्घकालिक रणनीति के लिए महत्त्वपूर्ण है।

(a) राहत प्रयासों का समर्थन करने का निर्णय लेने में कंपनी के सामने आने वाली नैतिक दुविधाओं की जाँच कीजिए।

(b) संकट की स्थितियों में कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) की भूमिका पर चर्चा कीजिए और सुझाव दीजिए कि कंपनी अपने व्यावसायिक हितों और सामाजिक उत्तरदायित्वों के बीच कैसे संतुलन कर सकती है।

उत्तर:

प्रस्तावना

एक बहुराष्ट्रीय कंपनी अपने संचालन वाले देश में प्राकृतिक आपदा के बाद स्वयं को दुविधा की स्थिति में पाती है। यह परिदृश्य एक जटिल नैतिक दुविधा प्रस्तुत करता है, जो तत्काल मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने और दीर्घकालिक व्यावसायिक उद्देश्यों को पूरा करने के बीच तनाव को उजागर करता है। केस स्टडी निम्नलिखित **हितधारक** शामिल हैं:

- बहुराष्ट्रीय कंपनी
- प्रभावित समुदाय और आपदा पीड़ित
- कंपनी के शेयरधारक और निवेशक
- स्थानीय शासन और आपातकालीन सेवाएँ
- गैर-सरकारी संगठन (NGO) और राहत एजेंसियां
- कंपनी के कर्मचारी
- व्यापक समाज और वैश्विक समुदाय

मुख्य भाग

(a) राहत प्रयासों में सहयोग करने में नैतिक दुविधाएँ:

- **तत्काल सहायता बनाम दीर्घकालिक व्यवहार्यता:** प्रमुख नैतिक दुविधा कंपनी के दीर्घकालिक रणनीतिक निवेशों और परिणामस्वरूप, इसके भविष्य की व्यवहार्यता को खतरे में डालने की संभावित लागत पर तत्काल राहत प्रयासों का समर्थन करने के निर्णय के बारे में है।
- **हितधारकों के हित:** विविध हितधारकों के हितों, जिसमें अपने निवेश पर प्रतिफल की उम्मीद रखने वाले शेयरधारक, ऐसे कर्मचारी जिनकी नौकरियाँ कंपनी की वित्तीय स्थिति पर निर्भर हो सकती हैं तथा सहायता की अत्यधिक आवश्यकता वाले आपदा प्रभावित समुदायों के हितों के बीच संतुलन स्थापित करना।
- **नैतिक दायित्व:** व्यवसाय की निरंतरता और विकास सुनिश्चित करने की कंपनी की प्रतिबद्धता को ध्यान में रखकर इसके संसाधनों और क्षमताओं पर विचार करते हुए मानवीय संकटों में सहायता देने के लिए कंपनी के नैतिक दायित्व का आकलन करना।
- **प्रतिष्ठा और उत्तरदायित्व:** राहत प्रयासों में योगदान देने वाली एक सामाजिक रूप से जिम्मेदार इकाई के रूप में कार्य करने और संकट के समय लोगों की अपेक्षा लाभ को प्राथमिकता देने वाली कंपनी के रूप में देखे जाने के जोखिम के बीच की दुविधा।

(b) कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) की भूमिका और हितों में संतुलन:

- **रणनीतिक परोपकार (Strategic Philanthropy):** एक रणनीतिक परोपकारी दृष्टिकोण अपनाना, जहाँ कंपनी राहत प्रयासों को ऐसे तरीकों से समर्थन दे, जो इसकी दीर्घकालिक व्यापार रणनीति के अनुरूप हों, जैसे कि बुनियादी ढाँचे के पुनर्निर्माण में निवेश करना, जिससे दीर्घावधि में कंपनी के परिचालन को भी लाभ हो।
- **प्रभाव के लिए साझेदारियाँ (Partnerships for Impact):** संसाधनों और विशेषज्ञता को एकत्रित करने के लिए गैर सरकारी संगठनों, सरकारी एजेंसियों और अन्य कंपनियों के साथ सहयोग करना तथा सम्पूर्ण वित्तीय बोझ उठाए बिना राहत प्रयासों के प्रभाव को अधिकतम करना।
- **पारदर्शी संप्रेषण (Transparent Communication):** शेयरधारकों और हितधारकों के साथ खुले संप्रेषण को बनाए रखना, राहत प्रयासों का समर्थन करने के निर्णय के पीछे के तर्क को समझाएँ और बताएँ कि ये कार्य किस प्रकार कंपनी के मूल्यों और दीर्घकालिक रणनीति के अनुरूप हैं।
- **कर्मचारी सहभागिता (Employee Involvement):** आपदा राहत के लिए स्वयंसेवा और धन जुटाने की पहल में कर्मचारियों को शामिल करना, सामाजिक उत्तरदायित्व की संस्कृति को बढ़ावा देना तथा सामुदायिक सहायता के लिए कंपनी के मानव संसाधनों का उपयोग करना।
- **नवोन्मेषी वित्तपोषण तंत्र (Innovative Funding Mechanisms):** नवोन्मेषी वित्तपोषण तंत्रों की खोज करना, जैसे कि आपदा राहत बांड या मानवीय प्रयासों के लिए आकस्मिक कोष की स्थापना, जिससे आवश्यक दीर्घकालिक निवेशों में कमी किए बिना तत्काल सहायता प्रदान की जा सके।
- **सतत विकास लक्ष्य (SDG) संरेखण (Sustainable Development Goals (SDGs) Alignment):** राहत और पुनर्निर्माण प्रयासों को व्यापक सतत विकास लक्ष्यों के साथ संरेखित करना, यह सुनिश्चित करना कि कंपनी का योगदान दीर्घकालिक स्थिरता और प्रभावित समुदायों की सहनशीलता का समर्थन करता है
- **CSR रिपोर्टिंग और जवाबदेही (CSR Reporting and Accountability):** कंपनी के आपदा प्रतिक्रिया प्रयासों को अपनी CSR रिपोर्टिंग में शामिल करना, जवाबदेही प्रदर्शित करना और अपनी मुख्य व्यवसाय पद्धतियों में सामाजिक उत्तरदायित्व को एकीकृत करना।

निष्कर्ष

कंपनी, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) के प्रति बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाकर इन चुनौतियों का सामना कर सकती है, संकट के समय प्रतिक्रिया में नेतृत्व का प्रदर्शन करते हुए अपने रणनीतिक हितों की रक्षा कर सकती है। कंपनी रणनीतिक परोपकार, साझेदारी, कर्मचारी सहभागिता और नवोन्मेषी वित्तपोषण तंत्र के माध्यम से राहत प्रयासों में प्रभावी रूप से योगदान दे सकती है, अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ा सकती है, और अपने हितधारकों और व्यापक समाज दोनों के प्रति अपने दायित्वों को पूरा कर सकती है।

केस स्टडी-4

मारिया एक अग्रणी प्रौद्योगिकी फर्म की मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) हैं, जिसने एक उन्नत कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रणाली विकसित की है जो पारंपरिक रूप से मानव श्रमिकों द्वारा किए जाने वाले कार्यों को करने में सक्षम है। इस कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रणाली को लागू करने से कार्यकुशलता में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है और लागत में कमी आ सकती है, लेकिन इससे कार्यबल के एक बड़े हिस्से का विस्थापन भी होगा।

(a) कर्मचारियों पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रणाली के प्रभाव के संदर्भ में इसको लागू करने के नैतिक निहितार्थों का विश्लेषण कीजिए।

(b) विस्थापित श्रमिकों और व्यापक समाज के प्रति मारिया और उसकी कंपनी की जिम्मेदारियों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर:

प्रस्तावना

मारिया एक प्रमुख प्रौद्योगिकी फर्म का नेतृत्व करती हैं जो एक उन्नत कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रणाली के विकास के साथ सफलता की कगार पर है। यह प्रणाली दक्षता को बढ़ाकर और परिचालन लागत में कटौती करके उद्योग में क्रांति लाने का वादा करती है। हालाँकि, ऐसी तकनीक के कार्यान्वयन के महत्त्वपूर्ण निहितार्थ हैं, विशेष रूप से कार्यबल के एक बड़े हिस्से का संभावित विस्थापन होगा। केस स्टडी निम्नलिखित **हितधारक** शामिल हैं:

- मारिया के नेतृत्व वाली प्रौद्योगिकी फर्म
- विस्थापित श्रमिक
- शेष कार्यबल
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रौद्योगिकी के संभावित उपभोक्ता
- तकनीकी प्रगति से प्रभावित व्यापक समाज
- सरकारी और विनियामक निकाय
- इस उद्योग में अन्य व्यवसाय
- श्रमिकों के अधिकारों और तकनीकी नैतिकता से संबंधित समर्थक समूह

मुख्य भाग

(a) कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रणाली को लागू करने के नैतिक निहितार्थ:

- **नौकरी का विस्थापन (Job Displacement):** पारंपरिक रूप से मनुष्यों द्वारा किए जाने वाले कार्यों को स्वचालित करने में सक्षम कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रणालियों के आने से सीधे तौर पर नौकरी का नुकसान होता है, जिससे व्यवसायों की अपने कर्मचारियों के प्रति नैतिक जिम्मेदारी के बारे में चिंताएँ बढ़ जाती हैं।
- **आर्थिक असमानता (Economic Inequality):** कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के उपयोग में तेजी लाने से सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ बढ़ सकती हैं, जिससे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रणाली के साथ काम करने का कौशल रखने वालों को विशेषाधिकार मिलेगा और जिन लोगों काम स्वचालित हो गया है वे हाशिये पर चले जाएंगे।
- **सामाजिक व्यवधान (Social Disruption):** श्रमिकों के व्यापक विस्थापन के परिणामस्वरूप बड़ी सामाजिक अशांति पैदा हो सकती है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं, गरीबी और सामाजिक अस्थिरता की दर में वृद्धि हो सकती है।
- **नैतिक दायित्व (Moral Obligation):** नवाचार व प्रगति के प्रयासों और संभावित मानवीय लागत के बीच संतुलन करने में नैतिक दुविधा होगी, जो कर्मचारी कल्याण और सामाजिक कल्याण के प्रति कंपनियों के नैतिक दायित्वों पर प्रश्नचिह्न लगाती है।

(b) मारिया और उनकी कंपनी की जिम्मेदारियाँ:

- **पारदर्शी संप्रेषण (Transparent Communication):** मारिया को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रणाली के कार्यान्वयन के संभावित प्रभाव के बारे में पारदर्शी बातचीत सुनिश्चित करनी चाहिए तथा श्रमिकों को परिवर्तन के लिए तैयारी करने हेतु यथासंभव पूर्व सूचना देनी चाहिए।
- **पुनः कौशलीकरण और कौशल उन्नयन कार्यक्रम (Re-skilling and Up-skilling Programs):** कंपनी की जिम्मेदारी है कि वह विस्थापित श्रमिकों के लिए पुनः कौशलीकरण और कौशल उन्नयन कार्यक्रमों में निवेश करे, जिससे वे नौकरी के बदलते परिदृश्य के अनुकूल बन सकें और नए क्षेत्रों में, चाहे वे उसी कंपनी के भीतर हों या व्यापक अर्थव्यवस्था में, रोजगार पा सकें।
- **सेवेरांस एवं सहायता सेवाएँ (Severance and Support Services):** विस्थापित श्रमिकों को नई भूमिका में आने में सहायता करने के लिए उदार सेवेरांस पैकेज (Severance Packages) और सहायता सेवाएँ प्रदान करना, जिसमें करियर परामर्श और जॉब प्लेसमेंट सहायता शामिल है।
- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का नैतिक उपयोग (Ethical Deployment of AI):** मारिया की कंपनी को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रणाली को ऐसे तरीकों से लागू करने का प्रयास करना चाहिए जो मानव कार्यबल को प्रतिस्थापित करने के बजाय उनका पूरक बने तथा ऐसे रास्ते तलाशने चाहिए जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रणाली मानव कौशल और क्षमताओं को बढ़ा सके।
- **सामाजिक कल्याण में योगदान (Contribution to Societal Well-being):** कंपनी को तात्कालिक कॉर्पोरेट सीमाओं से परे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रणाली के व्यापक सामाजिक प्रभावों को संबोधित करने के उद्देश्य वाली पहलों में संलग्न होना चाहिए, जैसे कि ऐसे शैक्षिक कार्यक्रमों में योगदान देना जो अगली पीढ़ी को तकनीक-संचालित अर्थव्यवस्था के लिए तैयार करते हैं।
- **नीति और विनियमन के लिए समर्थन:** श्रमिकों की सुरक्षा करने वाले विनियमों का समर्थन करने के लिए नीति निर्माताओं के साथ जुड़ना।

निष्कर्ष

अंततः, मारिया और उनकी कंपनी को अपने व्यावसायिक हितों और कर्मचारियों व समाज के प्रति अपने नैतिक दायित्वों के बीच संतुलन करना चाहिए। वे समानुभूति, पारदर्शिता और सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति प्रतिबद्धता के साथ एआई के कार्यान्वयन से नकारात्मक परिणामों को कम करने और इसमें शामिल सभी लोगों के लिए संभावित लाभों को अधिकतम करने में मदद कर सकती हैं।

Saarthi

THE COACH

1 : 1 MENTORSHIP BEYOND THE CLASSES

- **Diagnosis** of candidates based on background, level of preparation and task completed.
- **Customized solution** based on Diagnosis.
- One to One **Mentorship.**
- Personalized schedule **planning.**
- Regular **Progress tracking.**
- **One to One classes** for Needed subjects along with online access of all the subjects.
- Topic wise **Notes Making sessions**.
- One Pager **(1 Topic 1 page)** Notes session.
- **PYQ** (Previous year questions) Drafting session.
- **Thematic charts** Making session.
- **Answer-writing** Guidance Program.
- **MOCK Test** with comprehensive & swift assessment & feedback.

Ashutosh Srivastava
(B.E. , MBA, Gold Medalist)
Mentored 250+ Successful Aspirants over a period of 12+ years for Civil Services & Judicial Services Exams at both the Centre and state levels.

Manish Shukla
Mentored 100+ Successful Aspirants over a period of 9+ years for Civil Services Exams at both the Centre and state levels.

WALL OF FAME
UTKARSHA NISHAD
UPSC RANK - 18
SURABHI DWIVEDI
UPSC RANK - 55
SATEESH PATEL
UPSC RANK - 163
SATWIK SRIVASTAVA
SDM RANK-3
DEEPAK SINGH
SDM RANK-20
ALOK MISHRA
DEPUTY JAILOR RANK-11
SHIPRA SAXENA
GIC PRINCIPAL (PCS-2021)
SALTANAT PARWEEN
SDM (PCS-2022)
KM. NEHA
SUB REGISTRAR (PCS-2021)
SUNIL KUMAR
MAGISTRATE (PCS-2021)
ROSHANI SINGH
DIET (PCS-2020)
AVISHANK S. CHAUHAN
ASST. COMMISSIONER
SUGARCANE (PCS-2018)
SANDEEP K. SATYARTHI
CTD (PCS-2018)
MANISH KUMAR
DIET (PCS-2018)
AFTAB ALAM
PCS OFFICER
ASHUTOSH TIWARI
SDM (PCS-2022)
CHANDAN SHARMA
Magistrate
Roll no. 301349
YOU CAN BE THE NEXT....
8009803231 / 8354021661
D 22&23, PURNIYA CHAURAHA, NEAR MAHALAXMI SWEET HOUSE, SECTOR H, SECTOR E,
ALIGANJ, LUCKNOW, UTTAR PRADESH 226024

MRP:- ₹250